ত্রা কগ্রহা

खाद्दभर्या महित्र।

প্ৰথম ও দ্বিতীয় খণ্ড।

সপ্তম সংস্করণ।

কলিকাতা

আদি ত্রাহ্মসমাজ যত্ত্রে মীরণগোপাল চক্রকর্তী কত্ত্ব মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

tent **অ**পার চিৎপ্ররোড

>62岁 神本 1

ধ্যোকের আদি	লোকসংখ্যা	পত্ৰাশ্ব।
৫কা হেবাক্তাৎ	٠	9
তং বেদ্যং পুরুষং কেদ	>8	५ २७
ভত্তঃ পরং ব্রহ্ম	1 49	228
্ততো যহন্তর তরং	64	2>3
তৎস্বিতৃ:	>>	252
তদে জতি	৩ ৭	« •
তদেতৎ প্রেম্ন:	96	>•@
छान् उनाभ्यः	> •	5 23
তদ্যথা রথনাভৌ	≽≎	35.
তম্বা এতদক্ষরং	२ ह	٠ و
তৰিজানাৰ্থং	28	>9 ²⁺ 8
তদ্বিষ্ণোঃ পরমং	200	313
তন্দৰ্শং	62	99 - 2,
তপদা ঝ্ৰু	8.0	25
তমীশ্রাণাং	84	*9
তৃষ্য হ বা এত্স্য	318	347
ত্রিকরতং হাপ্য	*3	b-10
निरवा। श्रम्र्डः	>75	>8¢
दा स्थर्ग मयुका मथाया	10	÷₩.
ধূর্মহ চর	>80	2A4.
ৰ চুকুষা গৃহতে	8,9	* o

শ্লোকের আদি	লোকসংখ্যা	পত্ৰাধ।
के ना वा मा मिनः	હ∉	86
উক্ত্ৰাতু উপনিষৎ	549	224
উন্তিঠত স্বাগ্ৰত	44	>>>
এক ধৈবাহু স্বাষ্টব্য	e 9	48
धारका (मरः	3.0	>03
একো বশী	9•	≥8
এ ভস্তেরং	560	325
এতকৈ তদকর	>1	₹•
এডমাজারতে প্রাণোমনঃ	5 2	>æ
এতস্য বা কল রদ্য	24	રક્ષ
4	\$8	२६
শ্ৰ	₹•	ঐ
3	45	२७
এটভব্ৰপা ৰৈ:	>4.	>>
এষ দেবো বিশ্বকর্মা	¢۵	92
এৰ দৰ্ব্বেশ্বর	49	92
এ ष मर्स्स्	**	>26
এ্যাস্য প্রমা	7	>•
नकः भिवत्स्री	35%	56.
ামিতি ব্ৰহ্ম	a •	\$\$\$
ত্যেবং	>>	\$ 2. 3

প্রথম খণ্ড।

উপনিষৎ।

(অকারাদি বর্ণামুক্রমে হুচীপত্র)

• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	,	
লোকেব আদি	শোকদংখা	পত্রান্ধ
ञ ्गावशीयांन्	৬৯	204
प्रमृहेमवावहां धार	99	> 0,
चम् छ। ज्ञा	\$>0	58 cg
অননা নাম তে	> >>	260
ष्यत्मजः १ क॰	৩৬	8:5
ত্ৰপৰা ঋণ্যেদো	3.6	٥٤ ع
অপাণিপালো জবনো	২৭	3 3
व्यम् सम्याम	: 9	ऽ२¢
অস্মিন্ দ্যোঃ	¢,	৮•
ष्यादारमा देव नाम	३२१	399
আঝানমেৰ প্রিয়ং	₽•	3 • 9
খাত্রা বা অরে ডাইব্য:	47	3.5
व्यानमाटकाव	৩	8
व्यानाम्बद्ध		376
ইদং বা অগ্রে	> 0	>5
रेश (हम दबनीमथ	•8	82
ইইংব সম্ভোহণ	b¢	>>>

ব্রাহ্মধর্মের সূচীপত।

ত্ৰকোপাদনা।

His I
\$
2
ર
8
8
•
9

অত ন্ধ	শু দ্ব	পত্ৰাঙ্ক	পংক্তি
- শ্বন্ধসংসারধর্ম	সর্বসংশারব্যব-		
ব্যবস্থাযাবিধান্নবিভা	স্থায়া বিধারমিতা	93	36
সাম্য ভাব	শাম্য-ভাব	5.2	36
উদ্যেশ্য	উদ্দেশ্য	3 • 3	9
স্কু	স্কাষ্ট	> @	b '
জ্ঞানি	खानी	> 9	>•
শোকছঃগ	শেক হঃথ	228	\$2
य ः	य९	\$2.	> &
বি শ্ব ভ	বিশ্ব ত	५ २२	>6
কারণঃ	কারণং	>00	>9
ष १ हेन १	यः इनः	686	>0
(₹ ₹	হেতু	>4>	58
বাস্ত বি ক	ৰা ন্ত িবক	7 94	2
অ ভিয ন্তি	অভি গান্তি	>40	26
পরপ্রমেব	পরত্রক্ষের	८चट	>>
দেখিত	দেখিতে	866	9
পরিত্যাধ্য	পরিকাজা	२०७	25
প্রেমাপ্পদ	প্রেমাস্পদ	₹•€	२७
७ क्टबन	<u>ভশ্ৰ</u> ষ্থেত	200	24
আমৃত্য	অ ামৃত্যু	₹>•	9
বিধায়তে	্ বিধীয়তে	२३€	25
যে সকল	যে সকল	२५७	ર
যাহারা	যাহারা	२२१	2.0
म जीन्	मो त्रान्	२२४	9
	চেষ্টা	₹€€	>>
हे ट्ट1	COGI	100	* *

শুদ্ধি পত্ৰ।

ং অ 3 দ্ব	3 \$	পত্রান্ধ	পংক্তি।
व्यनः	व्यम्	9	8
ब † ८	বাও	9	8
, द्रमः	রস্থ	br	8
্রসংথহে	[†] রস্থ <i>ছে</i>	৬	১২
व् ग्रहा चयः	মৃতে(২ভয়:	58	20
Total	যুশ্;	२४	35
िर्गर्भष्टेः	গার্গ্যদৃষ্ট	90	4
1 वन	८ य न	٠.	9
শ্চাৰ্যেরা	অ াচার্য্যেরা	৩৫	\$2
শ্ৰ্	Ç4	83	20
^ছ রানবান	জ্ঞানবান	83	36
বিনাত হ	অনাখন স্ত	68	9
³ কৃষ্ উ পাত	কুদৃষ্টিপাত	86	¢
^ग ळा(का	ভাষ ্য	e ર	28
শ্ব কা	ৰ ে শা	4.	39
^{শ্} বিষ্ক্ত	বিযুক্ত	७३	24
^{व्य} विकानन	বিধানন্	७३	२०
वैमक्टलन	म क एन ब है	#b.	38
48	বুক	93	۲
नगाध्ना	দ ৰ সাধুৰা	96	30

ওঁ ঋতং বদিষ্যামি সত্যং বদিষ্যামি তন্মাম-বহু তদ্ব জারমবন্ধবন্ধ মামবন্ধ বক্তারমবন্ধ বক্তারম।

আমি থাত বলিব, আমি সত্য বলিব, সত্য আমাকে রক্ষা ককন, সত্য বক্তাকে রক্ষা করুন, সত্য আমাকে বক্ষা করুন, স্তা বক্তাকে রক্ষা করুন, স্তা বক্তাকে রক্ষা করুন।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ! হরিঃ ওঁ।

मगा अभागः वाकायमः।

স্লোকের আদি	শোকদংখ্যা	পত্ৰাস্ক ৷
ন স্বায়তে ত্রিয়তে বা	43	۶)
ন ভব্ৰ চকুৰ্গছৈতি	२४	9 8
ন ভত্ৰ হৰোঁ৷ ভাত্তি	88	હ \$
न তमा कन्टि९	ۥ	95
न छमा कांगाः	83	6 0
न मन्द्र	30%	224
नां अभागाः	কচ	५२ १
নাৰিয়তো	200	১৭২
नाहर मध्य	૭૨	8•
(নিতোহানতাানাং	95	ಎ
নৈনং পাপ্মা তরতি	>8>	>4<
टेननभूकः	>•€	205
देनव वाठा न मनमा	> >>) 5b
পর্মেবাকরং	99	• >•>
পরাচ: কামান্	3.F	280
প্রণবো ধরু:	6)	७ च
প্রাণন্য প্রাণমূত	€ ಲ	9 €
व्यार्ग (स्व यः,	84	ક્ષ્
अक्रवांमित्ना वनिक	>	>
ष्ट्रमान माचित्रभित	20	3 છ
ভীবাংশাদাত:	૨ ¢	9)

লোকের স্বাদি	লোকসংখ্যা	গত্ৰাস্ব।
महान् अड्टेस পुक्रवः	49	224
মাতৃদেবো ভব	>89	7445
মাহং অন্স নিরাকুর্য্যাং	84	>>>
ৰ আয়াহপহতপাপা।	> ? *	346
য একোহবর্ণো	>>•	200
ষ এষ হথেবু জাগতি	*6	≱ર
रः मर्द्ध ः	82	63
যতো বা ইমানি	ર	ર
যতো বাচো	8	•
হতো বাচো	٧	٠, • د
যভন ত্ৰেশ্যমগ্ৰাহ	>4	29
যুকারী যুথাচারী	> 25	>*¢
যথা সৌম্য ৰয়াংসি	>+5	506
यमर्किमम्	•	4
যদা পশ্যঃ	94	3.5
यमा मर्क्स व्यक्तिगारः •	92	24
यमा (ऋदेवव	7	à
यिनिषः किश्च जार	२७	65
यिन मञ्चरम	95	OF '
যহাচা নাকুটিতং	69	49
ব্যান্ধা ন মহতে	•	91

সোকের আদি	শোকদংখ্যা	পত্রাস্ব।
যশ্চারমন্মিরাকাশে	369	386
বলৈভমন্ত্ৰপশ্ভ্যাত্মানং	527	>9+
यस विकानवान्	>29	396
रख गर्नानि	97	23
रप विकानगान्	299	390
यस्तिकानवान्	2.8	३२१
यख् विकानरान्	>9€	>19
বস্যামভং	ు	83
अन्त्रान् स्	c c	99
भानानवना नि	585	766
यांना यां कर	282	245
যুজে বাং ব্ৰহ্ম	53	>>>
বেনাহং নামূতা	> = =	\$82
ट्या द नवानाः	325	786
ट्या ८ मटबारुटभी	5 C	>२०
যো বা এতদক্ষরং	22	२१
বো বা এতদক্ষরং	२७	66
ৰো বৈ ভূমা	>>9	>42
बरमा देव मः	e	৬
বিজ্ঞানগার পির্যস্থ	১৩৭	296
ৰিজ্ঞানাত্মা সহ	* >6¢	298

সোঁকের মাদি	Cशंकत्रः रा	পত্ৰায় ৷
বিশ্বত-চক্ত্ত	*8	*
इक्टेंब छह्या	>>>	303
বৃহচ্চ তদিব্যং	8 6	**
বেদাহমেতং	>43	292
भारखा नांच	38•	5 F 5
শৃণুম্ভ বিখে	>4>	>>•
धक्या (५वः	>85	249
শ্রবণায়াপি	> 1	20 >
বৌরশ্চ প্রেরশ্চ	202	390
শোত্ৰা খোৰং	૨ ૧	es
স এবাধন্তাৎ	279	>68
শ এম নেতি	558	386
স এষ সর্কাস্য	>>€	282
স্ভন্দে:হ্যমৃত:	25.0	500
সংগ্রাবৈগ্যনং	548	323
স তপো ২ তপাত	>>	38
म जाः छान्यनदः	85	e9
मडाः वर	>88	364
সত্যমেৰ জয়তে	>>•	>88
সত্যান প্রমদিতব্যং	>8%	>>8
স পর্যাগাৎ	69	42

শোকের আদি	শোকসংখ্যা	পত্ৰাস্ত্ৰ ম
-স ভগব: কমিন্	774	>60
नमान दुष्क	98	> • •
नाम छाड़ी	42	bc
ন মোদতে	285	350
ষ ঘোন্যমাত্মনঃ	9.2	3.6
मर्ख डः भागिभागन्तर	30	44
मर्समा वनी	45	16
मन्द्री पिन	> 8	≥9¢
সর্বাননশিরোগ্রীবঃ	**	3.
मर्स्वित्र छुँगाङोमः	৮৮	35¢
স বা অধ্নাশা	४२	4.6
স বিশ্বরুৎ	>>>	>64
স বৃক্ষকাশাক্তভিঃ	252	>69
স সেতুৰ্কিগৃতিরেষাং	>२ œ	2.48
হিরণান্ত্রে পরে	8.9	4.

দিতীয় খণ্ড।

অমুশাসন।

(অকারাদি বর্ণাযুক্তমে স্চীপতা)

	•	
লোকের আদি	শোক সংখ্যা	পত্ৰান্ধ।
व्यक्तिर्धन स्टाइट	৬৪	290
অজাতপতিমর্যাদাং	29	222
অতিবাদাংস্তিতিকেত	ь	२५२
অদ্ভানামুপাদানং	3 29	ಅಂಜ
শ ত্তিগাঁতাণি	¢¢	२७०
व्यवर्षम् अनः (गारक	53	ა. 8
अ भृत्युरेन १८७	১৩২	988
অধার্মিকো নর:	3.9.	৩৪২
অন্থ্ৰ প্ৰান্	b ⊬9	२३३
अनर्युः कृ उ छ ≁	30	9.2
অন্নৰ: হ্ৰধনাপ্ৰোতি	96	২৮৮
षञ्चान् পরিবদন্	2.0	9.9
অভারাৎ সম্পাত্তেন	98	₹ ৮8
ष्यतानामा	32	२३७
অরকিতা গৃহে ক্রা	₹ 5	२२७
ष्य, दिशाः नभगः	>•	976

েরোকের আদি	শোকসংখ্যা	পত্ৰাক।
ष्यवित्रः वान दर्का नकः	૯૭	3 95
অসম্ভোষপরা মৃঢ়াঃ	8.9	२८२
আচাৰ্য্য	>	२•७
ইব্রিয়াণাং বিচৰতাং	>*>	७५७
ইন্দ্রিয়াণাং হি চরতাং	५०२	\$\$\$
रे कियाना व	>∘8	৩১৬
খতং বদিষ্যামি		৩৫১
এক এব স্কন্দা	>>9	৩২৯
একে। ধন্মঃ পরং শ্রেমঃ	১২ ৩	८५६
একোহ্মগ্রীত্যাম্বানং	৬২	२१५
এক: প্রজায়তে জয়;	১ ৩৫	৩৪৭
এৰ আদেশ:	১৩৮	७€ •
छेवधः ११।	93	२४२
কন্তাপ্যেবং	÷ 8	, ২২৯
কুত: কুত্ম্প্য	90	₹৮•
कूमनः स्थरः दथम्	હહ	298
ক্ষা পাপং হি সন্তপ্য	454	68.
কোধঃ স্থৰ্জ্যঃ	४७	२৯8
ক্ষা বশীকৃতি:	৯৩	٥،8
खक्रगाटेकव मर्व्सवाः	Œ	२०५
शृह्यः भानामः	২৩	२२৮

क्षीटकत्र भागि	শোকসংখ্যা	পত্রাঙ্ক
ছায়েবাহগতা	39	२२३
তথা নিত্যং	20	239
তত্মাৎ পাপং ন	585	৩ ৩৩
তস্মান্ধৰ্মং সহায়াৰ্থং	১৩৭	৩৪৯
जिम्खरमञ्जातिक् ला	३२४	હહ્હ
দানার হুকরং তাত	9.5	२५०
দান্তঃ শমপরঃ	b 8	२२१
(मध्रमार्खमा भग्रनः	9 9	२৮१
ধৰ্ম এব হতো হস্তি	220	384
भर्यका र्याः २७न् गङ्गा	5.0	७)३
ধৰ্মকা:	04	₹85
ধৰ্মং শলৈ: সঞ্চিম্যাৎ	200	\$8€
शर्माटधी यः	ં ગ	48 2
श्रु किया नमः	ひか	o
ন কন্তায়াঃ পিতা	ર ૧	২৩১
न र्कनिह९	>9	२ २ २
न बाडू कांगः	ee¢	9)¢
ন তেন বৃদ্ধো ভৰতি	24	२०७
ন ধর্মোহন্তীতি	ኃን৮	900
ন নিত্যং শভতে	8 €	२ ७२
ন বিভেডি রণাৎ	49	२७१

লোকের আদি	লোকসংখ্যা	পত্ৰাস্ব ।
न नीनज्ञि भट्यंन	202	989
नापानम् वस्ता ङ	•	२७∉
নাভিনন্দেত	82	289
নাসুত হি সহায়ার্থং	>98	७३५
নান্তি স্তাদ্মো	41	२७७
নিষেবতে প্রশন্তানি	५ २२	৩৩৪
६ नोष्ट्रिका [†] ९	૭ર	२७१
স্থায়োপার্জিতবি:ত্তন	9 €	२४०
পতিপ্রিংহিতে	34	२ २ ១
প্রদ্রবোপভিধ্যানং	22 C	೨೨೪
পাত্ৰস্য হি বিশেষেণ	92	२৮२
পাপং কুর্বান্	> ₹ •	७७२
পাপং চিম্বয়তে চৈব	>>+	७ २ >
পারুষ্যমন্তকৈব	25 P 12	৩৩৮
भूगाः क् र्यन्	5 0 7	৩২১
भूर्सः वय्नि	3 •	₹8€
প্ৰজনাৰ্থ মহাভাগাঃ	>•	२ >9
প্রজ্ঞামানসং	6.9	222
প্রজাচ কুর্নর:	250	७२ १
প্রাজ্যে ধর্মেণ	\$>\$	৩২৩
আগ্য চাপ্যন্তমং	٥>	₹88

Mitara miss		
গোকের আদি	মোকদংখ্যা প্ৰাহ	
প্রিয়েনাতিভূশং	81	₹€8
श्रिद्धां छवि मार्टनन	eb	२७३
वक्तिर्छ। शृहदः मा।	ર	₹•8
ৰাডা জ্যেষ্ঠ:	9	23.
बाक्र ई। क्षेत्र	२२	229
শতিরং পিতর৳ৠব	ঙ	
শাভূবৎ পরদারাংশ্চ	26	209
মানং হিছা	b 2	3.5
মিঅঞ্ক্ ছ্ষ্টভাবশ্চ	•	२৯२
মৃতং শ্বীরমুংসঞ্য	69	224
मारकांगमा वानिहि	३७५	৩৪৮
মৌনার স মুনির্ভবতি	649	२१७
य त्रेष्: প्रविद्धिष्	२०	२७८
বং ৰাতাণিভৱে <u>}</u>	b \$	२ २ ५
वेद कर्म कूर्यछ:	•	₹•₽
•	ನನ	933
न कन्।।।	49	१ 9२
ষপাশ্রতং	**	3 63
रदेशवाञ्चा शतः	8	9.6
ষ্ণা ন কুকুতে	> o br	৩২ •
यस निःद्रधन्नमः	*9	219
वंगा वाचनगी	. જ	•
		₹\$ €

ट्यांटक ब्रामि	টোক্সংখ্যা	পত্ৰাস্ক।
यगा विचान्	٠,	290
रमााषा वित्रजः	>> >	७२३
বাদৃগ্ওণেন ভত্ৰ ব	ર∉	₹5•
যাবন বিন্দতে জানাং	ક	२५७
यूरेबर धर्मनीतः	೨೨	२७४
ৰে পাপানি ন	>>>	८२ ०
বেহিন্যথা সম্ভং	<i>e</i>	<i>২৬</i> ৬
বক্রামা	৩৮	280
বলে ক্তেন্দ্রেরগ্রামং	> 9	978
वहटवा रुपिनशांब्रहाः	ન્યત	970
বাৰ্য্যমাণোহপি	>> a	७२१
বিপত্তিক্বাপঃ	£ &	۵۰۵
वित्रकः भवनाद्वयू	42	२ ५ ५
শক্তঃ পরজনে	b-•	২৯•
नं क्यांनमानः	9 5	२५७
তভাতভদ্বং কর্ম	• >>8	99 6
खांबरमभृ इनाः वानीः	8	
সংবিভক্তা চ	95	2.9
শতাং শত মতিক্রম্য	৬৮	343
শত্যং মৃহ প্রিরং	4 •	२१४
শভ্যমেব ব্ৰভং শৃদ্য	«»	२८२
	4.7	240

লোকের খাদি	লোকসংখ্যা	পত্ৰাত্ব।
সভ্যং জন্নৎ	۲.8	₹ 58
সম্ভাপাৎ ভ্রশ্যতে রূপং	86	400
সমষ্টো ভাৰ্য্যমা	>8	475
नटकावः भत्रभाक्षत्र	83	₹8₩
ममकतर्भना ९	4>	4 pp
मर्सा वश्रवमण्ण्नीः	23	416
मदर्का मधिक्यः	6 6	0.0
मर्काः পরবশং	৩১	२०७
না ভা ৰ্য্যা মা পতিপ্ৰাৰা	>6	२२•
भ शः इःशः हि	88	₹@•
११ श वा यनि वा इः वः	૯૭	२६७
হ্ৰং হ্ৰমত:	223	905
হ্মবৃত্ত: শীলসম্পন্ন:	\$8	२ ७ २
স্ন্নে ভ্যোহিধি	₹•	२३६
ब्रोडिर्ङ्ब्ह	33	२ २8
श्रीयः वनः	85	269
डी मान् हि পां पर	ત્ર	4.7

স্থচীপত্ৰ সমাধ্য

প্রাতঃশর্ত্রাম্।

লোকেশ-চৈত্তক্সময়াধিদেব मञ्जना विष्या खवनाखराव। হিতায় লোকস্য তব প্রিয়ার্থং সংসার্যাত্রামন্ত্রবর্ত্তিয়েয়ে॥ एक द्वारकम देठजनामग्र अधिरम्त ! বিভো! তোমার আজানুদারে ग्रञ्जन गरा লোকের হিতের নিমিত্তে এবং তোমার প্রীতির নিমিত্তে সংসার্যাত্রা নির্বাহ করিতে প্রবৃত্ত

रहे।

ব্ৰান্মধৰ্মবীজম।

- ওঁ ভ্রহ্ম বা একমিদমগ্র আদীং নাত
 কিঞ্চনাদীং। তদিদং দক্ষিস্তল্প।
- ২ তদেব নিত্যং জ্ঞান্মনন্তং শিবং স্বতন্ত্রং নিরবয়বমেকমেবাদ্বিতীয়ং সর্ব্বব্যাপি-সর্ব্ব-নিয়ন্তৃ-সর্ব্বাপ্রয়-সর্ব্ববিৎ-সর্বশক্তিমদ্-জ্রবং পূর্ণমপ্রতিমমিতি।
- ৩ একস্য তদ্যৈবোপাসন্মা পারত্রিকমাইকঞ্চ শুভস্তবতি।
- ৪ তিমিন্ প্রীতিস্তদ্য প্রিয়-কার্য্য-সাধন

 পাসনমেব।

ব্ৰাক্ষধৰ্মবীজ।

- ১। পূর্বের কেবল এক পরত্রন্ধ মাত্র ছিলেন; অন্য আর কিছুই ছিল না; তিনি এই সমুদয় সৃষ্টি করিলেন ।
- ২। তিনি জ্ঞানস্বরূপ, অনন্তস্বরূপ, মঙ্গলস্বরূপ, নিত্য, নিয়স্তা, নর্বজ্ঞ, নর্বব্যাপী, সর্বাশ্রায়, নিরবয়ব, নি-র্বিকাব, একগাত্র, অদ্বিতীয়, সর্বাশক্তিমান্, স্বতন্ত্র ও পরিপূর্ল; কাহাবও সহিত তাঁহার উপমা হয় না।
- ৩। একমাত্রে তাঁহার উপাসনা দ্বারা ঐহিক ও পারত্রিক মঙ্গল হয়।
- ৪। তাঁহাকে প্রীতি করা এবং তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করাই তাঁহার উপাসনা।

ব্রাক্মধর্ম-গ্রহণম্।

ও তৎসৎ।

- ওঁ ব্রহ্ম বা একমিদমগ্র আসীৎ নান্যৎ কিঞ্চনাসীৎ।
 তদিদং সর্কামস্তর্থ।
- ৪ তদেব নিতাং জ্ঞানমনন্তং শিবং স্বতন্ত্রং নিরব্যব্যেক-মেবাদ্বিতীয়ঃ সর্ক্রব্যাপি-সর্ক্রনিয়ন্ত্-সর্ক্যশ্রম-সর্ক্রবি২ সর্ক্রশক্তিমদ্ ধ্রবং পূর্ণমপ্রতিমমিতি।
- ০ একস্থ তদ্যৈবোপাদন্যা পার্যাক্রিক্সেঞ্জ শুভন্তব্যি।
- ৪ তন্মিন্ প্রীতিস্তদ্য প্রিয়-কার্যা-দাধনঞ্চ তত্রপাদনমের।

অস্মিন্ ৰাক্ষধর্মবীজে বিশ্বস্য ৰাক্ষধর্মং গৃহগমি।

- ১ ওঁ স্ষ্টিস্থিতিপ্রলয়কর্ত্তরি মুক্তিকারণে সর্ববিজ্ঞ দর্বব্যাপিনি পূর্ণানন্দমঙ্গলে নির-বয়ব একমাত্রাদ্বিতীয়ে পরব্রহ্মণি প্রীত্যা তৎপ্রিয়কার্য্যদাধনেন চ তত্রপাস্দ্যামি।
- সর্বাস্ত্র পরত্রকোতি স্ফং কিঞ্জারাধ-য়িষ্যামি।
- ও অরুমোহবিপন্নশ্চেৎ প্রতিদিনং যদ। চিক্তৈ

[२]

কাগ্রতা তদা শ্রদ্ধয়া প্রীত্যাচ পর্রদ্ধনি, মনঃ সমাধাস্যামি।

- ৪ সদস্থানায় চ যতিয়ে।
- প্রস্কৃতিভ্যো নির্বৈত্ত্য যত্নবান ভবিষ্যামি।
- ৬ যদি মোহাৎ কুকর্ম কিঞ্চিৎ কৃতং স্যাৎ তদৈ কান্ততন্ত্রশামুক্তিমবিচ্ছন্ন প্রমদিগ্যামি।
- ৭ বর্ষে বর্ষে মদীয়ে চ তাবৎ সাংসা কশুভ-কর্মণি ব্রাহ্মসমাজায় দাস্যামি।

হে প্রমাত্মন্ মাং প্রতি এতৎ প্রমধর্ম-গ্রতিপালন্দামর্থ্যমর্প্য।

उँ এক मেবা विতीयम ।

ব্ৰাহ্মধৰ্ম-গ্ৰহণ।

ওঁ তৎসৎ।

- ১। পূর্বেকেবল এক পরব্রহ্ম মাত্র ছিলেন; অন্ত আর কিছুই ছিল না; তিনি এই সমুদর স্থাষ্ট করিলেন।
- ২। তিনি জ্ঞানস্বরূপ, অনস্তস্বরূপ, মঙ্গলস্বরূপ, নিত্য, নিরস্তা, সর্বাজ্ঞ, সর্বব্যাপী, সর্বাশ্র্য, নিব্বয়ব, নির্কিন্ কার, একমাত্র, অদিতীয়, সর্বশক্তিমান্ স্বতন্ত্র ও পবি-পূর্ণ; কাহারও সহিত তাঁহার উপমাহয় না।
- ৩। একমাত তাঁহার উপাদনা দারা ঐহিক ও পারত্রিক মঙ্গল হয়।
- ৬। তাঁহাতে প্রীতি করা এবং তাঁহার প্রিয় কায়্য সাধন করাই তাঁহার উপাসনা।
 - আমি এই আদাংশ্বীজে বিশ্বাসপূর্বক আদাংশ্ এইণ করিতেছি।
- ১। ও স্প্রি-স্থিতি-প্রলয়-কর্ত্তা, ঐহিক পারত্রিক মঙ্গলদাতা, দর্ববিজ্ঞ, দর্বব্যাপী, মঙ্গল-স্বরূপ, নিরবয়ব,একমাত্র,অবিতীয় পরত্রক্ষের প্রতি প্রীতি দারা এবং তাঁহার প্রিয়-কার্য্য-সাধন দারা তাঁহার উপাদনাতে নিযুক্ত থাকিব।

- ২। পরব্রহ্ম জ্ঞান করিয়া স্থষ্ট কোন বস্তর স্থারাধনা করিব না।
- ও। রোগ বা কোন বিপদের দারা অক্ষম না হইলে প্রতিদিবদ শ্রদ্ধা ও প্রতিপূর্ব্বক পরত্রকো আত্মা সমাধান করিব।
- ৪। সংকর্মের অনুষ্ঠানে যত্নশীল থাকিব।
- ৫। পাপ কর্ম হইতে নিরস্ত থাকিতে সচেফ্ট
 হইব।
- ৬। যদি মোহবশক্ত কখন কোন পাপাচরণ করি, তথে তলিমিত্তে অকৃত্রিম অনুশোচনা পুর্বাক তাহা হইতে বিরত হইব।
- ণ। ব্রহ্মিধর্মের উন্নতি সাধনার্থে বর্ষে বর্ষে ব্রাহ্মদমাজে দান করিব।

হে পরনায়ন । সমাক্রপে এই পরম ধর্ম প্রতিপালন করিবার ক্ষমতা আমাব প্রতি অর্পণ কর।

ওঁ একমেবাদিতীয়ম্।

প্রতিজ্ঞামরণার্থশ্লোকাঃ।

যদস্য জগতে। জন্মস্থিতিভঙ্গাদিকারণম্। অমৃত্যু চ যন লমেকং ব্ৰহ্ম সনতিনম্॥ প্রতিয়া পর্ময়। তম্ম প্রিয়কার্য্য-নিষেব্যা। উপাদ্যং তন্ময়া নান্যৎ স্থ ফং কিঞ্চন তদ্ধিয়া॥ यम। कम। প্রতিদিনং নাপন্নশেচন রোগবান। শ্রদ্ধাপ্রতিযুতং চিত্তং সমাধাস্যে তদেশ্বরে। সদস্কাননিরতো বিরতশ্চ তথা২সতঃ। সর্বদাহং ভবিষ্যামি প্রীণনায় পরাত্মনঃ॥ অজ্ঞানাদ্ যদি বা মোহাৎ কুর্য্যাং কর্ম্ম বিগর্হিতম্। তক্ষাদ্বিমৃক্তিমন্বিচ্ছন্ নাচরিষ্যামি তৎ পুনঃ ॥ প্রতিবর্ষে তথা চৈব মল্য হে শুভকর্মণি। দেয়ং ব্রাহ্মসমালায় প্রতিজ্ঞাতমিদং ময়া॥

ব্ৰন্ধোপাসনা।

ष्यक्रिना ।

ওঁ পিতা নোহিদি পিতা নো বোধি নমস্তে-হস্ত মা মা হিংসীঃ।

বিশ্বানি দেব সবিতছ্রিতানি পরাস্থব। যন্তদ্রং তম আহব।

নমঃ শস্তবায় চ ময়োভবায় চ নমঃ শক্ষরায় চ ময়ক্ষরায় চ নমঃ শিবায় চ শিবতরায় চ।

তুমি আমাদের পিতা, পিতার ন্থার আমাদিগকে জ্ঞান-শিক্ষা দাও; ডোমাকে নমস্কার; আমাকে মোহ পাপ হইতে রক্ষা কর, আমাকে পরিত্যাগ করিও না, আমাকে বিনাশ করিও না।

হে দেব। হে পিডা। পাপ সকল মার্জ্জনা কর। বাহা কল্যাণ ভাহা আমাদের মধ্যে প্রেরণ কর।

তুমি বে অ্থকর কল্যাণকর অ্থ কল্যাণের আকর, কল্যাণ ও কল্যাণভর, ভোমাকে নমস্কার।

S

প্রেশামঃ।

ওঁ যোদেবোগো যোহপ্স যোবিশ্বং ভুবনমা-বিবেশ। যওষধিষু যোবনস্পতিষু তদ্মৈ দেবায় নমোনমঃ।

বে দেবতা অগ্নিতে, যিনি জ্বলেতে, যিনি বিশ্ব সংসারে প্রবিষ্ট হইয়া আছেন; যিনি ওম্বিতে, যিনি বনস্পতিতে, সেই দেবতাকে বারবার নমস্কার করি।

সমাধানম্।

उँ मठाः छानमनसः बका।

আনন্দরপমমূতং যদ্বিভাতি।

भारूः भिवमदिष्ठम्। उध्यम्भागानभूमण्

বিনি আমাদের অফা, পাতা ও সর্ব-মুখ-দাতা— যিনি আমাদের জীবনের জীবন ও সকল কল্যাণের আকর—আমরা বাঁছার প্রসাদে শরীর, মন; বাঁছার প্রাাদে বৃদ্ধি, বল; বাঁছার প্রসাদে জ্ঞান ও ধর্ম লাভ

ত্রকোপাদনা।

করিভেছি,—ফিনি আমানের শরীর ও মন ও আত্মাকে নানাপ্রকার বিদ্ধ হইতে সর্ববাই রক্ষা করিভেছেন; ডিনি সভ্য-স্থরূপ, জ্ঞান-স্থরূপ, অনস্ত-স্থরূপ, পারবেক; তিনি আনন্দরেপে, অমৃত্রুপে প্রকাশ পাইতেছেন; ডিনি শাস্তু, মঙ্গল, অমৃত্রুপ্রি, অনন্ত্রমনা হইয়া প্রীতি-পূর্বক স্থীয় আত্মাকে সেই অদ্বিটায় মঙ্গলস্থরূপে স্যাধান করি।

ওঁ দপর্যগাচ্ছু ক্রমকায়মত্রণমন্নাবিরংশুদ্ধনপাপবিদ্ধন্য কবির্মনীধী পরিভূঃ স্বয়ভূর্যাথাতথ্যতোহর্থান্ ব্যদধাচ্ছাম্বতীভ্যঃ সমাভ্যঃ।
এত্সাজ্জায়তে প্রাণোমনঃ সর্বেজিয়াণি চ।
খং বায়ুর্জ্যোতিরাপঃ পৃথিবী বিশ্বস্থ ধারিণা।
ভয়াদস্যাগ্রিস্তপতি ভয়াতপতি সূর্য্যঃ। ভয়াদিক্রশ্চ বায়ুশ্চ মৃত্যুর্ধাবতি পঞ্চমঃ॥

ভিনি সর্বব্যাপী, নির্মাণ, নির্বয়ব, শিরা ও ত্রণ-রহিত, শুদ্ধ অপাপবিদ্ধ; ভিনি সর্ববদ্দী, মনের নিয়ন্তা; ভিনি সকলের শ্রেষ্ঠ এবং স্বপ্রকাশ; ভিনি সর্বকালে প্রাক্ষাদিগকে যথোপযুক্ত অর্থ-সকল বিধান করিভেছেন।

ব্ৰহ্মোপাসনা।

ইহাঁ হইতে প্রাণ, মন ও সমুদার ইন্দ্রিয় এবং আকাশ, বায়ু, জ্যোতি, জল ও সকলের আধার এই পৃথিবী উৎপন্ন হয়। ইহাঁর ভয়ে অগ্নি প্রজ্বলিত হইতেছে, ইহাঁর ভয়ে স্থ্য উত্তাপ দিতেছে, ইহাঁর ভয়ে মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, বায়ু সঞ্চলিত হইতেছে এবং মৃত্যু সঞ্চরণ করিতেছে।

ধ্যানম্।

ওঁ ভূভূবি: স্বঃ তৎসবিভূর্ববেণ্যং ভর্গোদে-বস্থ ধীমহি ধীয়োয়োনঃ প্রচোদয়াৎ।

সর্বলোকপ্রকাশক সর্বব্যাপী সেই পূর্ব-মঙ্গল জগং-প্রসবিতা পরম দেবতার বরণীয় জ্ঞান ও শক্তি ধ্যান করি, যিনি আমাদিগকৈ বুদ্ধিবৃত্তি সকল প্রেরণ করিতেছেন।

ভোত্ৰম্।

ওঁ নমস্তে সতে তে জগৎকারণায় নমস্তে চিতে সর্বলোকাশ্রয়ায়। নমেহ দৈততভাষ মুক্তি প্ৰদায় নমোত্রক্ষণে ব্যাপিনে শাশভায়। कृटमकः भवनाः वरमकः वरतनाः ত্বমেকং জগৎপালকং স্বপ্রকাশম্। ম্বমেকং জগৎকর্ত্তপাতৃপ্রহর্ত্ত ष्ट्रां कर भवर निक्तार निर्देशक हाम् ॥ ভয়ানাং ভয়ং ভীষণং ভীষণানাঃ গতিঃ প্রাণিনাং পাবনং পাবনানামু। মহোকৈঃ পদানাং নিয়ন্ত ত্রমেকং পরেষাং পরং রক্ষণং রক্ষণানাম্ম ৰয়ন্ত্ৰাং স্মরামো বয়ন্ত্রান্তজামো-বয়ন্তাং জগৎসাক্ষিরপং নমামঃ। সদেকং নিধানং নিরালম্বমীশং ভবাস্তোধিপোতং শরণ্যং ব্রজামঃ॥

তুমি সংস্থারপ ও জগতের কারণ এবং জ্ঞানস্থারণ ও সংলের আশ্রের, জোমাকে নমস্কার; তুমি মুক্তিদাতা, অন্তিতীয়, নিতা ও সর্বব্যাপী ত্রন্ধ, ভোমাকে নমস্কার। তুমিই সকলের আশ্রেয়ন্থান, তুমিই কেবল বরণীয়, তুমিই এক এই জগতের পালক ও অপ্রকাশ; তুমিই জগতের স্কিইভিপ্রশঙ্গরকর্তা; তুমিই সকলের প্রেষ্ঠ, নিশ্চল ও বিধাশুনা। তুমিই সকল ভয়ের ভর ও ভরানকের ভয়ানক; তুমিই প্রাণিগণের গতি ও পাবনের পাবন; তুমিই মহোচ্চ পদ সকলের নিয়ন্ত্রা, প্রেষ্ঠ হই-তেও প্রেষ্ঠ এবং রক্ষকদিগোর রক্ষক। আমরা ভোমাকে অরণ করি, আমরা ভোমাকে ভজনা করি, তুমি জগতের সাক্ষী, আমরা ভোমাকে নমস্কার করি। সত্যস্করপ, আশ্রা স্করপ, অবলম্বরহিত, সংসারসাগরের ভরণী, অহিতীয় স্থারের শ্রণপার হই।

প্রার্থনা।

ধে পরমাত্মন্। মোহক্ষত পাপ হইতে মুক্ত করিক্লা এবং দুর্মতি হইতে বিরত রাখিয়া, তোমার নিয়মিত ধর্ম পালনে আমাদিগকে বড়শীল কর এবং প্রদ্ধা ও প্রীতি পূর্ম্বক অহরহ তোমার অপার মহিমা এবং পরম মঙ্গল অরূপ চিন্তনে উৎসাহযুক্ত কর; বাহাতে ক্রেমে ভোমার সহিত নিত্য-সহবাস-জনিত ভূমানন্দ শাত করিয়া কুতার্থ হইতে পারি।

অদতোমা দলাময় তমদোমা জ্যোতিৰ্গময়

মৃত্যোর্মাধ্য তং গমর। আবিরাবীর্মাএধি রুদ্র যতে দক্ষিণং মুখং তেন মাং পাহি নিত্যম্।

অসং ছইতে আমাকে সংস্করণে লইরা বাও, অন্ধ-কার ছইতে আমাকে জ্যোভিঃস্বরণে লইরা বাও, মৃত্যু ছইতে আমাকে অমৃতস্বরণে লইরা বাও। ছে স্থ প্র-কাশ! আমার নিকট প্রকাশিত ছও। কন্দ্র! তোমার বে প্রসন্ন মুখ, তাহার দ্বারা আমাকে সর্বালা রক্ষা কর। ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ম্।

श्राधाय।

ওঁ ব্রহ্মবাদিনোবদন্তি। যতোবাইমানি
। । । -
ত্বানি জায়ন্তে। যেন জাতানি জীবন্তি। যৎ
। - । - । - । - ।

প্রেয়ন্তাভিদংবিশন্তি। তদ্বিজ্ঞাসম্ব তদ্বক্ষ।

আনন্দান্ত্যেব খলিমানি ভূতানি জায়ন্তে। আন্
নন্দেন জাতানি জীবন্তি। আনন্দং প্রয়ন্ত্যভি-

ا س

मःविশस्ति। यट्डावाट्डानिवर्ड्ट । व्यथाना मनमा मर। यानमः खन्नापिषान्। न विट्डिंड क्ड×हन। त्रारोद मः। त्रमः **८**हावाग्रः नक्रानन्तोखवि । कारहावाग्राः कः প्रान्तर्थ। यामध्याकामयानानान महार। এষহ্যেবানন্দরাতি। यদা হ্যেবৈষ এত প্রিন্ন দৃশ্যেই -नौरञ्चर्निकरक्रर्निलग्रत्भ्रञ्गः श्विष्ठीः विन्नर्छ। ষ্মাৰ্থ সোহভন্নং গতোভবতি। যতোবাচোনিব-র্তন্তে। অপ্রাপ্য মনসা সহ। আনন্দং ত্রহ্মণো-বিশান্। ন বিভেতি কদাচন। ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ওঁ।

बक्षवामिता वटमन।

যাঁহা হইতে এই ভূত-সকল উৎপন্ন হয়, উৎপন্ন হইয়া যাঁহার দ্বারা দ্বীবিভ রহে, এবং প্রালয়-কালে যাঁহার প্রক্রি গমন করে ও যাঁহাতে প্রবেশ করে; ভাহাকে বিশেষ-রূপে জানিতে ইচ্ছা কর, ভিনিই ভ্রেম।

আনন্দ-স্বরূপ পারত্রন্ধ হইতে এই ভূত সকল উং-পন্ন হয়, উংপন্ন হইয়া আনন্দ-স্বরূপ ত্রন্ধ কর্তৃক জীবিত রহে, এবং প্রলয়-কালে আনন্দ-স্বরূপ ত্রন্ধের প্রতি গমন করে ও তাঁহাতে প্রবেশ করে।

মনের সহিত বাক্য যাঁহাকে না পাইয়া যাঁহা হইতে নিবৃত হয়, সেই পর একোর আনন্দ যিনি জানিয়াছেন, তিনি আর কাহা হইতেও ভয় প্রাপ্ত হন না ॥ ৪ ॥

সেই পরমাত্মা রস-স্বরূপ তৃপ্তি-হেতু। সেই রস-স্বরূপ পরত্রক্ষকে লাভ করিয়া জীব আনন্দিও হয়েন।

কেবা শরীর-চেষ্টা করিত, কে বা জীবিত থাকিত, যদি আকাশে এই আনন্দ-স্থরণ প্রমাত্মা না থাকিতেন। ইনিই লোক সকলকে আনন্দ বিভরণ করেন।

বংকালে সাধক এই অদৃশ্য, নিবব্যব, অনির্বাচনীয়, নিরাধাব, পাবত্র:ক্ষ নির্ভয়ে স্থিতি করেন, তথন তিনি জ্ঞান্তয় প্রাপ্ত হয়েন।

মনের সৃহিত বাকা ধাঁহাকেন। পাইয়া ধাঁহা হইতে নিরুত হয়; সেই পরত্রেকোব আনন্দ যিনি জানি-য়াছেন, তিনি কদাপি ভয় প্রাপ্ত হন না।

এষাত্ত পরমা গতিরেষাত্ত পরমা সম্পং এবোত্ত পরমোলোক এষোহত্ত পরমম্বানন্দঃ। এতত্তৈবানন্দত্তানি মাত্রামুপজীবস্তি।

ইনি এই জীবের পরম গতি, ইনি এই জীবের প্রম সপ্পৃত্, ইনি ইহার প্রম লোক, ইনি ইহার প্রম আননদ। এই প্রমানন্দের কণামাত্র আননদকে অন্য অন্য জীব সকল উপভোগ করে।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ওঁ।

উপসংহারঃ।

ওঁ য একোহবর্ণোবহুধাশক্তিযোগাৎ বর্ণাননেকানিহিতার্থোদধাতি। বিচৈতি চান্তে শিমাদো সদেবঃ স নো বুদ্ধ্যা শুভয়া সংযুনক্তু॥

যিনি এক এবং বর্ণ হীন; এবং বিনি প্রজাদিশের প্রয়োজন জানিয়া বহুপ্রকার শক্তিবোগে বিবিধ কাম্য বস্তু বিধান করিতেছেন, সমুদায় ত্রন্ধাণ্ড আদ্যম্ভমধ্যে ধাঁহাতে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে, তিনি দীপ্যমান পরমে-শ্বর, তিনি আমাদিগকে শুভ বুদ্ধি প্রদান করুন। ওঁ একমেবাদিতীয়ন্।

উপনিষৎ।

ওঁতংগং

ব্রাহ্মধর্ম্যঃ

প্ৰথম খণ্ডম্। প্ৰথমোচধাৰিঃ।

- neo-

ওঁ ত্রহ্মবাদিনোবদন্তি॥ ১॥

'ওঁ ব্ৰহ্মবাদিনঃ বদস্কি'॥ ১ ॥ ব্ৰেহ্মবাদিরা বলেন ॥ ১ ॥

ব্ৰহ্ম জ্ঞান-রূপ স্বর্গীয় অগ্নি সকলেরই হৃদরে নিহিত আছে, সকলের আস্থাতেই ব্রন্ধের অনন্ত মঙ্গল-ভাব অবিনর্থর অক্ষরে লিখিত আছে। বিশ-কার্য্যের মালোচনা ঘারা ভাহা প্রজ্ঞাতিত করিলেই অনুত মঙ্গল-স্থরপ ঈশ্বরকে দর্শন পাই। তিনি আপনার বিশুদ্ধ মঙ্গল-রূপ এই তারৎ ভৌতিক পদার্থে এবং মন্থ্যের মানস-পটে মুদ্রিত করিয়া রাথিয়াছেন। যে সকল ভাগ্যবান্ সদৃদ্ধি-সম্পন্ন নিম্পাপ যত্নশীল মহাস্থা তাহা প্রতীতি করিতে সমর্থ হইয়াছেন,

5

তাঁহারাই একবিৎ এবং বাঁহারা এই রূপে প্রভীতি করিরা উপদেশ করেন, তাঁহারা এক্ষবাদী। এক্ষবিৎ ও এক্ষবাদী হইবার জন্ত দেশ-বিশেষ কি কাল-বিশেষ কি জাতি-বিশে-বের অপেকা নাই। সকল দেশীর এক্ষবাদিদিপেরই এক্ষ-বিষয়ে উপদেশ দিবার অধিকার আছে। ভারতবর্ষের পূর্বতন এক্ষবাদী ঋষিবা এক্ষবিষয়ে যে সকল ধর্ণার্থ তব ও আত্ম-প্রতায় সিদ্ধ সভ্যের উপদেশ করিয়া গিয়াছেন, তাহাই এই আক্ষধর্শের প্রথম থণ্ডে সক্ষলিত হইয়াছে। অতএব ইহার প্রথমেই আছে, যে "এক্ষবাদিরা বলেন"॥ ১॥

₹

যতো বা ইমানি ভূতানি জায়ন্তে যেন জাতানি জীবস্তি যৎ প্রয়ম্ভাভিসংবিশস্তি তদ্বি-জিজ্ঞাস্য তদ্বেকা॥ ২॥

'যতঃ' যন্ধাৎ 'বৈ' 'ইমানি ভূতানি জারতে' 'যেন' চ ডানি 'জাতানি' 'জীবন্ধি' প্রাণান্ ধারমন্তি অত্তে চ 'বং' বন্ধ 'প্রায়ন্তি' প্রতিগচ্ছন্তি 'অভিসংবিশন্তি' তমেব প্রতিপদ্যন্তে প্রাশ্নুবন্ধীতার্থঃ। 'তং' বিজিঞ্জাদন্ত' বিশে-বেণ জ্ঞাতুমিচ্ছন্ত 'তং ব্রহ্ম'॥ ২॥

যাঁহা হইতে এই ভূত-সকল উৎপন্ন হয়, উৎপন্ন হুইয়া যাঁহার দ্বারা জীবিত রহে, এবং প্রলয়-কালে, দাঁহার প্রতি গমন করে ও মাঁহাতে প্রবেশ করে; ভাঁহাকে বিশেষ-রূপে জানিতে ইচ্ছ। কর, তিনি তক্ষ ॥ ২ ॥

माँहा हरेए वह दावब अनम ममुनाब वश्च रहे इरेबाए, আবং গাঁহাকে আত্রন্ধ করিয়া তাহারা সকলে স্থিতি করি-তেছে, এবং বাঁহার ইচ্ছা হইলে তাহাদিগের এক কণা-মাত্রও থাকিতে পারে না; তিনিই ব্রহ্ম, তিনিই সত্য, তিনিই আমাদের প্রভু। দেই সর্বশক্তিমান প্রমেশ্বর সত্য কমি ও সত্য-সংকল ; তিনি বাহা ইচ্ছা করেন, তাহাই इस। य पूर्व श्रक्रायत मिक इहेरक करे मकन रख छिएनव হইয়া স্বীয় স্বীয় শক্তি লাভ করিয়াছে, ধদি তিনি তাহা-निगटक मश्रात कतियात रेक्टा करतन, তবে श्रीय श्रीय मिकत সহিত সেই সমুদ্র বস্ত তাঁহার শক্তিতে লয় হইয়া তাঁহাতেই পুন মার গদন করিবেক, তাহাদিগের চিত্রমাত্র কুত্রাপি पृष्टे इटेरदक ना। शृष्टे-चिकि-अनम-कर्छा क्वन धकमाज প্রমেশর। আমরা কভকগুলি বন্ধ প্রাথ হইলে তাহা-দিপের ঋণ অবগত হইয়া এবং তাহাদিগকে উপযুক্ত মত সংযোগ করিয়া কোন এক অপুর্ব যন্ত্র নিশ্রীণ করিতে পারি বটে, এবং তাহাকে পুনর্কার অনারাদে ভগ করিতেও পারি; किंद यामात्रमित्रंत अमन मेल्जि नाहे. य यामता अक त्त्रप् বানুকাকে সৃষ্টি করিতে পারি, অথবা এক রেণু বালুকাকে

ধ্বংস করিতে পারি। স্টি-স্থিতি-প্রলরের শক্তি কেবক একমাত্র কবিতীয় পরমের্বরৈতেই আছে ॥ ২ ॥

9

আনন্দাদ্যোৰ খলিমানি ভূতানি জায়ন্তে আনন্দেন জাতানি জীবন্তি আনন্দং প্ৰয়ন্ত্যভিসং-বিশন্তি ॥ ৩ ॥

'আলন্ধাং হি এব খলু ইমানি ভূতানি লায়ন্তে আন-ন্দেন জাতানি জীবত্তি আনন্দং প্রায়ত্তি অভিসংবিশক্তি'॥ ৩॥

আনন্দ-সরপ পরত্রক্ষ হইতে এই ভূত সকল উৎ-পদ্ধ হয়, উৎপদ্ধ হইয়া আনন্দ স্করণ ত্রক্ষ কর্তৃত্ব জীবিত রহে, এবং প্রলয়-কালে আনন্দ-স্বরূপ ত্রক্ষের প্রতি গ্রামন করে ও উক্ষাতে প্রবেশ করে॥ ৩॥

এই কৃষ্টি-ক্টি-প্রেৰ ই কর্তা নির্নিশেষ পরমেশরের কোন বিশেষ নাম নাই। যে সকল পূর্বতন এক্ষবাদিরা আপনার অন্তরে সেই নিরতিশর মহান্ সর্ববাপী সর্বপত্ত মঙ্গলমর প্রক্ষকে সাক্ষাৎ অন্তব করিয়া জ্জানিত বিমলা-নন্দ উপভোগ করিয়াছেন, তাঁহারা তাঁহাকে আনন্দ-শ্বরূপ বলিয়া ব্যক্ত করিয়াছেন। আমরাও যথন তাঁহার প্রেমে মগ্ল হইয়া আনন্দ-রসে দ্রব হই, তথন আমরাও তাঁহাকে আনন্দ-শ্বরূপ বলিতে থাকি॥ ৩॥

8

যতোবাচোনিবর্ত্তে অপ্রাপ্য মনদা দহ। আনন্দং ব্রহ্মণোবিদ্বান্ ন বিভেতি কৃতশ্চন ॥ ৪॥

> 'যতঃ বাচঃ নিবর্তস্তে অপ্রাপ্য মনসা সহ। আনন্দং বৃদ্ধান নি বিচেতি কুতশ্চন'॥ ৪॥

মনের সহিত বাক্য বাঁহাকে না পাইয়া বাঁহা হইতে নিরত হয়, দেই পরত্রন্ত্রের আনন্দ যিনি জানিয়াছেন, তিনি আর কাহা হইতেও ভয় প্রাপ্ত হন না॥ ৪॥

সেই অনন্ত জ্ঞান-স্বরূপ প্রমেশ্বর পরিমিত বস্তু নহেন, তিনি জড়ও নহেন এবং মনও নহেন, অতএব মন তাঁহাকে গ্রহণ করিতে পারে না; মন যদি তাঁহাকে গ্রহণ করিতে না পারিল, তবে বাক্যও স্থতরাং তাঁহাকে বলিতে পারে না। মন তাঁহাকে মনন করিতে গিয়া নির্ভ হয় এবং বাক্য তাঁহাকে বর্ণনা করিতে গিয়া নির্ভ হয়। সেই অনন্ত পুরুষকে কেবল মনের মন বলিয়া, বাক্যের বাক্যা বলিয়া, সকলের চেতনাবান্ কারণ ও আশ্রম বলিয়া, নির্দেশ করা যাইতে পারে। যিনি এই নির্বিশেষ সর্ক্র্বাণী আনন্দ-স্কর্পকে আপনাব অন্তরে সর্ক্রন্ধণ শাক্ষাৎ পাইয়া ভূমানন্দ উপভোগ করিতেছেন, তাঁহার সকল কামনীর পরিস্মাপ্তি হইয়াছে। তিনি আপনার প্রিয়তমের

সহবাসে পরিতৃপ্ত হইয়া আপ্ত-কাম হইয়াছেন। তিনি তাঁহার শরণাগত অনুগত দাস হইয়া তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধনেই তৎপর থাকেন। তিনি লোকাপবাদ, কি ছঃসছ অপমান, কি অনোগ্য তিরস্কার, কি ছনিবার অত্যাচার-ভয়ে তীত হইয়া তাহা হইতে কদাপি পরাঅ্থ হয়েন না। সেই প্রিয়তমের আজ্ঞাপালন জ্ঞা প্রাণ দেওয়া তাহার পকে অতি সহজ ব্যাপার অতএব তাঁহাকে কে আরু ভয় প্রাণ করিছে পারে ৷ তিনি আপনার প্রাণদাতার হস্তে প্রাণ অর্পণ করিয়া নির্জয় হইয়াছেন, সর্বসংহারক ভয়ানক মৃত্যু হইতেও তিনি ভয় প্রাথ হন না॥ ৪॥

¢

त्रारित मः । तमः ए त्रावागः नव्ध्वाननी-क्वि ॥ १ ॥

'রস:' আনন্দকরভৃপ্তিহেতু: 'বৈ' 'স:' পর আছা।
'রসং হি এব' 'অয়ং' জীব: 'লব্ধরা' গ্রাপ্য 'আনন্দী' স্থ্তী 'জবতি'॥ ৫॥

সেই পরমাত্মা রস-স্থরূপ তৃপ্তি-হেতু। সেই রস-স্থরূপ পরত্রহ্মকে লাভ করিয়া জীব আনন্দিও হয়েন। ধা

ৰে মঞ্জনময়ের প্রেম-রস লাভ করিয়া জীব প্রমানহর্দ

মগ্ন থাকেন, বাক্য তাঁহাকে আপনা হইতেই রদ-স্বরূপ বলিয়া উঠে॥ ৫॥

৬

কোহ্যেবান্যাৎ কঃ প্রাণ্যাৎ যদেষ আকাশ-আনন্দোন স্যাৎ। এষহ্যেবানন্দ্যাতি॥৬॥

'কঃ হি এব'লোকে 'জয়াং' চেষ্টাং কুর্য্যাৎ 'কঃ' বা 'প্রাণ্যাংশিঞ্জ্ঞাণনং কুর্যাৎ 'বং' বদি 'এবং' 'আকালে' 'আনলং' আনলক্ষপঃ পরঃ আত্মা 'ন স্থাং'। 'এবং' পর-মাত্মা 'হি এব' 'আনলদ্মাতি' আনন্দমতি স্থেমতি লোকং ধর্মান্থক্ষপন্য ৬॥

কেবা শরীর-চেষ্টা করিড, কেবা জীবিত থাকিড, যদি আকাশে এই আনন্দ স্বরূপ প্রমাত্মা না থাকিতেন। ইনিই লোক-সকলকে আনন্দ বিভরণ করেন॥ ৬॥

পর্মাত্মা থাকাতেই এই অনুপম লগং উংপন্ন হইনাছে এবং জীব-সকল জীবনের উপান্ন লাভ করিনাছে। তিনি না থাকিলে ইহার কিছুই হইত না। কোথান বা ভূলোক, কোথান বা এই সকল প্রাণিজ্জন কোথান বা তাহাদিগের ক্রিয়াকলাপ, কোথার বা অধ্বিভাগ্য থাকিত, যদি সর্বস্রেষ্ঠা, স্বান্ধান, মৃত্য-শ্বরূপ পর-

মেশ্বর এই জগৎ সংগার স্থজন না করিয়া এ প্রকার স্থানি-ষ্ম-প্রশালী সংস্থাপন না করিতেন। তিনিই লোক-সকলকে আন দ বিতরণ করেন। মঙ্গল-স্বরূপ বিশ্বপাতা আমা-দিগের সকলের স্থ্য উদ্দেশ করিয়া যাহাতে বে প্রকাব স্থ मः राज कतिया नियाद्यन, आमत्रा তाहा हहे एउटे मह প্রকার মুখ লাভ করিয়া কতার্থ হইতেছি। জগতের শোভা দর্শন, স্থাদ আয়ের রদাঝাদন, পিতামাতার মেহ ও বন্ধ-দিগের প্রণয় লাভ, জ্ঞান-শিক্ষা, ধ্যামুষ্ঠান, ইত্যাদি যে বস্তু চইতে যে উপায়ে যতপ্রকার মুখ লাভ করি, দকলই তাঁহা-রই প্রসাদাৎ; আহা। তাঁহার কি করণা। তিনি কেবল বিষয় দারা নানা প্রকার হথে প্রেরণ করিয়া ক্ষান্ত হন নাই, প্রার্থী হইলে তিনি স্বয়ং আপনাকেও প্রদান কবিয়া আমা-एनव खानरक भीउन करतन, मनरक पूर्व करवन, এवः ম্পাহাকে তপ্ত করেন। যে সকল শান্ত-প্রকৃতি ধীরেরা विषय-स्टाथ ज्ञा ना इहेबा अपूक्त जाहारक आर्थना करवन, তিনি অচিরাৎ হাণ্ড-ধানে আিভুত হইয়। তাঁহাদের नम्न-वृग्रालय (भौकम्प्रश्रे व्यक्त-म्कल मार्कन कर्यन, এवर अहत अमृ उ-वाति वर्षन कतिया जाहातरमत्र ७ क क्षत्र-भग्नरक বিক্সিত করেন। আহা। যিনি ক্ষণকালের নিমিত্তেও দেই অমৃত্যয় পূর্ণ পুক্ষকে আপনার অন্তরে দাক্ষাৎ পাইয়া বিমলানন উপভোগ ক্রিয়াছেন, তিনিই তাঁহার মহিমা खानिशाष्ट्रन ॥ ७॥

9

যদা হোবেষ এত শ্মিন্ন দুশ্যেই নাম্মেই নিরুক্তে-ইনিলয়নেই ভয়ং প্রতিষ্ঠাং বিন্দতে। অব সোই-ভয়ং গতোভবতি ॥ ৭ ॥

'বদা' যদ্দিন্ কালে 'হি এব' 'এবঃ' সাধকঃ 'এভস্মিন' 'অদৃশ্রে' অবিষয়ভূতে 'জনাস্থ্যে' অশরীরে 'অনিক্রন্তে' অবিশেষে বিশেষোহি নিক্রচাতে অবিশেষক ব্রহ্ম তন্মাদ-নিক্রন্তন্ম 'অনিলয়নে' আনাধারে ব্রহ্মণি 'প্রতিষ্ঠাং' স্থিতিম্ 'অভরং বথা সাং তথা 'বিন্দতে'। 'অথ' তদা 'সঃ' 'অভরং গতঃ ভবতি' অভয়ং প্রাপ্রোতি ৪৭॥

বৎকালে সাধক এই অদৃশ্য, নিরবরব, অনির্বচনীয়, নিরাধার, পরত্রকো নির্ভয়ে স্থিতি করেন, তথন ভিনি অভয় প্রাপ্ত হয়েন । ৭ ॥

বেমন শিশু সন্তানেরা ভর প্রাপ্ত হইলে মাতৃ-ক্রোড়ে বাইরা নির্জয় হয়, তজ্ঞপ আমরা সেই অমৃতময় প্রুষের সর্বজ্ঞ-প্রদারিত ক্রোড়কে আশ্রর করিয়া এই ভয়াকীর্ণ সংসারের ভয় হইতে পরিজ্ঞাণ পাই। তথন আমরা নির্ভয় হইয়া অদৃত্ত অথচ সকলের য়য়্টা, নিরাধার অথচ বিশ্বের আধার, সর্বাশ্রর, পরমেশ্বরকে একমাত্র হ্বছৎ ও সহায় জ্ঞানিয়া উহাত্তে আল্ব-সম্পূর্ণ করি, এবং তাঁহারই আজালু-

বর্ত্তী ধাকিরা অপ্রতিহত চিত্তে তাঁহার প্রদর্শিত পথে বিচ-রণ করিতে থাকি ॥ १ ॥

سكا

যতোবাচে নিবৰ্ত্তে অপ্ৰাপ্য মনদা দহ। আনন্দং ভ্ৰহ্মণোবিদ্বানু ন বিভেতি কলাচন ॥৮॥

'ৰত: ৰাচ: নিবৰ্ত্তে অপ্ৰাপ্য মনসা সহ। আনন্দং ব্ৰহ্মণ: বিঘান ন বিভেতি কলাচন'॥ ৮॥

মনের সহিত বাক্য বাঁহাকে না পাইয়া বাঁহা হইতে নিবৃত্ত হয়; সেই পরত্রন্ধোর আনন্দ যিনি জানি-য়াছেন, তিনি কদাপি ভয় প্রাপ্ত হন না॥৮॥

পর্মেশরের মঙ্গল-ম্বরূপে থাঁহার বিশ্বাস নাই এবং বিনি তাঁহার প্রকৃত অভিপ্রায় অবগত না থাকেন, তিনি অধ্তনীয় পরিপাটী শৃঙ্গোবদ্ধ জগতের মধ্যে থাকিরাও অদ্ধকারমর-আগার-স্থিত ব্যক্তির স্তায় নানা ভরে ভীত হন; কিন্তু থিনি পর্ম-মঙ্গলাকর প্রমেশরের মঙ্গল-জোতি বিশ্বংসারে বিকীর্ণ দেখিয়াছেন, তিনি কলাপি তর প্রাপ্ত হন না ॥ ৮॥

৯

এয়াস্ত পরমা গতিরেয়াস্য পরমা সম্পদেযো-

হস্ত পরমোলোকএযোহস্ত পরমন্দানদঃ। এত-স্থেবানন্দস্তাতানি ভূতানি মাত্রামুপজীবস্তি॥৯॥

'অস্য' জীবস্য 'এয়া 'পরমা গতিং' আনন্দরপং পরআবৈর পরমা গতিং। সর্কারাং সম্পদাং বিভ্তীনাং মধ্যে
'এষা অস্য পরমা সম্পং'। বেহত্তে কর্মফলাশ্রয়া লোকাতেত্ত্বস্যাপরমাং 'এয়ং' পরআত্মা ভূ 'অস্য পরমং লোকং'।
বাক্তক্তানি বিষয়েশ্রম্মজ্জনিতানি আনন্দ্রজাতানি ভাত্তপেক্ষ্য 'এয়ং অস্য পরমং আনন্দং'। 'এতস্য এব' 'আনন্দ্রস্য' আনন্দ্রস্য 'মাত্রাং' কলাং অংশং 'অস্তানি ভূতানি'
'উপজীবস্তি' অমুভবস্তি॥ ১॥

ইনি এই জীবের পরম গতি, ইনি এই জীবের পরম সম্পদ্, ইনি ইহার পরম লোক, ইনি ইহার পরম আনন্দ। এই পরমানন্দের কণামাত্র আনন্দকে অন্ত অন্ত জীব সকল উপভোগ করে॥ ১॥

বত প্রকার সদগতি আছে, তন্মধ্য পরমেশ্বরেই আমাদিগের পরম গতি; তাঁহাকে প্রাপ্ত হওরা পুণ্যের শেষ
প্রস্কার। বত প্রকার সম্পদ্ আছে, তন্মধ্যে পরমেশ্বর
আমাদের পরম সম্পদ্; এ সম্পদ্ধিনি লাভ করিরাছেন
উহিার আর কোন সম্পদকে সম্পদ্ধ বোধ হর না। বত

ষত লোক আছে, তল্পধ্যে পরমেশ্বর আমাদিগের প্রমাশ্রম্থরপ পরম লোক; তাঁছাতে বিনি বাস করেন, তিনি
আর কোন অনিত্য পরিমিত লোকের অন্থায়ী অপূর্ণ স্থথ
প্রার্থনা করেন না। যত প্রকার আনন্দ আছে, তল্পধ্যে
পরমেশ্বর-লাভ আমাদিপের পরমানন্দের বিষয়; এই ব্রদ্ধালাভ-জনিত পরমানন্দের তুলনায় জীবদিগের আর আর
সমুদায় আনন্দ এক কণা মাত্র, তথাপি সেই কণা-মাত্র আনক্রমেক উপভোগ করিয়া জীব-সকল জীবিত বহিয়াছে ॥ ১॥

षिजीदशांभ्थां सः।

30

ইদং বা অত্যে নৈব কিঞ্চিদাদীৎ। সদেব সোন্যেদমগ্রত্থাদীদেকমেবাদ্বিতীয়ম্। দবা এষ মহানজ আত্মাইজব্যোহমব্যোহমূতোভয়: ॥ ১॥

'ইদং' লগৎ 'বৈ' 'অতো' পুরা 'ন এব কিঞ্চিৎ সাদীং'। 'সং' অন্তিতামাত্রং ^{*}বস্ত নির্বিশেষং নিরবররং 'এব' হে 'সৌদ্য' প্রিরদর্শন 'ইদমঞে' অস্যাত্রে জগতঃ প্রাঞ্ৎপক্তেঃ 'बानोर' 'क्षक्रम्। क्षत्र' कना अक्ना नकः नहकातिकात्रशं हैंवेडीवर जनानिक्षक्रतः खाद्यः श्राक्षिपाटक 'जविद्यीवम्' हेडि। यद्यः नर्र 'नः दि क्षतः महान् जनः आश्रा जनतः व्यवः जन्नः जन्नः ग्रहः अक्तः'॥ >॥

এই জগৎ পুর্বে কিছুই ছিল না। এই জগৎ উৎপত্তির পুর্বেষ, হে প্রিয় শিষ্য! কেবল একই অদ্ধি-তীয় সংস্করণ পরত্রন্ধ ছিলেন। তিনি জন্ম-বিহীন, মহানু আত্মা; তিনি অজর, অমর, নিত্য ও অভয় ॥ ১ ॥

স্থির পূর্বে কেবল একমাত্র সং পদার্থ পরব্রদ্ধ ছিলেন, ভারির আর বিতীর বস্ত ছিল না; স্থাইর পরেও চেতনাচেতন সম্দর বৃত্ত কেবল এক মাত্র তাঁহারই আশ্রুরে স্থিতি করি-তেছে; এনিমিছে তিনি এক-মাত্র অহিতীর বলিরা উক্ত হইরাছেন। বিনি সংখরণ একমাত্র অহিতীর, তিনি তেতন পদার্থ; তিনি আপনাকে আপনি কানিতেছেন; এই হেতু তিনি আত্মা শব্দে উক্ত হইরাছেন। কিন্তু সেই আত্মা আমাদের আত্মার নাার ক্ষুত্র নহেন; ইহা জ্ঞাপন করিবার নিমিছে পরে উক্ত হইরাছে বে তিনি ক্স-বিহীন, মহান্ আত্মা; করুর, অমর, নিতা ও অভর। জীবাত্মা বেষন পরমাত্মার ইছোছে পরিবিত্ব শক্তি বারণ করিয়া তাঁহা হইছে জ্বিরাছে, এবং তাঁহারই ইচ্ছান্ত্র্যাহে

ভাহার দেই ইচ্ছা থাকিবেক, তাবং সে জীবিত রহিবে, পরমাত্মার স্বরূপ দেরপ নহে; তিনি স্বয়ন্ত্, স্বতন্ত্র এবং নিত্য ও পরিপূর্ণ॥ ১॥

>>

স তপোহতপ্যত স তপস্তপ্ত্ব। ইদত্থ সর্কাম-স্কৃত যদিদং কিঞ্চ ॥ ২ ॥

'সং' অজ আয়া 'তপং অতপাত' জগংস্টিবিবয়ামালোচনানকরোং। 'ৣ' আয়া 'তপং তপ্তা' এবমালোচ্য
প্রোণিকথাদিনিভিম্, 'ইদং সর্বাং' ভগৎ দেশতঃ কালতোনামা রপেণ চ 'অস্জত' স্টেবান্ 'বং ইদং কিঞ্চ' ষংকিঞ্চেদ্যনবনিষ্টিম্॥ ২॥

তিনি বিশ্ব-স্মৃদ্ধনের বিষয় আলোচনা করিলেন। তিনি আলোচনা করিয়া এই সমুদ্র যাহা কিছু স্থি করিলেন॥২॥

স্থানি পূর্বে গবত্রন্ধ ভিন্ন অন্ত কোন পদার্থ ছিল না, স্থানাং তিনি নির্মাতার ন্যায় অন্য কোন বস্তব সহায়তা গ্রহণ করিয়া স্থাই করেন নাই। তিনি স্থাই-ক্রিয়া-বিষয়ে আলোচনা করিলেন এবং আলোচনা করিয়া এই সমু-দল্প অগৎ-সংসার স্থাই করিলেন। আমরা মুং-পাষাণ-লোহাদি ঘারা জন্য-বিশেষ নির্মাণ করিতে পারি, কির্ম্ব

विठी द्यार था यः।

তাহাকে সৃষ্টি বলা যায় না। অন্ত কোন বস্তব সাহান্য 'হ্যাভিরেকে স্বীয় ইচ্ছা দারা কোন বস্তব উৎপাদন করার নাম স্থাটি। স্করাং আমাবদের কোন পদার্থ স্থাটি কবিবাব শক্তি নাই। স্থাটি কবিবাব শক্তি কেবল এক প্রমায়ারই আছে, তিনি একাকী কেবল আপনার স্বাভাবিক জ্ঞান-শক্তি-ক্রিয়া দারা চেতনাচেত্রন সমস্ত বস্তু স্থাটি কবিয়া এই আশ্চর্য্য বিশ্ব-যন্ত্র নির্মাণ করিয়াছেন। ২॥

25

এতস্মান্তায়তে প্রাণোমনঃ সর্কেন্দ্রিয়াণি চ। খং বায়ুর্জ্যোতিরাপঃ পৃথিবী বিশ্বস্য ধারিণী॥এ॥

'এত আং' পুক্ষাং 'জায়তে' উৎপদাতে 'প্রাণঃ' এবং 'মনঃ' 'দর্কেন্দ্রিয়ানি চ' দর্কানি চ ইন্দ্রিয়ানি। তথা 'থং' আকাশঃ 'বাযুং' 'জ্যোতিঃ' অগ্নিঃ 'আপঃ' উদকং 'পৃথিবী' 'বিশ্বদা' দর্কাদ্য ধারিনী'॥ ৩॥

ইছাঁ ছইতে প্রাণ, মন ও সমুদায় ইন্দ্রিয় এবং আকাশ, বায়, জ্যোতি, জল ও সুকলের আধার এই পৃথিবী উৎপন্ন হয়॥ ৩॥

জল, বায়, অথি প্রভৃতি বিধনির্দাণের সকল উপকবণ এবং প্রাণ, মন ও সমুদয় ইক্রিয়, কেবল সেই সর্কশক্তিমান্ প্রপৃত্র পুরুষই আপন ইচ্ছাতে সৃষ্টি করিলেন॥ ৩॥

20

ভয়াদদ্যাগ্রিস্তপতি ভয়াত্তপতি দূর্য্যঃ। ভয়াদিক্রণ্চ বায়ুশ্চ মৃত্যুর্ধাবতি পঞ্চমঃ॥৪॥

'ভরাৎ' ভীত্যা 'অস্য' প্রমেশ্বস্য 'অগ্নিঃ তপ্তি', 'ভয়াৎ তপতি ক্র্য্য'। 'ভরাং ইক্র: চ বারু: চ মৃত্যু: ধাব্তি পঞ্চম:'॥ ৪॥

ইহাঁর ভয়ে অগ্নি প্রজ্বালিত হুইভেছে, ইহাঁর ভয়ে হুর্যা উত্তাপ দিভেছে, ইহাঁর ভয়ে মেঘ ও বাযু ও মৃত্যু ধাবিত হুইভেছে॥৪॥

সর্কনিয়য়া পরমেশবের ইচ্ছার অমুগত হইয়া অমি উত্তাপ দিতেছে, হুর্যা প্রকাশ পাইতেছে, মেব বারি বর্ষণ করিতেছে, বারু সঞ্চলিত হইতেছে, এবং মৃত্যু সঞ্চরণ করিতেছে। কোন পদার্থ তাঁহার ইচ্ছা, তাঁহার শাসন, অতিক্রম করিতে পাবে না; চক্র হুর্যা, এই নক্ষত্র, জল, বাযু, ইহাবা জড় পদার্থ হইয়াও তাঁহার তয়ে মাম কর্মে ধ্বিমান হইতেছে॥ ৪॥

তৃতীয়ো श्यां यह ।

78

তৰিজানার্থ স গুরুমেবাভিগচ্ছেৎ। তব্ম স বিদ্যানুপসনায় সম্যক্প্রশান্তিচিতায় শ্মা-বিতায় যেনাক্ষরং পুরুষং বেদ সত্যং প্রোবাচ তাং তত্তাে অক্ষবিদ্যাম্॥ ১॥

নিত্যেন,মৃতেনাভয়েন কৃটত্থেনাচলেন প্রবেণার্থী সন্
'সং' ব্রক্ষিক্সান্থ: অভয়ং শিবমমৃতং ব্রক্ষ বং 'ত দ্বিজ্ঞানার্ধ'
তদ্য বিশেষণাধিগমার্থ: 'শুকং' আচার্যাং ব্রক্ষজিজ্ঞাসবে
'দ বিষান্' গুক্র ক্ষবিং 'উপদলায়' উপগতায় 'দম্যক্
প্রশাস্তিভায়' উপরতকামজ্ঞোধানিনোষায় 'শমান্বিতায়'
শমেন ইন্দ্রিয়চাঞ্চল্যরহিতেন চ যুক্তায় 'বেন' বিজ্ঞানেন
য়য়া বিদ্যয়া পরয়া 'অক্ষরং' অক্ষরত্বাং 'পুক্ষং' পূর্ণবাং
'সত্যং' পারমার্থ্যাভাব্যাং 'বেদ' জানাতি 'তাং' 'ব্রক্ষবিদ্যাং' 'ভক্তঃ' যথাবং 'প্রোবাচ' প্রক্রয়াং ॥ ১ ॥

পরত্রকোর বিশেষ জ্ঞান শাভার্যে আচার্য্য সন্নিগানে শিষ্য গমন করিবেন। সেই জ্ঞানাপন্ন আচার্য্য উপস্থিত শিষ্যকে সম্যক্ শাস্ত্র শমান্বিত-চিত্ত দেখিয়া বে বিদ্যা দ্বাবা অকর সভ্য পুক্ষকে জানা যায়, ভাষার উপদেশ করিবেন । ১ ॥

সকলের কর্ম্বা, মনকে সংবত করিয়া প্রাণাম্ভ হইয়া গর্মজ-বিষয়ে উপদেশ প্রাপ্তির নিমিত্তে অন্ধবিং গুরুর নিকটে গমন করেন; এবং সেই গুরুর কর্ম্ববা যে, যে জাতীর, যে কোন শাস্ত ব্যক্তি অন্ধ-জিজ্ঞান্ত্র ইইরা তাঁহার নিকট আগমন করেন, তিনি তাঁহাকে ব্যাবং উপদেশ প্রাণান করেন, তাহাতে অবহেলা না কবেন। ১॥

36

অপরা ঋথেদো যজুর্বেদ: সামবেদো হথবিপ্রবদ: শিক্ষা কল্পো ব্যাকরণং নিরুক্তং ছলে। জ্যোতিষমিতি অথ পরা যয়া তদক্ষরমধিগম্যতে ॥২॥
'অপরা' অশ্রেষ্ঠা বিদ্যা 'ঋথেদ: বজুর্বেদ: সামবেদ:
সংগ্রেষ্টের্ডা ক্রেষ্ট্রের্ডা বেলাং। 'শিক্ষা কলং ব্যাক্ত

च्या चित्रा चित्रा चित्रा चित्रा चित्रा चित्रा चार्यकः नामरवनः च्यायक्त्रं दिवरः हेट्डाट्ड हवाट्या दिवरः। 'चित्रा कञ्चः वाक्रं वर्गः निक्रकः हनः क्यां ियम् हेडि' च्यां चित्रा चित्रा 'च्यां 'ज्यां 'उद्यक्ता चित्रा 'यम् 'ज्यां च्यां च

भरपन, रक्ट्र्सन, मामर्यन, व्यवस्थिन, लिका, कल्ला,

ব্যাকরণ, নিম্ন্তন, ছন্দঃ, জ্যোতিষ, এ সমূদয় অত্রেষ্ঠ বিদ্যা। বাহার দারা অক্তর পুরুষকে জানা বায়, ভাহাই প্রেষ্ঠ বিদ্যা ॥ ২ ॥

পরমেখরের স্বরূপ ও অভিপ্রায় বিবয়ক জানলাভ মহুবোর পরম পুক্ষার্থ। বে বে বিদ্যা অধ্যরন করিলো সেই পরম প্রার্থনীর জ্ঞান-রত্ন লাভ করা বার তালাই প্রেক্ত-বিদ্যা—ভাহাই শ্রেষ্ঠ বিদ্যা; আর আর সমুদার অপ্রেচ বিদ্যা। এ কারণ ঋক্, বজুং, সাম, অথর্কা, শিকা, করা, ব্যাকরণ, নিরুক্ত, ছলং ও জ্যোতিষ্, এ সমুদার অশ্রেষ্ঠ বিদ্যা বলিরা উক্ত হইরাছে। ঋক্ যজুং সাম প্রভৃতির বে যে ভাগ এবং অভাত্ত যে সকল বিদ্যা ব্রহ্ম-বিবয়ক ষ্থার্থ তত্ত্বের উপদেশ করে, তাহাই শ্রেষ্ঠ বিদ্যা, তাহা স্ক্রিদাধারণের শিক্ষণীয় ॥ ২॥

30

যত্ত্বদ্রেশ্যমগ্রাহ্যমগোত্ত্রমবর্ণমচক্ষুংশ্রোত্তং ভদপাণিপাদং নিত্যং বিভুণ্ড দর্ব্বগতণ্ড স্লুস্ক্রং ভদব্যয়ং যদ্ভুত্যোনিং পরিপশ্যন্তি ধীরাঃ॥ ৩॥

ভদক্ষরং বিশিন্টি 'বৎ তৎ' ইতি বক্ষ্যমাণং বৃদ্ধী সংস্কৃত্য সিদ্ধবং প্রামূণতি। 'অদ্রেশ্যম্' অদৃশ্যং সর্ব্বোং বৃদ্ধীতিদ্বাণাং ন গ্র্যাম্ 'অগ্রাহ্যং' কর্মেলিদ্বাবিষয়ং 'অগ্রোক্তং"

যিনি জানেন্দ্রিয়ের অবিষয়, কর্মেন্দ্রিয়ের শ্বতীত, জন্মরহিত, রূপ-রহিত, চক্ষু:-শ্রোত্রে বিহীন; সেই হস্ত-পদ শৃত্য, জন্ম-মৃত্যু-বহ্জি 5, সর্বব্যাপী, সর্বব্যত, জাতি শ্রম স্বভাব, দ্বাদ রহিত, সর্ব্ব ভূতের কারণ পরত্তক্ষকে শীরেরা সর্বতোভাবে দৃষ্টি করেন। ৩।।

তিনি স্টির অতীত পদার্থ, চক্ষু ঘারাও দৃশ্য হন না, হন্ত ঘারাও প্রাহ্ম হন না, তিনি কোন ইন্দ্রিয়েরই গোচর নহেন; তথাপি অক্ষপরারণ ধীরেরা সেই সর্বভ্তের কারণকৈ এই স্টির মধ্যে স্বতিভাতারে উপলব্ধি করেন। ও।

39

এতবৈ তদকরং গার্গি ব্রাক্ষণা অভিবদস্তি। অসুলমনণুহ্রস্বদীর্ঘমলোহিত্যস্থেহ্যচ্ছায়ম্ভ্রো- ২বাযুনাকাশমসক্ষরসমগন্ধমচজুক্মশ্রোত্রমবাগ-িমনো২তেজক্ষমপ্রাণমসুধ্যমাত্রম্॥ ৪ ॥

'এতৎ বৈ তং' ন করতীতি 'অকরং' হে 'গার্গি'। গার্গী নাম কাচিৎ ব্ৰন্ধজিজাত্ব: তদ্যা: সম্বোধনং বৎ বান্ধণাঃ অভিবদস্তি'। 'অসুলং' তৎ সূলাদন্তং ভৰ্হি অণু ন তৎ 'अन्त्' अब जर्रि इषः न 'अङ्घः' এवः जर्रि नीर्घः नाशि नीर्धः 'অদীর্ঘং' এতৈশ্ভুর্জিরিশেষণে: পরিমাণং প্রভিষিদ্ধ। 🗪 🗷 তৰ্হি লোহিত্তগুৰ্বিশিষ্টং ততোহপ্যন্যৎ 'অলোহিডং' ভবতু তর্হি অপাং সেহনং ন 'অঙ্গেহং' অস্ত তর্হি ছায়া সর্বাধাদানি-ৰ্ফেশাতাৎ ছায়ায়া অপানাৎ 'অফায়ং' অন্ত ভৰ্ছি ভৰঃ 'बरुप,' खर्जू रायुष्टर्शि 'बरायू:' जरवर्खर्शि आकान: 'अना-কাশং' ভবতু তর্হি সঙ্গাত্মকং 'অসঙ্গং' রদোহস্ত তর্হি 'অরসং' ুতথা 'অগরম্' অস্ত ভহি চকুকং 'অচকুকং' নহি চকুরদ্য করণং বিদ্যতে পশাতাচকুরিতি তথা 'অশ্রোত্রং' স্ব **मृ**र्गाठाकर्ग हेि । खरकू छिं ग्रांक् 'स्रांक्' उभी 'অমনঃ' 'অতেজ্বম্' অবিদ্যমানং তেজোহ্দ্য ন হাগ্যা-मिट्ड क्वां वस्त्र क्विन् एउ। भातीत्रकः श्वां वर्गस्ः श्रां छि-বিধাতে 'অঞাণং' ন হৃদ্য মুখমিতি 'অমুখং'। মীয়তে र्यन जन्माबः न रजन किकिन्नोबरङ 'ञनावम्' ॥ 8 ॥

६६ भार्ति । बाक्तरनत्रा शैषाटक अध्वतानय कदत्रकः

তিনি এই অবিনাশী একা। তিনি সুক নহেন, তিনি আনু নহেন, তিনি ছুস্ব নহেন, তিনি দীর্ঘ নহেন; তিনি আলোছিত, অস্ত্রেহ, অচছায়, অতমঃ, অবায়ু, আনাকাশ, অসঙ্গ, অরস, অগন্ধ, অচফু, অকর্ন, অবাকৃ; তিনি মনোবহীন, তেজোবিহীন, শারীরিক-প্রাণবিহীন, মুথবিহীন, কাহারো সহিত তাঁহার উপমা হয় না ॥ ৪॥

তিনি স্থা নহেন, তিনি অণু নহেন, তিনি হস্ত নহেন, তিনি দীর্ঘ নহেন; ঠাহাতে কোন পরিমাণ নাই। তিনি অংশত, তাঁহাতে রক্তাদি কোন বর্ণ নাই। তিনি অংশত, তিনি জাীয় বস্ত নহেন; তিনি অবাযু, বায়বীয় পদার্থও নহেন; তিনি রসও নহেন, তিনি গদাপ জড় নহেন। এ সকল বাহু জড় বস্তুর স্থভাব। তিনি কদাপি জড় নহেন, স্কুর্বাং এ সকল কিছুই তাঁহাতে নাই। তিনি যেমন জড় বস্তু নহেন, সেইরপ আমারদিগের ন্যায় জড়-শরীর-বিশিষ্টও নহেন, তাঁহাতে শারীরিক প্রাণ নাই এবং তাঁহার মুখাদি অঙ্গও নাই। আমারদিগের বেমন শরীর আর মনেতে পরস্পর সম্বন্ধ আছে এবং এই সম্বন্ধ জন্য বেমন আম্রা দর্শন করি, শ্রেণ করি, বাক্য কহি; পর্থেশ্ব ভেমন শরীর-মন মিশিত কোন জীব নহেন, স্কুরাং আমারদিগের ন্যায় তিনি চক্ষু হারা দর্শন করেন না, এবং মুখু শ্বারাও বাক্য কহেন না;

তিনি অচকু: , অকর্ণ, অবাক। তিনি মনোবিহীন, তিনি (मह्भुना मन अनरहन, छाँशाट मत्न कार्या कि हूरे नारे। তিনি অসঙ্গ, সাংসারিক স্থা ছ: খে লিপ্তা নছেন। তিনি মদি कंछ ३ नरहन এবং मन ३ नरहन, তবে তিনি कि ছोग्रा कि अब-কার কি আকাশের ন্যায় কোন অবপ্ত হইবেন ? না. তিনি ছায়া কি অন্তকার কি আকাশের ন্যায় কোন অবস্ত নহেন: তিনি নিতা স্থা বস্তু,তিনি অন্ত স্থাপ জ্ঞান-স্থাপ, তাঁহার স্থিত কাহাবে। উপনা হয় না। জড় হইতে বেমন মন শ্ৰেষ্ঠ, মন হটতে তদ্ধা দেই জ্ঞান স্বৰূপ প্ৰমায়া আনম্ভ গুণে শ্রেষ্ঠ। তাঁহার জ্ঞান, স্বষ্ট মান্দিক জ্ঞানেব ন্যায় নহে: স্তানক্রিয়া ঠাহার স্বভাবসিদ। কোন বস্তু জানিবার জন্য (नहे म स क भूकरविव हे जिया आंद छ क करव ना ; भूर्स बुखा छ জানিবাব নিমিত্তেও তাঁহার স্মৃতি-শক্তি আবশ্রক হয় না। তিনি এক কালে সমুদয় বস্ত জানিতেছেন। আমার্দিগের ন্যায় তাহার ক্রোধও নাই, বেমও নাই, ঘুণাও নাই, শোকও नारे এবং আমারদিগের ন্যায় তাঁহার দ্যাওনহে, স্বেহও नटर, (अभ ९ नटर, इर्ष ९ नटर। जिनि मन्न न न न जैरा । সেই মঙ্গল ভাবের অন্তর্ভু স্বেহ, ক্ষণা, প্রীতি, তাঁহা হইতে বহমান হইয়া জগৎকে সিক্ত রাখিয়াছে; তিনি ष्पामात्रिमिश्व मानिक तु छि नाम् , ममा, (अह, ध्यमरक व्यनक গুণে শতিক্রম করেন; আমারদিগের প্রেম অন্ত প্রেমের কণামাতা ॥ ৪ ॥

76

এতস্য বা অক্ষরস্য প্রশাসনে গার্গি সূর্য্যা-চক্রমসৌ বিপ্লতো তিষ্ঠতঃ॥ ৫॥

ব্ধা রাজ্ঞ: প্রশাদনে রাজ্যমক্টুটিতং নিয়তং বর্ততে থবং 'এতস্য বৈ অক্ষরদ্য প্রশাদনে' হে 'গার্গি' ক্র্যান্চ তক্সমান্চ 'ক্র্যাচক্রমদেট' অহোরাঅয়োল্লে কিপ্রদীপৌ লোক প্রয়োজনবিজ্ঞানবতা নির্মিতেট 'বিয়তেট' 'তিষ্ঠত:' বর্ততা। ধা

এই অক্ষর পু্রুবের শাসনে, হে গার্গি! স্থা চক্র বিধৃত হইয়া স্থিতি করিতেছে॥ ৫॥

তাঁহার শাসনে স্থ্য সৌর জগতের মধ্যহিত হইরা প্রদীপবৎ তাহার অন্ধর্কী ভ্লোক ও গ্রহাদি অন্যান্য লোককে স্বীয় জ্যোতি ছারা প্রকাশ করিতেছে, স্বীর শক্তি ছারা তাহারদিগকে নিজ নিজ পথে আরুষ্ট করিয়া রাখিয়াছে এবং তেজ বিতরণ ছারা পশুপক্যাদি জন্ত ও মুক্ষ লতাদি উদ্ভিক্ষের জীবন ধারণ করিতেছে। সক-লের রমণীর স্থাংশু চক্রও তাঁহারই নিয়মে বদ্ধ থাকিয়া শ্ন্য-পথে বিচরণ করিতেছে এবং প্রতি রজনীতে নৃতন নৃত্বন বেশ ধারণ করিয়া সকলের অস্ত:করণ প্রফুল করি- তেছে ও স্বীয় মনোহর আলোক প্রদান দারা উদ্ভিজ্জদিগকে সতেজ ও সজীব রাখিতেছে॥ ৫॥

38

এতস্য বাৎক্ষরস্য প্রশাসনে গার্গি দ্যাবা-পৃথিব্যো বিধ্বতে তিষ্ঠতঃ॥ ৬॥

'এতস্য বৈ অক্ষরস্য প্রশাসনে' হে 'গার্গি' দ্যোশ্চ পৃথিবী চ 'দ্যাবাপৃথিব্যো' 'বিশ্বতে' 'তিষ্ঠতঃ'। এতদ্ধাক্ষরং সর্ব্ধব্যবস্থাসেতৃঃ সর্ব্ধমর্য্যাদাবিধরণম্। অতোনাক্ষরস্য প্রশাসনং দ্যাবাপৃথিব্যাবতিক্রমিতৃং শকুতঃ॥ ৬॥

এই অক্ষর পুৰুষের শাসনে, ছে গার্গি! ছ্যুলোক ও ভুলোক বিধৃত হইয়া স্থিতি করিতেছে॥ ৬॥

ভূলোক ভিন্ন স্থা চক্র গ্রহ নক্ষত্রাদি অভাভ যত জ্যোতির্বিশিষ্ট লোক, সমুদায়ের সাধারণ নাম হ্যালোক। আমারদের পদতলে যে এই ভূলোক, এবং মন্তকের উপরে যে হ্যালোক, সকলই সেই মঙ্গলস্বরূপ বিশ্বপাতার প্রশাসনে নিম্নত স্থিতি করিতেছে। তাহাদের এক কণামাত্রও তাঁহার নিম্নমের বহিভুতি হইতে পারে না॥ ৬॥

२०

এতস্য বাজকর্ম্য প্রশাসনে গার্গি নিমেষা-

মুহূর্ত্তাঅহোরাত্রাণ্যদ্ধমাদামাদা ঋতবঃ সংবৎ-সরাইতি বিধৃতান্তিষ্ঠন্তি॥ ৭॥

'এতস্য বৈ অক্ষরস্য প্রশাসনে' হে 'গার্গি' নিমেষাঃ
মুহুর্জাঃ অহোরাতানি অর্জনাসাঃ মাসাঃ শ্বতবঃ সংবৎসরাঃ
ইতি' এতে কালাবয়বাঃ 'বিধৃতাঃ তিঞ্জি' ॥ १॥

এই অক্ষর পুরুষের শাসনে, ছে গার্গি! নিমেষ, মুহুর্ত্ত, অহোরাত্ত, পক্ষ, মাস, ঋতু, সংবৎসর; সমুদায় বিধৃত হইয়া স্থিতি করিডেছে॥ १॥

কালে কালে বে সমুদায় ঘটনা ঘটতেছে, তাহা তাঁহা-বই নিয়মে ঘটতেছে, তাঁহার অনতিক্রমণীয় নিয়মের বহি-ভূত হইয়া বল্ল-মাত্র ঘটনাও ঘটতে পারে না॥ ৭॥

23

এতস্য বাসক্ষরস্য প্রশাসনে গার্গি প্রাচ্যো-ন্থানদ্যঃ স্যন্দন্তে খেতেভ্যঃ পর্বতেভ্যঃ প্রতী-চ্যোন্যাঃ॥৮॥

তথা 'এতস্য বৈ অক্ষরস্য প্রশাসনে' হে 'গার্গি' 'প্রাচ্যঃ' প্রাগঞ্চনাঃ পূর্বাদিগরমাঃ 'নদ্যঃ' 'সান্দস্তে' প্রবৃত্তি 'খে-তেভাঃ' হিমবদাদিভাঃ 'পর্বতেভাঃ' গিরিভাঃ 'প্রতীচ্যঃ' প্রতীচিদিগরনাঃ 'অন্যাঃ' নদ্যঃ সান্দক্তে বহুভাঃ পর্বন

ডেড্য:। তান্তা নদ্যোধধা প্রবর্ত্তিতা এবং নিয়তা: প্রব-র্ত্তিকে । ৮॥

এই জক্ষর পুরুষের শাসনে, হে গার্গি! অনে-ফানেক পুর্ববাহিনী পশ্চিমবাহিনী নদী খেত পর্বত-সকল হইতে স্যান্দমান হইতেছে ॥ ৮ ॥

পরম মগল্য পরমেশরের নিয়মে বেগবতী নদী-সকল
জুষারাবৃত উচ্চ উচ্চ পর্মত হইতে নিঃস্ত এবং প্রবাহিত
হইরা অসংখ্য জীবজন্তদিগের অতি উপকাবিণী ও
কল্যাণদায়িনী হইয়াছে। দৃষ্টিবহিভূতি কোন অপরিজ্ঞাত
পর্মতের কোন অনির্দিষ্ট স্থানে যে জলরাশি সঞ্চিত হয়,
আমরা তাহা হইতে শত শত যোজন দ্রে থাকিয়াও তাহা
অনায়াসে প্রাপ্ত হইতেছি॥৮॥

२२

যোবাএতদক্ষরং গার্গ্যবিদিত্বাহিম্মিন্ লোকে জুহোতি যজতে তপস্তপ্যতে বহুনি বর্ষসহস্রাণ্য-স্তবদেবাদ্য তন্তবতি॥ ৯॥

'বং বৈ' 'এতদক্ষরং' হে 'গার্গি' 'অবিদিয়া' অবিজ্ঞায়
'অন্মিন্ লোকে জুহোতি যজতে তপত্তপ্যতে' যদ্যপি
'বহনি বর্ষসহস্রাণি' তথাপি 'অন্তবং এব অস্য' 'তং' ফলং
'ভবতি' ॥ ৯ ॥

ह गार्गि! (व वाक्ति धरे व्यवनानी श्रुक्यत्क ना জানিয়া যদিও বহু সহস্র বৎসর এই লোকে হোম যাগ তপদ্যা করে, তথাপি দে স্থায়ী ফল প্রাপ্ত হর না ॥ ৯॥ মঙ্গল-স্বরূপ প্রমেশ্বরকে হাদয়ে সাক্ষাৎ জানিয়া তাঁহার সহিত প্রীতি ভাব নিবদ্ধ করিতে হইবে, জানিয়া শুনিরা তাঁহার কার্য্যে যোগ দিতে হুইবে: তবে তাঁহার সহবাস-জনিত অনম্ভ ফল লাভ করা যায়। তাঁহাকে না জানিয়া অন্যমনত্ব ও বিষয়াসক্ত হইয়া বাহু আড্ত্ররের সহিত দিবারাত্র তাঁহার উপাসনা করিলেও, বা লোক-রঞ্জন রুথা যাগ যজ্ঞ ক্রিয়া-কলাপে শরীর ও মনকে নিপাত कतिरुख. अथवा मान मर्गाना यनः कीर्डि প্রাপ্তির আশ্বাদে আপনার যথা-সর্বাস্থ বিভরণ করিয়া দিলেও ঈশ্বরের সহিত ভাহার কিছুমাত্র সম্বন্ধ নিবদ্ধ করা হয় না, স্থতরাং তাহার অনন্ত ফল লাভ হয় না। যে ব্যক্তি প্রমেশ্রের জ্ঞান লাভ পূর্বক এবং তাঁহাকে প্রীতি পূর্বক তাঁহার প্রিয় কার্য্য সম্পাদন করিবার উদ্দেশে তাঁহার প্রতিষ্ঠিত ধর্মাচরণ করেন, তাঁহাতে ধর্মের সমুদয় লক্ষণ প্রাপ্ত হয় এবং তিনি व्यनस्य कांग भर्गास्य भन्नम व्यार्थनीय व्यक्तम विकासम छेन-ভোগ কৰিতে থাকেন ॥ ৯ ॥

२०

যোবাএতদক্ষরং গার্গ্যবিদিত্বাম্মালোকাৎ

প্রৈতি স কুপণঃ। অথ ষএতদক্ষরং গার্গি বিদিত্বাম্মাল্লোকাৎ প্রৈতি স ভ্রাহ্মণঃ॥ ১০॥

'থ: বৈ এতৎ জক্ষরং' হে 'গার্গি' 'অবিদিঘা অসাৎ লোকাৎ প্রৈক্তি' 'দঃ' 'রুপণঃ' পণক্রীতইব দাসঃ। 'অথ ঘঃ এতৎ অক্ষরং' হে 'গার্গি' 'বিদিঘা অসাৎ লোকাৎ প্রৈতি' 'দঃ রাক্ষণঃ'॥ > •॥

হে গার্গি! যে ব্যক্তি এই অবিনাশী পুৰুষকে দা জানিয়া এ লোক হইতে অবস্ত হয়েন, তিনি হুণাপাত্র অভি দান। আর যিনি এই অবিনাশী পুৰুষকে জানিয়া এ লোক হইতে অবস্ত হয়েন, তিনি ভাকা॥ ১০॥

ভূমগুলে যাবতীর জীব আছে, তমধ্যে কেবল মহুষ্ট মান্ধ-জ্ঞান-লাভে অধিকারী। পরাৎপর পরমেম্বরকে এবং তাঁহার প্রতিষ্ঠিত ধর্মসমুদারকে জানিবার অধিকার আছে বলিয়াই মহুষ্য-নামের এত গৌরব হইয়াছে। যিনি এই পরমোৎকৃষ্ট মহুষ্য-জন্ম প্রাপ্ত হইয়াও তাঁহাকে জানিতে না পারিলেন, তাঁহার অপেকা হতভাগ্য আর কে আছে? পরম-প্রীতি-ভাজন পরমেম্বরকে উপলব্ধি করিয়া যে অনি-র্ব্রিনীয় আনন্দ অমুভূত হয়, তাহার স্বাদ-গ্রহেও যিনি সমর্থ না হইলেন, তাঁহার অপেকাও দীন আর কোন ব্যক্তি! তিনি রূপাপাত্র অতি দীন। তাঁহার জন্ম তাঁর-বাহক পশু-জন্ম। আর দিনি তাঁহাকে জানিয়া এ লোক হইতে প্রস্থান করেন; তিনি পরম ভাগ্যবান্, তিনি মহুষ্য-দিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, তিনিই ব্রাহ্মণ ৪১০ ॥

₹8

তদাএতদক্ষরং গার্গদৃষ্টং দ্রষ্ট্রপ্রুত্তত প্রো-ত্রমতং মন্ত্রবিজ্ঞাতং বিজ্ঞাত্তেতিশ্মন্ন্ থলকরে গার্গ্যাকাশওতশ্চ প্রোতশ্চ ॥ ১১ ॥

'তং বৈ এতং অক্ষরং' হে 'পার্গি' 'অদৃষ্টং' ন কেনচিৎ
দৃষ্টং অবিষয়ত্বাং স্বন্ধন্ত 'দ্রষ্ট্র' তথা 'অক্ষতং' প্রোত্তদ্যাদ বিষয়ত্বাং স্বন্ধন্ত 'ল্রোত্' তথা 'অনতং' মনসোহবিষয়ত্বাং স্বন্ধন্ত 'মন্ত্র' তথা 'অবিজ্ঞাতং' বুদ্ধেরবিষয়ত্বাং স্বন্ধন্ত 'বিজ্ঞাত্'। 'এতস্মিন্ উ ধলু অক্ষরে' হে 'পার্গি' 'আকাশঃ' 'ওতঃ চ প্রোতঃ চ' সর্ক্তোব্যাপ্তইত্যর্থং ॥ ১১॥

হে গার্গি! এই অবিদালী পুক্ষকে কেছ দর্শন করে নাই, কিন্তু ভিনি সকলই দর্শন করেন; কেছ তাঁহাকে প্রুভিনি সকলই প্রাবণ করেন; কেছ তাঁহাকে মনন করিভে সমর্থ হয় নাই, কিন্তু ভিনি সকলকেই মনন করেন; কেছ তাঁহাকে জ্ঞাত হয় নাই, কিন্তু ভিনি সকলকেই মনন করেন; কেছ তাঁহাকে

জাকাশ এই অবিনাশী পরমেশ্বরেতে ওতপ্রোত্ত-ভাবে ব্যাপ্ত রহিয়াছে। ১১॥

আমরা দর্শন শ্রবন মনন প্রেকৃতি যাবতীর ব্যাপার ছারা
হাহা কিছু জানিতে পারি, ভাহা তিনি জানিতেছেন; এবং
আমরা যাহা না জানিতে পারি, ভাহাও তিনি জানিতেছেন;
কিন্তু তিনি কাহারও দর্শন শ্রবণ মনন বিজ্ঞানের বিষয়
নহেন। তিনি আপনাকে আপনি বেমন জানিতেছেন,
তেমন করিয়া তাঁহাকে আর কেহই জানিতে পারে না;
অনত্ত-স্বরূপকে বৃদ্ধি বৃবিয়া অন্ত করিতে পারে না। এই
অনত্ত অক্ষর পুরুষের ছারা আকাশ ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে;
এমত স্থান নাই, যেখানে এই সর্কব্যাপী পরমেশ্বর
নাই॥ ১১॥

20

ভীষাহস্যাদাতঃ পবতে ভীষোদেতি সূর্য্যঃ। ভীষাহস্মাদগ্রিশ্চেন্দ্রশ্চ মুতুর্দ্ধাবতি পঞ্চমঃ॥১২॥

'ভীষা' ভয়েন 'অসাং' ব্রহ্মণঃ 'বাতঃ প্রতে' 'ভীষা উদেতি স্বাঃ'। 'ভীষা অসাং অমিঃ চ ইন্দ্রঃ চ মৃত্যুঃ ধার্বতি পঞ্চমঃ'। নির্মেনাস্থ ব্রহ্মণোমহার্হাঃ বাতাদয়ঃ প্রশাদিকার্যেরু নির্ম্তরং প্রবর্তম্ভে॥ ১২॥

ইহাঁর তয়ে বায়ু প্রবাহিত হইতেছে; ইহাঁর তয়ে

স্থা উদর ছইভেছে; ইহাঁর ভয়ে অগ্নিও মেঘ ও মৃত্যু ধাবিত হইতেছে॥ ১২॥

সেই মকলাকর অক্ষর পুরুষের শাসনে বায়, ক্র্যা, আমি, মেদ, মৃত্যু প্রভৃতি সকলে মিলিয়া এই জগভের উপ-কার-সাধনে নিয়ত প্রবৃত্ত রহিয়াছে॥ ১২॥

३७

যদিদং কিঞ্চ জগৎ দৰ্বাং প্রাণএজতি নিঃ-স্থতং। মহন্তমং বজ্ঞমুদ্যতং যএতদ্বিত্রমৃতাত্তে ভবস্তি॥ ১৩॥

'যথ' 'কিঞ', 'ইনং' 'জগৎ সর্কাং' 'প্রাণে' পরশিন্

য়ক্ষণি সতি 'এজতি' কম্পতে নিয়মেন টেইতে অতএব
'নিঃস্তং' নির্গতম্। যদেব জগছৎপত্যাদিকারণং ব্রক্ষ

ছং 'মহত্তরং' মহচ্চ তৎ ভয়ঞ্চ বিভেত্যক্ষাদিতি 'বঞ্জং
উদ্যতং' উদ্যভমিব বজ্ঞং। যথা বজ্ঞোদ্যতকরং স্থামিনমভিম্পীভূতং দৃই। ভূত্যা নিয়মেন তচ্ছাদনে প্রবর্ত্তরে তথেদং চক্রাদিত্যগ্রহনক্ষত্াদিলক্ষণং জগৎ নিয়মেনাবিশ্রাস্তং
বর্ততে ইত্যক্তং ভবতি। 'বে' 'এতং' স্বাক্ষপ্রবৃত্তিসাক্ষিভূতং একং ব্রন্ধা 'বিছঃ' বিজ্ঞানন্তি 'অমৃতাঃ' অমরণধর্মাণঃ
'তে ভবস্তি'॥ ১৩॥

এই প্রাণ-স্বরূপ পরমেশ্বরের অধিষ্ঠান প্রযুক্ত তাঁহা

ইইতে নিঃস্ত এই সমস্ত ত্রন্ধাও যথা-নির্দিষ্ট নিয়মে শ্রবিক্তিত রহিয়াছে। তিনি উদ্যত বজুের ফ্রায় মহা-ভয়ানক। বাঁহারা ইহাঁকে জানেন, তাঁহারা অমর হয়েন। ১৩।

পরমেশর এই জগতের প্রাণ; তাঁহা হইতে সকলে উংপদ্ম হইয়া এবং একমাত্র তাঁহাকেই অবলম্বন করিয়া সকলে
জীবিত রহিয়াছে। কেহই তাঁহার ইচ্ছাকে অতিক্রম
করিতে পারে না, সকলেই তাঁহার শাসনে আপন আপন
কর্মে নিযুক্ত রহিয়াছে। যে ব্যক্তি পাপে আসক্ত হইয়া
তাঁহার প্রতিষ্ঠিত ধর্ম্মসেতু লজ্মন করিতে প্রবৃত্ত হয়, তাহার
নিকটে তিনি উদ্যত বজ্ঞের ন্যায় মহা-ভয়ানক হয়েন।
যাঁহারা এই পরমেশ্বরকে জানেন, তাঁহারা অমের হয়েন
ও অক্ষয় ব্রহ্মানন্দ উপভোগ করেন॥ ১৩॥

চতুর্থোইধ্যায়ঃ।

29

শ্রোত্রস্থ শ্রোত্রং মনসোমনোযদ্বাচোহবাচম্। স্ট প্রাণস্থ প্রাণস্কর্ষশ্চক্ষুঃ॥ ১॥

'শ্ৰোত্ত শ্ৰোত্ৰং' অন্তি বিষদ্ব্দিগদ্যং সৰ্কান্তরতমং

কৃটস্থমজনমমূতনভন্নমজং শ্রোত্তস্যাপি শ্রোতাং ওৎসামর্থ্য-নিমিত্তমিতি তথা 'মনসং মনং' 'যং' ব্রহ্ম। 'বাচং হ' 'বাচং' বাক্ তথা 'সং উ প্রাণস্য প্রাণং' তথা 'চক্ষ্যং চক্ষ্যং'॥ ১॥

যিনি শ্রোত্তের শ্রোত্ত, মনের মন, বাক্যের বাক্য; তিনি প্রাণের প্রাণ, চক্ষুর চক্ষু॥ ১॥

পরমেশর হইতেই চকু, শ্রোত্র, বাগিঞিয়, মন, প্রাণ, আপন স্নাপন শক্তি লাভ করিয়াছে এবং তাঁহার আশ্রের থাকিয়াই তাহারা সেই দকল শক্তিকে স্ব স্ব কার্য্যে নিয়োগ করিতে পারিতেছে; অতএব তিনি শ্রোত্রের শ্রোত্র, মনের মন, বাক্যের বাক্য, প্রাণের প্রাণ, ও চকুর চকু বলিয়া উক্ত হইয়াছেন। তিনি যেমন চকুর চকু কিছু স্বয়ং চকু নহেন, শ্রোত্রের শ্রোত্র কিছু স্বয়ং শ্রোত্র নহেন, তক্রপ মনের মন কিছু স্বয়ং মন নহেন। তিনি স্পরিমিত জ্ঞানস্বরূপ। তিনি সকলের কারণ ও আশ্রয়॥ ১॥

24

ন তত্ত্ব চক্ষুৰ্গচ্ছতি ন বাগ্গচ্ছতি নোমনোন বিদ্যোন বিজ্ঞানীমোষবৈতদসুশিষ্যাৎ। অন্তদেব তদ্বিদিতাদধে৷ অবিদিতাদধি। ইতি
শুশ্রুম পূর্বেষাং যে নস্তদ্ব্যাচচক্ষিরে॥ ২॥

যন্ধাৎ শ্রোত্রাদেরপি শ্রোত্রাদি ব্রহ্ম অতঃ 'ন' 'তত্র'
শ্রিন্ ব্রহ্মনি 'চকুং গছেতি' তথা 'ন বাক্ গছেতি' অভিধ্রেং প্রতি বাগ্গছেতি ব্রহ্ম তু অনভিধেয়মতোন বাক্
গছেতি 'নোমনঃ' গছেতি। ইক্রিয়মনোভ্যাং হি বস্তুনোবিজ্ঞানং তদগোচরত্বাৎ 'ন বিশ্বঃ' তৎ ব্রহ্ম। ইত্যতঃ 'ন
বিজ্ঞানীক্রঃ' 'বধা' যেন প্রকারেণ 'এতং' ব্রহ্ম 'অন্থশিষ্যাৎ'
উপদিশেৎ শিষ্যায়। 'অন্যৎ' পৃথক্ 'এব' 'তৎ' প্রকৃতং
ব্রহ্ম 'বিদিতাৎ' জ্ঞাতাঁৎ বস্তনঃ 'অথা' অপি 'অবিদিতাৎ'
অজ্ঞাতাৎ 'অবি' ইত্যুপর্য্যর্থে অন্যৎ; 'ইতি' 'গুঞ্ম' শ্রুতবন্তোবয়ং 'পূর্বোবাং' আচার্য্যাণাং বচনং 'নে' আচার্যাঃ
নিঃ' অন্মভ্যং 'তং' ব্রহ্ম 'ব্যাচচন্মিরে' ব্যাখ্যাতবন্তঃ বিস্পৃষ্টং
ক্ষ্থিতবন্তঃ ॥ ১ ॥

তিনি চক্ষুর গাম্য নহেন, বাক্যের গাম্য নহেন, এবং
মনেরও গাম্য নহেন। আমরা তাঁছার বিশেষ কিছুই
জানি না; এবং ইছাও জানি না, যে কি প্রকারে
তাঁছার উপদেশ দিতে হয়। তিনি বিদিত কি অবিদিত তাবং বস্তু হইতে ভিন্ন। যে সকল পূর্ম পূর্ম
আচার্য্যেরা আমারদিগকে ক্রেল-বিষয় ব্যক্ত করিয়া
কহিয়াছেন, তাঁছারদিগের সন্ধিগনে এই প্রকার শুনিক্লাছি ॥ ২॥

যিনি চক্ষর চক্ষু হইরাও চক্ষুর অগোচর, বাক্যের বাক্য হইরাও বাক্যের অগোচর, মনের মন হইরাও মনের অগো-চর, তাঁহার বিষয়ে উপদেশ এই মাত্র, যে তিনি বিদিত কি অবিদিত তাবং বস্তু হইতে ভিন্ন। আমাদিগের নিকটে যত বস্তু বিশেষ-রূপে বিদিত আছে, তিনি তাহার কিছুই নহেন এবং যত পরিমিত স্পষ্ট বস্তু অবিদিত আছে, তাহারও তিনি কিছুই নহেন। তিনি বিদিত কি অবিদিত সম্দর পরিমিত বস্তুর স্প্রিক্তা, আশ্রম্পাতা ও নির্ক্ষহিতা ও সকলের অন্তর্গত, এবং সকল হইতে ভিন্ন ও স্বতন্ত্র। পূর্ব্ব পূর্ব্ব আচার্যাদিগেরও এই উপদেশ॥ ২॥

২৯

যদ্বাচানভ্যদিতং যেন বাগভ্যুদ্মতে। তদেব ব্ৰহ্ম স্থং বিদ্ধি নেদং যদিদমুপাসতে॥৩॥

'বং' ত্রন্ধ 'বাচা' 'অনভ্যদিতং' অপ্রকাশিতং 'যেন'
ব্রন্ধণা 'বাক্' বিবন্ধিতেহর্থে 'অভ্যদ্যতে' প্রকাশ্যতে
প্রযুক্ষ্যতইত্যেতং। 'তং' এব ভ্নাথাং 'ব্রন্ধ' 'বিদ্ধি'
বিদ্ধানীহি 'ঘং'। 'ন ইদং' ব্রন্ধ 'যং' 'ইদং' ইন্দ্রিশ্বমনোগ্রাহং দেশকাদপরিচ্ছিয়ং 'উপাসতে'॥ ৩॥

যিনি বাক্যের বচনীয় নছেন, বাক্য যাঁহার স্বারা প্রেরিভ হয়, তাঁহাকেই তুমি ত্রন্ধা বলিয়া জ্ঞান; লোকে যে কিছু পরিমিত পদার্থের উপাসনা করে, তাহা কখন ত্রন্ধ নহে॥৩॥

বাক্য বাঁহা হইতে কহিবার শক্তি পাইরাছে, তিনি ব্রহ্ম। তাঁহার অধিষ্ঠানে বাক্য প্রকাশিত হয়, কিন্তু বাক্য ছারা তিনি প্রকাশিত হন না। লোকে এই বলিয়া নির্দেশ করত যে সকল পরিমিত পদার্থের উপাসনা করে, তাহা তিনি নহেন। কেহ কেহ জল বায়ু, অয়ি শিলা, পশু পক্ষী, রক্ষ লতার উপাসনা করে, কেহ বা চক্র স্থ্য গ্রহ নক্ষত্রের উপাসনা করে, কেহ মনঃক্রিত্ত দেব দেবীর প্রতিম্র্তিব উপাসনা করে, কত লোকে অসামান্য ক্মতাপন্ন মহুষ্যবিশেষকে ঈশ্বরাবতার জ্ঞান করিয়া উপাসনা করে; কিন্তু ই ব্রহ্ম নহে। ইহাদের উপাসনাতে ব্রক্ষের উপাসনা হয় না॥ ৩॥

90

যশ্মসা ন মন্তুতে যেনাহুৰ্মনোমতম্। তদেৰ ব্ৰহ্ম স্থং বিদ্ধি নেদং যুদিদমুপাসতে ॥৪॥

'বং' মনসোহবভাগকং ব্রহ্ম 'মনসা' 'ন' 'মফুতে' সহ্বর-রতি 'মনঃ' 'বেন' ব্রহ্মণা 'মতং' : বিষয়ীকৃতং 'আছঃ' কথ-রস্তি ব্রহ্মবিদঃ। 'তং এব' মনসোমনঃ 'ব্রহ্ম' 'বিদ্ধি' 'ছং'। 'ন' 'ইদং' ব্রহ্ম 'বং ইদং' পরিচ্ছিরং 'উপাসতে' ॥ ৪ ॥ ভক্ষবিৎ আচার্যোরা কছেন; লোকে মনের দ্বারা বাঁহাকে মনন করিতে পারে না, বিনি মনের প্রত্যেক মননকে জানেন, তাঁহাকেই ত্রন্থ বলিয়া জান; লোকে বে কিছু পরিমিত পদার্থের উপাসনা করে, তাহা কখন ভক্ষ নহে ! ৪ !!

পরিমিত পদার্থকেই মন মনন করিতে পারে; কিন্তু আনস্ক-জ্ঞান-স্কর্মণ যে ব্রহ্ম, তাঁহাকে মন কি প্রকারে মনন করিবে? তিনি মনের বিষয় নহেন; সেই পূর্ণ-স্করপকে কেহ মনন করিতে পারে না, কিন্তু তিনি সকলকেই মনন করেন। তিনি আমারদিগের সমুদয় ভাব, সমুদয় ইছো, সমুদয় কর্ম্মের সাক্ষি-স্করপ; তাঁহার নিকটে অল্কলার কুক্মের আছেয় করিতে পারে না এবং অপবাদও সং কর্মান করিতে পারে না ॥ ৪ ॥

25

যদি মন্তদে হুবেদেতি দক্তমেবাপি মৃনং স্থং বেথ ব্রহ্মণোরূপন্॥ ৫॥

অহং স্থ নি বলেতি প্রতিপতিঃ মিবৈর ওলেবেই প্রতিপাদিতং 'বদি' কদাচিৎ 'মন্তদে' 'স্বেদ ইতি' অহং ব্রু স্থ বেদেতি 'দ্রুং' অলং 'এব অপি নৃনং' 'দ্বং' 'বেশ' স্থানীদে 'ব্রুগঃ রূপম্' ৪ ৫॥ ধদি এখন মনে কর, বে আমি একাকে স্থানর-রূপে জানিয়াছি, ওবৈ নিশ্চর তুমি একোর স্থারপ অভি অপপই জানিয়াছ। ৫।

ধিনি মনে করেন, আমি ব্রহ্মকে স্থলর-রূপে জানি-য়াছি. তিনি প্রক্ষের বিষয় অতি অন্নই জানিয়াছেন ; কারণ हैश डीशांत जाना हब नाहे. (१ अनल-यंत्रेश उन्नाद क्रमत-ক্রপে জানা যায় না। তিনি হয় তো ইক্সকে কোন মূর্তিমান পদার্থ-ভূসা বোধ করিয়া তপ্ত আছেন: কিন্তা তাহা হইতে যদি ফল বুঝিয়া থাকেন, তবে দেহ-শুক্ত পরিমিত মনের মত কোন পদার্থ বোধ করিয়া থাকিবেন। जिनि क्लांशि हेश झानिए शास्त्रन नाहे. ए जैशाब मंबीय व नाहे. अवर मन अ नाहे। छाहाय मंबीय शिकितन তিনি প্রত্যক্ষের বিষয় হইতেন এবং মন পাকিলেও মনের গ্রাহ্ হইতেন। অনেক লোক এমন আছেন, যে ব্রন্ধের र्य भनीत नारे. जारा विश्वाहन: किन्न जारात रय मन নাই, তাহা স্পষ্টরূপে বুঝিতে পারেন নাই। তাঁহার। त्रहे चक्र-मूक्-मनष्ठ-क्रान-यक्र्या পরিমিত মনের বৃত্তি-नकन चार्त्रांभ करत्रन : छाहात्रा मरन करत्रन, य छाहात्र কোধ আছে, তাঁহার বেষ আছে, তাঁহার স্বেহ আছে, তাঁহার করণা আছে, তাঁহার পক্ষপাতিতা আছে। তাঁহাতে এই সকল মনের ধর্ম থাকিলে তাঁহাকে স্থলর-ক্লপে জানা

ষাইত : স্থতরাং বাঁহারা মনে করেন, যে তাঁহাকে স্থলক-রূপে জানিয়াছি, তাঁহারা তাঁহাতে এই সকল মনের ধর্ম এবং তন্মধ্যে যাঁচার। স্থলদর্শী, তাঁহারা তাঁহাতে শরীরের ধর্ম আরোপ করেন। মন যে বস্তু, তাহা প্রত্যক্ষেত্র অগোচর, অতি ফুল বস্তু: ইহা হইতে ফুল বস্তু ধিনি, হাঁহাতে মনেরও কোন ধর্ম নাই, তাঁহাকে আমরা কি প্রকারে স্থন্দর-রূপে জানিতে পারি। এই সমুদক क्र १९-८को भटनत काद्रण यिनि, छाँ हात्र व्यवना कान व्याह्न, किछ त्र खान कि खामामात्र मानिषक खानित छो। পরিমিত ? দেই অনস্ত জ্ঞানকে আমরা আমাদের ক্র বৃদ্ধি দারা কি সায়ত্ত করিতে পারি ? তিনি এই জগৎ সৃষ্টি করিয়াছেন, এবং অদ্যাপি রক্ষা করিতেছেন, স্বতরাং প্রতীতি হইতেছে. যে তাঁহার স্কন ও রক্ষণের শক্তি আছে; কিন্ত সে শক্তি কি আমারদের শক্তির ন্যায় পরিমিত প তাঁহার দেই অচিন্তা শক্তি কি আমরা মনেতে ধারণা क्तिएं शांति १ विनि এই एष्टित मक्तात निर्मिष्ठ क्या. মেহ. প্রেমের সৃষ্টি করিয়াছেন, জাহার প্রেম কি স্মানারদি-গের এই কুন্ত মানসিক প্রেমের ন্যার ? সেই সভ্য স্থলর-নগণস্কপের ছরবগাহ গম্ভীর প্রেনে কোন ব্যক্তি বৃদ্ধি নিবেশ করিতে পারে ॥ ৫॥

৩২

নাহং মত্তে স্থবেদেতি নো ন বেদেতি বেদ

है। योनखद्दम छद्दम तो न व्यक्ति विकास

'न कहर मत्नां ऋंदिन' अक 'हेकि' दैनदर छर्डि विनिटर कता अस्मकूरक काह 'त्नां न दन हेकि' द्यदेनद्वि 'द्यह ह' दना। 'दा' कन्किए 'नाः' कक्षांकर मद्या 'खए' केस्कर वहनर कक्षकः 'दनन' मा 'खए' अक्ष 'दनन'। किर श्रूनक कनिमिट्याह 'दना म द्यानकि दनन ह' हैकि॥ ७॥

णामि जक्षरक खुम्बत-त्राण जामिश्राहि, अमन मतन कति ना । जामि जक्षरक रव ना जानि अमरना मरह, ज्ञानि रव अवरना मरह। "व्याप जक्षरक रव ना ज्ञानि अमरना नरह, ज्ञानि रव अमरना नरह" अहे वारकात मर्च विनि ज्ञावादिरभेत मर्था ज्ञारनन, जिनिहे छाँशारक ज्ञारमन ॥ ७॥

শ্বামি প্রস্নাকে ধে দা জানি এমনও নাছ'' অর্থাৎ জামি ধে প্রজ্ঞের ভাব একেবারে কিছুই জানিতে পারি নাই, এমত লহে, জামি জান-প্রসাদে তাঁহার জনাদ্যক্ত-পূর্ব-ভাব, ভীহার সভ্য-প্রস্তাহ-জাল-ভাব প্রভীতি দ্বাহাছি, কিছ পরিনিত পদার্থের ন্যার বিশেষ করিয়া তাঁহাকে বৃদ্ধির জায়ত করিতে পারি নাই। বিনি বিশুদ্ধ-জান-নেত্র হারা ভাঁহাকে 'সাকাৎ দেখিয়া তাঁহার পূর্ণ-ভাব জানিয়াছেন, তিনি এই বচনের মর্ম সমাক্ রূপে ব্ঝিয়াছেন ॥ ৬ ॥

99

যস্তামতং তম্ত মতং মতং যস্ত ন বেদ[†] সঃ। অবিজ্ঞাতং বিজ্ঞানতাং বিজ্ঞাতমবিজ্ঞানতাম্ ॥৭॥

'যদ্য' ব্ৰহ্মবিদঃ 'অমতং' অৰিজ্ঞাতং অবিদিতং ব্ৰহ্মতি 'তদ্য' 'মতং' জ্ঞাতং সম্যক্ ব্ৰহ্মেত্যভিপ্ৰায়ঃ। 'বদ্য' পুনঃ 'মতং' জ্ঞাতং বিদিতং ময়া ব্ৰহ্মেতি নিশ্চয়ঃ 'ন' ব্ৰহ্ম 'বেদ' বিশ্বানাতি 'দঃ'। 'অবিজ্ঞাতং' অমতং অবিদিত্তমৈৰ ব্ৰ 'বিশ্বানতাং' স্বাক্ বিদিত্বতামিত্যেতং। 'বিজ্ঞাতং বিদিতং ব্ৰহ্ম 'অবিজ্ঞানতাং অসম্যক্ষিনাং॥ ৭॥

বাঁহার এরণ নিশ্চর হয়, বে আমি ত্রক্ষ - করণ আনি নাই, তাঁহারই ত্রক্ষকে জ্যানা হইয়াছে। আর বাঁহার এরপ নিশ্চয় হয়, বে আমি ত্রক্ষ ক্ষরণ জানিয়াছি, তাঁহার ত্রক্ষকে জানা হয় নাই। উত্তয় জ্ঞানবানু ব্যক্তির বিশাস এই, বে আমি ত্রক্ষ - ক্ষরপ জ্ঞানি নাই; বে ব্যক্তি জ্ঞানবান্নহে, তাহার এই বিশাস, বে আমি ত্রক্ষ - ক্ষরপ জ্ঞানিবান্ নহে, তাহার এই বিশাস, বে আমি ত্রক্ষ - ক্ষরপ জ্ঞানিয়াছি॥ ৬॥

ব্রন্ধের শ্বরূপকে আমরা আমারদের পরিমিত সূত্র

বৃদ্ধির ছারা বিশেষ করিয়া বে বৃদ্ধিতে পারি না, ইহা বৃদ্ধিলেই তাঁহার অনাদ্যস্ত-পূর্ণ-শ্বরূপ জানা হইল। বে জ্ঞানবান্
পূক্ষ স্বীয় বিশুদ্ধ জ্ঞান-নেতা ছারা সেই সত্য-স্থান্তর পূর্ণ-ভাব প্রত্যক্ষবৎ প্রতীতি করিয়াছেন, তিনিই জানেন
বে তাঁহার ভাবের অন্ত পাওয়া যার না ॥ १ ॥

98

ইহ চেদবেদীদথ সত্যমস্তি ন চেদিহাবেদীশহতী বিনষ্টিঃ। ভূতেযু ভূতেযু বিচিন্ত্য ধীরাঃ
প্রেত্যাম্মালোকাদমৃতাভবন্তি ॥ ৮॥

'ইহ' এব 'চেং' যদি সমুষ্যঃ 'অবেদীং' বিদিতবান্
যথোক্তলকণং এক 'অথ' তদা 'অন্তি' 'সত্যং' পরমার্ধতঃ।
'ইহ' জীবন্ 'চেং' যদি 'ন' 'অবেদীং' বিদিতবান্ 'মহতী'
দীর্ছা 'বিনষ্টিঃ' বিনশনং। জন্মাদেবং গুণদোষে বিজ্ঞানপ্তঃ
'ভূতেমু ভূতেমু' স্থাবরেমু চরেমু চ একং একা 'বিচিন্তা'
বিজ্ঞায় সাক্ষাৎকৃত্য 'ধীরাঃ' ধীমস্তঃ 'প্রেক্তা' উপরম্য 'অন্থাৎ
লোকাং' 'অমৃতাঃ দ্রবন্তি'॥ ৮॥

এখানে তাঁহাকে জানিতে পারিলে জন্ম সার্থক হয়, না জানিতে পারিলে মহান্ অনর্থ উপস্থিত হয়; অত-এব ধীরেরা স্থানর জন্ম সমুদায় বস্তুতে একমাত্র পর- भिष्यत्व छेललक्कि कतिया थ लाक हरेट अवस्थ हरेये। अध्य हर्यस्य ॥ ॥

বদিও আমারদিগের কুত্র বৃদ্ধি ত্রেমের শ্বরণকে পরিমিত भेगार्षित मात्र विश्व कतिया चात्रक कतिराज भारत मा. তথাপি আমরা বৃদ্ধির ভূমি সহজ জ্ঞান বারা সকল কারণের कांत्र ७ मक्न कांशांत्रत मृनांशांत এवर मक्न मन्नलब निमान-कुछ वनिश्र छाँशांत्र शूर्व यक्तन-कावत्क निःगःभवत्रत्भ প্রতীতি করিরা থাকি। জীবাদ্ধা ক্ষীণ-পাপ ছইরা সেই 'अन्द-चत्रभ क्षेत्रि-चत्रभ मक्रन-चत्रभटक क्रांभमात करार সকলের আশ্রয়-রূপে সাক্ষাৎ উপলব্ধি করিতে পারে। এই প্রকারে এই পৃথিবীতেই থাকিয়া ভাঁহাকে জানিতে शाबित बन्न गार्थक रन्। छीरात्क बाना भारतका आमात्र-দিগের অন্মের দার্থকা আর কিসে হইতে পারে ? তিনি যে আমার্দিগকে তাঁহাকে জানিবার অধিকার প্রাদান कतिवाह्न, हेरा छाराब मकन क्रभाव श्रधान क्रभा। जामता এই কুল তিমিরাবৃত পৃথিবীর বত হইরা সকলের অভীত, मठा युन्तद्र महत शूक्रद्रक कानिएडहि, देश जालका जामात्र-দিগের সৌভাগ্যের বিষয় আর কি আছে। জগৎ-কৌশন सिबिया दंकीनन-क्खींत जनस स्नात्तत्र शक्तित्व शाहिएकि. क्रकारमण निवय-ज्ञक मिविश निवसात मनन क्रिकान অবগত হইভেছি, ও তাঁহার প্রতিষ্ঠিত ধর্ণাচরণ ক্রিয়া

আত্মাকে উন্নত করিতেছি এবং আমারদের সকলের প্রতি তাঁহার প্রেম দেখিরা ক্বতজ্ঞ হইরা তাঁহার প্রেমে মগ্ন হই-তেছি। তাঁহাকে যদি এখানে থাকিরা না জানিলাম ও তাঁহার প্রেমে মগ্ন না রহিলাম এবং তাঁহার প্রতিষ্ঠিত ধর্মা- ক্রবন না করিলাম; তবে আমারদের কি হইল। কতক্ণ্ডলিন স্থবর্গ-মুদ্রা সংগ্রহ করিয়া, কি বিপুল যশো-মান লাভ করিয়া, অথবা নিক্নষ্ট ইন্দ্রিন্ধ-স্থ্য ভোগ করিয়া কি মন্থ্যের আত্মা তৃপ্ত হইতে পারে? ভঙ্গুর মৃগান্ন পদার্থে বা দোষ-গুণ-বিশিষ্ট অপূর্ণ স্বভাবে প্রেমন্থাপন করিয়া কি প্রেমের সার্থক্য হইতে পাবে? যে ব্যক্তি সেই ব্রহ্মকে না জানিয়া—তাঁ- হুরৈ সহবাসজনিত নিত্য তুমানল হইতে বঞ্চিত হইরা পৃথিবীর কোন মলিন স্থেব লিপ্ত খাকে, তাহার মহান্ অনর্থ উপন্থিত হন্ন। সে পুণ্যলোক হইতে বহু দুরে ভ্রমণ করে।

স্থাবর জন্তম সমুদায় বস্তব কৌশল ও উদ্দেশ্য আলোচনা করিয়া অন্ধ্যানকে উদ্দীপন করিবেক এবং আয়প্রত্যেয়কে পোষণ করিবেক। স্থাবর জন্তম সমুদায় বস্ত
তাঁহারই স্পন্তী, তাঁহারই কৌশল; তাহারা তাঁহারই মন্তলভাব প্রকাশ করিতেছে, তাঁহারই মহিমা প্রচার করিতেছে,
তাঁহারই নাম দ্যোষণা করিতেছে। কি জ্যোতির্বিভা,
কি ভ্তত্ববিভা, কি চিকিৎসা-বিভা, কি মনোবিজ্ঞান, কি
আয়তত্ব, কি ধর্মনীতি, সকল বিভাই তাঁহার অনস্ত জ্ঞান
ও মন্তল ভাবের উপদেশ দিতেছে। এই সমুদায় বিভা

হইতে সকল বিভার প্রতিষ্ঠা পরিশুদ্ধ ব্রন্ধবিতা লাভ করিয়া ব্রন্ধবান হইবেক এবং এ লোক হইতে অবস্ত হইয়া অমৃতের আশ্রয়ে অমর হইবেক॥৮॥

প্রকাইধ্যায়ঃ।

90

ঈশাবাম্থমিদ্ধ সর্বাং যৎকিঞ্চ জগত্যাং জগৎ। তেন ত্যক্তেন ভুঞ্জীথা মা গৃধঃ কম্পবিদ্ধনং॥ ১॥

উঠে ইতি উট্ তেন 'ঈশা' পরমেশ্বরেণ 'আবাস্যং' আছোদনীয়ং 'ইদং সর্বাং' 'বং কিঞ্চ' যং কিঞ্চিৎ 'জগত্যাং' ব্রহ্মাণ্ডে 'জগং' তং সর্বাং। 'তেন ত্যাজেন' পালৈমণাত্যাগেন 'ভূঞ্জীথাং' পরমান্মানং 'মা গৃধং' গৃধিমাকাজ্কাং মা
কার্যী: স্থং 'ধনং' 'কস্যান্থিং' কস্যচিৎ ॥ ১॥

এই ত্রন্ধাণ্ডের অন্তর্গত বে কিছু পদার্থ, সমুদায়ই পরমেশ্বর দ্বারা ব্যাপ্য রহিয়াছে। পাপ-চিন্তা ওূ বিষয়-লাল্যা পরিভ্যাগ করিয়া ত্রন্ধানন্দ উপভোগ কর; কাহারও ধনে লোভ করিও না ॥ ১॥

যেমন পক্ষিরা আপনার শাবকদিগকে স্বীয় পক্ষ ছারা आफ्नामन कतिया द्वार्थ अवः विविध विष हहेरछ जाहात-निगरक तका करत, राष्ट्रे धाकात शत्ररायत चाता वहे ममूनाम জগৎ আচ্ছাদিত ও ব্যাপ্ত হইয়া বহিষাছে এবং নিয়ত বকা পাইতেছে। তিনি জগতের রাজাধিরাজ, তিনি আমারদের পিতা, পাতা ও वसू, ठाँशांत्र भागन मुर्सव वार्थ तिशाह, তাঁহার প্রেম দর্বত প্রকাশ পাইতেছে; পাপ চিস্তা ও বিষয়-লালসা পরিত্যাগ করিয়া সেই প্রেমাস্পদকে লাভ কর এবং পর্মানন্দ উপভোগ কর। যেমন শরীরের বিকার রোগ: তজ্রপ মনের বিকার পাপ। রোগ হইলে যেমন অবাহারে প্রবৃত্তি থাকে না, তদ্ধপ পাপাচরণ করিলে ব্রহ্মা-নন্দ উপভোগেরও ইচ্ছা হয় না; অতএব পাপ-চিন্তা পাপা-মুষ্ঠান পরিত্যাগ দ্বারা মনকে স্বস্থ ও পবিত্র করিয়া এক্ষানন্দ উপভোগ করিবে। অপরাধী ও অসৎ পুত্র স্বীয় পিতার প্রতি ক্যাপি প্রেম ক্রিতে পারে না; এবং আপনার প্রতি "ভাহার প্রেমণ্ড উপলব্ধি করিতে পারে না ; তাঁহার শাসনেই শ্ৰৰ্মদা ব্যাকুল থাকে। তজ্ৰপ পাপাচারী ব্যক্তি অহরহ পর্ম পিতার প্রতিষ্ঠিত ধর্ম-দেতু লক্ষন করিয়া, উপযুক্ত দণ্ড थाश रहेश, मर्तना भानरे शादक; डांराव भाष-यक्त्र, ভাঁহার পবিত্র-স্বরূপ, ভাঁহার মঙ্গণ-স্বরূপ, অমুভব করিয়া ৰীয় চঞ্চল ও ক্ষুৰা ও অপবিত্ৰ চিত্তকে কি প্ৰকারে তাঁহার ইপ্রম-রদে আর্জ্র করিবে। শতএব বাঁহার ত্রন্ধকে লাভ করি- ৰার বাসনা থাকে, তিনি বিষয়-লালসা পরিত্যাগ করিবেন; তিনি সর্বতোভাবে পাপচিস্তা, পাপালাপ, পাপাফুষ্ঠান হইতে নিরস্ত থাকিবেন—তিনি অন্তের সহিত অস্তায় ব্যবহার করিবেন না, অন্যের স্ত্রীর প্রতি ক্লদৃষ্টিপাত করিবন না, অন্যের ধনে লাভ করিবেন না ॥ ১॥

96

অনেজদেকং মনদোজবীয়োনৈনদ্বোত্থা-প্রবন্পূর্বামধিং। তদ্ধাবতোন্তানত্যক্তি তিষ্ঠ-তুম্মিমপোমাতরিশ্বা দধাতি॥ ২॥

'অনেজং' ন এজং এজ্ কম্পনে কম্পনং চলনং স্থিরত্বপ্রচ্যতি: তদিবজ্জিতং। 'একং' প্রজানঘনং 'মনসং' 'জবীরং'
জববত্তরং মনসা তদপ্রাপামিত্যর্থং। দ্যোতনাৎ 'দেবাং'
চক্ষরাদীনি ইক্সিয়াণি 'এনং' এতং প্রকৃতং ব্রদ্ধ সর্বস্থং 'ন'
'জাপুবন্' প্রাপ্তবন্ধঃ 'পূর্বং অর্থং' পূর্বমেব গতং জবনাৎ
মনসোহপি। 'তং' ব্রশ্ধী 'ধাবতঃ' ক্রতং গচ্ছতঃ 'অন্যান্'
মনোবাগিক্রিয় প্রভৃতীন্ 'অত্যেতি' অতীত্য গচ্ছতীব 'তিছং'
ঘর্মবিকৃত্যেব সং। 'তত্মিন্' ব্রদ্ধি সতি 'মাতরিখা'
মাতরি অন্তরীক্ষে বয়তি গচ্ছতীতি বায়ুং সর্বপ্রোণভূং 'অপ'
কর্মাণি প্রাণিনাং চেষ্টালক্ষণানি 'দধাতি' বিভ্জতীতার্থং।

সৰ্কাহি বিক্ৰিয়া: দৰ্কাম্পৰভূতে নিতো ব্ৰহ্মণি সত্যেব : চৰ্ম্বীতাৰ্থ:॥ ২ ॥

পরত্রন্ধ এক-মাত্র। তিনি অচল, অবচ মন হইতে বেগবান্; ইন্দ্রিয়-সকল সেই অর্থাগামী পরত্রন্ধকে প্রাপ্ত হর নাই। তিনি স্থির বাকিয়াও ঐ ক্রেতগামী মন ও ইন্দ্রিয় সকলকে অতিক্রম করিয়া গমন করেন; তাঁহার অধিষ্ঠানেতে বায়ু প্রাণিদিগের দেহ-চেফা-সকল বিধান করিতেছে॥ ২॥

প্রাপ্ত হইয়াছে, তিনি বর্ত্তমান না থাকিলে সে আর কারা হইতে শক্তি পাইয়া তদ্বাবা প্রাণিগণেব শবীর রক্ষা করিডে পারিত; অতএব উক্ত হইয়াছে, যে "তাঁহার অধিষ্ঠানেতে বায়ু প্রাণিদিগের দেহ-চেষ্ঠা-সকল বিধান করিতেছে"॥ ২॥

99

তদেজতি তন্ধৈজতি তদ্বে তদ্বিকে। তদন্তরস্য সর্বাস্য ততু সর্বাস্যাস্য বাছতঃ॥ ৩॥

'তং' ব্রহ্ম যং প্রকৃত্য 'এজতি' চলতি 'তং' এব চ ন 'এজতি' নৈব চলতি অচলমেব সং চলতীতার্থঃ। কিঞা 'তং দ্রে' 'তং উ অস্তিকে' সমীপেহতাস্ক্রমেব। ন কেবল মস্তিকে 'তং' 'অস্তঃ' অভ্যস্তরে 'অস্য সর্ক্র্যা' জ্পতঃ। 'তং' 'উ' অপি 'সর্ক্র্যান্ত অস্য বাহুতঃ' ব্যাপক্ষাৎ আকাশবং ॥ ৩॥

তিনি চলেন, তিনি চলেন না; তিনি দূবে আছেন; তিনি নিকটেও আছেন; তিনি এই সকলের অস্তুরে আছেন, তিনি এই সকলের বাহিরেও আছেন॥ ৩॥

লোকে স্থানান্তর প্রাপ্তির নিমিন্তে গমন করিয়। থাকে, তিনি সর্বস্থানে বিদ্যমান থাকাতেই গমনের প্রয়োজন এক কালে সিদ্ধ হইয়া রহিয়াছে; অত এব উক্ত হইয়াছে, "তিনি চলেন" অর্থাৎ তাঁহার চলন ব্যাপার সম্পন্ন হুইয়া রহিয়াছে।

তিনি জড়ের ক্লার অচল নহেন, তিনি মুতেব ক্লায় নিশ্চেষ্ট নহেন -তিনি অমৃত, তিনি প্রাণ-স্বরণ: তিনি জাগ্রত জীবন্ত দেবতা: তিনি মক্তমভাব, মহানামা। কিন্তু रमारकता रामन এक सान इहेर्ड अन्न सात्न हरन, उज्जन তিনি চলেন না; কারণ তিনি সর্বাত্ত পূর্ণ রূপে বিদ্যমান আছেন-তিনি অপবিবর্ত্তনীয় ঞ্ব গতা স্নাতন। অতি দ্বস্থ যে নক্ষত্র, দেখানেও তিনি আছেন। তিনি কেবল দুবেতে নাই, তিনি আমাবদিগের নিকটেও আছেন, এত निकटि दि भागांतरम्त भछत्व चार्डन এवः त्यमन चामाव-দিগের সক্ষের অস্তব্যে আছেন, তেমনি বাহিরেও আছেন। रामन त्कान बाजा चीम निःशानरन विनेषा उथा इटेस्ड আপনাৰ ৰাজ্য শাসন করেন, তদ্রপ তিনি পরিমিত कान अक-सान-सामी नरहन। जिनि अकर ममरम मर्ख-शाम मगान-काल शाबी इरेबा विश्व मः मात्रक भावन করিতেছেন॥ ৩॥

9

যস্ত সর্বাণি ভূতাভাত্মভোতানুপশতি। সর্বভূতেযু চাত্মানন্ততোন বিজ্ঞপতে॥৪॥

'য: তু' মুমুক্ম: 'স্কাণি ভূতানি' প্রমে 'আআনি' ব্রহ্মণি 'এব অন্পণ্যতি' 'স্কাভূতেযু চ' প্রমং 'আআনং' নির্কি- শেষং ব্রহ্ম পশ্যতি। সং 'ততঃ' তত্মাৎ এব দর্শনাৎ 'ন্র্ বিজ্ঞুপ্ততে' জুগুপ্সাং ঘূণাং ন করোতি ॥ ৪॥

ধিনি পর্যাত্মাতেই সকল বস্তুর অবস্থিতি দেখেন এবং সকল বস্তুতে প্রমাত্মার সত্তা উপলব্ধি করেন, তিনি আর কাছাকেও অবজ্ঞা করেন না । ৪॥

পরমাত্মাতে দকল বস্তু অবস্থিতি করিতেছে; তিনি

যাবতীয় বস্তুর আপ্রয়-স্বরূপ, তাঁহাকেই অবলম্বন করিয়া

সকলে বর্তমান রহিয়াছে। যিনি পরমাত্মাকে সকলের
আপ্রয়-স্বরূপ জানেন এবং সর্ব্ধ-ভূতেতে তাঁহাকে বিদা

মান দেখেন, তিনি আর কাহাকেও অবজ্ঞা করেল।। তিনি দেখেন যে, আমরা সকলেই সেই অমৃত পুরুবের পুত্র; কেহই সর্ব্ধ-নিমন্তা বিশ্ব-পাতার অবজ্ঞের ও
ভ্যাজ্য নহে; অতএব তিনি কাহাকেও অবজ্ঞা ও মুঝা

করেন না। উত্তমাধ্য গুণামুসারে যাহার প্রতি বে প্রকার

ব্যবহার করা কর্ত্ব্য, তাহাই তিনি করেন॥৪॥

೦ಶ

সপর্য্যাচছু ক্রমকাষমত্রণমন্ত্রাবির ও শুদ্ধমপাপ বিদ্ধম্। কবির্মানীষী পরিভূঃ স্বয়ন্তুর্যাথাতথ্যতো-হর্ধান্ ব্যদধাচ্ছাশ্বতীভ্যঃ সমাভ্যঃ ॥ ৫ ॥ 'দাং' পরমাত্রা 'পর্ব্যাণ' পরি সমন্তাৎ অগাৎ গতবান্
আকাশবং ব্যাপীত্যর্থ: 'শুক্রং' শুক্র: শুক্র: 'অকায়ন্'
আকায়: অশরীয়: 'অবেণন্' অবেণ: অক্ষতঃ 'অয়াবিবন্'
আয়াবির: য়াবা: শিরাঃ যদ্মিন্ ন বিহ্যন্তে ইতি 'শুক্রং' শুক্রঃ
নির্দ্রণ: 'অপাপবিদ্ধন্' অপাপবিদ্ধঃ। 'কবিং' ক্রান্তনশী
সর্বাদ্ধ 'মনীমী' মনসম্বিতা সর্বজ্ঞ ইশরইত্যর্থ: 'পরিভূঃ'
সর্বেবাম্পর্ব্যুপরি ভবতীতি। স্বাদ্দেব ভবতীতি 'শ্বয়ন্তঃ'।
দা: নিত্যমুক্তকশর: ষ্বাত্থাভাবো্যাথাত্থাং ততঃ 'বাণা
তথ্যতঃ' ষ্ণাভূতকর্ম্মাধনতঃ 'অর্থান্' ক্রানীত্যর্থ: 'বানখাং' বিহিত্বান্ য্থাক্ত্রপ: ব্যভ্জদিত্যর্থ: 'শাখতীভ্যঃ'
নিত্যাভ্য: 'সমাভ্যঃ' সংবৎসরাঝোভ্যঃ প্রজাভ্যঃ প্রজালতভ্যইত্যর্থ: দুব্দ

তিনি সর্বব্যাপী, নির্মাল, নিরবয়ব, শিরা ও ত্রণ-মহিত, শুদ্ধ, অপাপবিদ্ধ; তিনি সর্বন্দর্শী, মনেব নিয়ন্তা, তিনি সকলের শ্রেষ্ঠ ও স্বপ্রকাশ; তিনি সর্বা কালে প্রকাদিগকে যথোপযুক্ত অর্থ-সকল বিধান করিতেছেন। ৫॥

পরমাত্ম। সর্ধব্যাপী, তিনি সকল স্থানেতেই আছেন; তিনি নির্মাল, তিনি নির্মাল, তিনি নির্মিণ্ড, কোন কলর্ম কি মানি তাঁহাকে স্পর্শ করিতে পারে না। তিনি নিরব্যুব,

উাহার কোন অবয়ব নাই, স্বতরাং তিনি শিরা-বহিত. তাঁহার শিরা নাই; এবং ত্রণ ও ক্ষতরহিত, তাঁহার শারী-विक क्लान शीज़ा वा रखना नाह। छिनि एयम भनीत-বিহীন, তজ্ঞপ মনোবিহীন; স্থতরাং মনংগীড়া ধে পাপ ও শোচনা, তাহাও তাঁহাতে নাই। আমরা থেমন রোগে আডুর, শেকে ব্যাকুল, পাপে তাপিত, তদ্ধপ তিনি নহেন; তাঁহার রোগ নাই, শোক নাই, পাপ নাই; তিনি অত্রণ, তিনি ওদ, তিনি অপাপবিদ। তিনি শর্মদর্শী, তিনি কবি। কি সৌর জগতের পরিপাটি শৃথলা, কি সুধাকর পূর্ণ চন্দ্রের রমণীয় শোভা; কি জান ও ধর্ম-রূপ রাত্তর অপূর্ব্ব মনোরম ভাব; সকলই তাঁহার অনিপুণ व्यान्तर्या त्रह्मा। जिनि मनीयी, जिनि मत्नत्र निष्या। अह भरत्य निष्ठश्वा शत्रम शूक्य, जित्र जित्र काठीय कंदिमिराव मरन ভিন্ন ভিন্ন নিয়ম সংস্থাপন করিয়াছেন; কিন্তু অবিভাগে সেই সমুদায় নিয়ম স্থাপনের এই একই উদ্দেশ্য বে ভাছারা দকলে স্থাৰ্থ থাকে। বিশেষতঃ তিনি মহুষ্যের মনকে এমত আশ্চর্য্য নিয়মের অধীন করিয়া দিয়াছেন, বে তদুরা জ্ঞান-ধর্ম্মের উন্নতির সহিত তাহার আত্মার উন্নতি হইডে পারে। মুম্যের আত্মা তাঁহার অতি যত্নের ধন; তিনি ষ্মতি নিপুণ রূপে তাহাকে রক্ষা করিতেছেন। যাহাতে সে মোহ-তরক হইতে-- ছঃখ শোক হইতে--পাপ তাপ बहैरछ-मुड़ा-मूब हरेरड िक्डिंड शारेश उक्ष-कान ७ बका-

মল লাভ করিতে পারে, এমত ধর্মনিয়ম-সকল প্রতিষ্ঠিত করিরাছেন এবং দণ্ড পুরস্কার নিরত বিধা**ন** করিতেকেন। তিনি পরিভূ, তিনি সকলের শ্রেষ্ঠ। তিনি স্বন্নভূ, তিনি বপ্রকাশ; যাবতীর জন্ত তাঁহা কর্তৃক স্ট এবং প্রকাশিত ্হইয়াছে ; তিনি জ্মারহিত, অনাদি, তিনি কাহারও কর্তৃক शृष्टे इन नार्ट प्यवः श्रकानिज इन नार्टे : जिनि कित्र कान्हे পথং প্রকাশবান আছেন। তিনি সর্বাকালে প্রকাদিগকে यर्थाभयुक वर्ध-मकन विधान कतिराज्ञा । य मकन की है, পতत्र, शिशीनिका; मश्मा, कव्हभ, कुछीतः भक्ष शकी, मकृषा: अनक दर्कां अपूना रुच और घाता जन, दन, আকাশ, বিবর গহবর, পরিপূর্ণ; তিনি সেই সকলকেই তাহারদিগের স্বীয় স্বীয় অভিল্যিত অন্ন পানাদি বিবিধ ভোগের সামগ্রী যথা-উপযুক্তরূপে অতি ন্যায্য-রূপে চির কাল বিধান করিতেছেন। তাহারা তাহা লাভ করিয়া ইত-স্তত: স্থাপে সঞ্চরণ করিতেছে । ৫ ॥

यद्ष्ठी ३था सि ।

80

তপদা ব্রহ্ম বিজিজ্ঞাদস্ব। ব্রহ্মবিদাপোতি পরমু॥ ১॥

'ভপদা' মনস্থাকাগ্রতদ্বা 'ব্রহ্ম' 'বিজিজ্ঞাসম্ব' বিশেষেণ জ্ঞাতুমিছেযে। 'ব্রহ্মবিং আধ্যোতি' 'পরং' ব্রহ্ম॥ ১॥

একাথাচিত হইয়া ত্রন্ধকে জানিতে ইচ্ছা কর। ত্রন্ধজ;নী ত্রন্ধকে প্রাপ্ত হয়েন॥১॥

পরব্রহ্মের জ্ঞান-লাভার্থে অনন্যমনে পুনঃ পুনঃ তাঁহাকে আলোচনা করিবেক; এবং শান্ত সমাহিত হইরা অন্তলু ন্তি ছারা তাঁহার সত্য স্থালর মঞ্চ ভাব প্রতীতি করিবেক; ছবেই তাঁহাকে লাভ করিয়া তোমরা আপ্রকাম হইবে। পরব্রহ্ম অন্তর বাহিরে সর্পত্র সমান-রূপে বিদ্যমান আছেন, তাঁহাকে প্রাপ্ত হইবার নিমিত্তে স্থানান্তরে গমন করিতে হয় না, তাঁহাকে সাম্পাৎ জানাই তাঁহাকে প্রাপ্ত হয়য়া। মন্ত্র্যালকে তাঁহাকে জানিতে আরম্ভ করা যায়, কিছ আনন্ত কালেও তাঁহাকে জানার শেষ হয় না। এ লোক হইতে লোকান্তরে যভই তাঁহাকে জানিতে পারি, ততই উৎকৃষ্টতর পবিত্র ব্হ্মানন্দ উপভোগ করিয়া কৃতার্থ হই॥ ১॥

83

সত্যং জ্ঞানমনন্তং ব্রহ্ম যোবেদ নিহিতং গুহায়াং পরমে ব্যোমন্। সোহশুতে সর্কান্ কামান্সহ ব্রহ্মণা বিপশ্চিতা॥২॥

'দত্যং' ব্ৰহ্ম 'জানং' ব্ৰহ্ম 'ঝনস্তং' ব্ৰহ্ম 'য়ঃ' 'বেদ'
বিজ্ঞানাতি 'নিহিতং' স্থিতং 'প্রমে' 'ব্যোমন্' ব্যোমি দেহাকাশে 'গুহারাং' আত্মনি। 'দঃ' এবং ব্ৰহ্ম বিজ্ঞানন্ 'অলুতে'
ভূংক্তে 'দর্জান্' 'কামান্' ভোগান্ 'ব্ৰহ্মণা' 'বিপশ্চিতা'
মেধাবিনা দর্জ্ঞেন 'দহ'॥ ২॥

বিনি স্ত্য-স্বরূপ জ্ঞান-স্বরূপ অনস্ত-স্বরূপ ত্রন্ধকে স্থীয় শরীরের প্রমাকাশে আত্মশ্ব করিয়া জ্ঞানেন; তিনি সেই সর্বজ্ঞ প্রমেশ্বরের সহিত কামনার সমুদ্য় বিষয় উপভোগ করেন॥২॥

পরমেশ্বর মৃশ সত্যা, তাঁহা হইতে আর সকল সত্য নিঃস্ত হইয়া তাঁহার অধিষ্ঠানে স্থিতি করিতেছে। তিনি আদি সত্যা, অনাদি সত্যা; তিনি সত্যের সত্যা, পরম সত্যা, ধ্বে সত্য সনাতন।

আপনাকে আপনি বে জানে না সেই জড় পদার্থ; আর বিনি আপনাকে আপনি জানেন, তিনি জান-পদার্থ। মৃত্তিকা, প্রস্তব, ধাতু, বৃক্ষ প্রভৃতি আপনাকে জানে না, এই হৈতু সে সকল জড় পদার্থ; আর জীবাঝা ও পবমাঝা আপনাকে এবং অন্তকে জানেন, এ হেতু তাঁহারা জ্ঞান-পদার্থ। কিন্তু ইহার মধ্যে স্থপ্রকাশ পরমাঝার অপরিমের স্বাভাবিক জ্ঞানের সহিত জীবাঝার পরিমিত ক্ষুদ্র মানসিক জ্ঞানেব তুলনাই হইতে পারে না। পরিমিত জীবাঝার জ্ঞানও আছে, অজ্ঞানও আছে এবং ভ্রম, প্রমাদ, মোহ আছে, কিন্তু ভূমা পরমাঝার ভ্রম নাই, প্রমাদ নাই, মোহ লাই, অজ্ঞান নাই—তিনি গুদ্ধ-বৃদ্ধ-মৃক্ত-স্বভাব, তিনি জ্ঞানেতে পরিপূর্ণ।

িনি অনন্ত-শ্বরূপ; তিনি জ্ঞানেতে অনন্ত, শক্তিতে অনন্ত, মঙ্গলভাবে অনন্ত,—দেশেতে অনন্ত, ক্রালেতে অনন্ত।

ষিনি এই সত্য-স্বরূপ, জ্ঞান-স্বরূপ, অনস্ত-স্বরূপ ব্রহ্মকে
আঠি নিকটে আপনার আত্মাতে সাক্ষাৎ প্রতীতি করেন
এবং তাঁহার ইচ্ছার সহিত আপনার ইচ্ছার যোগ দেন;
তিনি তাঁহার সহিত কামনার সমুদর বিবন্ধ উপভোগ করেন।
পরম পিতা পরমেশ্বর যে প্রকার উদার দৃষ্টিতে জগৎ দৃষ্টি
করেন এবং ক্ষুত্রতম কীট পর্যান্ত সকলের মৃদল সকর
করেন; তিনিও সেই প্রকার দৃষ্টি ও ইচ্ছার অন্তব্যপ
করেন। যাহা যাহা পরমেশ্বেরর অভিপ্রেড তাহাই তাঁহার
কামনা এবং তাহাই তাঁহার কার্য্য। পরমেশ্বেরর অভিপ্রার

অবশ্রই সম্পন্ন হয়, স্থতরাং তাঁহার কাম্নাও সিদ্ধ হয়। অতএব তিনি প্রমেখরের সহিত কামনার সমূদ্র বিষয় উপভোগ করেন, এবং আপ্রকাম হইয়া, তাঁহার সহচর অফু-চর হইয়া তাঁহার বিশুদ্ধ সহবাসে পরিতৃপ্ত হয়েন॥ ২॥

83

যঃ সর্ব্বজ্ঞঃ সর্ব্ববিৎ যসৈয়ে মহিমা ভুবি দিব্যে। তদিজ্ঞানেন পরিপশ্যন্তি ধীরাআনন্দ-রূপময়তং যদিভাতি॥ ৩॥

'যং দর্বজ্ঞাং দর্ববিং' 'ষশু' 'এষঃ' প্রসিদ্ধা 'মহিমা' 'জুবি' লোকে 'দিবো' ছালোকে। কোহদৌ মহিমা স্থাবরং জঙ্গানাক ষপ্তশাসনে নিয়তমন্তি। তথা ত্বোহয়নেহলান্ত যক্ত্র শানাং নাতিক্রামন্তি। তথা ক্রারাং কর্মাণি ফলঞ্চ যজ্ঞানাং বাং স্বং কালং নাতিবর্ত্তন্তে। 'তং' ব্রহ্ম 'বিজ্ঞানেন' বিশিপ্তেন জ্ঞানেন 'পরিপশ্রন্তি', দর্বতঃ পূর্ণং পশ্রন্তি উপলভ্তন্তে 'ধীর্ন্নাং' বিবেকিনঃ 'আনন্দরূপং' স্থম্মরূপং 'অমৃতং বং' 'বিভাতি' বিশেষেণ অন্তর্কাত্তে দর্ববৈত্ব ভাতি॥ ৩॥

বিনি সামান্য-রূপে ও বিশেষ-রূপে সর্ব্ব বস্ত জ্ঞানি-তেছেন, ভূলোকে ও ত্মলোকে বাঁছার এই মহিমা, বিনি জানন্দ-রূপে অমৃতরূপে, প্রকাশ পাইতেছেন; জ্ঞান জান্ধ বীরেরা তাঁছাকে সর্বত্তি ক্রেন॥ ৩॥ তিনি সর্বজ্ঞ সর্ববিং। তিনি সম্পাদের বাস্তবিক স্বরূপ এবং যথার্থ তত্ত্ব জানিতেছেন, এবং আমরাও বে পদার্থকে যেরূপ প্রত্যক্ষ করিতেছি, তাহাও তিনি জানি-তেছেন। উপরে অনস্ত কোটি নক্ষত্রলোক, এখানে এই আশ্চর্য্য ভূলোক; এই ভূলোকে ও চ্যুলোকে তাঁহারই এই মহিমা। তিনি সর্ব্যত্ত আনন্দ-রূপে, অমৃত্ররূপে প্রকাশ পাইতেছেন। ধীরেরা তাঁহাকে সমৃদ্রের তরঙ্গে, নদীব লহবীতে, স্ব্যের প্রকাশে, চল্লের সৌন্দর্ব্যে, মন্থ্যের মুধ্-শ্রীতে, পতিত্রতা সতীর পবিত্র প্রেমে অন্তর্বাহে জ্ঞান-চক্ষ্

89

হিরথয়ে পরে কোষে বিরজং ত্রক্ষ নিকলম। তচ্ছু জং জ্যোতিষাং জ্যোতিস্তদ্ য্দাত্মবিদো-বিহুঃ ॥ ৪॥

'হিরথরে' জ্যোতির্মরে বিজ্ঞানপ্রকাশে আয়নি 'পরে' পরম্ অভ্যন্তরভাৎ তর্মিন্ 'কোষে' কোষইব অসে: এক্ষো-পলিছানভাৎ তন্মিন্ 'বিরজং' অবিদ্যাদিদোধরজোমল-বর্জ্জিতং 'এক্ষ' সর্বমহত্তাৎ 'নিছলং' নির্গতাঃ কলাঃ যন্মাৎ তং নিরবয়বমিত্যর্থ:। 'তং' 'শুলং' শুদ্ধং 'জ্যোতিষাং' সর্বপ্রকাশাস্থনাং আদিত্যাদীনামপি 'জ্যোতিঃ' অবভা- দকষ্। 'তং' হি পরং জ্যোতিঃ পরং ত্রত্ন 'আত্মবিদঃ' আত্মানং শকাদিবিষয়বৃদ্ধিপ্রত্যয়সাক্ষিণং যে বিবেকিনো-বিছঃ জানস্তি তে 'যং' 'বিছঃ' জানস্তি ॥ ৪ ॥

ষাঁহারা স্বীয় আত্মাকে জানেন, তাঁহারা আত্মরূপ উজ্জ্বল ও শ্রেষ্ঠ কোষ মধ্যে সেই নির্মাল, নির্বয়ধ, জ্যোতির জ্যোতি,শুজ পরমাত্মাকে উপলব্ধি করেন ৪৪॥

জ্ঞান-জ্যোতিতে উচ্ছল ও ধর্ম-ভূবণে ভূষিত মনুব্যের বে আত্মা, তাহাতে তিনি স্থলর প্রকাশিত হয়েন; এ নিমিত্তে আমারদের আত্মা পরমান্থার শ্রেষ্ঠ কোষ। তিনি নির্মাণ ও শুল্র। তিনি জ্যোতির জ্যোতি, তিনি আত্মার জ্যোতি, তিনি জ্ঞান-জ্যোতি পরব্রহ্ম। সে জ্যোতির রূপও নাই এবং অবর্ষও নাই। ব্রহ্মবিৎ ব্যক্তিরা জ্ঞান-চক্ষুর দারা স্বীয় আত্মাতে সেই সত্যের জ্যোতি উপদক্ষি কর্মেন ॥ ৪॥

88

ন তত্ত্র সূর্য্যোভাতি ন চন্দ্রতারকং নেমা বিচ্যুতোভান্তি কুতোহয়মগ্রিঃ। তমেব ভান্ত-মসুভাতি সর্বাং তদ্য ভাদা সর্বামিদং বিভাতি ॥৫॥

'ন' ু'ভত্ৰ' ভদ্মিন্ ব্ৰহ্মণি স্ক্ৰিবভাসকোষপি 'স্ব্যঃ'

'ভাতি' তদ্বন্ধ ন প্রকাশয়তীত্যর্থ:। 'ন চক্রতারকং' 'ন ইমা: বিহাত: ভাত্তি' 'কুত: অয়ং অধিঃ' অম্মদেগাচর:। যদিদং জগং ভাতি তং 'সর্কং' 'তম্ এব' পরমেশ্বরং 'ভাত্তং' দীপ্যমানং 'অমুভাতি' অমুদীপ্যতে। 'তস্য ভাষা' দীপ্ত্যা 'সর্কম্ ইদং' হুর্ঘাদি অগৎ 'বিভাতি'॥ ৫॥

সূর্য্য তাঁথাকে প্রকাশ করিতে পারে না, চন্দ্র ভারাও তাঁথাকে প্রকাশ করিতে পারে না, এই বিছাৎ-সকলও তাঁথাকে প্রকাশ করিতে পারে না, ভবে এই অগ্নি তাঁথাকে কি প্রকারে প্রকাশ করিবে। সমস্ত স্থাণ সেই দীপ্যমান পরমেশ্বরেরি প্রকাশ স্থারা অনু-প্রকাশিত হইয়া দীপ্তি পাইভেছে, এই সমুদায় তাঁথার প্রকাশেতে প্রকাশিত হইতেছে। ৫॥

স্থ্য চন্দ্রের আলোকে প্রমাত্মা প্রকাশিত হন না।
আমাদের আত্মার জ্যোতিতে, অন্তর্গীতে তিনি প্রকাশিত
হয়েন। সমস্ত জগৎ সেই দীপ্যমান প্রমেশ্রেরি প্রাকাশ
ভারা অনুপ্রকাশিত ৽ইয়া দীপ্তি পাইতেছে, তাঁহা হইছে
বিষুক্ত হইলে এ সকলই বিনষ্ট হয়॥ ৫॥

84

প্রাণোহ্যেষ্যঃ সর্বাস্থৃতৈর্ব্বিক্সাতি বিজ্ঞানন

বিদ্বান্ ভবতে নাতিবাদী। আত্মক্রীড়আত্মরতিঃ ক্রিয়াবানেষত্রক্ষবিদাং বরিষ্ঠঃ॥ ৬॥

'প্রাণ: হি' 'এবং' পরমেশ্বরং 'বং' 'সর্কাভূতৈঃ' সর্কা-ভূতস্থ: 'বিভাতি'। 'তং' 'বিজ্ঞানন্' 'বিদ্যান্' 'অতিবাদী' পরব্রক্ষ অতীত্য বদিতুং শীলমদ্যেতি 'ন' 'ওবতে' ভবতি। ইএবং প্রাণদ্য প্রাণং সাক্ষাৎ বেদ সোহতিবাদী ন ভবতী-ত্যর্থ:। কিঞ্চ পরমাত্মত্যেব ক্রীড়া ক্রীড়নং যদ্য সং 'আয়ু-ক্রীড়াং' পরমাত্মত্তব রতিঃ রমণং যহা সং 'আয়ুর্রতিঃ' শুভ-ক্রিয়া বিস্ততে যহা সং 'ক্রিয়াবান্'। যা এবং লক্ষণোহনতি-বাভাত্মক্রীড় আত্মরতিঃ ক্রিয়াবান্ ব্রক্ষনিষ্ঠঃ সং 'এষং' 'ব্রক্ষ-বিদাং' সর্কোষাং 'ব্রিষ্ঠাং' প্রধানঃ॥ ৬॥

ইনি প্রাণ-স্বরূপ, বিনি এই সর্বভূতে প্রকাশ পাইতেছেন; জ্ঞানী ব্যক্তি ইহাঁকে অতিক্রম করিয়া কোন কথা কছেন না; ইনি প্রমাত্মাতে ক্রীড়া করেন, ইনি প্রমাত্মাতে রুমণ করেন, এবং সংকর্মনীল হয়েন। ইনিই ত্রক্ষোপাসকদিণের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ ॥ ৬॥

সর্বশ্রের পরব্রক্ষের অভাবে কিছুই হইত না, কিছুই থাকিত না; ইনি সকলের প্রাণ-স্বরূপ। কি সচল চন্দ্র স্থা, কি সত্তেজ বৃক্ষ লতা, কি সবল পশু পক্ষী, সকলের কারণ-কণ্ডে, সকলের আশ্রেয়-রূপে, সকলের প্রাণ- রূপে, দর্মভূতে তিনি প্রকাশ পাইতেছেন। ব্রহ্মজ্ঞ ব্যক্তি জানেন যে প্রমেশ্র তাঁহার প্রম বন্ধ। তিনি সেই প্রিয় সুহাদের খণ-কীর্ত্তন করিয়া সদাই আনন্দিত থাকেন। কেবল তাঁহারি কথা কহিতে তাঁহার অত্যন্ত প্রীতি জন্ম; কেবল তাঁহার প্রদঙ্গ করিতে তাঁহার মন সর্বাদা বাপ্র থাকে: অনক্রমনা হইরা তাঁহার স্বরূপ-চিন্তা করিতে বেমন তাঁহার আমোদ উপস্থিত হয়, এমন আর কিছুতেই হর না। অন্তক্ত ব্যক্তি জানেন যে প্রমেশ্বর তাঁহার প্রম পিতা, তিনি পরম পুজনীয়; তাঁহারি আজা পালন করা কর্ত্তব্য, তার্ত্তর জার কিছুই কর্ত্তব্য নহে। অভএব তিনি তাঁহার মঙ্গল অভিপ্রায় অবগত হইবার জনা সততই যুদ্ করেন। যে কথা দারা তাঁহার মঙ্গল অরপ প্রকাশ পায় এবং তাঁহার ভত অভিপ্রায় অবগত হওয়া যায়: ফ্রাহার ष्यात्मानन करत्रन. खांहारे भिका करत्रन धवः छाहात्रहे উপদেশ দেন; তিনি তাঁহাকে অতিক্রম করিয়া কোন কথা কহেন না। পরমেখবে তাঁহার সম্পূর্ণ অফুরাগঃ. এবং তাঁহাতেই তাঁহার নিত্য আমোদ; অভএৰ উক্ত हरेबाएइ, रेनि পরমাত্মাতে क्वीड़ा करतन, रेनि পরমাত্মাতে রুমণ করেন। কিন্তু ইহারদের মধ্যে তিনিই সর্বশ্রেষ্ঠ. বিনি কেবল তাঁহাতে প্রীতি করিয়া ও তাঁহার অভিপ্রায় অবগত হইয়া ক্ষান্ত থাকেন না: কিন্তু ভাঁহার সেই অভি-প্রায় অনুসারে তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করিতে প্রবৃত্ত

ধাকেন, এবং সংকর্মশীল হয়েন। আমারদিগের মধ্যে তাঁহার প্রতি থাঁহার যত অফুরাগ জানিবে, এবং তাঁহার অভিপ্রায় মত কর্ম করিতে থাঁহার যত যত্ন হইবে, ততই তাঁহার শেষ্ঠতা হইবেক এবং ততই তাঁহার মহুষ্য জন্মের সার্থকতা হইবেক। এই আমারদের কার্য্য, এই আমার-দের লক্ষ্য ॥ ৬॥

83

র্হচ্চ তদ্বিরমচিন্তারপং সূক্ষাচ্চ তৎ সূক্ষ-তরং বিভাতি। দুরাৎ স্থদুরে তদিহান্তিকে চ পশ্যৎস্বিহৈব নিহিতং গুহাযাম্॥ ৭॥

বৃহৎ চ' মহৎ সর্ক্রাপিরাৎ 'তৎ' প্রক্নতং ব্রহ্ম 'দিবাং' শ্বন্ধন্তঃ 'অচিন্তারূপং' সর্ক্রেক্রিয়াগামগোচরত্বাৎ 'স্ক্রাৎ চ' মনসোপি 'তৎ স্ক্রতব্বং বিভাতি'। কিঞ্চ 'দ্রাৎ স্থদ্রে' বর্ততে অবিত্রামত্যন্তাগম্যতাৎ 'তং' ব্রহ্ম 'ইহ' 'অন্তিকে চ' সমীপে চ 'পশ্যৎক্র' চেতনাবৎক্র 'ইহ এব' 'নিহিতং' শ্বিতং 'গুহারাং' আব্বনি ॥ ৭ ॥

তিনি মহৎ, প্রকাশবান্ ও অচিন্ত্য-স্থরপ, এবং সুক্ষ হইতেও সুক্ষ। তিনি দুর হইতেও বহু দুরে আছেন এবং এই নিকটেও তিনি বর্ত্তমান, তিনি এ- খানেই যাবং বুদ্ধি দীবী জীবদিগের আত্মাতে স্থিতি করিতেছেন॥ ৭॥

তিনিই বৃহৎ, তিনিই মহৎ; তাঁহার নিকটে আব কিছুই বৃহৎ নহে, আব কেহই মহৎ নহে; গেই দীপ্য-মান প্রমেশ্বর সর্ব্ব প্রকাশ পাইতেছেন। তাঁহার স্বর্বাণ অচিস্তনীয়। তিনি স্কাহইতেও স্কা। অতি দ্রস্থ নক্ষক্ত হইতেও তিনি দ্রে আছেন এবং এই অতি নিকটেও আছেন; আমারদিপের সকলের আআর অভ্যস্তরে তিনি স্থিতি করিতেছেন। তিনি সাক্ষি-স্কর্বাপ সর্ব্বাক বর্ত্তমান বৃহিয়াছেন॥ ৭॥

89

ন চক্ষুষা গৃহুতে নাপি বাচা নাক্যৈর্দেবৈস্ত-পদা কর্মণা বা। জ্ঞানপ্রদাদেন বিশুদ্ধসন্ত্র-স্তৃতস্তু তং পশ্যতে নিজলং ধ্যায়মানঃ॥৮॥

'ন চক্ষ্বা গৃহতে' কেনচিদপি অরূপথাং 'ন অপি' গৃহতে 'বাচা' অনভিধেয়থাং 'ন অত্যৈঃ দেবেঃ' ইতরে-ক্রিরৈঃ ন 'তপদা' গৃহতে 'কর্মণা বা' ন গৃহতে। কিং প্রক্তম্য গ্রহণসাধনমিত্যাহ 'জ্ঞান প্রদাদেন' জ্ঞানস্য প্রসাদঃ তেন 'বিশুদ্ধসন্থঃ' বিশুদ্ধান্তঃকরণঃ বোগ্যোক্রক্ষ দ্রষ্টুং যন্ত্রাৎ 'তেঃ তু' তন্মাং 'তম্' ঈশ্বরং 'নিক্ষাং স্ক্রাব্যুবেইজ্জিতং' 'পশাতে' উপলভতে 'ধ্যায়মান' চিন্তয়ন্। ব্ৰহ্মাববোধন-সমৰ্থনিপ স্বভাবেন স্ক্ৰমন্ধ্যাণাং জ্ঞানং বাহ্যবিষয়রাগা-দিনোৰকলুবিত্ম অপ্ৰসয়ম্ অভ্নং সং নাববোধয়তি ॥ ৮॥

তিনি চক্ষুর আছি নহেন, বাক্যেরও আছে নহেন,
। এবং অপরাপর ইন্দ্রিয়েরও আছি নহেন, তপদ্যা বা
যজ্ঞাদি কর্ম দ্বারা তাঁহাকে প্রাপ্ত হওয়া শার না। জ্ঞানভাজ্জি দ্বারা ভাজ্জসত্ত্ব ব্যক্তি ধ্যান্যুক্ত হইয়া নিরবয়ব
ভাজ্জাকে উপলজ্জি করেন ॥ ৮॥

জ্ঞানালোচনা ও ধর্মামুষ্ঠান ধারা চিত্ত শুদ্ধ হইলে তাঁহাকে আপনার আত্মাতে সাক্ষাং লাভ করা ধার। ধাগ-দজ্জ-এতার্ম্প্রান কিম্বা অনশন অগ্নিসেবাদি তপস্তা করিলে তাঁহাকে প্রাপ্ত হওয়া ধার না। এ সকল পথ তাঁহার প্রাপ্তির পথ নহে। জ্ঞান-রূপ পথই তাঁহার পথ ॥ ৮ ॥

मखरमार्थाग्रः।

85

ত্রমীশ্রাণাং প্রমং মহেশ্বরং তং দেবতানাং প্রমঞ্চ দৈবতম্। প্রতিং পত্রীনাং প্রমং প্র-স্তাৎ বিদাম দেবং ভূবনেশ্যীড্যং॥ ১॥ 'তম্' 'ঈশ্বরাণাং' প্রভ্নাং 'পর্মং মহেশ্বরং' 'তং' 'দেব-তানাং' ছোতনাত্মকানাং 'পর্মং চ দৈবতং' 'পতিং' 'পতীনাং' প্রভাগতীনাং 'পর্মং' 'পর্স্তাং' পরতঃ 'বিদাম' 'দেবং' ছোতনাত্মকং প্রমেশ্বরং 'ভ্বনেশং' ভ্বনানামীশং 'ঈড্যং' স্বত্যং॥ ১॥

সকল ঈশ্বের যিনি পরম মাহেশ্বর, সকল দেবতার যিনি পরম দেবতা, সকল পতির যিনি পতি; সেই পরাৎপর, প্রকাশবান্ ও স্তবনীয় ভুবনেশ্বরকে আমরা জ্ঞাত হই॥ ১।।

তিনি ব্রহ্মাণ্ডের অধিপতি, রাজাধিরাজ, সকলের জীখার। গাহার ঐশর্যোর সীমা নাই। জগতে বাহার প্রত ঐশর্য্য আছে, সকলই ওাঁহার ঐশর্য্য; যত ঐশর্য্যর প্রত্মাছে, সকলেরি তিনি প্রভ্রু; সকলের তিনি মহেশরর। তিনি এই পৃথিবীর রাজ্যেখরদিগেরও ঈশর এবং এই ভূ-লোক অপেক্ষা অস্ত্র অস্ত্র শ্রেষ্ঠ-লোক-নিবাসী দেবতাদিগেরও অধীশর। জগতের যে ভাগে যে লোকে মহ্য্য অপেক্ষা জ্ঞান-ধর্ম-প্রীতিতে উন্নত যত উৎকৃষ্টতর জীব আছে, তাঁহারা সকলে দেব-শব্দের বাচ্য; সেই সকল দেবতাদিগেরও তিনি পদ্ম দেবতা, প্রম পৃজনীয়, এবং নিমন্ত্র। তিনি সকল প্রতিপালকদিগের প্রতিপালক। তিনি শ্রেষ্ঠ হইতে শ্রেষ্ঠ; তাঁহার, পর আর কেহ নাই।

তিনি আমারদিগের দেবনীয়, তিনি আমারদিগের স্তব-নীর, তিনি আমারদিগের অতি প্রদের পরম প্রনীয় হরেন # > #

88

ন তদ্য কার্য্যং করণঞ্চ বিদ্যতে ন তৎসম*চাভ্যধিকশ্চ দৃশ্যতে। •পরাদ্য শক্তির্বিবিধৈব
শ্রোযতে স্বাভাবিকী জ্ঞানবলক্রিয়া চ ॥ ২ ॥

নি তস্য' কোর্যাং' শরীরং 'করপ্রণ' চকুরাদি 'বিদ্যতে'
'নি' 'তংসমং' তেন সমং 'চ' ন ততঃ 'অভ্যধিকং' 'চ'
'দৃশ্যতে'। 'পরা অস্য শক্তিং' 'বিবিধা' বিচিত্রা 'এব
ক্রেয়তে' অস্য জ্ঞানক্রিয়া বলক্রিয়া চ 'জ্ঞানবলক্রিয়া চ'
্বাভাবিকী' ॥ ২ ॥

তাঁহার শরীর ও ইন্দ্রিয় নাই, এবং কাহাকেও তাঁহার সমান বা কাহাকেও তাঁহা হইতে ভোঠ দেখা যার না; ইহাঁর বিচিত্র ও মহতী শক্তি, সর্বত্র প্রুত হয়, এবং জ্ঞান-ক্রিয়া ও বল-ক্রিয়া ইহাঁর স্বভাব-সিদ্ধ ॥ ২ ॥

শরীর এক যন্ত্র-বিশেষ, এক কার্য্য-বিশেষ; পরমে-বারের শরীর-রূপ যন্ত্র নাই; তিনি কোন শরীর-রূপ যন্ত্রের অধীন নহেন, তিনি কাহারও কার্য্যও নহেন। তাঁহারি

কার্য্য সমুদার, তিনি এক-মাত্র-কারণ-সর্প: তাঁহার শ্রীর নাই ও তাঁহার ইন্দ্রির নাই; অবচ তিনি সকল দেখিতে-ছেন এবং জানিতেছেন। তিনি এক মাত্র দকল হইতে শ্রেষ্ঠ: তাঁহার কেহ সমান নাই, তাঁহা হইতে কেহ অধিক नारे। जिनि এই সকলের स्रष्टी, আর সকল বস্তুই স্প্ট। তিনি এই বিশ্ব-রূপ মহারাজ্যের রাজা, আর সকলে তাঁহার প্রজা। তিনি আমারদিগের প্রম পিতা, আমরা সকলে তাঁহার সন্তান। তিঁনি আমাদিগের প্রভু, আমরা তাঁহার আজাধীন ভূতা। স্ক্লি ভাঁহার নিয়ুমাধীন: তাঁহার নিষমান্ত্রগারে উৎপন্ন হইতেছে এবং তাঁহারি,নিয়-মামুদারে ভগ হইতেছে। কি নভোমগুল-পর্যাবেক্ষণকারী **ट्या** जिर्द्श कि जुगर्जा सम्मानकाती जु-उद-विजा, कि শারীরিক নিয়ম নিরূপক শারীর-বিধান-বেতা, কি ভৌতিক-পদার্থ-তত্ত নির্ণায়ক পদার্থ-বিদ্যা-বিশারদ পণ্ডিতেরা, জি আত্মতত্ত্ব-সন্ধান্ত্ৰী স্থালন সকলেই তাঁহার আশ্চর্য্য অচিন্তা শক্তি কীর্ত্তন করিতেছেন। তাঁহারদের সকলের নিকট হইতেই দৰ্মত তাঁহার মহীয়দী শক্তির বিস্তারিত বৰ্ণনা প্ৰত হওয়া যায়।

আৰরা বেমন ইন্দ্রির বারা প্রত্যক্ষ করিরা অরে ব্দির বৃক্তি-পরম্পরা-ক্রমে এক এক বিষয় বিবেচনা করি, তাঁহার জ্ঞান-ক্রিয়া সেরূপ নহে। আমরা যেমন শরীরের মাংসপেশী বারা বল প্রকাশ করি, তাঁহার বল-

ক্রিয়া সেরপ নহে। তিনি স্বভাবত: আপনারই প্রভাবে
সমুদার জানিতেছেন, এবং কেবল আপনার এক ইছোর
বলে স্বীয় মঙ্গলাভিপ্রায় সম্পাদন করিতেছেন। কোন
বিষয় জানিবার নিমিত্তে ইক্রিয় প্রভৃতি অন্যের উপর
তোহাকে নির্ভর করিতে হয় না এবং স্বীয় শক্তি প্রকাশ
করিবার নিমিত্তে তাঁহার অন্য কোন উপকরণও আবশ্যক
করে না। তাঁহার জ্ঞান-ক্রিয়া এবং বল-ক্রিয়া স্বভাবসিদ্ধ। যাঁহা হইতে জ্ঞান বিশিষ্ট এই অসভ্যা জীব-সকল
উৎপন্ন হইয়াছে, কি আশ্চর্যা তাঁহার জ্ঞান, এবং যাঁহা
হইতে এই বস্তু-সকল স্বষ্ট হইয়া স্বীয় শক্তি প্রাপ্ত
হইয়াছে. কি মহতী তাঁহার শক্তিম ২॥

40

ন তগ্য কশ্চিৎ পতিরস্তি লোকে ন চেশিতা নৈব চ তগ্য লিঙ্গম্। সকারণং করণাধিপাধি-পোন চাগ্য কশ্চিজ্জনিতা ন চাধিপঃ॥ ৩॥

'ন তস্য কলিৎ পতিঃ অস্তি লোকে' অতএব 'নচ' তস্য 'ঈশিতা' নিয়ন্তা 'ন এব চ তস্য লিঙ্কং' যদৃশ্যতে। 'সং' সর্কাস্য 'কারণং' 'করণাধিপাধিপঃ' করণানামধিপোমনঃ তস্যাধিপঃ পরমেশ্বরঃ 'ন চ অস্য কলিডং' 'জনিতা' জনম্বিতা 'ন চ অধিপঃ'॥ ৩॥ জ্বণতে তাঁহার কেহ পতি নাই এবং নিরস্তাও নাই এবং তাঁহার কোন অবরবও নাই। তিনি সকলের কারণ ও মনের অধিপতি; ইহাঁর কেহ জনক নাই এবং অধিপতিও নাই॥ ৩॥

তিনি নিত্য, নিরবয়ব, স্বতন্ত্র, জন্ম-রহিত, মহান্ আস্থা। ৩।

63

এষদেবোবিশ্বকর্ম। মহাত্মা সদা জনানাত হৃদ্যে সন্ধিবিক্টঃ। হৃদা মনীষা মনসাভিক্তপ্তোষ এতদ্বিপ্রমৃতান্তে ভবস্তি॥ ৪॥

'এবং' 'দেবং' দ্যোতনাত্মকং প্রমেশরং। বিশং ক্পথ ক্রিয়তেথনেনতি 'বিশ্বক্রা' মহাংশ্চাসৌ আম্মেতি 'মহাআ' সদা সর্বদা 'জনানাং হৃদরে' 'সংনিবিষ্টং' সমাক্ স্থিতঃ। 'হৃদা' হুংহুরা 'মনীয়া' মনসং স্বল্লাদিরপ্রস্য ঈষ্টে নিরন্তু-স্থেনেতি মনীট্ তথা বিকল্লবর্জিত্যা 'মনসা' মননরপেণ স্ম্যান্দর্শনেন 'অভিক্তপ্তঃ' ফ্লাভুং শক্যভইত্যেতং। 'বে' 'এতং' ব্রন্ধ 'বিহুং' জানন্তি 'অমৃতাঃ' জ্মরণধর্মাণঃ 'তে ভ্রন্তি' ॥ ৪ ॥

পের স্থানের সর্বাদা সম্প্রপে স্থিতি করিতেছেন। ইনি হাস্পাত সংশার-রহিত বুদ্ধি দারা দৃষ্ট হইলে প্রকাশিত হয়েন। যাঁহারা ইছাঁকে জানেন, তাঁহারা অমর হয়েন॥৪॥

এই পরমেশ্র বিশ্ব স্থলন করিরাছেন এবং রচনা করিরাছেন, অতএব ইনি বিশ্বকর্মা। ইনি মহাত্মা, ইনি জীবাআর ভাষ কুদ্র নহেন। ইনি সকল লোকের হাদমে
প্রাণের প্রাণ-রূপে সদাই স্থিতি করিতেছেন। ইনি সংশয়রহিত নিশ্বল জ্ঞানে প্রকাশিত হয়েন। বাহারা ইহাকে
অনুসন্ধান করিয়া জানিতে পারেন, তাঁহারা ইহাঁর সহবাসজনত ভূমানন্দ নিত্যকাল উপভোগ করেন॥ ৪॥

42

তন্দুর্দর্শং গুঢ়মন্বপ্রবিষ্টং গুছাছিতং গছ্র-রেষ্ঠং পুরাণং। অধ্যাত্মযোগাধিগমেন দেবং মত্বা ধীরোহর্ষশোকো জহাতি॥ ৫॥

'তং' 'হৃদ্দর্শং' হুংবেনারাদেন দর্শনমুদ্যেতি হৃদ্দর্শঃ অতি-স্ক্রাবাৎ তং 'গুঢ়ং' গহনং 'অসুপ্রবিষ্ঠং' বিষয়বিকারেঃ প্রচ্ছন নমিত্যেতৎ 'গুহাহিতং' গুহায়াং আত্মভাহিতং হিতম্। গহরে স্থানে বিষমে অনেকানর্থদঙ্কটেতিষ্ঠতীতি 'গহরেষ্ঠং' 'পুরাগং' পুরাতনম্। 'অধ্যাত্মগোধিগমেন' বিষয়েভ্যঃ প্রতিসংহত্য আগ্রনঃ প্রমাক্সনি সমাধানম্ অধ্যাগ্রবোগঃ ত্যা অধিগমন্তেন 'মত্বা' 'দেবং' দ্যোতনাগ্রকং 'ধীরঃ হ. শোকৌ জহাতি'॥ ৫॥

তিনি মুজের, তিনি সমস্ত বস্তুতে গুঢ়-রূপে প্রবিষ্ট আছেন, তিনি আত্মাতে স্থিতি করেন ও অতি সঙ্কট স্থানে থাকেন, এবং নিত্য হয়েন; ধীর ব্যক্তি পরমা-ত্মাতে স্বীয় আত্মার সংবোগ দ্বারা অধ্যাত্ম-যোগে সেই পরম দেবতাকে জানিয়া হর্ষ শোক হইতে মুক্ত হয়েন। ৫

তিনি হুর্জের, বিষয়-মোহে হত-চেতন ব্যক্তি তাঁহাকে কোন প্রকারেই জানিতে পারে না; তিনি দর্শন-শাস্ত্রই পড়ুন, আর তর্ক-শাস্ত্রই পড়ুন, তাঁহার মনের সংশ্রছেদ কথনই হয় না, তাঁহার জ্ঞান কদাপি তৃপ্ত হয় না। সত্যের সভ্য তাহার নিক্চে ছায়ার স্থায় প্রকাশ পাইতে থাকে। কার্চেতে যেমন গৃঢ়-রূপে অগ্নি আছে, সেইরপ তিনি সমস্ত বস্তুতে গৃঢ় রূপে অমুপ্রবিপ্ত হইয়া প্রছের রহিয়াছেন; বিশুদ্ধনাক-নিঃস্কৃত প্রজ্ঞানত অন্তর্গর নাায় সহজেই প্রকাশিক্ত হয়েন। তিনি আআর অস্তরাত্মা, তিনি আমারদের আরাতে সর্বানা স্থিতি ক্রিতেছেন। তিনি আকাশেতেও ওছপ্রোত হইয়া আছেন। তিনি পর্বতের গুহা-গহবরে, তিনি হিমবৎ কৈলাস-শিপরে, তিনি বিস্ত্রীর্ণ দাবানলে,

किनि जीवन ममूज-जत्रक, जिनि निर्कत, वर्गम, मक्रष्ठे जातन শ্বিতি করেন এবং নিত্য হরেন। তিনি আমারদের সাক্ষাং কু: পিতা, তিনি আমারদৈর পুরাতন পিতামহ। ধীর ব্যক্তি অধ্যাত্মবোপ দারা দেই হজের পরমাত্মাকে জানিগ হর্ষ শোক হইতে মুক্ত হয়েন। প্রমান্নাতে জীবাদ্মাব সংযোগ করাকে অধ্যাত্ম-যোগ কহে। অধ্যাত্ম-যোগে यथन आमात हेळा जीहात हेळ्डात महिर्छ युक इब्र, यथन জ্ঞান তাঁহার সত্য-স্থ-দর-মগল মূর্ত্তি দেখিরা তৃপ্ত হর; তথন হৃদয় তাঁহাকে প্রতি-উপহার দিয়া আনন্দ-সাগ্রে লীন হয় এবং বিষয়-কামনা-জনিত হর্ষ-শোক হইতে মুক্ত হয়। যতই তাঁহার ইচ্ছার সহিত আমার ইচ্ছার যোগ হয়. ষতই তাঁহার জ্ঞানের সহিত আমার জ্ঞানের যোগ **रम,** यहरे डाँशांत श्रीिवित मिरड आमात श्रीवित त्यांग रम ; ততই তাঁহার সহিত সমিলনের গাঢ়তা হয় এবং ততই তাঁহার পবিত্র সন্নিকর্ম উপলব্ধি করিয়া পবিত্র হই। এই প্রকার ঘোগেতেই তাঁহাকে জানিতে পারি, এই প্রকার যোগেতেই তাঁহার আদিষ্ট ধর্মাত্মন্তানে বল পাই, এই প্রকার বোপেতেই স্বর্গ হয়, এই প্রকার বোগেতেই মুক্তি र्य। ८।

CD

প্রাণদ্য প্রাণমূত চক্ষুষশ্চকুরুত্ প্রোত্রদ্য

শোত্রং মনদোযে মনোবিছঃ। তে নিচিক্যুর্কা পুরাণমগ্রাম্॥ ৬॥

প্রোণস্য প্রাণম্ 'উত' তথা 'চক্ষ্য চক্ষ্ উত শ্রোত্রস্য শ্রোত্রং' 'মনসং' 'মনঃ' 'থে' 'বিছঃ' জানস্তি 'তে' 'নিচিকুঃ' নিশ্চয়েন জ্ঞানবস্তঃ 'ব্রহ্ম' 'পুরাণং' চিরস্তনম্ 'অগ্রাং' শ্রেষ্ঠম্॥ ৬॥

তাঁহারা নিশ্চয় রূপে এই পুরাতন সর্বশ্রেষ্ঠ পর-ব্রন্ধকে জানেন, যাঁহারা ইহাঁকে প্রাণের প্রাণ, চক্ষুব চক্ষু, শোত্রেব প্রোত্র এবং মনের মন বলিয়া জানেন ॥ পা

যাঁহাবা ইহাকে সকলের চেতনাবান কাবণ ও আশ্রন ্লিয়া জানেন, তাঁহারা ইহাকে নিশ্চয় রূপে জানেন॥ ॥॥

¢8

এক ধৈবাকু দ্রুষ্টব্যমেতদপ্রমেয়ং ধ্রুবম্। বিরজঃ পর্জাকাশাদজ্জাত্মা মহান্ধ্রবঃ ॥ ৭॥

'একধা এব' একেনৈব প্রকারেণ বিজ্ঞানদনৈকরদপ্রকা-বেল আকাশবলিরস্তরেণ 'অমুদ্রষ্টবান্' 'এতং' ব্রহ্ম। অভ্যেন হি অন্তং প্রনীয়তে ইনস্ত 'অপ্রমেয়ং' 'ধ্রবং' নিত্যং কুটস্থন্। 'বিয়ঞ্জঃ' বিগতর্জঃ অধ্যাদিমলরহিতং 'পরঃ' স্ক্রং'আকা- শাং' শপি। 'জজঃ' ন লারতে 'আস্মা' 'মহান্' মহতরঃ স্ক্রোৎ 'ঞ্বঃ' অবিনাশী॥ १॥

পরমেশ্বরকে একই জানিবেক, ইনি উপমা-রহিড এবং নিড্য। এই মিশ্বল জন্ম-বিহীন মহামৃ আত্মা শাকালের অভীত, সর্বালেকা মহৎ এবং অবিনালী দিয়া

ইনি একমাত্র এবং উপমা-রহিত; এমন কোন বস্তু নাই, যে তাহার সহিত তাঁহার উপমা দেওয়া যায়। তিনি সমস্ত বস্তু হইতে ভিন্ন, তিনি আকাশের অতীত এবং আকাশের মধ্যে থাকিয়া তিনি সমস্ত ঘটনাকে নিয়মিত করিতেছেন ॥ ৭ ॥

¢¢

যশ্মাদর্কাক্ সংবৎসরোহহোভিঃ পরিবর্ততে। তদ্দেবাজ্যোতিষাং জ্যোতিরায়ুর্হ্যোপাসতেহমু-তম্ ॥ ৮॥

'যশাং' ঈশানাং 'অর্থাক্ সংবংসরং' সংবংসরাবিছিন্নঃ কাল: 'অহোভিঃ' সাবন্ধবৈরহোরাজ্যৈঃ 'পরিবর্ত্তে'। 'তং' 'জ্যোতিবাং' 'জ্যোতিঃ' 'আয়ুঃ' 'অমৃতং' অন্ধ 'দেবাঃ' 'হি আ উপাসতে'॥ ৮॥

ধাঁহার শাসনে অহোরাত্র ত্বারা সংবৎসর পরিবর্ত্ত

হইয়া আসিতেছে; সেই জ্যোতির জ্যোতি, অমৃত, এবং সকলের আয়ুর কারণ পরত্রক্ষকে দেবতারা নিয়ত উপাসনা করেন॥৮॥

জন্য অন্য লোকে মনুষ্য অপেকা জান-ধর্ম-প্রীতিতে উন্নত বে সকল উৎকৃষ্ট জীব আছেন, তাঁহারা পরত্রক্ষকে নিন্নত উপাসনা করেন। বেমন দেবতারা পরত্রক্ষের উপা-সনা করেন তজ্ঞপ মনুষ্যেরও তাঁহাকে উপাসনা করিবার অধিকার আছে; ইহা আমার্মিগের সামান্য গৌরব ও সামান্য সৌভাগ্য নহে॥৮॥

00

সর্বস্থ বশী সর্বস্থোনাঃ সর্বস্থাধিপতিঃ।
সাসাধুনা কর্মণা ভূয়ান্ নো এব অসাধুনা
কণীয়ান্॥ ৯॥

'দর্বদ্য বশী' দর্বমদ্য বশে বর্ততে 'দর্বদ্য ঈশানঃ' 'দর্বদ্য অধিপতিঃ' 'দঃ' পুরুষোবিজ্ঞানময়ঃ 'ন দাধুনা কর্মণা' 'ভূয়ান্' ভবতি বর্দ্ধতে 'নো এব অদাধুনা' কন্মণা 'কণীয়ান্' অল্লতরোভবতি। দর্বদংদার শ্মবর্জিতঃ দঃ পুরুষঃ পূর্বাবস্থাতোন হীয়তে ন চ বর্দ্ধত ইত্যর্থঃ॥ ১॥

সকলই তাঁহার বশে রহিয়াছে, তিনি সকলের

নিয়ন্তা এবং সকলের অধিপতি। সাধু কর্মে তাঁহার বৃদ্ধি হয় না এবং অসাধু কর্মেও তাঁহার হাস হয় না ॥১॥

পরমেশ্বর মাহাকে বে নিয়মের অধীন করিয়া দিয়াছেন, সে সেই নিয়মেই রহিয়াছে; কেহ তাঁহার শাসন
অতিক্রম করিতে পারে না। তিনি সর্কোশ্বর, সর্কানিয়স্তা,
সর্কাধিপতি। মহ্বর্য ধেমন সদসৎ কর্মাহ্মসারে উৎকৃষ্ট
বা অপকৃষ্ট অবহা প্রাপ্ত হয়, তাঁহার সেয়প অবহা পরিবর্তন হইবার সন্তাবনা নাই। তাঁহার স্বরূপ এরপ উৎকৃষ্ট, যে তদপেকা তাহা আর উৎকৃষ্ট হইতে পারে না,
এবং এ প্রকার অপরিবর্তনীয়, যে কদাপি তাহা পরিবর্ত্ত
হইয়া অপকৃষ্ট হইতে পারে না॥ ১॥

49

এষসর্বেশ্বরএষভূতাধিপতিরেষভূতপালএষ-দেতুর্বিধরণএষাং লোকানামসম্ভেদায়॥ ১০॥

'এষ: দর্কেশর:' 'এষ:' 'ভ্তাধিপতি:' ভ্তানামধিপতি: 'এষ: ভ্তপাল:' ভ্তানাং পাদয়িতা রক্ষিতা 'এষ: দেতৃ:' 'বিধরণঃ' দর্কিসংগরেধর্মবাবস্থায়াবিধারয়িতা 'এষাং লোকানাং' ভ্রাদিলোকানাম্ 'অসম্ভেদার' অসম্ভিন্নমর্যা-দারে। লোকাঃ দর্কে সম্ভিন্নমর্যাদাঃ স্থারতোলোকানাম-সম্ভেদার সেতৃভ্তোহয়ং পর্মেশরঃ॥ ১০॥ ইনি সকলের ঈশ্বর, ইনি সমস্ত বস্তুর অধিপতি, ইনি সর্বভূতের প্রতিপালক, ইনি লোক-ভঙ্গ-নিবার-গার্থে সেতু-অরূপ হইয়া সমূদ্র ধারণ করিভেছেন॥ ১০॥

প্রজাপালক পরমেশর এ প্রকার দৃঢ়-বদ্ধ নিরমপ্রণাণী সংস্থাপন করিরা বিশ্ব-রাজ্য-পালন করিতেছেন বে, কোন ক্রমেই তাহার ব্যতিক্রম ঘটরা সংসারের উচ্ছেন-দশা প্রোপ্তির সম্ভাবনা নাই। পরমেশ্বর "লোকভঙ্গ-নিবারণার্থে সেতু-স্বরূপ হইরা সমুদ্ধ ধারণ করিতেছেন"॥ > • ॥

9

শ্বিন্ দ্যো: পৃথিবী চান্তরীক্ষমোতং মনঃ
সহ প্রাণেশ্চ সইর্বিঃ। তমেবৈকং জ্বানথ আত্থানমন্তাবাচোবিমুঞ্থ অমৃতক্তৈষ্ঠেন্ডঃ॥ ১১॥

'অন্নিন্' জক্তরে পুরুবে 'দ্যৌঃ পৃথিবী চ অন্তরীকন্' 'ওডং' সমর্পিডং 'ননঃ সহ' 'প্রোণৈঃ' করণৈঃ 'চ' 'সুকৈং'। 'ভন্ এব' সর্বাশ্রয়ন্ 'একন্' অছিতীরং 'জান্ধ' জানীত 'লালানন্' ললন্ একং ব্রদ্ধ 'অস্তাঃ বাচঃ' 'বিমুক্ত্প' বিমুক্তত পরিত্যলত। বতঃ 'অসুত্র্যা' অনৃত্ত্ব্যা নোক্ষপাপ্তরে 'এবং সেতুঃ' সংসারমহোদধেকুত্তরগছেভুত্বাং ॥ ১১॥

देदीए द्वालाक, शृथिवी, कखतीक, धवर यन उ

ইন্দ্রিয় সমুদর আশ্রিত হইয়া রহিয়াছে। সেই অদ্বিতীয় পরমাত্মাকে জান এবং অন্ত বাক্য-সকল পরি-জ্যাগ কর; ইনি অমৃতলাভের দেবু॥ ১১॥

ইনি সকলেরি রক্ষক এবং সকলেরি আশ্রয়। ইইাকে দান এবং অন্থ বাক্য পরিত্যাগ কর। ইহাঁকে অতিক্রম করিয়া কোন কথা কহিবে না, কোন চিন্তা করিবে না, কোন কার্য্য করিকে না, সম্যক্ রূপে ইহাঁরই শ্রণাপল হইয়া থাকিবে; তবে পাপ, তাপ, মোহ হইতে মুক্তি পাইয়া অমৃত লাভ করিবে, ইনি অমৃতের সেতু-স্বর্গ ॥ ১১ ॥

63

ন জায়তে আয়তে বা বিপশ্চিন্নায়ং কুতশ্চিন্ন বভূব কশ্চিৎ ॥ ১২ ॥

এমপর আয়া 'ন জায়তে' নোৎপদ্যতে 'শ্রিয়তে বা' ন শ্রিয়তে 'বিপশ্চিৎ' মেধাবী সর্ব্ধজঃ অপরিল্পুটে তন্যস্বভা-বস্থাৎ কিঞ্চ 'ন' 'অয়ম্' আয়া 'কুতশ্চিৎ' কারণাস্করাৎ বভ্ব 'ন' অপি এযআয়া 'বভূব কশ্চিৎ' অধীস্করভূতঃ॥ ১২ ॥

এই পরমাত্মার জন্ম নাই, মৃত্যু নাই; ইনি সর্বজ্ঞ। ইনি কোন কারণ হইতে উৎপন্ন হন নাই এবং আপনিও জন্ম কোন বস্তু হয়েন নাই ॥ ১২॥ खन-मृज् - विकाद-विशेन, खन-श्रमान-मृना, ७ क व्यर्गान-विक পরমায়া হইতে এই সমুলায়ই উৎপর হইয়াছে, কি -তিনি আপনি কিছুই হয়েন নাই। ছয় পরিণত হইয়া য়েমন লিধি হয়, মৃতিকা রূপাস্তর প্রাপ্ত হইয়া য়েমন ঘট হয়, এবং অবি অবস্থাস্তর প্রাপ্ত হয়েন নাই। রজ্জুতে য়েমন সর্প-জন হয়, মরীচিকায় য়েমন জল-জন হয়, এবং ভক্তিকায় য়েমন রজত-জন হয়, তাঁহাতে সেরুপ য়৸ হইয়া য়ে এই জগং প্রকাশ পাইতেছে, তাহাও নহে। তিনি এই সমুলয় জগং স্পৃষ্টি করিয়াছেন। জগং তাঁহা হইতে পৃথক্ পদার্থ। তিনি য়য়: জড়ও হয়েন নাই এবং জীবও হন নাই॥ তিনি সেবা ও উপাদ্য এবং আমরা সকলে তাঁহার সেবক ও উপাদক॥ ১২॥

80

যদর্চিমদ্যদণুভ্যোহণু যশ্মিন্ লোকানিহিতা-লোকিনশ্চ। তদেতৎ সত্যং তদমূতং তৎ বেদ্ধব্যং সৌম্য বিদ্ধি॥ ১৩ ॥

'যৎ' ত্রহ্ম 'অর্চিমৎ' দীপ্তিমৎ 'যৎ অণুভা: অণু' 'বস্থিন্' 'লোকা:' ভূরাদয়: 'নিহিতা:' স্থিতা: 'লোকিন: চ' লোক-নিবাদিনোমন্ব্যাদয়:। 'তং এতং' সর্বাশ্রয়: 'সত্যং' 'তৎ' 'অমৃতম্' মবিনাশি 'তৎ বেদ্ধবাং' মনসা তাড়য়িতবাং তশ্মিন্ ্ৰীঃ সমাধানং কৰ্ত্তব্যমিত্যৰ্থঃ। যশ্মাদেবং তশ্মাৎ হে 'সৌম্য' 'বিদ্ধি' ব্ৰহ্মণি মনঃ সমাধৎস্থ ॥ ১৩॥

যিনি জ্যোতির্মাণ, যিনি অণু হইতেও স্থানতর এবং
মাঁহাতে লোক-সকল ও লোকনিবাসী জীব-সকল
স্থাপিত রহিয়াছে, ডিনিই সত্য, ডিনি অমৃত, তিনি
আত্মার দ্বারা বেধনীয়। অতএব হে প্রিয় শিষ্য !
ডোমার আত্মার দ্বারা তাঁহাকে বিদ্ধা কর।। ১৩।।

হে প্রিয়! তোমার আত্মাকে সর্বান্তরতম পরমাত্মা হইতে অন্তর করিও না, তাঁহা হইতে তাহাকে বিচ্ছিন্ন করিয়া দীন-ভাবে মুহ্মান হইও না; কিন্তু তাহাকে পবিত্র করিয়া তাঁহার নিকটে লইয়া যাও, একাগ্র-চিত্ত হইয়া তাহার দারা পরমাত্মাকে বিদ্ধ কর এবং অধ্যাত্ম যোগ-জনিত পরমানক্ উপভোগ কর॥ ১১ ॥

৬১

প্রণবোধকুঃ শরোহাত্মা ত্রন্ধ তল্লক্ষ্যমূচ্যতে। ব্যাপ্রমাতন বেদ্ধব্যং শরবৎ তন্ময়োভবেৎ ॥১৪॥

'প্রণব:' ওয়ার: 'ধমু:' 'শর: হি' 'আআ' জীবাআ 'এছ ত্রকান্ উচ্যতে'। 'অপ্রনত্তেন' প্রমাদবর্জ্জিতেন জিডে- ক্রিয়েণ একাগ্রচিত্তেন তল্পক্যং ব্রহ্ম 'বেদ্ধব্যং' ততস্তন্ধে-ধনাদূর্দ্ধং 'শরবং তন্ময়ঃ ভবেং' যথা শরোলক্ষ্যময়োভবতি তথা তদ্য দাধকদ্য আয়া ব্রহ্মময়োভবেং॥ ১৪॥

প্রণব ধনু-স্বরূপ, জীবাত্মা শর-স্বরূপ, এবং পর
বেদ্ধা লক্ষ্য-স্বরূপ; প্রমাদ-শৃত্য হইয়া দেই প্রণব-ধনুর

অবলম্বনেতে জীবাত্মা-রূপ শর দারা ব্রহ্ম-রূপ লক্ষ্যকে

বিদ্ধা করিবেক। আর ধেমন শর লক্ষ্যকে বিদ্ধা করিয়া
ভাহার মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া ভাহার দারা সম্পূর্ণরূপে
আর্ত হয়, তদ্ধেপ জীবাত্মা ব্রহ্মকে বিদ্ধা করিয়া ভাহার

মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া ভাহার দারা সম্পূর্ণরূপে আর্ত

হইবেক। ১৪॥

ওঁকারকে প্রণব বলে। ওঁকারের অর্থ কৃষ্টি-স্থিতি-প্রাক্র-কর্ত্তা; ইহা পরব্রহ্মের প্রতিপাদক শব্দ। জীবা-দ্মাকে শর-স্বরূপ করনা করিয়া এবং ওঁকার শব্দকে ধরু:-স্বরূপ করনা করিয়া জানান হইয়াছে যে, যেমন কোন লক্ষ্যের প্রতি শব্দ নিক্ষেপ করিবার জন্য ধরুকে অবলম্বন করা আবখক হর, সেইরূপ এক্ষকে লক্ষ্য করিয়া জীবা-দ্মাকে তাঁহার সমীপ করিবার নিমিত্তে তৎপ্রতিপাদক শব্দ দ্মাণ্ড উপকারী হর। ধাঁহার আত্মা ব্রন্ধ-রূপ লক্ষ্য বিদ্ধ-করিয়া তাঁহার মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়াছে, তিনি জানিয়াছেন যে, যেমন তাঁহার আছা পরত্রক দারা অ'বৃত রহিয়াছে ভূরিপ সম্দায় জগৎ তাঁহারই দারা আবৃত রহিয়াছে॥১৪॥ ভূ

৬২

সমে শুচো শর্করাবহ্নিবালুকা-বিবর্জ্জিতে শব্দজলাপ্রয়াদিভিঃ। মনোহসুকূলে ন তু চক্ষুপীড়নে গুহানিবাতাপ্রয়ণে প্রযোজয়েং॥ ১৫॥

'সমে' নিরোয়তরহিতে দেশে 'শুচৌ' শুদ্ধে 'শর্করাবহিন-বালুকাবিবজিতে,' শর্করাঃ ক্রুদ্রোপলাঃ বহ্নিবালুকাঃ তপ্ত-বালুকাঃ তাভ্যোবিবজিতে 'শক্জলা শ্রমাদিভিঃ' বিহলা-দীনাং শক্ষঃ জলং আশ্রমোমগুপম্ ইত্যাদিভিঃ 'মনোহন্ত্লে' মনোরমে স্থানে 'ন তু' 'চক্ষ্পীজনে' চক্ষুঃ শীজনে প্রতিবাদ্য-নভিমুধে 'গুহানিবাতা শ্রমণে' গুহায়ামে কাজে নিবাতে প্রচণ্ডবায়ুবর্জিতে আশ্রমণে আশ্রমে 'প্রবোজয়েং' প্রযুঞ্জীত চিত্তং পরমে ব্রক্ষণি ॥ ১৫॥

কল্পন্ত, তপ্ত-বালুকা-বর্জ্জিত, সমান ও শুচি দেশে; উত্তম জল, উত্তম শব্দ ও আগ্রান্দ দ্বারা মনোরম স্থানে; প্রতিবাদীর অন্তিমুখে; ও স্থানর বাস্ত্রনেবিত বিরশ স্থানে স্থিতি করিয়া প্রত্তমে আন্মা সমাধান করিবেক ॥ ১৫॥

যে স্থানে অবস্থিতি করিলে অন্তঃকরণ প্রাণস্ত হয়, এবং পবিত্র পুক্ষেতে অনায়াদে আত্মার সংযোগ হয়, দেই স্থানে উপবিষ্ট হইয়া উপাদনা করাই বিধেয়। তুর্গন্ধ, উত্তপ্ত, অপরিষ্কৃত, অভচি স্থানে অবস্থিতি করিলে অন্তঃ-করণে মালিনা জন্মে এবং উপযুক্ত মত ঈশবেতে আ্যার অভিনিধেশ হয় না। কিন্তু যে স্থান অতি বিরল, পবিত্র, পরিষ্কৃত, পরিচ্ছন, স্নিগ্ধ ও অবন্ধুর, যেখানে উত্তম জল, যেখানে বায়ুর উপত্রব নাই, যেখানে বিহঙ্গদদিগেব স্কুশারা শব্দ শ্রুত হয়, এবং যেখানে বিপক্ষ প্রভৃতি ক্রন্থুংগীড়ার কোন বিষয় নাই, সে স্থান অপেকায় আর কোন স্থান অধিক মূনঃপুত হইতে পারে, এ প্রযুক্ত এইরূপ পবিত্র স্থকর স্থানে অবস্থিতি করিয়া উপাসনা করা ব্রহ্ম-মানিদিগের অভিমত। যে স্থানে মন প্রশস্ত, পবিত্র ও নিক্ষিয় থাকিতে পারে, এমন স্থানেই উপাসনা কর্মব্য: কারণ, মন উদ্বিগ্ন ও উত্তাক্ত ও মনিন হইলে পবিত্র-স্বরূপ স্বাধ্যের উপাদনা অচাকরপে সম্পন্ন হয় না॥ ১৫॥

40

ত্রিক্সতথ স্থাপ্যসম্থ শরীর্থ হুদীক্রিয়াণি মনসা সমিবেশ্য। ত্রেকাড়ুপেন প্রতরেত বিদ্বান্ প্রোতাথ্যি সর্বাণি ছয়াবহানি॥ ১৬॥ কীণি উরোগ্রীবাশিরাংসি উন্নতানি যশ্মিন্ শরীরে তং
শ্রীরং' 'সমং' 'স্থাপ্য' সংস্থাপ্য 'হুদি' 'ইন্দ্রিয়াণি'
চক্ষরাদীনি 'মনসা' 'সংনিবেশ্য' সংনিয়ম্য 'ব্রন্ধোড় পেন'
ব্রদ্ধৈর উড়ুপং তরণসাধনং তেন 'প্রত্যেত' অতিক্রমেং
'বিদ্বান্' 'স্রোভাংসি সর্বাণি' সংসারসাগরসা 'ভ্রাবহানি' ॥১৬॥

বক্ষঃ, গ্রীবা ও শিরোদেশ উন্নত করত সমভাবে শরীর স্থাপন করিয়া মনের সহিত চক্ষুরাদি-ইন্দ্রিন সকল হৃদয়েতে সন্ধিবেশ পূর্ধিক সংসারার্থবের ভয়াবহ ক্রোত-সকলকে ত্রন্ধা-স্বরূপ ভেলকের ধারা অতিক্র্য ক্রিবেক॥ ১৬॥

পূর্ব্ধে যেরপ উপাসনার উপযুক্ত স্থানের বিষয় কণিত হইরাছে, সেইরপ উপাসনা-কালে কি প্রকারে উপবেশন করিবেক, তাহাও এই বৃচনে প্রাপ্ত হইতেছে। বক্ষঃ, গ্রীবা ও শিরোদেশ উন্নত করিরা ঋজু হইরা বদিলে শরীর ও মনের কোন বাতিক্রম ঘটে না; অতএব উপাসনা-কালে এই প্রকারে উপবেশন করিরা ইন্দ্রিয়-প্রবৃত্তি ও তাবৎ মনোবৃত্তিকে হৃদয়ে সন্ধিবেশ করিবেক—তাহারদিগকে নানা প্রকার বাহ্থ-বিষয়-ব্যাপারে ব্যাপৃত হইতে না দিয়া মনের সহিত আত্মাকে পরমান্থাতে সমাধান করিবেক এবং হৃদয়ের প্রীতি তাঁহাতে অর্পণ করিরা ক্বতার্থ হৃইবেক॥ ১৩॥

ञ के स्मार्थायः।

68

বিশ্বতশ্চক্ষুকৃত বিশ্বতোমুখোবিশ্বতোবাছ-কৃত বিশ্বতস্পাৎ। সংবাহ্নভ্যাং ধমতি সম্পত-ত্রৈক্যাবাভূমী জনমুন্ দেবএকঃ ॥ ১॥

সর্পত্র চক্ষ্য বিদ্যন্তে অন্তেতি 'বিশ্বতশ্চক্ষ্য' 'উত' তথা সর্পত্র মুখানি বিদ্যন্তে অন্যেতি 'বিশ্বতোমুখ্য' সর্পত্র বাহবোবিদ্যন্তে অন্যেতি 'বিশ্বতোবাহ্য' 'উত' সর্পত্র পাদা বিদ্যন্তে অন্যেতি 'বিশ্বতশ্পাং'। সং পর্মেশ্বরঃ 'বাহভ্যাং' 'সং ধমতি' সংধমতি সংযোজয়তি মমুষ্যান্ 'পভত্রৈয়াং' পতনৈঃ সংধমতি পশ্দিনঃ 'দ্যাবাভূমী' দ্যাবাপৃথিবী 'জনয়ন্' স্টেবান্ 'দেবঃ একঃ'॥ ১॥

সর্বতি তাঁহার চকু, সর্বত্রে তাঁহার মুখ, সর্বত্রে তাঁহার বাহু, সর্বত্রে তাঁহার পদ বিদ্যমান রহিরাছে। তিনি মনুষ্য-দেহে বাহু স্ংবোগ করেন, এবং পক্ষি-শরীরে পক্ষ সংবোগ করেন; অন্বিভীয় পরমেশ্বর ছালোক ও ভূলোক স্থান্টি করিরাছেন।। ১ ॥

সর্বতিই তাঁহার চকু; ভিনি সকলের সাকী; সকলের অন্তর্বাহ্ তিনি সমান-রূপে দৃষ্টি করিতেছেন; তামদী নিশার যোর অন্ধর ও ওাঁহার দৃষ্টিকে আ্ছের করিতে পারে না।
সর্ব্বেই তাঁহার মুখ, পাপীরা তাঁহার কন্ত মুখ দেখিতে পার,
পুণ্যাত্মারা তাঁহার উৎসাচু-জনন প্রসন্ন মুখ দর্শন করেন।
সর্ব্বেই তাঁহার বাছ; এই বিশ্ব সংসারে সকল কার্য্যেতে
তাঁহারই বল তাঁহারই কোশল প্রকাশ পাইতেছে। সর্ব্বে তাঁহার পদ বিদ্যান রহিয়াছে। তিনি সর্ব্বেই পূর্ণরূপে হিতি ক্রিভেছেন। তিনি মন্ত্র-দেহে বাছ সংযোগ
করেন এবং পক্ষিশরীরে পক্ষ সংযোগ করেন। কার্য্যনির্ব্বাহ ও স্থবাধনার্থে ঘাহার যে প্রকার অক্ষের প্রয়োজন,
তাহাকে সেই প্রকার অক্ষ দিয়াছেন। অন্ধিতীয় পরমেশ্বর
ছালোক ও ভূলোক সৃষ্টি ক্রিয়াছেন॥ ১॥

160

সর্বতঃ পাণিপাদন্তৎ সর্বতোহ ক্ষি শিরোমুখম্।
সর্বতঃ প্রতিমলোকে সর্বমারত্য তিষ্ঠতি॥ ২ ॥
সর্বতঃ পাণয়ঃ পাদান্দ যদ্য 'তং' 'সর্বতঃ পাণিপাদং'
সর্বতাহক্ষীণি শিরাংদি মুখানি চয়্য তং 'সর্বতোহক্ষিণিনোমুখং' 'সর্বতঃ' শ্রুতিঃ প্রবণমদ্যোতি 'শ্রুতিমং' 'লোকে'
প্রাণিনিকারে 'সর্বমারতা' সংব্যাপ্য 'তিষ্ঠতি'॥ ২ ॥

সর্বত্র তাঁহার হস্ত পদ, সর্বত্র তাঁহার মুখ চক্ষু মস্তক, সর্বলোকে তাঁহার শ্রোত্র বিদ্যমান রহিয়াছে। তিনি সকল জগৎ ব্যাপিয়া স্থিতি করিতেছেন॥ ২॥

তাঁহাকে দর্কত্র বিজ্ঞমান জ্ঞানিয়া, হে মানবদকল । শুভ কর্ম ক্বিতে উৎদাহী হও এবং পাপাচরণ ক্রিতে ভয় কর॥ ২॥

৬৬

সর্ব্বাননশিরোগ্রীবঃ সর্ব্বভূতগুহাশয়ঃ। সর্ব্বব্যাপী সভগবান্ তম্মাৎ সর্ব্বগতঃ শিবঃ॥ ৩॥

সর্বাণি আননানি শিরাংসি গ্রীবাশ্চাস্যেতি 'সর্বান-নশিরোগ্রীবং' সর্বেবাং ভূতানাং গুহায়াং হাদয়ে শেতে ইতি 'সর্বভূতগুহাশয়ঃ' 'সর্বব্যাপী' চ 'দঃ' 'ভগবান্' ঈশরঃ যত্মা-.দবং 'তত্মাং সর্ব্বগতঃ' 'শিবঃ' মঙ্গলঃ॥ ৩॥

এই নানা-শিরো-মুখ-এীবা-বিশিষ্ট পরমেশ্বর সর্ব জীবের হৃদয়ে অবস্থিত আছেন। সেই ঈশ্বর সর্বব্যাপী, স্থাতরাং সর্বব্যাত এবং তিনি মঙ্গল-স্বরূপ হয়েন॥ ৩॥

সর্ববাপী ও সর্ববাকী প্রমেশ্র সকলের হান্ত্রে সর্বানাই
হিতি করিতেটোন। তিনি সকল জীবের মঙ্গল-উদ্দেশে
এই বিচিত্র স্থাইর রচনা করিয়াছেন। যে ব্যক্তি যাহা
কিছু মঙ্গল লাভ করে, সে দেই মঙ্গল-স্বরূপ প্রমেশ্বর
হইতেই প্রাপ্ত হয়। তিনি আমারদিগের জ্ঞানদাতা,
স্থা-দাতা, মুক্তি-দাতা; তিনি আমারদিগের সকল মঙ্গলের
নিদানভূত ॥ ৩॥

69

অপাণিপাদোজবনোগৃহীত। পশ্যত্যচক্ষুঃ সশ্ণোত্যকর্ণঃ। সবেত্তি বেদ্যং ন চ তস্যাস্তি বেতা তমাহুরগ্র্যং পুরুষং মহান্তম্॥ ৪॥

'অপাণিপাদঃ' 'জবনঃ' দ্রগামী 'গৃহীতা' যহপাদেরং তদ্য। 'পশ্যতি' সর্বাম্ 'অচক্ষ্য' অপি সন্ 'দঃ শৃংগাতি অকর্ণঃ' অপি। 'দঃ বেত্তি বেদ্যম্' অমনস্কোহপি সর্ব্বজ্ঞাৎ 'নিচ তদ্য অতি বেত্তা' 'তম্ আছঃ' 'অগ্রাং' প্রথমং সর্ব্বারণ-ভাৎ 'পুরুষং' পূর্ণং 'মহান্তম্'॥ ৪॥

তাঁহার হস্ত নাই, তথাপি তিনি এইণ করেন; তাঁহার পদ নাই, তথাপি তিনি গমন করেন; তাঁহার চক্ষু নাই, তথাপি তিনি দৃষ্টি করেন; এবং তাঁহার কর্ন নাই, তথাপি তিনি শ্রেবণ করেন। তিনি যাবৎ বেদ্য বস্তু সমস্তই জানেন, কিন্তু তাঁহার কেছ জ্ঞাতা নাই; যীরেরা তাঁহাকে সকলের আদি ও পূর্ব ও মহান্ করিয়া বলিয়াছেন॥ ৪॥

পরিমিত কুদ্র জীবের ন্যায় তাঁহার হস্ত পদাদি কোন অবয়ব নাই; অথচ হস্ত পদাদির কার্য্য তাঁহার অচিস্ত্য ঐশী শক্তির হারা সহজেই সম্পন্ন হইতেছে॥ ৪॥

64

যএষস্থ প্রের জাগর্তি কামং কামং পুরুষোনি-নির্মিশাণঃ। তদেব শুক্রং তদ্বক্ষ তদেবামৃত-মুচ্যতে। তন্মিঁলোকাঃ শ্রিতাঃ দর্বে তছুনা-ত্যেতি কশ্চন॥ ৫॥

ধি: এবং পুরুষঃ 'স্থেষ্ণ' :প্রাণিষু 'জাগর্ডি' ন স্থাপিতি কথাং 'কামং কামং' তস্তমভিপ্রেতং অরপানান্তর্যং 'নির্দ্দিন মাণঃ' নিম্পাদরন্। 'তৎ এব' 'গুক্রং' গুলুং গুদ্ধং 'তৎ প্রদ্ধা মাতাং গুল্থ প্রদ্ধান্তি 'তৎ এব' 'অমৃত্রম্' অবিনাশি 'উচ্যতে' কিঞ্চ গুথিব্যাদরঃ 'দর্কো' 'লোকাঃ' 'তদ্মিন্' ক্রদ্ধাণি প্রিতাঃ' দ্বিভাঃ দর্কলোককারণজাৎ তদ্য। 'তৎ' ক্রদ্ধা 'উ' 'ন' , মত্যেতি' স্বতিবর্ত্তে 'কশ্চন' কশ্চিদ্পি॥ ৫॥

ষধন তাবৎ প্রাণী নিজাতে অভিভূত থাকে, তথন যে পূর্ব পুরুষ ক্লাপ্রত থাকিয়া সকলের প্রায়েক্সনীয় নানা অর্থ নির্মাণ করিতে থাকেন; তিনিই শুল্ধ, তিনিই ত্রেন্ধ, তিনিই অমৃত-রূপে উক্ত হয়েন; তাঁহাতেই লোক-সকল আপ্রতিত হয়া রহিয়াছে, কেহ তাঁহাকে অতিক্রম করিতে পারে না॥ ৫॥

আমরা জাগ্রত থাকি বা নিজিত থাকি, তিনি দর্মকণ্ট

জাগ্রত থাকিরা আমারদিগের নানাবিধ প্ররোজনীয় অর্থ-সকল বিধান করিতে থাকেন। যথন আমরা স্থলীর মলল-সাধনার্থে শ্রম হইতে বিরত হই, তথন তিনি বিরত হল না। তিনি আমারদিগের অবিশ্রান্ত হিত-সাধন করিতেছেন ॥ ৫॥

৬৯

অণোরণীয়ান্ মহতোমহীয়ান্ আত্মা গুহায়াং নিহিতোহস্ত জন্তোঃ। তমক্রতুং পশ্যতি বীতশোকো-ধাতুঃ প্রসাদামহিমানমীশম্॥ ৬॥

'অণো:' স্নাদিপ 'অণীয়ান্' অণ্তর: 'মহত:' 'মহীয়ান্'
মহত্তর:। সচ 'আআ।' পরমেশর: 'অস্য জড়ো:' প্রাণিজাতন্ত 'শুহারা:' স্থারে 'নিহিত:' স্থিত:। 'তম্' 'ঈশম্'
'অক্রত্থ' বিষয়ভোগসন্ধলরহিতম্ অস্য চ 'মহিমানং'
'পশুতি' য: স: 'বীতশোক:' 'ধাতু:' ঈশরস্য 'প্রসাদাং'।
প্রসন্ধে হি পরমেশরে তদ্যাধান্মকানম্পপভতে॥ ৬॥

পরমান্তা স্থাম ধইতেও স্থাম; এবং মহৎ হইতেও মহং। তিনি প্রাণিগণের হাদরে বাস করেন। বিগত-লোক ব্যক্তি সেই ভোগাভিলায-বর্জিত ঈশারকে ও তাঁহার মহিমাকে তাঁহারই প্রসানে দৃষ্টি করেন।। ৬॥ আমারদের আথা হইতেও তিনি সৃদ্ধ এবং অসীম আকাশ হইতেও তিনি মহান্। তাঁহাকে দর্শন করিবার ' জন্ম দূরে ভ্রমণ করিতে হয় না, তিনি আমারদের স্থলয় মন আথাতেই বাস করিতেছেন। তিনি ভোগাভিলাম-বর্জিভ, নিত্য পরিত্প্ত আনন্দময়; যে সাবক তাঁহারে দর্শন পান্ন, তাহার আর শোক থাকে না; তাঁহার প্রেমে মন্ন ইলৈ তাহার আর কোন অভাব থাকে না॥ ৬॥

90

একোবশী সর্বভূতান্তরাত্মা একত রূপং বহুধা যঃ করোতি। তমাত্মস্থং যেহতুপশুন্তি ধীরা-স্তেষাত স্থুখত শাশ্বতং নেত্রেষামু॥ ৭॥

সহি পরমেশবং দর্বগতঃ স্বতন্ত্রং 'একং' 'বনী' দর্বং হাদ্য জগং বশে বর্ত্ততে 'দর্বভৃতাস্তরায়া' দর্বেষাং ভৃতানামস্ত-রায়া 'একং রূপং' 'বছধা' বছপ্রাকারং 'ঘঃ করোতি' স্বায়্মসভামাত্রেণ অচিস্কাশক্তিয়াং। 'তম্' 'আল্লুহং' স্বকীয়ে আল্লুনি স্থিতং 'যে' 'ধীরাং' বিবেকিনাং 'অনুপশ্যন্তি' সাক্ষা-মুহুবন্তি 'তেষাং' 'শাশ্বতং' নিত্যং 'স্থম্' আনন্দলকণং ভ্ৰতি 'ন ইতরেষাম্' অনেবংবিধানাম্॥ ৭॥ ধিনি এক মাত্র, সকলের নিয়ন্তা, ও সর্বভূতের অন্তরাত্মা এবং যিনি এক রূপকে বহু প্রকার করেন; উাহাকে যে ধীরেরা স্বীয় আত্মাতে সাক্ষাৎ দৃষ্টি করেন, তাঁহারদের নিত্য স্থ্য হয়, অপর ব্যক্তিদিশের ভাহা কদাপি হয় না॥ ৭॥

সকলেই তাঁহার বশে বহিয়াছে, এবং সকলেবই তিনি
নিয়ন্তা। তিনি আমাবদেব সকলের আয়াব অভ্যন্তরে
স্থিতি কবিতেছেন। তিনি একাকী কাগারও সহায়তা না
লইয়া এই বিচিত্র জগং স্পৃষ্টি কবিয়াছেন; তিনি নিত্য
স্বকার স্বরূপে অবিকৃত থাকিয়া আপনার এক কপকে বহু
প্রকার করিয়াছেন; আপনি অভ্য কোন বস্ত হন নাই।
এই একমাত্র সকলের নিয়ন্তা এবং সর্বভূতেব অন্তবাদ য়াকে যিনি স্বীয় আয়াতে সাক্ষাৎ পাইয়া তাঁহার সহিত্য
সহবাস লাভ করিয়াছেন; তাঁহার যেরূপ বিষয়াতীত সাম্বত স্থা ভোগ হয়, অপর ব্যক্তিদিগের তাহা কদাপি
হয়্মনা॥ १॥

93

নিত্যোহনিত্যানাং চেতনশ্চেতনানামেকো-বছুনাং যোবিদবাতি কামান্। তমাত্মস্থং যেহসু- পশ্যন্তি ধীরান্তেষাত শান্তিঃ শাশ্বতী নেতরে-যামু॥৮॥

'নিতাঃ অনিত্যানাং' 'চেতনঃ' 'চেতনানাং' চেতরিতা সর্ব্বস্থ্যান্। কিঞ্চ সর্বেশ্বরঃ সর্বজ্ঞঃ 'একঃ' সন্ 'বহুনাং' কামিনাং সংসারিণাং কর্মান্ত্রপং 'কামান্' 'যঃ' অনায়াসেন 'বিদ্ধাতি' দদাতি। 'তম্' 'আয়ুস্থং' 'যে অন্প্রপাতি' 'ধীরাঃ' 'তেষাং শাস্তিঃ' 'শাশ্বতী' নিত্যা 'ন ইতরেষাম্'॥৮॥

বিনি তাবৎ অনিত্য বস্তুর মধ্যে কেবল একমাত্র নিত্য, বিনি সকল চেডনের কেবল একমাত্র চেতরিতা, একাকী বিনি তাবতের কাম্যবস্তু বিধান করিতেছেন তাঁহাকে ধীরেরা স্থীয় আত্মাতে সাক্ষাৎ দৃষ্টি করেন, ওঁ।হাদের নিত্য শাস্তি হয়; অপর ব্যক্তিদিগের ভাষা কদাশি হয় না ॥ ৮।।

এই জগতের সমৃদার বস্তুই অনিতা, কেবল তিনি একমাত্র নিতা। তিনি জীব-সকলকে চেতন দিয়া স্থাই ফরিরাছেন; তিনি তাহারদিগকে অন্ন দিয়া পালন করিতে-ছেন; তিনি এই অসংখ্য প্রজাদিগের কামনা-সকল একাকী পূর্ণ করিতেছেন। এই এক পৃথিবী লোকেতেই তাহার কত প্রজা এবং ইহার এক এক প্রজারই বা কত প্রয়োজন। তিনি এই সকলের প্রয়োজন ব্ধা-উপছুক্ত ক্রপে একাকী বিধান করিতেছেন; তিনি এক কুদতম কীটের প্রশ্নোকনও বিশ্বত নহেন। যাঁহারা এই সকলের প্রহং কল্যাণ-রূপ পরম দেবতাকে স্বকীয় ছদয়-মন্দিরে সাক্ষাং দর্শন করেন; তাঁহারদিগের তৃত্যি-সরোবৰ কদাপি শুস্থ হয় না, সদাই পূর্ণ থাকে, তাঁহারদের নিত্য শান্তি লাভ হয়॥৮॥

92

যদা দৰ্কে প্ৰভিন্ততে হৃদয়স্থেহ গ্ৰন্থয়ঃ। অথ মৰ্ক্ত্যোহ্মতোভৰত্যেতাবদকুশাদনম্॥৯॥

'বলা সর্কো' প্রতিক্সস্কে' তেলমুপ্যাক্সি বিনশুক্তি 'হল-রুস্য' মনসঃ 'ইছ' জীবিতে এব 'গ্রন্থয়ঃ' গ্রন্থিকুচ্বন্ধন-রূপাঃ অজ্ঞানপ্রত্যরাঃ। 'অথ মর্ত্তঃ অমৃতঃ ভব্তি' 'এতা-বং' এতাবন্মাত্রম্ 'অন্থশাসনম' অনুশিষ্টিরুপদেশঃ॥ ১॥

বে সমরে এখানে সমুদার জ্বার-এছি তগ্ন হয় তথনই জীব জমর হয়েন; এতাবমাত্রে উপদেশ জানিবে॥ ৯॥

প্রজ্ঞান ও মোহজার প্রামানের হানা এছি। পাণা-স্থিক ও কুনংমার-ক্লপ ক্ষরত্বাহি সকল শবিনই না করিলে প্রম প্রিত্র প্রক্রকে প্রাপ্ত হ্রদার স্প্রারনা নাই। যথন এই সকল ক্ষেত্রতা ক্ষরতাহি ছেলন করিজে পারিবে; তথনই কানিবে বে, যে প্রেক্ট পথ অবল্যন করিলে তাঁহার সমীপস্থ হওয়া বার ও অকুতোভরে পরমানক্ষে
তাঁহার সহিত নিত্য সহবাস করা বার, সেই পথের পথিক
হইরাছি—মৃত্যুকে,অভিক্রম করিয়া পরম পুরুষকে লাভ
করিয়াছি। এই অসুশাসন, এই উপদেশ ॥ ১॥

नवद्यांश्यां यह ।

99

দ্বা স্থপর্ণা সযুজা স্থায়া স্মানং রুক্ষং পরিষম্বজাতে। ত্রোরভাঃ পিপ্পল্ স্বাদ্ধ্য-নশ্ননভোহ ছিচাকশীতি॥ ১॥

'বা' বৌ 'হ্পণি' রূপণে শোভনপতনো পিকিপোঁ 'সর্জা' সর্জো সহৈব সর্কান বুজো 'সধারা' সধারো আল্লানো ক্ষেত্রজপর্মেশরোঁ 'সমানম্' অবিশেষম্ অধিষ্ঠানতরা একং 'বৃক্ষম্' উচ্ছেদসামান্যাৎ শরীরং 'পরিষম্বভাতে' পরিষজ্বতো। "তরোঃ' বৃক্ষং পরিষজ্বয়োঃ 'ফন্যাঁ" একঃ ক্ষেত্রজঃ 'পিপ্পলং কর্মনিশারং ফলং 'রাছ' যথা ভবজি তথা 'অভি' ভক্ষরতি উপভূংকে। 'অন্যন্থ অভ্যানঃ 'অল্লঃ' ইতরঃ স্বারঃ নিত্যভঙ্গবুজম্ভাবঃ সর্বক্ষঃ ভোজাভোজ্যোঃ প্রেরমিতা 'অভিচাকণীতি' পঞ্চোব কেবলম্। দর্শনমাত্রং হি জন্য প্রেরমিত্বং রাজবং॥১॥

ছুই ইম্পের পক্ষী এক বৃক্ষ অবলয়ন করিয়া রছিয়া-ছেন, তাঁছারা সর্বানা একত্র খাকেন এবং উভরে পর্ব-স্পারের স্থা। তথাগো একটি স্থুখেতে ফল ভোজন করেন, অফ্স নির্দান থাকিয়া কেবল দর্শন করেন॥ ১।।

इरे चन्द्र शकी, जीवाचा बांद्र शद्रमांचा ; शद्रमांचाव সৌলব্যের আভা পাইয়া জীবাত্মাও স্থলর হইয়াছে। জীবালা তাঁহার অন্তরতম প্রমান্তার সহিত সর্বাদাই একত্র ু বুক্ত আছেন, তাঁহারদিগের মধ্যে আকাশেরও ব্যবধান দাই। তাঁহারা উভরেই এই শরীরে অবন্ধিতি করিতেচেন এবং উভরেই পরস্পরের স্থা। প্রমাত্মা জীবাত্মাতে সাক্ষিরপে অবস্থিতি করিয়া ভাষাকে কর্ম-ফল প্রদান করিতেছেন, জীবাদ্ধা ভাহা প্রাপ্ত হইয়া উপভোগ করি-তেছে। প্রমান্তা ত্রেম দান করিবা জীবাদাকে পালন कतिराज्यहर्न, बीवाया न्याद्र थाकि श जाराक धीरि-পূর্বক ভাঁহার প্রির কার্ব্য সাধন করিতেছে। প্রমাত্মা खड़ा, बीवाचा ऋहे; भन्नमाचा नित्रका, बीवाचा जाहाव . **चरीन ; शतमाया धाराका, चीराया एकार**ा ; शतमाया व्यामाद्रापत अक्षांत महोत. कामता छाहा त श्रमागार विषय-ন কুন, আয়প্রদাদ, এবানন্দ উপভোগ করিতেছি। জীবায়া

এই শরীর-রূপ নীড়ে থাকিরা অধিল-মাতার ক্রোড়ে পুই হইতেছে, উপগৃক হইলে এই শরীর হইতে মুক্ত হইরা এবং তাঁহার অন্তর হইয়া তাঁহার সহিত নিত্য কাল সঞ্চরণ করিবে॥ ১॥

98

সমানে বৃক্ষে পুরুষোনিমগ্নোহনীশরা শোচতি মুহ্যান:। জুফং যদা পশ্যত্যহামীশমদ্য মহি-মানমিতি বীতশোকঃ ॥ ২ ॥

'সমানে রক্ষে' এক মিন্ শরীরে 'পুরুষঃ' ভোক্তা জীবঃ
কামকর্মফলরাগানি গুরুজভারাক্রান্তঃ 'নিমগ্নং'। অতঃ 'অনীশ্রা'
পুলোমন বিনষ্টোমৃতা মে ভার্য্যা কিং মে জীবিতেন ইত্যেবং
দীনভাবোহনীশা তরা 'শোচ্ডি' সন্তপ্যতে 'মৃছ্মানঃ'
অনেকৈরনর্থপ্রকারেরবিবেক ভরা চিন্তামাপদ্যমানঃ। 'জুইং'
সেবিভমনেকৈঃ 'বদা' বন্দিন্ কালে 'পশ্যন্তি' ধ্যায়মানঃ
'অক্সম্ ঈশং' সর্ক্স্য ভলগতঃ অসংসারিণম্ অশনারাণিপাসা
শোক্ষেরামৃত্যধর্মাতীতম্ 'অসা চ' প্রমেশরস্য 'মহিন্
মানং' বিভৃতিন্ 'ইতি বীতশোকঃ' ভরা ভব্তি ॥ ২ ॥

জীবান্ধা শরীর-মধ্যে নিষশ্ন ছবিয়া এবং দীন-ভাবে মুহ্মান হবয়া সর্বাদাই শোক ক্ষিতে বাকে; কিন্তু বর্ষন সর্বলৈব্য ঈশ্বরকে ও তাঁছার মহিমাকে দেখিতে পায়, তথন ভাছার আর শোক থাকে না ॥ ২ ॥

বধন পরমের্বরকে ভ্লিরা কেবল বিষর-ভ্রশাধনার্থে
সংসারে নিমর হই, তথন আমারদের পদে পদে শোক
হয়; কিন্তু বধন প্রীতি পূর্বক সর্বা-সেব্য পরমের্বরকে ও
তাঁহার মহিনাকে দেখি এবং শ্রহা পূর্বক তাঁহার প্রতিটিত
ধর্ম সাধন করিতে থাকি, তথন আর শোক থাকে না,
পরমানক উত্তব হয় ॥ ২॥

90

যদা পশ্যং পশ্যতে রুক্তবর্ণং কর্তারমীশং পুরুষং ভ্রক্ষযোনিষ্। ভদা বিশ্বাদ্ পুণ্যপাপে বিধ্যু নিরঞ্জনঃ পরমর্থ সাম্যুসুসৈতি। মহান্তং বিভুমান্তানং মন্থা ধীরোন শোচতি॥ ৩॥

'বলা' বিদ্যান কালে 'পলাঃ' পলাত বং স্বিধান সাধকঃ 'পলাতে' পলাতি 'কল্পবর্ণং' কল্পদোর্থ লোভিরস্য অরং লোভিঃসভাবং নিতা 6ৈতজ্ঞরশং 'কর্তারং' সর্পনা জগতঃ 'ঈলং' 'পুরুবং' 'বল্পবোনিং' ব্রন্ধ চ তল্লোনিশ্চাসো ব্রন্ধ-বোনিঃ তন্। 'তলা' সঃ 'বিধান্' 'পুণ্যপাপে' 'বিধ্র' নির্দ্ধ 'নির্দ্ধনং' নির্দেশঃ বিশ্বতক্ষেশঃ 'প্রমং' প্রস্কৃত্তং 'সাম্যং' সমতাম্ 'উপৈতি' প্রাপদ্যতে। 'মহাত্তং' 'বিভূং' ব্যাপিনম্
'আ্যানম্' ঈশ্বং 'মত্বা' 'ধীরঃ' ধীমান্ 'ন শোচ্ডি' ॥ ৩ ॥

বংকালে জ্ঞানাণ্ড নাৰক অপ্রকাশ বিখের কর্তা
ও নিয়ন্তা এবং কারণ-অরূপ পূর্ব জ্ঞাকে দৃষ্টি করেন,
ভখন ভিনি পূণ্যপাপ পরিব্যাগ পূর্বক নির্লিপ্ত হইয়া
পরম সাম্য প্রাপ্ত হরেন; ধীর ব্যাক্ত মহান্ সর্বব্যাপী
পরমাত্মাকে জ্ঞানিয়া আর শোক করেন না। ৩ ।।

বংকালে জ্ঞানাপর ধর্মনিষ্ঠ ব্রহ্মোপাসক স্থীর জ্ঞাননেত্র বারা তাঁহাকে প্রত্যক্ষকং দর্শন করেন, তথন তিনি
তাহাকে লাভ করিয়া পাপ হইতে মৃক্ত হরেন এবং পুলাের
কলাকাজ্জী হইরা অন্য কর্ম করেন না। তিনি বিষয়ে
িলিপ্ত হইয়া লােকের হিতের নিমিত্ত এবং তাঁহার প্রীতিক
নিমিত্ত তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করেন। বধন প্রস্কু
হলয়ে আসীন হন, তথন মনাের্ভি-সকল সংখত হয়, তথন
চিত্ত সাম্য ভাব প্রাপ্ত হইয়া বিশুদ্ধ হয়। ধীর ব্যক্তি
তাঁহাকে জানিয়া আর দীন-ভাবে স্কুমান হইয়া শােক
করেন না॥ ৩ ॥

96

পরমেবাক্ষরং প্রতিপভতে স্বােহ বৈ তদ-চহায়মশরীরসলোহিত্ত শুভ্রমক্ষরং বেদয়তে ॥৪॥ 'পরম্ এব জকরং' সতাং পুরুষাখাং 'প্রতিপয়তে'-প্রাপ্নোতি 'নঃ' 'বং হ বৈ' 'তং' 'জছারং' ডমোবর্জিতম্ 'অশরীরং' শরীরবর্জিতম্ 'অলোহিতং' লোহিডালিগুণক্জিতং 'গুলং' গুরুষ্ 'অকরং' এক বেদরতে' বিদ্যানাতি ॥ ৪ ॥

বিনি দেই ছায়া-রহিত, লোছিডাদি গুণরহিত, পরিশুদ্ধ, অবিনাশী পরব্রশ্বকে জানেন, তিনি দেই অক্ষয় পুরুষকে প্রাপ্ত হয়েন।। ৪ ॥

পরদেশর সর্কানা সর্কাজ বিদ্যাদান রহিরাছেন বিশুদ্ধ-চিন্ত হইরা তাঁহাকে জানিলেই তাঁহাকে প্রাথ্য হওয়া যার॥৪॥

99

অদৃষ্টমব্যবহার্যমগ্রাহ্যমলক্ষণমচিন্ত্যমব্যপদে-শ্যমেকাত্মপ্রত্যম্পারং প্রপঞ্চোপশমত শান্তত শিবমহৈত্যু ॥ ৫॥

मजार क्रानिमकतम् 'सन्हेम् क्षतावहाद्याम्' 'क्षवाक्श' कर्षां क्रिदेशः 'क्षनकनम्' क्षणिकम् 'क्षिक्षाम्' 'क्षताभरतमार' मरेकः এकः क्षण्यात्रशः क्षत्राक्षीिज क्षाक्षतः खोजातः भातः द्यामानः यमाधिनस्य ७६ 'এकाख्याजात्रमातः' द्यशकमा मःमात्रमा छेभमशः উभत्रज्ञिः नितृष्ठिः रख छः 'व्यशक्षाममः' मःमात्र-संभाजीजः 'माखः' 'भितम्' 'क्षत्रं अम्' এकम्॥ ६॥ পরমেশ্বর চক্ষুর অংগাচর, কর্মেন্ডিরের অওাছ এবং অব্যবহার্ব্য হয়েন। তিনি কোন লক্ষণ ছারা গম্য নংহন, তিনি কোন শব্দ ছারা ব্যপদেশ্য নহেন, তিনি অচিস্কা। এক আত্মপ্রতায়ই তাঁছার অভিত্তের প্রতি প্রায়ণ হইরাছে। তিনি সমুদ্য সংসার-ধর্মের অতী ডঃ তিনি শাস্ত্র, মঞ্চল, অভিতীয়।। ৫ ট

मिरे चनक-कान-चक्रण भवत्ववंद्र छक्तंद्र त्रीहतं गर्दन. তীহাকে হক্ত বারা গ্রহণ করা বার না, তাঁহাকে মনের বারা কলনা করা বার না, ভাঁহাকে পরিমিত বস্তর ন্যায় বৃদ্ধি चात्रा निरमय कतित्रा तूथा यात्र ना। दकरण निर्धन महक জানে ভিনি প্রকাশিত হন এবং এক আত্মপ্রত্যায়ের বলে দেই জানগোচর সত্য স্থন্দর দক্ষণ পুরুষের অভিতে আমরা वियोग कति। कान य अकृष अमुख अनस श्रूकशरक প্রকাশ করে, আন্মা সেই পূর্ণ পুরুষের অন্তিবে প্রভাষ করে। জানেতে সভ্য প্রকাশ পার এবং সেই সভ্যেতে আমা-দের আত্মার প্রভার হয়। সতএব এই স্বভাষ-দিছ আত্ম-अठावरे केंद्रात अक्रिरंपत श्रामांगा चांगरनत अक्षां रहतू। पथन आया-अकाम-निष जन्द श्रूम्य महत्र काटन अवानिक रून, ज्थन वृक्ति छाँदात अंश-त्रह्मात्र क्लीनन त्मिका छाँदात्र विकारनंत श्रीहम तम्म ध्यार सशस्त्र मनलात्ममा निष्य प्रचारेश त्रहे निमस्त्रात मन्नन छाव वाक करत। समित

পরিষিত বৃদ্ধি অনস্ত পুদ্ধকে বৃদ্ধির। শেষ করিছে পারে
না, তথাপি সে সহজ জানকে অতিমাত্র পোবণ করে।
অতএব ব্রহ্ম-বিজ্ঞাপু মুমুকু ব্যক্তি লগৎ-কার্যাের অন্তর্বাহের আলোচনা ছারা বৃদ্ধিকে মার্জিত করিতে কদাপি অবহেলা করিবেন না। বৃদ্ধি স্থমার্জিত হইলে সহজ জান
ও আত্ম-প্রত্যারের অধিকার ও উদ্যোগ্য আমরা বিশেব-রূপে
স্থপ্ট বৃদ্ধিতে পারি।

সংসার বাঁহা হইতে স্ট হইরা নিয়মিত হইতেছে, তিনি
সম্দার সংসার-ধর্মের অতীত। তাঁহার রাগ বের প্রভৃতি
মানসিক কোন বৃত্তিই নাই, জ্বতএব তিনি শান্ত। তিনি
মলন-স্বরূপ, তিনি সকলের মললোদ্দেশে এই সংসার নিরত
পালন করিতেছেন। তাঁহার সমান বা তাঁহা হইতে অধিক
আর বিতীর কেহ নাই, তিনি অবিভীয় ॥ ৫ ॥

92

তদেতৎ প্রেয়ঃ পুত্রাৎ প্রেমেবিভাৎ প্রে-য়েহিম্মমাৎ সর্বিশ্বাৎ অন্তরতরং যদরমান্বা ॥৬॥

'তৎ এতং' ব্ৰহ্ম অক্ষরং 'প্রের:' প্রিরতরং 'প্রোং' তথা 'প্রেরটি বিভাং' হিরণারছাদেঃ তথা 'প্রেরঃ অক্সমাং' বং যং লোকে প্রিরতেন প্রসিদ্ধং জন্মাং 'সর্কামাং' অন্তরতরাং 'অন্তরতরং' 'যং অন্তং জাজা' বলেতংব্রহ্ম, বোহি লোকে নির্ভিশরঃ প্রিরঃ সর্কবছেন শ্রব্যান্তরতি ভ্রেক্তং ব্রহ্ম সর্কলোকিক প্রিরেভ্য: প্রিরতমং ছবাৎ তলাভে মহান্ ধর্ম আছের:॥ ७॥

সর্বাপেকা অন্তর্তর যে এই পরদাত্মা, ইনি পুত্র হইতে প্রিয়, বিত্ত হইতে প্রিয়, জার জার সকল হইতে প্রিয়। ৬।।

তাঁহা হইতে আন্তরিক প্রিরন্তর স্থাৎ আমাদের আর কেহ নাই॥ আ

93

সযোস্থমাত্মনঃ প্রিয়ং ব্রুবাণং ব্রয়াৎ প্রিয়ত্থ রোৎস্যতীতি ঈশুরোহ তথৈব স্যাৎ ॥ ৭॥

'সং বং' কভিৎ ত্রন্ধপ্রিরবাদী 'আয়নং' জন্ধণঃ সকাশাৎ 'অলং' প্রাদিকং 'প্রিরং ক্রবানং' 'জরাং' কিং জরাৎ তবা-ভিমতং প্রাদিককণং 'প্রিরং' 'রোৎস্যতি' আবরণং প্রাণসং-রোধনং প্রাণ্ স্যৃতি রিনজ্যতি 'ইভি'। সং 'ঈশ্বরং' সমর্থঃ পর্য্যাপ্রোহসাবেবং বন্ধুং 'হ'। 'তথা'শুএব স্যাৎ যতেন্ধ্রেক্সেই প্রাণসংরোধনং তৎ প্রাপ্তৃতি॥ १॥

বে ব্যক্তি পর্মাত্মা অংশকা অভ্যকে প্রির করিয়া বলে, ভাষ্টকে বে এক্সবাদী বলেন, ভোমার বে প্রির, সে বিনাশ পাইবে; তাঁহার এপ্রকার বলিবার অধিকার স্মাছে, বাস্তবিকও তিনি বাহা বলেন, তাহাই হয়॥ ৭।।

श्व गांदा धन कन मम्बाबरे कनिका। এ मः माद्रद्र এर मक्य थित्र वस्त्र महिक क्थन ना क्थन खब्छ विष्ठ्व इहेर्द. কিন্ত অস্তর্তম প্রিয়ত্ম প্রমান্তার সহিত ইহকালে কি भन्नकारण कथनहे विष्कृत हहेरवक मा। हेहा निमः भन्न বাক্য বে. যে ব্যক্তি প্রমেশর অপেকা অন্তকে প্রিয় করিয়া বলে, তাহার প্রের অবশ্র বিনাশ পাইবে। বিষয়াসক্ত বিষ্ বাকিদিগের প্রতি জ্ঞানি ব্রম্মোপাসকদিগের এ উপদেশ দিবার অধিকার আছে. এবং তাঁহারদিগের উপদেশ যাহারা গ্রহণ না করে, তাহারা ছ:খ পার। সকলের অভরতর মদলাকর পরমাত্মাই সর্বাপেক। প্রিরতর। তাঁহাকে প্রীতি করিলে তাঁহার প্রেমাম্পদ সকলকেই প্রীতি করিতে হয় এবং এই জগৎ-সংসারের মঙ্গলের নিমিত্তে তিনি যাহার প্রতি বিশেষ ত্বেহ জীতি করিতে আদেশ করিয়াছেন, তাঁহার প্রতি সমধিক প্রীতি ও মেহ করিতে হয়। কিন্ত প্ৰমাত্মা অপেকা মন্ত বস্তুকে অধিক ঞীতি করিয়া তাহাতে মুগ্ধ হওর। বিশুদ্ধ বিধিত প্রীতির রীতি নহে । १।

40

আত্মানমেব প্রিয়মুপাদীত। স্বত্যাত্মানমেব প্রিয়মুপাত্তে ন হাস্য প্রিয়ং প্রমায়ুকং ভবতি॥৮॥ উজ্বিদ্বা আছেং প্রিয়ন্ 'আক্সানন্ এব' একৈব 'প্রিয়ন্ উপাসীত'। 'লঃ মঃ' 'আক্সানন্ এব' একৈব 'প্রিয়ন্ উপাত্তে' 'ন হ অসা প্রিয়ং' 'প্রমায়ুকং' প্রমরণশীলং ভবতি॥৮॥

পর্যাত্মাকেই প্রিয়-রূপে উপাসনা করেন, ভাঁহার প্রিয় পর্যাত্মাকে প্রিয়-রূপে উপাসনা করেন, ভাঁহার প্রিয় কখনও মরণশীল হন না ॥ ৮॥

ধিনি আমারদের মানস-ক্ষেদ্রে প্রীতি-পুল্পের স্থকো-মল কলিকা স্থাপন করিয়াছেন, যত্ন পূর্বক তাহাকে প্রস্কু-ইতি করিয়া তদারা তাঁহার অর্চনা করিবেক। অবিনশ্বর পরমেশ্বর বাঁহার প্রিয়, তাঁহার প্রিয় কদাপি মরণশীল নহেন, তাঁহার সহিত কোন কালে তাঁহার, বিচ্ছেদের সম্ভাবনা নাই ॥ ৮ ॥

67

षाणा या षात् क्रकेसः त्याकत्यम्बरसानि-निधानिष्याः ॥ २ ॥

প্রীতিরাম্বরের মুখ্যা উত্থাৎ 'পাদ্ধা বৈ অরে এইব্য:' দর্শনার্হ: জগত্রপকার্য্যধারেশ 'প্রোতব্য:' আচার্যাভঃ "মন্তব্যঃ' তত্ততঃ ততঃ নিদিধ্যাসিতব্যঃ' নিশ্চরেন ধাতব্যঃ॥ ৯॥ পারমাত্মার দর্শন, আবণ, মনন ও নিদিধ্যাসন করিবেক ॥ ৯ ॥

পরমাত্রার দর্শন করিবেক, অর্থাৎ তাঁহার এই বিশ্বকার্য্যে তাঁহার জ্ঞান শক্তি মহিমা প্রতীতি করিবেক ও
সকলের প্রাণ-রূপে তাঁহাকে সর্ব্বে বর্ত্তমান জ্ঞানিবেক
এবং জাচার্য্যের নিকটে তাঁহার মহিমা-প্রতিপাদক উপদেশ
বাক্য-দকল অতি শ্রজা-পূর্ব্বক শ্রণ করিবেজ। জগতে
তাঁহার মহিমা দর্শন করিয়া এবং জাচার্য্যের নিকট হইতে
তাঁহার মহাত্মা শ্রণ করিয়া সেই সকল পুনঃ পুনঃ আলোচনা পূর্ব্বক তাঁহার মনন করিবেক, এবং পরে তাঁহার নিদিধ্যাসন করিবেক, তাঁহার সন্তাতে নিঃসংশর হইয়া তাঁহাতে
ভাত্মার সমাধান করিবেক ॥ ১ ॥

4

সবা অয়মাত্মা সর্বেষাং ভূতানামধিপতিঃ সর্বেষাং ভূতানাত রাজা॥ ১০॥

'স: বৈ অয়ন্' অজ: 'আত্মা' 'সর্কোবাং ভূতানান্ অধি-পতি:'। 'সর্কোবাং ভূতানাং রাজা॥ ১ • ॥

সেই বে এই পরমাত্মা, ইনি সকল ভূতের অধিপত্তি এবং সর্বভূতের রাজা॥ ১০॥ ইনি সকলকে নিয়মে রাখিতেছেন, এবং উপযুক্ত দণ্ড পুরস্কার চিরকাল বিধান করিতেছেন ॥ ১০ ॥

10

তদ্যথা রথনাজো চ রথনেমো চারাঃ সর্বের সমর্পিতাঃ। এবমেবাস্মিয়াত্মনি সর্ব্বাণি ভূতানি সর্ব্বে দেবাঃ সর্ব্বে লোকাঃ সর্ব্বে প্রাণাঃ সর্ব্ব-এত আত্মানঃ সমর্পিতাঃ॥ ১১॥

'তৎ যথা রথনাতো চ রথনেমো চ অরা; সর্বে সমপিতাং'। 'এবম্ এব' 'অস্মিন্ আত্মনি' জন্মাদিবিক্রিয়ারহিজে
'সর্বাণি ভূতানি সহর্ব দেবাং সর্বে লোকাং সর্বে প্রাণাং'
'সর্ব্বে এতে আত্মানং' প্রতিশরীরাম্প্রবেশিনোজীবাং 'সম্ব

যেমন রথ-চক্রের নাভিদেশে ও নেমিদেশে সমুদ্র অর সমর্পিত থাকে, সেইরূপ এই প্রমাত্মাতে সকল ভূত ও সকল দেবতা, স্কল লোক, সকল প্রাণ, এই সমুদার জীব সমর্পিত হইরা রহিয়াছে॥ ১১॥

জল বারু অধি প্রভৃতি ভূত-সকল, লোকান্তরবাদী মহন্য অপেক্ষা উৎক্ষতর ধর্মজীবি জীবসকল, ক্র্যা চক্র গ্রহ নক্ষত্র পৃথিব্যাদি লোকসকল, প্রান্তিদিগের প্রাণন-ক্রিয়া-সকল, এবং অসংখ্য-লোক-স্থিত অনস্ত জীবদিগের আত্মা-সকল, এই পর-মায়াকে অবলম্বন করিয়া রহিয়াছে॥ ১১॥

48

যুক্তে বাং ত্রক্ষ পূর্ব্ব্যং নমোজিঃ। অনাদিমন্তং বিভূত্বেন বর্ত্তমে যতোজাতানি ভূবনানি বিশ্বা॥১২॥

'যুজে' অহং সমাদধে 'বাং' ব: যুথাকং কারণভূতং 'ব্রহ্ম'
আগাকমিপি 'পূর্বং' চিরস্তনং 'নমোভি:'। হে 'অনাদিমং'
আদ্যন্তশ্ভপরমাত্মন্ 'হং' 'বিভূত্বেন' ব্যাপকত্বেন 'বর্ত্তমে'
'বড:' তত্তঃ 'জাতানি ভূবনানি' 'বিখা' বিখানি॥ ১২॥

আমি নমকার পূর্বক তোমারদিগের ও আমারদের চিরন্তন পরত্রক্ষের সহিত আত্মার সমাধান করি। হে আনাদিমৎ পরমাত্মন্! তুমি সর্বতি ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছ, ভোমা হইতে এই সমুদায় ভুবন উৎপন্ন হইয়াছে ॥ ১২ ॥

উক্ষবাদী আচার্য্য শিষ্যদিগকে কহিতেছেন, আমি নম-স্থার পূর্ব্বক তোমারদিগের ও আমারদের চিরস্তন পরত্রক্ষেব সমাধি করি; তোমরাও আমার সহিত তাঁহার সমাধি করে ৪২২ ৪

p-4

हैटेहव मुख्यां के विश्व खार न क्रियं कि में इंडो

বিনষ্টিঃ। য এতদ্বিতুরমৃতাত্তে ভবস্তি অপেতরে তুঃখনেবাপিয়ন্তি॥ ১০॥

'অথ' 'ইছ এব সন্তঃ' অহো বন্ধং ক্লুতার্থাঃ 'তং' ক্রন্ধ 'বিদ্নাং' বিজ্ঞানীমঃ। 'তং' 'ন চেং' বেদিতবস্তোবন্ধং ততো-হছম্ 'অবেদিঃ' স্থাম্। বেদনং বেদঃ বেদোহস্যাস্তীতি বেদী। বেদ্যেব বেদিঃ ন বেদিঃ অবেদিঃ। ফ্লুবেদিঃ স্যাং কোদোষঃ স্যাং। 'মহতী' 'বিনাষ্টঃ' বিনাশনম্। অহো বন্ধমশান্মহতোবিনাশনানিশ্যুকাঃ যত্তং ক্রন্ধ বন্ধং বিদিতবস্তঃ। 'বে এতং বিছঃ অমৃতাঃ তে ভবন্তি'। 'অথ' যে প্ননৈবং ক্রন্ধ বিছঃ তে 'ইতরে' ক্রন্ধবিদোহক্তে 'ছঃধম্ এব' 'অপিরস্তি' প্রতিপদ্যন্তে॥ ১৩॥

এখানে থাকিয়াই আমরা তাঁহাকে জানিয়াছি; যদি আমরা তাঁহাকে না জানিতাম, তবে মহাবিনাশ প্রাপ্ত হইতাম। যাঁহারা ইহাঁকে জানেন, তাঁহারা অমর হয়েন; তন্তির আর সকলেই তুঃখ পায়॥ ১৩॥

কি আশ্চর্যা! আমরা এখানে থাকিরাই তাঁহাকে ভানিরাছি, এই অন্ধকারমর সংসারে নিমগ্ন ও আছের হই-রাও আমাদের জ্ঞান-চক্ষু সেই সত্যজ্ঞান-জ্যোতিকে গ্রহণ করিতে পারিতেছে এবং হৃদন্ধ তাঁহাকে বিশুদ্ধ প্রীতি অর্পণ করিয়া পাপ-তাপ হইতে পরিত্রাণ পাইতেছে। ইহা হইতে

আরি আশ্বর্য কি আছে! ইহাতে আদরা ধন্ত হইয়াছি।
তিনি এই ভূলোকে আর আর ধত জন্ধ সৃষ্টি করিয়াছেন,
তাহারদিরকে এ প্রকার ক্ষমতা ও অধিকার প্রদান করেন
নাই, আমারদিরকে অতীব কণা করিয়া এই সকল দিয়াছেন; ইহাতে আমরা কৃতার্থ হইয়াছি, ইহার দারা আমরা
দকল সম্পদ প্রাপ্ত হইয়াছি। যদি আমরা তাঁহাকে এখানে
জানিতে না পারিতাম, ও তাঁহার সহিত অকাট্য নিত্য সম্বন্ধ
নিবদ্ধ না করিতাম, তবে আমরা অশেষ হুর্গতি প্রাপ্ত হইতাম। তাহা হইলে এই শংসারের বিপদ-সাগরে পতিত
হইয়া আর কোথায় আশ্রুর পাইতাম! লোকের নিকট
হইতে নিচুব আঘাত পাইয়া আর কোথায় শীতল হইতাম।
পাপ তাপ হইতে, মৃত্যু-ভয় হইতে আমারদিরকে আর কে
পরিত্রাণ করিত।॥১৩॥

b b

ততোযতুত্তরতরং তদরপেমনাময়ম্। যএত-দ্বিত্তরয়তাত্তে ভবন্তি অথেত্রে তুংখমেবাপি-যুক্তি॥ ১৪॥

'ততঃ' কার্যাৎ উত্তরং কারণং ততোপ্যত্তরং 'উত্তরতরং' কারণদ্য কারণং 'যথ' এক্ম 'তথ' 'অরূপং' রূপরহিতং 'অনা-মন্তং' রোগশোকরহিতম্। 'যে এতং বিছঃ' 'অমৃতঃং' অমূরণ- ধর্মাণঃ 'তে ভববি' 'শব্ ইতরে' বে তদ্বাদা ন বিছুক্তে। 'হঃপম্ এব অপিয়স্তি'॥ ১৪॥

যিনি কারণের কারণ, তিনি রূপনীন ও নিরামর। বাঁহারা ইহাঁকে জানেন, তাঁহারা অমর হরেন; ভাস্কির আর সকলেই দুখে পার । ১৪॥

এই শংসারে যে সকল কারণ হইতে যে সকল কার্য্য উৎপন্ন হইতেছে, সেই সকল কারণের কারণ পরবন্ধ। তিনি রূপহীন ও নিরামন্ত্র। ধাহারা ইহাঁকে জ্ঞান-চক্ষ্ হারা প্রত্যক্ষ করত ইহাঁর সহিত অচ্ছেন্য সম্ভ্রু নিবদ্ধ করেন, তাঁহারা অমর হরেন। তদ্ভিন্ন কেহই আর সাংসা-রিক শোক-ছুঃখ অতিক্রম করিতে পারে না ॥ ১৪ ॥

b-9

ততঃ পরং ব্রহ্ম পরং বৃহস্তং যথানিকার্থ সর্বস্থিতের গৃঢ়ম। বিশ্বদ্যৈকং পরিবেম্ভিতার-মাশং তং জ্ঞাত্বাহ্মতাভবতি ॥ ১৫ ॥

'ততঃ' বিশ্বকার্যাস্য 'পরং' কারণং 'পরং' 'ব্রহ্মং' মহৎ 'যথানিকারং' যথাশরীরং 'সর্ক্তৃতেরু গৃচ্ম' অক্তরবন্থিতে। 'বিশ্বস্য একং' 'পরিবেটিতারং' শাস্থনা সর্কং ব্যাপ্যাবিভিত্র। 'তম্' 'টাশং' পরমেশ্বরং 'জান্থা' 'অমৃতাঃ' 'ভবন্ধি' ॥ ১৫॥

বিশ্ব-কার্য্যের কারণ পরত্রন্ধ সর্ব্ধাণেকা মহৎ; 'তিনি সর্বভূতে শরীর মধ্যে গুটু-রূপে স্থিতি করিতে-ছেন। সেই বিশ্ব-সংসারের একমাত্র পরিবেটিতা পর-মেশ্বরকে জানিয়া লোকসকল শ্বার হয়েন #১৫॥

তাহা হইতে এই সম্পার অগং কাই হইরাছে, অতিএব তিনি বিশ্ব-কার্য্যের কারণ এবং মহান্। তিনি অন্তর্কাহো সকল স্থানেই সর্বাদ। স্থিতি করিতেছেন, তথাপি কেহ তাহাকে চকু দারা দেখিতে পার না, কারণ তিনি আন্সাদ্ধার জান অরপকে জান দারাই জানা যার। বাহার। ইহাকে জানেন, তাহার। ইহার সহিত নিত্য সহবাস লাভ করেন ৪১৫ ৪

ساحا

সর্বেক্তিয়গুণাভাদ্দ সর্বেক্তিয়বির্বিজ্ঞ । সর্বেদ্য প্রভূমীশান্দ সর্বেদ্য শরণ্দ হৃছৎ ॥১৬॥

দর্বেজির গুণাঃ আভাদ্যত্তে প্রকাশ্যতে ধেন একাণা তৎ 'সর্বেজির গুণাভাদং' বরত 'দর্বেজির বিবজিতং' দর্বকরণ-রহিতম্। 'দর্বস্য' জগতঃ 'প্রভূম্ ঈশানং' 'দর্বস্য' 'শরণং' রক্ষিত্ 'স্বহং' মিঅম্ ঃ ১৬ ॥

তাঁহার ঘারা সকল ইন্দ্রিয়ের গুণ প্রকাশ পায়, কিন্তু ডিনি স্বয়ং সকল-ইন্দ্রিয়-বিবর্ত্তিত। ডিনি সক- লের প্রভু, সকলের ঈশ্বর, সকলের আশ্রয় ও সকলৈর স্বস্থা ১৬।

তিনি আমারদিগকে জান, স্থও সামর্থ্য প্রদান করি-বার অভিপ্রায়ে আমারদের ইন্সিয়গণকে তহপগোগী বিবিধ গুণে ভূষিত করিয়াছেন। চকু যে বিশ্বাধিপের বিশ্ব-রাজ্যের অত্যাশ্চর্য্য শোভা অবলোকন করিয়া পরিতৃপ্ত হইতেছে, कर्ग (य मत्नाष्ट्रत विष्य-त्रव, सम्भूत मन्नी छ-यत ও बका खगास-কীর্ত্তন প্রবণ করিয়া অমৃতাভিষিক্ত হইতেছে, রসনা ধে नाना-तम-मिलिक हर्का होया लिहा পেয় विविध প্রকার মুম্বাদ সামগ্রীর স্বাদ্ঞাহ করিয়া চরিতার্থ হইতেছে, ভ্রাণে-ক্রিয় নাগিকা যে অশেষ-প্রকার স্থান্ধ প্রেপর মনোহব নৌরভ গ্রহণ করিয়া এবং সর্বাঙ্গব্যাপী ম্পর্ণেন্ডিয় হে স্থানিক স্থান মাকত হিলোলে নিক ইয়া মনুষ্যের স্থ-সরোবর পূর্ণ করিতেছে; সকলমঙ্গলাকর পরমেশ্বরই এ সমুদায়ের একমাত্র কারণ। তিনি এই ইন্দ্রিরগণকে বে क्षण मिल श्रामान कविशाहन, ज्योत्र विषय সম্পারকেও তাহার উপযোগী কঁরিয়া সৃষ্টি করাতেই আমরা তাঁহার প্রদত্ত প্রচুর কুথে কুথী হইতেছি। তিনি আমারদিগকে ছন্তৰন্ন প্ৰদান করাতে আমবা সকল বস্তু প্ৰহণ করিতে পারিতেছি। তিনি আমারদিগকে গমনেক্রির দারা বুক্ত করাতে আমরা দর্বতা গমনাগমন করিতে সমর্থ হইতেছি।

তিনি আমারদিগকে বাগিজিয় দেওয়াতে আমরা মনের ভাব-সকল প্রকাশ করিয়া প্রথী হইতেছি। তিনি আমারদিগের এক এক ইজিয়কে প্রথ-ভাগুরের এক এক দারস্বরূপ করিয়াছেন। আমারদের প্রত্যেক জানেজিয় ও
প্রত্যেক কর্মেজিয় এক এক কল্যাণমর প্রস্রবণভূল্য হইয়া
মবিরত কল্যাণ-বারি বিনির্গত করিতেছে, তদ্বারা সকল
কল্যাণের অন্বিতীয় আকর-স্বরূপ বিশ্ব-বিধাতার অন্ত্রত
মহিমা প্রকাশ পাইতেছে।

তিনি জীবদিগের উপকারার্থে এই অত্যাশ্চর্য্য ইক্রিরসকল সজন করিরাছেন এবং তাঁছার অধিষ্ঠানেই এই ইক্রিরের গুণ-সকল প্রকাশ পাইতেছে; কিন্তু তিনি স্বরং সকলইক্রির বিবর্জিত। তাঁহার জ্ঞানের নিমিত্তেও ইক্রিরের
অপেকা নাই, তাঁহার কর্ম্বের নিমিত্তেও ইক্রিরের প্ররোজন নাই; তিনি চক্ষ্-কর্ণ-বিহীন হইরাও সম্দার দেখিতেছেন ও সকল শুনিতেছেন এবং পাণি-পাদ ব্যতীত্তও সর্ব্বির
গমন করিতেছেন এবং সকল গ্রহণ করিতেছেন। ইনি
সকলের প্রেভু, সকলের ঈশ্বর, সকলের আগ্রর ও সকলের
স্কৃত্ব ৪ ১৬ ৪

৮৯

মহান্ প্রভূ ব্র্বি পুরুষঃ সত্ত্ববৈশ্বধবর্তকঃ। স্থানির্মাণামিমাণ শান্তিমীশানোজ্যোতিরব্যয়ঃ॥১৭ 'মহান্' 'প্রভ্:' সমর্থ: জগত্ৎপতিস্থিতিসংহারে 'বৈ ' 'প্ক্ষ:' 'এষ:' 'ঈশান:' 'জোতি:' পরিশুদোবিজ্ঞানপ্রকাশঃ 'অবায়:' অবিদাশী 'সব্দ্য' ধর্মদ্য 'প্রবর্ত্তকঃ' প্রেরম্বিতা। ক্মর্থমৃদ্দিশ্য 'ইমাং' 'স্নির্ম্বলাং' 'শাস্তিম্' উদ্দিশ্য ॥ ১৭ ॥

এই মহান্ পুরুষ সকলের প্রভূ। এই জ্ঞান-জ্যোতি: স্থারপ অনম্ভ ঈশ্বর স্থানির্মালা শাস্থির উদ্দেশে ধর্মের প্রাবর্ত্তক হয়েন॥ ১৭॥

এই মক্লমর মহান্পুরুষ আমারদিগকে কেবল ইঞ্জিরক্থা দিরা পশুদিগের প্রায় সংসারে বদ্ধ করেন নাই, কিছু
অস্ল্য ধর্ম দিরা আমারদিগকে স্থাধীন করিরা দিরাছেন।
তিনি বিষয়-স্থ হইতে সহস্র গুণে উৎকৃষ্ট আত্ম-প্রাণাদেব
উদ্দেশ, আমারদের স্থানির্দালী শান্তির উদ্দেশে, স্বয়ং ধর্মের
প্রবর্তক ইইরাছেন। তিনি আমারদের আত্মাতে শুল বৃদ্ধি ও ধর্ম-বল নিয়ত প্রেরণ করিতেছেন। আমরা তাঁহার
প্রসাদে ধর্ম-বলে স্থাধীন হইরা মুক্তির অধিকারী হইসাছি ॥ ১৭॥

मगटमा २ था सह

0 6

ওমিতি ব্রহ্ম সর্কেই সৈ দেবাবলিমাহরন্তি। মধ্যে বামনমাদীনং বিখে দেবাউপাসতে॥ ১॥

'ওম্ ইতি ব্রহ্ম' ওঙ্কারোহি ব্রহ্ম প্রতিব্রেক্রারোহণারা-রলমন্ম্ 'অব্রে' ব্রহ্মণে 'সর্কে' 'দেবাঃ' 'বলিং' পূজাম্ 'আহ্রন্তি'। 'মধ্যে' 'বামনং' সম্ভল্পনীরং সর্কেঃ 'আদীনং' 'বিশ্রে' সর্কে 'দেবাঃ উপাসতে'॥ ১॥

যিনি এক্ষারের প্রতিপাদ্য, তিনি ত্রন্ধ। সকল দেরতারা ইকাঁর পুজ্ঞা আহরণ করিতেছেন। জগতের মধ্য-স্থিত পুজনীয় পরমাত্মাকে সমুদ্য় দেবতারা নিয়ক্ত উপাসনা করিতেছেন॥১॥

জগতের এই অধিতীয় কর্ত্তা বেমন ঈশ্বর, মহেশ্বর, পর মেশ্বর, পরমাত্মা, পরব্রহ্ম প্রভৃতি শব্দের বাচ্য, সেই রূপ ওঁ শব্দেরও বাচ্য। ধিনি স্টি-স্থিতি-প্রলয়-কর্ত্তা; তিনিই ঈশ্বর, তিনিই ব্রহ্ম, তিনিই ওঙ্কারের প্রতিপাত্ম মহান্ প্রদয়। পৃথিবী অপেক্ষা অন্ত অন্ত উৎকৃত্তিতর লোকনিবাসী দেবতারা নিয়ত তাঁহার আরাধনা করিতেছেন। আক্ষ রাও যদি মহৎ ও শ্রেষ্ঠ হইতে বাদনা করি, তবে স্মামার-দেরও কর্ত্তব্য যে দেবতাদের ফার দেই বিশুল মঙ্গল স্বর-পের নিভান্ত অধীন ও অনুগত থাকিয়া এবং তাঁহার প্রতি প্রীতি-বৃত্তি উন্নত ও উদ্দল করিয়া তাঁহার উপাদনাতে রভ শাকি ॥ > ॥

22

ওমিত্যেবং ধ্যায়থ আত্মান্থ স্বস্তি বং পারায় তমসং পরস্তাৎ। ওঁকারেবৈণবায়তনেনাম্বেতি বিদ্যান্ যতচ্ছান্তমজরময়তমভয়ং পরঞ্চ॥ ২ ॥

'ওম্ইতি এবম' ওয়ারালয়নাঃ সন্তঃ 'ধাারথ' চিন্তয়ত 'আত্মানং' জ্ঞানস্বরূপং পরং ব্রহ্ম 'য়ন্তি' নির্কিল্লমন্ত 'বঃ' ব্যাকং 'পারার' পরকুলার 'তমসং' অজ্ঞানতমসঃ 'পরন্তাং' বহ্মক্রপাবগমনার ইত্যর্থঃ। 'ওল্লারেণ এব' 'আর্জনেন' সাধনেন 'অ্রেতি' প্রাপ্রোতি 'বিধান্' 'য়হ তৎ শান্তম্' 'অজ্বং' জ্রাবজ্জিতম্ 'অমৃতং' মৃত্যুবজ্জিতম্ 'অভ্রং 'পরং' নিরতিশয়ং 'চ' ব্রহ্ম ওয়ারাধ্যম্॥ ২ ॥

ওক্কারপ্রজিপাদ্য শরতক্ষকে ধ্যান কর এবং নির্কিন্দে ভোমরা জজ্জান-ডিমির হইতে উত্তীর্ন হও। জ্ঞানী ব্যক্তি ওক্কার-সাধনার দ্বারা সেই শাস্ত্র, অঞ্চর, জমর- অড্যা, নিরভিশার ত্রক্ষকে প্রাপ্ত হয়েন। ২। বিশুদ্ধ উচ্ছেশ জ্ঞান দারা দেই ওক্ষার-প্রতিপাদ্য পর-ব্রহ্মকে ধ্যান কর; তবে নিশ্চম তোমরা সংসারের অজ্ঞান-তিমির হইতে উত্তীর্ণ হইবে এবং শাস্ত, অজর, অমর, অভর, নিরতিশন্ন ব্রহ্মকে প্রাপ্ত হইবে॥২॥

৯২

তৎ দবিতুর্বরেণ্যং ভর্গোদেবস্থ ধীমহি ধিয়োয়োনঃ প্রচোদয়াৎ॥ ৩॥

'ভংসবিতু:' তদ্য সবিতু: জগৎপ্রসবিতু: প্রেরকদ্য সর্কান্যানাম্ বিজ্ঞানানন্দবভাৰদ্য অন্তর্গামিনো অন্ধা: 'দেবদ্য' দ্যোতনাত্মকদ্য পরমেশ্রদ্য 'বরেগ্যং' বরণীয়ং 'ভর্গং' ভর্গং তজং জ্ঞানং শক্তিঞ্চ 'ধীমহি' ধ্যারেম বয়ম্। 'ধিয়ঃ' বৃদ্ধিবৃত্তীঃ 'বং' সবিতা 'নং' অন্মাকং 'প্রচোদয়াৎ' প্রেরম্বতি সংক্র্যায়্রন্থারায় ॥ ও;

সেই জগৎ-প্রসবিতা পরম দেবতার বর্গীর জ্ঞান ও শক্তি ধ্যান করি, যিনি আমার্দিগকে বুদ্ধি-বৃত্তি-সকল প্রেরণ করিতেছেন।। ও।।

বিনি এই জগৎ প্রসব করিয়াছেন, তিনি পিতামাতার ক্লায় এই বিশ্ব পালন করিতেছেন, তাঁহার অচিন্তা জ্ঞান ও মহতী শক্তি বিশ্ব-নিবাদী অসংখ্য জীবের কল্যাণ-সাধনার্থে ই তৎপর রহিয়াছে। তিনি আমারদিগের ধর্ম-পথে সাহায়ার্থ বুদ্ধি-বৃত্তি সকল পুনঃ পুনঃ প্রেরণ করিতেছেন। তাঁহার সাধ-নেতে আমরা সকল প্রকার পাপতাপ হইতে নিস্তার পাই॥%

స్త్రి

মাহং ত্রন্ধা নিরাক্র্য্যাং মা মা ত্রন্ধা নিরাক-রোদনিরাকরণমস্তঃ॥ ৪॥

'অহং ব্ৰহ্ম' 'ম।' 'নিরাকুর্বাং' ন ত্যজেরং 'মা' নামূ উপাদকং 'ব্ৰহ্ম' 'ম।' 'নিরাকরোৎ' নাত্যজ্ব। মৎকর্তৃকং ব্ৰহ্মণঃ 'অনিরাকরণম্' অতিরস্করণম্ 'অস্তু'॥ ৪ ॥

ত্রন্থ আমাকে পরিত্যাগ করেন নাই, আমি যেন তাঁহাকে পরিত্যাগ না করি। তিনি আমা কর্ত্তুক সর্বাদা অপরিত্যক্ত থাকুন ॥ ৪॥

কর্ণাময় বিশ্ব-পিতা কোন বিষয়ে আমারদিগকে বিশ্বজ্ হন নাই। আমরা প্রত্যেক নিমেষেই তাঁহার ক্পা-বারি প্রাপ্ত হইতেছি এবং প্রত্যেক বারের নিঃশ্বাস-ক্রিয়াতেই তাঁহার ক্রণা-সমীরণ সেবন করিতেছি। তিনি আমার-দিগকে কোন বিষয়ে বিশ্বত হন নাই এবং কোন কালে কোন বিষয়ে বিশ্বত হইবেনও না; তিনি আমারদিগকে নিয়ত প্রীতি-দৃষ্টিতে দেখিতেছেন। অভএব আমারা যেন ভাহাকে বিশ্বত না হই, যেন ক্রতজ্ঞ হইরা নিয়ত তাঁহার শ্রীতি স্থা পান করিও তাঁহার করণাদত্ত অমুক্তা সকল সম্ভপ্ত চিত্তে পালন করিতে প্রবৃত্ত থাকি॥৪॥

৯8

তং বের্ছং পুরুষং বেদ যথা মা বোম্ভুঃ পরিব্যথাঃ॥ ৫॥

'তং' 'বেতাং' বেদনীমং পূর্ণবাৎ 'পুরুষং' পরং ব্রহ্ম 'বেন' 'ব্ধা' 'বং' মুম্মান্ 'মৃত্যুঃ মা' 'পরিব্যথাঃ' পবিব্যথয়তু। ন চেৎ বিজ্ঞায়তে পুরুষোমৃত্যুনিমিত্তাং ব্যথামাপরাতঃথিন এব যুদ্ধং স্থঃ সতন্তনা ভূৎ যুমাক্মিত্যভিপ্রায়ঃ॥ ৫॥

ভোমানের মৃত্যু-পীড়া না ছউক, এ প্রযুক্ত দেই বেদ্য পুরুষকে জ্ঞান॥ ৫॥

সেই অমৃত পুরুষকে জ্ঞান এবং তাঁহাকে দকল হইতে, জ্ঞাপনা হইতেও জ্ঞাধিক প্রীতি কর, তবে তোমাবদেব মৃত্যু-পীড়ার জ্বদান হইবে। যিনি ব্রহ্মকে লাভ কবিয়াছেন, ব্রহ্মের সহিত বাঁহার নিত্য সহবাদ হইয়াছে; তিনি এখানে থাকিয়াই দংদারকে জ্ঞাতিক্রম করেন এবং মৃত্যু-পাশ হইতে পরিত্রাণ পান। তাঁহাঁর নিকটে শৃত্য পুর্বহয়, বিপদ মক্ষ-লের আধার হয় এবং মৃত্যু অমৃতের দোপান হয়॥ ৫॥

D&

যোদেবোহগ্নো যোহপ্ত যোবিশ্বং ভুবনমা-

বিবেশ। যওষধীয়ু যোবনস্পতিয়ু ক্তৈয় দেবার নমোনমঃ॥৬॥

'য: দেব: অগ্নে য: অঙ্গ' 'ব বিশং ভ্ৰনং' স্বেন বচিতং সংসারম্ 'আবিবেশ' প্রবিষ্টবান্। 'যং' 'ওবধীয়ু' ওব্ধিয়ু 'য: বনস্পতিয়ু' 'তদ্মৈ' 'দেবায়' প্রমেশ্বরায় 'নমঃ নমঃ' দ্বির্কচনমাদরার্থম্॥ ৬॥

থে দেবতা অগ্নিতে, বিনি জালেতে, বিনি বিশ-সংসারে প্রবিষ্ট হইয়া আছেন; বিনি ওবধিতে, বিনি বনস্পতিতে, সেই দেবতাকে বার বার নমস্কার করি। ৬।

যিনি অগ্নির অভ্যন্তবে থাকিয়া তাহাকে নির্মে র'খিতে ছেন, ও অসীম সমুদ্রের ভীষণ তরকে বিরাজ করিতেছেন; যাহার করণা নিদাঘলালের তৃত্তিকর বারি-ধারাতে ও প্রাণদ ওষধি বনস্পতিতে দেদীপামান রহিয়াছে; বিনিভ্নোক, হ্যালোক, অন্তরীকে, সকল স্থানেই স্প্রেকাশ রহিয়াছেন; সেই দেবভাকে বার বার নমস্বার করি॥ ৬॥

একদিশোইধ্যায়ঃ।

36

অশব্দসম্পর্শনরূপমধ্যয়ং তথারসং নিত্যমগদ্ধবচ্চ যথ। অনাত্মনন্তঃ মহতঃ পরং গ্রুবং নিচায্য তং মৃত্যুমুখাও প্রমূচ্যতে ॥ ১ ॥

'মাশকম্ অম্পর্নি মারপের্মবারং' ন ব্যোতি ন ক্ষীয়তে 'তথা অরসং নিতাং ক্ষপদ্ধৰ চ যং' ক্ষা। ক্ষরিদ্যান-যাদিকারণমন্য তদিদম্ 'জনাদি তথা ক্ষিন্যানোহন্তোযদ্য তং 'অনজং' 'মহতঃ' মহৎপরিমাণাৎ অপি 'পরং' মহৎ নিব-তিশয়তাং 'জবং' কৃটয়ং নিতাং 'নিচায়্য' অবগম্য 'তম' এবস্তং ক্রায়ানং 'মৃত্যুম্থাৎ' মৃত্যুগোচবাৎ 'প্রম্চ্যতে' বিষুজ্যুতে ॥ ১ ॥

খাঁহাতে শব্দ নাই, স্পর্শ নাই, রপ নাই, রস নাই, গান্ধ নাই, খাঁহার ক্ষয় নাই, যিনি অনাদি অনন্ত, যিনি মহৎ হইতে মহৎ এবং নিত্য ও নির্কিকার; তাঁহাকে জানিয়া জীব মৃত্যুমুখ হইতে প্রামুক্ত হয়।। ১।।

ষ্ট্র অতীত জান্মর পর্মেশ্ব ক্লাণি শক্ স্থি হ

ইন্দ্রিরের বিষয় নছেন। তিনি নিরাকার, নির্কিকার, নিত্য ও মহান্। তাঁহাকে জানিলে লোক মৃত্যুম্থ হইতে মুক্ত হইরা অনস্ত কাল পর্যান্ত ব্রশ্বনামে উন্নত হইতে থাকে॥১॥

29

এষদর্বেষু ভূতেষু গৃঢ়োত্মা ন প্রকাশতে। দৃশ্যতে স্বগ্রায়া সুক্ষায়া সুক্ষাদর্শিভিঃ॥২॥

'দর্বের্ ভূতের্' 'এবং' 'গৃংঢ়োঝা' গৃঢ়ং আন্মা প্রচ্ছরঃ রক্ষাঝা 'ন প্রকাশতে' অদংস্কৃতব্দেরবিজ্ঞেরবাং। 'দৃশ্যতে তু' দংস্কৃত্যা 'বৃদ্ধ্যা' 'অগ্রায়া' অগ্রমিব অগ্রা তয়া একাগ্র তয়োপেতয়া 'ফ্রামা' ফ্রাবস্তনিরূপণপ্রয়া কৈঃ 'ফ্রা-দ্র্শিভিঃ' ফ্রাং দ্রষ্টুং শীলং বেষাং তৈঃ পণ্ডিতৈঃ ॥ ২॥

এই পরমান্দা সর্বভূতেতে গৃত রূপে প্রচ্ছন রহিয়া-ছেন, এ প্রযুক্ত তিনি প্রকাশ পান না। স্থানদর্শী ব্রন্ধজ্ঞেরা একনিষ্ঠ স্থান বুদ্ধি দারা তাঁহাকে দৃষ্টি করেন॥২॥

পরমাত্মা সকলের শক্তির শক্তিতে, সকলের প্রাণের প্রাণেতে, সকলের আত্মার আত্মাতে গুঢ় রূপে প্রবিষ্ট রহি-বাছেন; বিষয়-মোহে মুগ্ধ ব্যক্তিদিগের নিকটে তিনি প্রকাশ পান না। সংগ্রদশী ধীরেরা একনিষ্ঠ স্মার্জিত বৃদ্ধি দ্বারা গেই জ্ঞান-স্বরূপ প্রমেশ্বরকে জ্ঞানালোকে দেখিতে পান ॥ ২॥

25

নায়মাত্রা প্রবচনেন লভ্যো ন মেধয়া ন বহুনা প্রততেন। যমেবৈষর্ণুতে তেন লভ্য-স্তব্যৈষ্পাত্রা র্ণুতে তন্ং স্বাম্॥ ৩ ॥

ন অরম্ আত্মা' ত্রন্ধায়া 'প্রবচনেন' প্রকৃষ্টবচনেন 'সভী:' জের: 'ন' অপি 'মেধরা' গ্রন্থধারণাশক্তা। 'ন বহুনা শ্রুতেন' শ্রুবণেন। কেন তর্হি সভাইত্যুচ্যতে। 'বস্ এব' ত্রনাত্মানম্ 'এবং' সাধকঃ 'বুণুতে' প্রার্থরতে 'তেন' সাধকেন 'লভাঃ'। সং 'এবং' 'আ্আা' ত্রন্ধাত্মা 'তন্তু' আ্বার্থন কামস্য 'বুণুতে' প্রকাশরতি পার্মার্থিকীং 'স্বাং' স্বকীরাং 'তন্ম্'॥ ১ ॥

অনেক উত্তম বচন দ্বারা, বা মেণা দ্বারা, অথবা বছু শ্রেবণ দ্বারা এই পরমাত্মাকে লাভ করা যার না; যে সাধক তাঁহাকে প্রার্থনা করে, সেই তাঁহাকে লাভ করে। পরমাত্মা এরপ সাধকের সন্ধিবনে আত্ম-স্থরূপ প্রকাশ করেন।। ৩॥ বদি তাঁহাকে পাইবাব নিমিত্তে অমুরাগ ও ঘর না থাকে; তবে প্রবল মেধাই থাকুক, আর প্রচুর উপদেশযাকাই শ্রুত হউক, কিছুতেই তাঁহাকে লাভ করা যায় না।
যিনি পিপাসাভূ শিতিকের ভার ব্যাকুল হইয়া একাতে
তাঁহাকে প্রার্থনা করেন, তাঁহারই সমিধানে প্রদায়া আত্মশ্বরণ প্রকাশ করেন। তবন সেই সাধক আপ্রকাম হইয়া
প্রিত্র ও পরিত্পত্ত হরেন। ৩॥

花尼

উত্তিষ্ঠত জাগ্রত প্রাপ্য বরান্ নিবোধত। ক্ষুরত ধারা নিশিতা ছুরতায়া ছুর্গং পথন্তৎ ক্রীব-যোবদন্তি॥ ৪॥

'উত্তিষ্ঠত' হে জন্তবঃ ব্রন্ধজানাভিমুখাভবত 'জাগ্রত' জাজান নিজারা: বার্ত্তপারা: সর্বানর্থবিজভূতারা: ক্ষাং ক্ষান্ত । কথং 'প্রাপা' উপগম্য 'বরান্' প্রকৃষ্টান্ জাচার্য্যান্ ব্রন্থ প্রকৃষ্টান্ জাচার্য্যান্ ব্রন্থ ভিক্তি । কথা 'ক্র্ব্যাপিনং ব্রন্ধান্ধানং 'নিবোধত' অবগচ্ছত। যথা 'ক্র্য্যা' 'ধারা' অগ্রাং 'নিশিতা' তীক্ষীকৃতা হংখেনাত্যরোযস্যাঃ সা 'হুরত্যয়া' পদ্যাং হুর্গমনীয়া তথা 'হুর্গং' হুঃসম্পাদং 'পথং' পন্থানং ব্রন্ধজ্ঞানলক্ষণং মার্গং 'তং' 'ক্রয়ঃ' মেধাবিনঃ 'ব্দক্তি' ॥ ৪॥

(६ क्योत-नकल! उत्थान कत, अब्छान निक्या इहेट छ

জার্থাং হও এবং উৎক্লষ্ট আচার্ষ্যের নিকট বাইয়া জ্ঞান লাভ কর। পণ্ডিতেরা এই পথকে শাণিত ক্লুর-ধারের ভাার তুর্গম করিয়া বলিয়াছেন ॥ ৪ ॥

হে জীব-সকল! উত্থান কর, অজ্ঞান-নিপ্রা হইতে জাগ্রং হও; আর কত কাল তাহাতে অভিভূত থাকিবে, আর কত দিন পরম ধনকে ভূলিয়া রহিবে। কাল ঘাই-তেছে, মৃত্যু সরিকট, জড়তা ও দীর্ঘ-স্ত্রতা পরিত্যাগ কর; উত্তম জ্ঞানবান আচার্য্যের নিকট ঘাইয়া সকল আশার ষষ্টি-স্বরূপ সেই পরম প্রেমাম্পদকে জান; সহস্র গ্রন্থ পাঠে যাহা না হইবে, তাহা উত্তম আচার্য্যের বাক্যেতে হইবে। স্বাধ্যের পথ অবলম্বন করিতে হইলে বুদ্ধিকে মার্জিত করিতে হয়, ইন্দ্রিয়দিপকে বশীভূত করিতে হয়, তিতিক্ষাকে অভ্যাস করিতে হয়, ধর্ম-প্রেরভি-সকলকে উন্নত, করিতে হয় এবং স্বাধ্ব-প্রীতিতে সনকে মগ্র করিতে হয়; অতএব এ পথ অতি হুর্গম পথ। তথাপি স্বাব্রের প্রসাদে এবং সাধকের অত্যাগে এ হুর্গম পথও স্থগম হইয়া উঠে॥ ৪ ॥

200

তদেতদ্ ব্রহ্মাপ্র্বং এতদম্তমভর্থ শাস্ত-উপাদীত ॥ ৫॥

'जः এতং उम' नाज भूमः कात्रशः विष्ठउदेषि 'अशू-

র্মন্ 'এতং অস্তম্ অভয়ং 'শাস্তঃ' সন্ লোকঃ 'উপা-সীত'॥ ৫॥

সেই যে এই ত্রন্ধা, ইহাঁর পূর্বের আর কেছ নাই; ইনি অমৃত ও অভয়। শাস্ত হইয়া তাঁহার উপাসনা করিবেক।। ৫॥

বিনি এই বিশের কারণ, তাঁহবি আব পূর্ব-কাবণ নাই, তিনি অনাদি অনস্ত, অমৃত ও পরিপূর্ণ। সেই অভয়েব শরণাপন্ন হইলে আর কোন ভন্ন থাকে না। শান্ত হইনা টাহার উপাসনা করিবেক। শান্তি ঈশ্ব-প্রীতির নিবাস-ভূমি। যথন মন নির্দান ও স্থির হ্রদের স্থান্থ শান্ত হন্ন, তখন আরাতে ঈশ্বরে স্বরূপ প্রতিভাত হয়; নতুবা প্রবল বিকৈষণা ও মানৈষণা দ্বাবা চিত্ত বিকিপ্ত হইলে ও ইঞ্জিয়-লোল্য জন্ম মন অভচি হইলে প্রম পরিত্র ব্রহ্মানন্দ উপ ভোগে সামর্থ্য থাকে না। অতএব শান্ত হইনা তাঁহাব উপাসনা করিবেক ॥ ৫॥

দ্বাদ**ে**শা২ধ্যায়ঃ।

303

বুক্ষইব স্তব্যোদিবি তিষ্ঠত্যেকঃ। তেনেদং পূৰ্ণং পুৰুষেণ সৰ্ব্যয় । ১॥

'বৃক্ষঃ ইব স্তব্ধঃ' নিশ্চশঃ 'দুদিবি' দ্যোতনাম্মনি স্থে মহিমি তিঠতি 'একঃ' অন্বিতীয়ঃ প্রমামা। 'তেন' অধি-তীয়েন 'পুক্ষেণ' পূর্ণেন 'ইদং সর্বাং' 'পূর্ণং' নৈর্ম্বর্যোগ ব্যাপ্তম্॥১॥

অন্থিতীয় প্রমাত্মা বৃক্ষের ন্থায় গুন্ধ রহিয়া আপন নার স্বপ্রকাশ মহিমাতে স্থিতি করিতেছেন। সেই পূর্ণ পুরুষের দ্বারা এই সমস্ত জ্বগৎ পূর্ণ রহিয়াছে॥ ১॥

বিশ্বপতির আশ্রেমে এই বিশ্ব-চক্র নিরম্ভর ঘূর্ণিত ও উত্ত-রোত্তর উন্নতি প্রাপ্ত হইন্না তাঁহার শুভাভিপ্রান্থ-দকল সম্পা-দন করিতেছে। তিনি সাক্ষী-শ্বরূপে, নিরম্ভা-রূপে, নিরম্ভর নিস্তর্ক ভাবে স্ববস্থিতি করিন্না স্বাভিপ্রেত শুভোৎপাদনে নিঃশক্ষ রহিন্নাছেন। প্রবাহ-বলে নদী-তীরস্থ গ্রাম ও নগর ভগ্ন হইতেছে, জ্বলপ্লাবনে দেশ প্রদেশ প্লাবিত হই-তেছে, প্রলম্বনাত ও ভীষণ ভূমি-কম্পে লক্ষ লক্ষ জীব-শ্রেণী মৃত্যু-মুথে পতিত হইতেছে; কিন্তু সর্বজ্ঞ মঙ্গলালয় পরমেশর এই সমস্ত আপাততঃ ত্রং-জনক ব্যাপারকে উত্তর-কালীন উন্নতি-সাধনের অমুক্ল করিয়া দিরা অব্যাক্লিত নিজক ভাবে অবস্থিতি করিতেছেন। বখন অতি ঘোর শিলা-বর্ষণ ও মেঘগর্জন-সহকৃত মৃত্যু হুঃ বক্সপাত ঘারা পৃথীমগুলের প্রলম্নাবস্থা উপস্থিত বোধ হয়, অতি ভয়ানক আগ্রেয় গিরিয় অয়ু হুংপাত উৎপন্ন হইয়া চতুঃপার্ম বর্জী পশুপক্ষি-মন্থ্য-সম্বান্ত গ্রাম নাগর দগ্ধ করিতে থাকে এবং রাজ-বিপ্লব ও ভুমূল সংপ্রাম উপস্থিত হইয়া নর-কণ্ঠ-নিংস্ত শোলিত-প্রবাহ পৃথীতল প্লাবিত ক্ষরিতে থাকে; তখনও তিনি আপনার চিরাভিপ্রেত চরম-কল্যাণ-সম্পাদন বিষ্যে শ্বির-নিশ্রম থাকিয়া সমান-ক্লপ শাস্ত ভাবে অবস্থিতি করেন।

তিনি স্বকীয় স্থপ্রকাশ মহিমাতে স্থিতি করিতেছেন।
স্মার সকলে তাঁহাকে স্থবলম্বন করিয়া রহিয়াছে, তিনি
কাহাকেও অবলম্বন করিয়া নাই; তিনি স্বকীয় মহিয়াতেই
স্থিতি করিতেছেন। সেই পূর্ণপুরুষের ছারা এই সমস্ক
জগৎ পূর্ণ রহিয়াছে ॥ > ॥

205

যথা সৌম্য বয়াত সি ৰাসোহক্ষত সংপ্ৰতিষ্ঠত্তে। এৰত হ বৈ তৎ সৰ্ব্বং পদ্মআজ্বনি সংপ্ৰতিষ্ঠতে॥২॥ 'ষথা' যেন প্ৰকাৰেণ হে 'সৌমা' প্ৰিম্বদৰ্শুন 'বয়াংসি' পক্ষিণঃ 'বাদোবৃক্ষং' বাদার্থং বৃক্ষং 'সংপ্রতিষ্ঠন্তে এবং হ বৈ ভং সর্বাং' স্থাবরজক্ষং 'পরে আয়নি' অক্ষরে জন্ধণি 'সং-প্রতিষ্ঠতে' ॥ ২ ॥

ছোন বৃক্ষেতে স্থিতি করে, ওজেপ সকলই প্রমাত্মাতে স্থান বৃক্ষেতে স্থিতি করে, ওজেপ সকলই প্রমাত্মাতে স্থিতি করিতেছে॥২॥

সকল বস্তুই সর্প্রাপী সর্প্রাপ্রতকে আশ্রয় করিয়া হিডি করিতেছে। অড় লগতের সলে তাঁহার যে প্রকার সম্মন, আমারনের সলে ইহা অপেকাও তাঁহার আর এক উচ্চতর সম্মন। আমরা তাঁহার সেই প্রকার আশ্রিত, বেমন পুরু শিতার আশ্রিত ॥ ২ ॥

3.0

একোদেব: সর্বাস্থাতের গুড়ঃ
সর্বাব্যাপী সর্বাস্থাতাত বাদ্যা।
কর্মাধ্যক্ষঃ সর্বাস্থাতাধিবাসঃ
সাক্ষী চেতা কেবলোনিগুণিক ॥ ৩॥

'এবং' অধিতীর: 'দেবং' দ্যোতনপ্রভাবঃ প্রদেশরঃ
'সর্বজ্তের্' 'গুড়ং' প্রছেন্ন: 'সর্ব্ব্যাপী' 'সর্বজ্তান্তরান্ধা'
সর্ব্বোং ভ্তানাং অন্তরান্ধা অন্তর্বামী। 'কর্মাধাক্ষঃ' সর্ব্ব-

প্রাণিকতবিচিত্রকর্মণামধ্যক্ষ:। সর্বাণি ভূতানি অধিবাস-রতীতি 'সর্ব্বভূতাধিবাসং' প্রতিষ্ঠা সর্বাফ্র জগতঃ 'সাক্ষা' সর্ব্বভূতি 'চেতা কেবলং' অসঙ্গঃ 'নিষ্কু'শঃ চ' সম্মাণিঞ্চর হিন্দ্র ভিন্ন টা দ্বা

এক যে পরমেশ্বর, তিনি সর্ব্যন্ততে গুঢ়-রূপে স্থিতি করিতেছেন, তিনি সের্বাব্যাপী ও সর্বভূতের অস্তরাত্মা। তিনি তাবং কার্য্যের অগ্যক্ষ, তিনি সর্ব্ব-ভূতের আশ্রয়, তিনি জ্ঞান-স্বরূপ, সকলের সাকী, ও সক্ষ-রহিত এবং সৃষ্ট পদার্থের বে সকল গ্রুণ, তাহার কিছুই তাঁহাতে নাই॥ ৩॥

বিনি এই ভূলোকের ঈশ্বর, তিনি গ্রহ চন্ত্র নক্ষত্র প্রভৃত্তি সক্ষ লোকেরই ঈশ্বর। বিনি আমাকে ক্ষজন করিয়াছেন এবং আমার প্রভৃ, তিনি মুদ্দার জ্বতের ক্ষ্টিকন্তা এবং সকলেরই প্রভৃ। সেই এক দেবতা সর্প্র ভূতে গুঢ়রণে প্রছ্রে ভাবে থাকিয়া জ্বনীম চ্রাচর শাসন করিছেছেন। তিনি সর্প্রবাপী এবং সকলেরই অল্বান্ধা, জামারদিগের বে এই জীবান্ধা সকল, তাহারদিগেরও প্রভ্যেকের মধ্যে তিনি পূর্ণরংগ রহিয়াছেন। তিনি সকলের সাক্ষী এবং কর্মাধ্যক্ষ। তিনি সর্প্র স্থানে থাকিয়া সকলকে দৃষ্টি ক্রি-ভেছেন। তিনি বে কেবল সাক্ষী মাত্র হইয়া আমার- নির্পেক নিরপেক-ভাবে দৃষ্টি করিতেছেন, এমত নতে; কিন্তু কর্মাধ্যক হইয়া উপবৃক্ত দণ্ড ও প্রকার বিধান ঘারা আমারদের উত্তরোভর উন্নতি সাধন করিতেছেন। তিনি সর্ক-বাাপী ও সকলের প্রভু হইয়াও কিছুতেই আসক্ত নছেন, তিনি সক-রহিড। তাই পদার্থ শরীর ও মনের ধর্ম কিছুই তাঁহাতে নাই, তিনি শুক্ত জান-স্কর্প॥ ৩॥

508

সর্বা দিশ উদ্ধর্মধশ্চ তির্যুক্
শ্রেকাশ্বন্ আজতে যদনভান্।
এবত সদেবোভগবান্ বরেণ্যো
যোনিঃ সভাবানধিতিষ্ঠত্যকঃ ॥ ৪ ॥

'দক্ষা দিশঃ উর্জং অধঃ চ' 'তিব্যক্' পার্গদিশঃ 'প্রকা-শরন্' বোলতে' দীপাতে 'বং' বথা 'উ' 'অনড়ান্' আদিতাঃ। 'এবং দঃ দেবঃ' দ্যোতনগতাবঃ পরনেশরঃ 'ভগবান্' ঐশব্য-দন্ধিতঃ 'বরেণ্যঃ' বরণীরঃ সভলনীরঃ 'বোনিং' কারণং হুংখনা জগতঃ পৃথিবাদীনাং। 'শ্বভাবান্' শ্বভাবান্ শুণান্ 'অধিতিষ্ঠতি' নিব্যুব্তি 'একং' অধিতীয়ঃ পর-মাস্থা॥ ৪॥

স্থা বেমন উদ্ধ অধ ভিথ্যস্থ সমুদায় দিক্ প্রকাশ করিয়া প্রকাশ পান, অন্ধিতীয় ঐশ্ধ্যবানু বিশ্ব-প্রকা- শক জগং-কারণ বরণীয় পরমেশ্বর সেই রূপ প্রকাশ পাইতেছেন। একাকী তিনি সর্বভূতে ভাছারদিগের স্থীয় স্থীয় ভাব-সকল নিয়োজন করিতেছেন। ৪॥

স্থ্য বেষন সকলকে প্রকাশ করিয়া আপনি প্রকাশ পান, অবিতীর পর্মেশ্বরও সেই রূপ তাঁহার এই স্টির মধ্যে প্রকাশ পাইডেছেন। তাঁহার কেহ প্রকাশক নাই, তাঁহার কেহ প্রৱা নাই; তিনি শ্বয়ভূ, তিনি শপ্রকাশ। তিনি বায়ুডে শব্দ, অগ্রিডে উষ্ণা, জলে শৈত্য, বজে বল, পদে গতি, বৃষ্টিতে তৃথি, নক্ষতে জ্যোতি:, সকল ভ্ডেডে ভাহারদের শীর শীর ভাব সকল নিয়োজন করিতেছেন ॥৪॥

30¢

নৈন্যুদ্ধং ন তির্ঘ্যঞ্জং ন মধ্যে পরিজগ্রভং। ন তদ্য প্রতিমা অন্তি যদ্য নাম মহদ্যশঃ ॥৫॥

'এনং' ব্ৰহ্মায়ানম্ 'উৰ্দ্ধং' উৰ্দ্ধিলি কল্চিদ্ধি 'ন পরিষ্ঠান্তং' ন পরিগৃহীতবান্ 'তির্যাঞ্চম্' ন পার্ছে 'ন' চ 'মধ্যে' উর্দ্ধির দিকু ব্রহ্ম ন কেনাপি পরিপ্রাহাং। 'ন' 'তদ্য' ঈবরদ্য সর্বাঞ্জন্য অচিন্তালকে: দদৃশাভাবাৎ 'প্রতিমা' উপনা 'অতি' 'বদ্য' ঈবরদ্য 'নাম' অভিবানং 'মহদ্বশং' মহদিগান্যনৰজিল: সর্বাঞ্জ পরিপূর্ণং বলঃ কীর্তি:॥ ৫॥ কি উৰ্দ্ধ দেশে, কি ডিৰ্য্যক্, কি মধ্য-দৈশে ইৰীকে কোধাও কেছ এছণ করিতে পারেন নাই। তাঁহার শ্রুতিয়া নাই, তাঁহার নাম মইদ্র মধঃ।। ৫।।

অঁত্যুগ্রত-মনিসিক-বৃত্তি-সমষ্টিত শ্রেষ্ঠ জীবেরাও সেই
কানীম-জ্ঞান-সর্ত্র অষ্ট্রের শিক্ষামর্থের পান্তীর্যা পরিমাণ
কারিতে সমর্থ হন না। তাঁহার শ্রেজিনা নাই, তাঁহার উপমা
নাই, তাঁহার অন্থরণ কোন পদার্থ নাই। ক্রি তাঁহার
কোতির অভাগত প্রকাশ করিতে পারে না—পিতা মাতার
অক্রেম মেহ, রুদর-বন্ধর নিঃস্বার্থ প্রীতি, পতিব্রতা সতীর
পরিত্র প্রেম্, তাঁহার প্রেমের ছারা মান্তা। তাঁহার পরীর
নাই, তিনি শরীরের নির্মাতা; তাঁহার মন নাই, তিনি
মনের প্রতা; তাঁহার মান বাত্রাক
কাহির প্রতার মহিমা ভ্লোক ও ছালোকের প্রত্যেক
কাংশে দেনীপামান সহিয়াছে; অত্তর্ব তাঁহার নাম মহন
কালা । ১ ॥

300

দ সন্দ্ৰে তিষ্ঠতি রূপমন্য দ চকুষা পশ্যতি কশ্চনৈন্য। হুদা মনীয়া মনন্ত্ৰিকন্তা য এনমেবং বিহুরমূতান্তে ভবস্তি॥ ৬॥ 'অন্ত' ঈশর্দ্য 'ক্লণং' শ্বরূপং ক্লণাদিরহিতং নির্বিধি লেবং 'দংদূলে' দর্শনবিবরে 'ন ভিঠতি'। ইজিরাগোচরজান্দের 'ন চকুরা পশাতি' 'কল্চন' ক্লোহলি 'এনম্' ঈশরং চকুনিজ্যুপলক্ষণং স্থৈরিক্রিক্রৈর্মি ক্লোনি ন ডং এইডুং শক্রুবাং। 'হলা' হুংখ্রা মনদ ইটে নিরন্ধুছেন ইতি ননীট তরা 'মনীকা' ব্রুৱা বিক্রবর্জ্যিতরা 'মনসা' মনন-ক্রেপে সমাক্দর্শনেন 'কভিক্লথ্য' অভিসমর্থিতঃ অভিপ্রকাশিতঃ ইশরোভবতি। 'বে এনং' রক্ষ 'এবং বিহুঃ অমৃতাঃ তে ভবঙ্কি' ॥ ৬॥

ইহাঁর অরূপ চকুর গোচর বাবে, অ্তরাং ইহাঁকে সংশার-রহিজ বুদ্ধির দারা দৃষ্ট হইলে প্রকাশিত হন; বাঁহারা ইহাঁকে এই প্রকারে জানেন, তাঁহারা অমর হরেন ! ৬ !

পরমেশর চক্র গোচর, নহেন, তিনি কেবল জান-নেত্রের গোচর। বিনি তাঁছার অপ্রাগে একাঞ্চিত্ত হইরা বুজি-বোগে শীর বুদ্ধিকে মার্জিত ও সংশয়-বর্জিত করেন; তিনি সেই জান-গোচর সত্য জ্বর মলল প্রথকে প্রতাক দেখেন এবং তাঁছাকে লাভ করিয়া অমর হরেন— তাঁহার সহিত নিত্য-সংবাস-ক্ষমিত অক্য ত্রন্থানন্দ উপভোগ করেন। ৬ ৪

3.9

জ্ঞাবণায়াপি বছজির্যোন লক্ষ্য:
শৃণুজ্ঞোপি বহবোষই বিছ্যা:।
আশ্চর্যোবক্তা কুশলোহদ্য লক্ষা
আশ্চর্যোজ্ঞাতা কুশলামুশিক: ॥ ৭॥

'প্রবণার' প্রবণার্থং 'ক্ষাপি বং' ব্রহ্মান্থা 'ন লক্ডাঃ বছজিঃ' ক্ষেত্রেইকঃ। 'শূণুবঃ ক্ষাপি বহবং' ক্ষেত্রেক ক্ষপ্তে 'বং' ব্রহ্মান্যানং 'ন বিহ্যাং' ন বিশ্বতি ক্ষাপ্রিলাহসংস্কৃতাত্মানোন বিজ্ঞানীয়ুঃ কিক মস্য 'বক্ষা আক্ষ্যাং' অভ্যুত্বদিবানেকে ক্ষিত্রের ক্ষর্তি। তথা ক্ষ্যাপি 'ক্ষ্যা' ব্রহ্মান্যানঃ 'ক্রা ক্শলং' নিপুন এব ক্ষর্তি। তথা নিপুনঃ 'ক্রাডা' 'লাক্ষ্যাং' ক্ষিত্রের ক্ষর্তি 'কুন্লান্থ্রিটাং' কুন্লেন নিপুনেনাচার্য্যে-গান্থপিটাং সন্ সংশিক্ষিতঃ সন্যু ৭ ॥

শুনিবার উপায় অভাবে অনেকে বে পরবেশকে লাভ করিতে পারে না, অনেকে প্রাবণ করিয়াও বাঁহাকে জানিতে পারে না; তাঁহার জ্ঞান উপদেশ করিতে পারে, এমত ককা অভি ই্রাড়া, ও অভান্থ নিপুণ বে ব্যক্তি, সেই তাঁহাকে লাভ করিতে পারে। নিপুণ-রূপে অনুশিক হইরাহে, এমত জ্ঞাভাও হ্রাড়া। ৭॥

অনৈকৈ পরমেশবের যথার্থ শ্বরূপ ও প্রকৃত অতি প্রায় विषदा डेशामन आर्थ ना इंख्यांट डीहाँव खीन-मार्ड সমর্থ হয় না। আনেকৈ ভাঁহার বিষয় প্রবণ করিয়াও উৎমুদ্ধ বৃদ্ধি ও সমুচিত অধার অভাবে তাহাকে জানিতে भारत ना। वृंकिवृष्टि भाष्टिं मा स्ट्रेंटम भेतरमधरतत चत्र प किट्टांब क्रेमबद्धांन चैंवर्गंठ इस्ता यांव ना। এ নিমিত্তে পরমাত্মতীৰ জানী সর্বা দেশে ও সর্বা জাতি-मत्या पाछि प्रदा भव्किमानी अक्षावान वार्कि वार्कि **ट्याफ जारता जीकारक बातिएक शीरत ती धवर विश्वक्र-हिख** भवमाश्रक्षांनी वांकित्वर्रेक काँकांत्र विवंत्र केंशाम कहिएक किर ममर्थ रह ना। उँशित वक्ति वहाँ छ, उँशित नका अ इंस उ ; अछ এव भन्नभीय-स्थाम गांष्टिभन्न यक्न गांगा। जीहारक শাত করিবার অক্ত মনোগত ম্পৃহা ও একান্ত বত্ব না থাকিলে काशीय काना बाद ना अवर काशांत्र मधाधि-माधानक मधर्ब क्षत्रा यात्र मा ॥ १॥

300

পরাচঃ কামানস্থস্তি বালাত্তে মৃত্যোর্যন্তি বিভত্তস্য পাশম্। অথ ধীরাক্ষয়তত্ত্বং বিদিয়া ধ্রুবস্থ্রতের বিধিয়া 'পরাচঃ' বহির্নতানেব 'কামান্' বিষয়ান্ 'অমুবন্তি' অমু-গছত্তি 'বালাঃ' মন্ন প্রজাঃ 'তে' তেন কারনেন 'মৃত্যাঃ' 'বিতত্যা' বিজ্ঞীর্ণায় সর্ক্তোব্যাগুণা 'পালং' পাঞ্জতে বধ্যতে ব্যন তং 'বস্তি' গজ্জতি। যত এবং 'অথ' তত্মাৎ 'ধীরাঃ' বিবেকিনঃ 'মমৃত্তবং' 'গুবং' 'বিলিয়া' 'আঞ্জবেষ্' অনিভ্যেষ্
সর্কাপদার্থেষ্ 'ইহ' সংসারে 'ন প্রার্থরত্ত্ব' কিঞ্চিনপি ৪ ৮ ৪

অপে বৃদ্ধি লোক সকল বহির্মিষয়েতেই আসক্ত হইয়া বিক্তীর্ব মৃত্যুর পালে বদ্ধ হয়, ধীর ব্যক্তিরা প্রদ অমৃতত্বকে জানিয়া সংসারের তাবং অনিতা পদার্থের মধ্যে কিছুই প্রার্থনা করেন না ১৮॥

যাহারা বহির্কিবয়ই দেখে, বাহারা বীর আত্মাকে এবং আয়ার অস্করাত্মাকে দেখিতে পার না; তাহারা বহির্কিবয়ে আসক হইরা, স্বীর প্রবৃত্তিরই দাস হইরা, বিত্তীর্ণ মৃত্যুর পালে বদ্ধ হর। বিত্তীর্ণ মৃত্যুর রূপ এই জড় জগৎ ও পশু-প্রকৃতি এবং মৃত্যুর পাল এই কার্য্য-কারণ-পৃথ্যক প্রাকৃতিক নিয়ম। জড় জগৎ ও পশু-প্রকৃতি কার্য্য-কারণ-পৃথ্যক ব্যুক্ত প্রাকৃতিক নিয়মে, মৃত্যু-পালে,বদ্ধ হইরা রহিরাছে। এমত উৎকৃত্ত মানব জন্ম লাভ করিরাও যাহারা সংসারের বিষয়-কামনাতে অভিভূত হইরা সেছোচার বাদকের ভার ব্যুক্তার করে; তাহারাও মৃত্যু-পালে বদ্ধ হর, এবং স্বাধীনভা হইতে এই হইরা পরস্ব পদ ও চরম গতি হইতে বহু দূরে

স্থিতি করে। ধীর ব্যক্তিরা অমৃত স্বরূপের সহিত আবার নিতা থোগ জানিয়া এই অনিতা সংসারের মধ্যে কিছুই প্রার্থনা করেন না। তাঁহারা ধর্ম নিয়মানুসারে স্বীয় প্ররুত্তিব উপরে আ্যার কর্ত্ত্ব স্থাপন করিরা জ্বগথ-পিতার মঙ্গল অভিপ্রায় সম্পন্ন করিতে পারিলেই স্ক্তিটোভাবে তৃপ্ত হ্যেন।৮।

209

যেনাহং নামুক। স্যাং কিমহং তেন কুর্য্যাম্। অসতোমা সদাময় তমসোমা জ্যোতির্গময় মুত্যোশাহ্মতং গময়। আবিরাবীর্ম এধি। রুদ্র যতে দক্ষিণং মুখং তেন মাং পাহি নিত্যম্ ॥ ৯॥

'থেন অহং ন অমৃতা স্যাং কিম্ অহং তেন ক্র্যাম।' 'অসতঃ' সংসারাং 'না' মাং 'সং' ক্রন্ধ 'গময়'। 'তমসঃ' অজ্ঞানাং 'না' মাং 'ভ্যোতিঃ' ক্রন্ধাধিগমং 'গময়'। 'মৃত্যোঃ' 'না' মাং 'অমৃতং গময়'। হে 'আবিঃ' অপ্রকাশক্রনিচেতক্ত 'মে' মদর্থং 'আবীঃ এধি' আবীরেধি অজ্ঞানাবরণাপনয়েন প্রকটীভব। হে 'ফ্রু' প্রমেশ্র 'বং' 'তে' তব 'দক্ষিণং মৃথম্' উৎসাহজনকম্ আফ্লাদকরং 'তেন' অশ্নারাপিপাদা-শোক্মোহাবিতং 'মাং পাহি' রক্ষশ্ 'নিত্যং' সর্জ্ণা ॥ ১ ॥

याशक दाता आमि अमत ना हरे, छाहाट आमि

কি করিব। অসং হইতে আমাকে সংস্করণে লইয়া যাও, অন্ধকার হইতে আমাকে জ্যোতিঃ স্বরূপে লইয়া যাও, মৃত্যু হইতে আমাকে অমৃতস্বরূপে লইয়া যাও। হে স্প্রকাশ! আমার নিকট প্রকাশিত হও, কলে, জোমার যে প্রসন্ন মুখ, ভাহার দ্বারা আমাকে সর্বাদা কলা কর।। ৯।।

যাহার দারা অমৃত পুরুষের সহিত সহবাস লাভ না হইয়া অমের নাহই, তাহা লইয়া আমি কি করিব ? বিষয় বিভব, मान रुनः, आत्मान अत्मान, ममुनाबरे असावी; हेराता साबी হইলেও প্রিয়তম ঈশ্বরকে না পাইলে এ সকল লইয়া কি করিব ? অভএব, হে প্রমেশ্ব । যাহাতে তোমাকে পাইতে পারি, আমাকে এমন উপযুক্ত কর। অসং সংসার হইতে আমাকে মুক্ত করিয়া তোমার সংপথে প্রবৃত্ত কর, অজ্ঞান-অশ্বকার বিনাশ করিয়া আমার আত্মাতে তোমার জ্ঞান-জ্যোতিঃ প্রকাশ কর এবং অমৃতস্বরূপ যে তুমি আমাকে তোমাতে লইমা যাও। হে স্বপ্রকাশ! আমার নিকট নিত্য প্রকাশিত থাক, যেন বিপদে পড়িয়া তোমার ক্ত্র মুখ দেখিতে না হয়; যেছেতু যখন আমি তোমার প্রদর মুখ দেখিতে না পাই, তথন চতুর্দিক অন্ধকার দেখি। তুরি আমার অন্ধকারের প্রদীপ, পিপাদার জল এবং আরামের 福州 日 日

ত্রোদশো২ধ্যায়ঃ।

330

সত্যমেব জন্ধতে নানৃতম্। সত্যেন লভ্যস্ত-পদা হেষআত্মা সম্যক্ জ্ঞানেন। যেনাক্রম-স্ত্যুষয়োহ্যপ্রকামাযত্র তৎ সত্যস্য প্রমং নিধানম্॥ ১ ॥

'সতাম এব' 'জয়তে' জয়তি 'ন অনৃতন্'। 'দতোন' অনৃতনাগেন ম্বাবচনতাাগেন 'লভাঃ' প্রাপ্তবাঃ 'তপসা' মনস একাগ্রতয়া 'হি এবঃ' 'আয়া' রক্ষায়া 'সমাক্ জ্ঞানেন' যথায়ভ্তরজদর্শনেন। 'বেন' সত্যেন তপসা জ্ঞানেন 'আক্রমন্তি' আক্রামন্তে 'ঝবয়ঃ' দর্শনবন্তঃ 'হি 'আপ্রকামাং' বিগতত্ঞাঃ 'যত্র তৎ সতাভ্য পরমং নিধানম্' আশ্রেম পরব্রহ্ম॥ ১ ॥

সত্যেরই জন্ন হয়, মিধানে জন্ম হর না। সত্য-কর্থন ছারা, মনের একাঞাতা ছারা, সম্যক্ জ্ঞান ছারা, এই পরমাত্মাকে লাভ করা যায়। ঋষিরা এই সমস্ত অনুষ্ঠান ছারা তৃপ্তচিত্ত হইযা সত্যের পর্ম নিধান পরভ্রন্ধকে প্রাপ্ত হয়েন॥ ১॥

শান্ত-চিত্ত হইয়া সভাকে জান, এবং সভাকে জানিখা দতে,র পথে চল; তবে দত্যের জয়ে তুমি জয়-যুক্ত হইবে। হদি প্রমেশ্বরকে লাভ করিবে: তবে সভ্যেব শবণ গ্রহণ কব, বিথ্যা ও কপটতা পরিহার কর। সত্যের অবলধন ধাবা ননের একাগ্রতা দারা, সম্যক্ জ্ঞান দারা, সেই সভ্যেব প্রম নিধান প্রস্তাকে লাভ করা যায়। পুরের পুরের আপ্রকাম নির্দোষ ঋষিরা কেবল এই সকল উপায় অবন্ধন হাতা ন-সিদ্ধ হইয়†ছিলেন॥ ১।

222

দিব্যোহ্যমূর্ত্তঃ পুরুষঃ সবাহ্যাভ্যন্তরোহ্যজোই -প্রাণোহ্যমনাঃ। যং পশ্যন্তি যতয়ঃক্ষীণদোষাঃ॥২॥

'দিবা:' দ্যোতনবান 'হি' 'অমূর্ত্ত:' স্বামূর্ত্তিবজ্জিতঃ 'পুক্ষঃ' পূর্ণ: মহ বাহাভান্তরেণ বর্ত্তইতি 'ন্বালাভা স্তরঃ' 'হি' ন জায়তে কুতশ্চিদিতি 'অজঃ' অবিদ্যানার প্রাণবাযুর্থামন অসো 'অপ্রাণঃ' 'হি' অবিদ্যমানং মনোব্যান দোহয়ম 'অমনাঃ' 'বং' ব্রহ্মাত্মানং 'পশ্যন্তি' উপলভ্রে 'যত্যঃ' যত্রশীলাঃ 'ক্ষীনদোষাঃ' ক্ষীনপাপাঃ ॥ ২॥

প্রকাশবান্, নিরবয়ব, পূর্ণ পুরুষ, সকলের বাছিরে ও আছেন, এবং সকলের অন্তরেও আছেন, এবং জায়

রহিত; তাঁহার শারীরিক প্রাণও নাই এবং মনও নাই , বাঁহাকে জীণদোষ যত্নশীল ধীরেরা দৃষ্টি করেন॥ ২॥

তিনি প্রকাশবান্, তিনি সর্ব্ধি প্রকাশিত রহিয়াছেন।
এই অপবিসীম বিশ্বেব প্রত্যেক পদার্থ ঠাহার দন্তার প্রমাণ
দিতেছে, ইহাব প্রত্যেক শক্তি দেই মূল-শক্তিকে প্রকাশ
কবিতেছে। তাহাব কোন মূর্ত্তি নাই, তিনি পূর্ণ পুক্ষ,
তিনি সকল বস্তব বাহিবেও আছেন এবং সকল বস্তব
ভাতবেও স্থিতি কলি, তছেন। তিনি জন্মবহিত, তিনি
কর্ম কালে বিদ্যান ত অবিনশ্ব-সভাব। তিনি মন্দ্র্যাদির স্থান্ন প্রাণ বাধ্ অবলম্বন কবিয়া জীবিত থাকেন
না, তিন স্বয়ং প্রাণ, তিনি প্রাণের প্রাণ। মন তাঁহ
কর্ত্তি পরিমিত পদার্থ বিশেষ, অতএব তাহার এতাদৃশ
মন থাকিবার সম্ভাবনা নাই। তাঁহাব জ্ঞান-ক্রিয়া স্থভাব
সিদ্ধ। বাঁহাবা পাপাচরণ হইতে বিরত থাকিয়া পবিঞ্
কইয়া তাঁহাকে অবেষণ করেন, তাঁহারা তাঁহাকে দেখিতে
পান॥২॥

333

যোদেবানামধিপোযস্মিন্ লোকাঅধিপ্রিতাঃ। যঈশেহস্য দ্বিপদশ্চতুষ্পদঃ স্বাএধ্যহানজ-ধ্যাত্মা॥ ৩॥

'থঃ' প্ৰমেশ্বৰঃ 'দেবানাম্' 'অবিপঃ' স্বামী 'ঘ্সিন' প্ৰমেশ্ববে সৰ্ব্যকাৰণে 'লোকাঃ' 'অধিপ্রিতাঃ' আপ্রিতাঃ। 'যঃ' প্রমেশ্বঃ 'অস্ত্র' 'ছিপদঃ' মুমুষ্যুস্য 'চভুষ্পদঃ' গ্রাদেত 'লৈশে' লঠে 'সঃ বৈ এবঃ মহান অজঃ আ্যা' বন্ধায়া॥ ৩ ।

যিনি দেবতাদিগের অধিপতি, যাঁহাতে লোক-সকল আত্রিত হইয়া রহিয়াছে, যিনি এই দ্বিপদ ও চতুষ্পদ ভাবং জন্তুদিগকে শাসনে রাখেন, তিনি এই জন্ম বিহীন মহাল আজা। ৩।

থিনি চফুৰ অণোচৰ কীতাৰু অৰ্ধি, লোকান্তৰ নিবাসা দেবগণ পর্যান্ত, সকল জীবেব একমাত্র অবলম্বন ও অধিপতি, বাহার শাসনের অধীন থাকিয়া কি মন্য্য, কি পশু সকনই চিমকাল প্রতিপালিত হইতেছে, তিনি এই ন্মাবিখান মহান আত্মা॥ ৩ী।

220

অদুকৌদ্রক্তাই প্রেতিহিমতোমন্তাইবি-জ্ঞাতোবিজ্ঞাতা ॥ ৪ ॥

'অদৃষ্ট:' ন দৃষ্ট: চক্ষুর্গোচরত্বমনাপন্ন: কদ্যাচিং স্বয় 'দুঠা' তথা 'অঞ্চঃ' শ্লোতগোচবছননাপ্রঃ স্ববস্তু 'শ্লোত। তথা 'অমতঃ' মননবিষয়ত্বমনাপলঃ স্বয়ন্ত 'মন্তা' যতঃ দোহ দষ্টোহ প্রতোহমতোহত এব 'অবিজ্ঞাতঃ' স্বয়ন্ত্র 'বিজ্ঞাতা। ৪

এই প্রমাত্মাকে কেছ দর্শন করে নাই, কিন্তু তিনি সকলই দর্শন করেন; কেছ তাঁছাকে প্রান্তি-গোচর করে নাই, কিন্তু তিনি সকলই প্রাবণ করেন; কেছ তাঁছাকে মনন করিতে পারে নাই, কিন্তু তিনি সকলই মনন করেন; কেছ তাঁছাকে জ্ঞাত হয় নাই, কিন্তু তিনি সকলই জানেন। ৪।

পূর্ণ পুক্ষ পরমেশ্বরের চক্ট-কর্ণাদি কোন ইন্দ্রিয় নাই;
কিন্তু আমরা চক্ট্-কর্ণাদি ইন্দ্রিয় দারা যাহা কিছু জানিতে
পাবি, সেই সরম্ভু সর্বজ্ঞ পুরুষ তাহার সম্পায়ই জানেন
এবং আমরা যাহা কিছু না জানিতে পারি তাহাও তিনি
জানেন। তিনি নিঃশেষ রূপে সকলের সকলই জানেন,
কিন্ত কেইই তাঁহার স্বরূপের অস্ত জানিতে পারে না॥৪॥

228

সএষনেতি নেত্যাত্মা২গৃহ্যোন হি গৃহ্যতে ॥৫॥

'সঃ এষঃ' 'আআ' একাআ যদ্যৎ ইন্দ্রিমনোপোচরত্বেন নিদ্দিষ্টং বস্তু তত্তৎ ন ব্রক্ষেতি 'ন ইতি ন ইতি' 'অগৃহঃ ন হি গৃহতে' করণাবিধয়ত্বাৎ॥ ৫॥

ইহা নহে, ইহা নহে, এই প্রকার সেই এই প্রমাত্মার নি:দিশ; তিনি ইন্দ্রিয় ও মনের প্রাহ্ম নহেন, স্কুতরাং কৈছ জাঁহাকে ইন্সিয় ও মনের দ্বারা আহণ করিছে পারে না॥ ৫॥

স্টি-স্থিতি-প্রশন্ধ-কর্তা ধে প্রমেশ্বর, তিনি স্টির জতীত বস্ত ; এই মাতা তাঁহার নির্দেশ। চক্ষু দারা ঘাহা দেখা যায়, মন দারা যাহাকে মনন করিতে পারা যায়, তাহা তিনি নহেন; তিনি ইব্রিয় ও মনের জ্ঞাছ। কেবল বিশুদ্ধ জ্ঞান বারা সেই সভ্য পুক্ষকে দর্শন করা যায়॥ ৫॥

334

শূএষসর্ববৈশ্বেশানঃ সর্ব্বস্থাধিপতিঃ সর্ব্বনিদং প্রশান্তি যদিদং কিঞ্চ ॥ ৬ ॥

'স: এষ:' ব্ৰহ্মাস্থা 'স্ক্ৰিস্য ঈশান: স্ক্ৰিস্য অধিপতিঃ' 'স্ক্ৰিম্' 'ইদং' জগৎ 'ষৎ ইদং কিঞ্চ' অন্বশিষ্ঠং 'প্ৰশান্তি' নিষ্ময়তি ॥ ৬॥

সেই এই পরমাত্মা সকলের নিয়ন্তা ও সকলের অধিপতি; তিনি এই জগতের যে কিছু পদার্থ আছে, সমুদায়েরই শাসন করেন।। ৬।।

দেব মুখ্য, পশু পক্ষী, সকলই তাঁহার শাসনে রহি-মাছে; কেহ তাঁহার শাসন অতিক্রম করিতে পারে না ॥ ।

226

ঝতং পিবন্তো স্থাকৃতস্থ লোকে গুহাং প্রবিষ্টো পরমে পরার্দ্ধে। ছায়াতপো ব্রহ্মবিদোবদন্তি পঞ্চার্ময়ো যে চ ত্রিণাচিকেতাঃ॥ ৭॥

'ঋতং' সত্যম্ অবশুস্তাবিদ্বাৎ কর্মকলং 'পিবস্তো' একত্তত্ত্ব কর্মকলং পিবতি ভূণকে নেতরঃ তথাপি পাত্সস্বন্ধেন
পিবস্তাবিত্যচ্যতে 'মুক্তস্য' স্বয়ংক্তস্য কর্মণঃ 'লোকে'
শরীবে 'শুচাং' শুহায়াং বুদ্ধোটা 'প্রবিষ্টৌ' 'পরমে পরাদ্ধে'
প্রকৃত্তস্থান। তৌ চ 'ছায়াতপৌ' এব বিলক্ষণে সংসাবিষ্পাংসারিদ্বেন 'ব্রহ্মবিদঃ' 'বদন্তি' কথম্বন্তি। ন কেবলং
ভ্রন্থবিদ্যব বদন্তি 'পঞ্চাগ্রঃ' গৃহস্থাঃ 'বেচ' 'ত্রিণাচিকেতাঃ'
ক্রিক্র্যোনাচিকেতোহিগ্রিন্চিত্যেবিস্তে॥ ৭॥

শরীরের পরম উৎকৃষ্ট স্থানে বুদ্ধি মধ্যে ছুই জন প্রাবিষ্ট হইয়া রহিয়াছেন; তন্মধ্যে এক জন স্বকৃত কর্ম্ম-ফল ডোগ করেন, আর একজন দেই ফল প্রদান করেন, ত্রন্ধবিৎ তত্ত্বজ্ঞের। উাহারদিগকে ছায়া ও আভপের স্থায় পরস্পার ভিন্ন করিয়া বলেন, আর পঞ্চাগ্নি ও ত্রিণাচিকেত কর্মিরাও এই প্রকার বলিয়া থাকেন।।।। জীবাত্মা এবং তাহার আশ্রয় সর্ক-বাাপী পরমাত্মা উভরেই শরীরের অভ্যন্তরে অবস্থিতি করিতেছেন, এবং আমরা
উভরকেই সংশয়-রহিত বৃদ্ধি ঘারা উপলন্ধি করিতেছি।
ছারা এবং আতপ বেরূপ পরস্পর বিশক্ষণ ও ভিন্ন জীবাত্মা
ও পরমাত্মা সেইরূপ পরস্পর ভিন্ন পদার্থ। বেয়ন আতপ
ব্যতীত ছারা থাকিতে পারে না, সেইরূপ পরমাত্মার আশ্রয়
ব্যতীত জীবাত্মার সভার সন্তব হয় না। পরমাত্মা জীবের
কর্মাত্মরূপ ফল প্রদান করেন, জীবাত্মা সেই ফল ভোগ
করিয়া বৃদ্ধিত হইতে থাকেন। কেবল তত্ত্বদর্শী ব্রস্কবিদেরা
এই উভয়কে এরূপ বিলক্ষণ-স্বভাব বিশিরা নিশ্চয় করিয়াছেন, এমত নহে; অগ্রিহোত্রী কর্ম্মরাও এইরূপ বিশ্বা
থাকেন ॥ ৭ ॥

ठकूर्पटमार्थायः।

>>9

যোবৈ সুমা তৎ শ্বথং নাল্লে শ্বথমন্তি। সুমৈব শ্বথং ভূমা ত্বেব বিজিজ্ঞাদিতব্যঃ ॥ ১॥

'যা বৈ' 'ভূমা' মহৎ নিরতিশয়ং ঐকা 'তৎক্স্থং' 'ন
অলে' একাতিরিজে ক্সিংশিচদিপি বছনি 'স্থং' সম্পূর্ণম্
'অত্তি' 'ভূমা এব ক্স্থম্' অতঃ 'ভূমা তু এব' 'বিজিজাসিতব্যঃ'॥ ১ ॥

যিনি জুমা, যিনি মহান্, ভিনি সুধ-স্বরূপ; সুদ্র পলার্থে সুধ নাই। ভুমা ঈশ্বরই সুধ-স্বরূপ; অভএব তাঁহাকেই জানিতে ইচ্ছা করিবেক॥ ১॥

মন্তব্যের মন পরিমিত ক্ষুদ্র পদার্থে কখনই ক্ষথী হইতে পারে না। সেই ভ্নাতেই আমাদের ক্ষথ, অন্ধ বিষয়ে ক্ষথ নাই। বিষয়-ক্ষথে আমারদের আত্মা তৃপ্ত হয় না। বিষয়-ক্ষথ সকলই ক্ষণভঙ্গুর, অতীব ক্ষুদ্র—কথনো বা ধর্মের অনুক্ল, কথনো বা প্রতিক্ল; কথন বা সেব্য, কথনো ত্যাল্য। সেই ভূমা ঈশ্বরই আমারদের ভৃপ্তির স্থল, আমারদের পবিত্র শান্তি-নিকেতন। অতএব তাঁহাকেই অবেষণ করিবেক, তাঁহাকেই জানিতে ইচ্ছা করিবেক ॥ ১ ॥

336

নভগবঃ কশ্মিন্ প্রতিষ্ঠিতইতি স্বে মহিম্মি ॥২॥

হে 'ভগবঃ' ভগবন্ 'দঃ' ভূমা ব্রহ্মাত্মা 'কম্মিন্ প্রতিষ্ঠিতঃ ইতি' ইত্যক্তবন্তঃ শিষ্যং প্রতি আহ আচার্য্যঃ 'স্বেমহিদ্নি' আগ্রীয়ে মহিদ্দি প্রতিষ্ঠিতোভূমা॥ ২॥

শিষ্য জিজ্ঞাসা করিলেন, ছে ভগবন্! তিনি কোপায় প্রতিষ্ঠিত আছেন ? প্রাচার্য্য উত্তর করিলেন, তিনি আপনার মহিমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছেন।। ২।।

পরমেশর নিরালম্ব, সতপ্ত ও মৃক্তস্বতাব। অন্য সকল বস্তু বেমন তাঁহাকে অবলম্বন করিয়া স্থিতি করিতেছে, তাঁহাকেই উপর নির্ভর করিতেছে, তিনি তজপ কাহাকেও অবল্বস্থন করিয়া স্থিতি করেন না। এই বিশ্ব-রূপ-শৃঞ্জল তাঁহাতে আবদ্ধ থাকিয়া লম্বমান রহিয়াছে, তিনি এক মাত্র শঙ্কু-স্কর্প হইয়া সম্লায় ধারণ করিয়া আছেন; কিন্তু তিনি কিছুতেই আবদ্ধ নহেন, তাঁহাকে কেছ ধারণ করিয়া রহে নাই। সেই নিরবলম্ব পূর্ণ ব্রহ্ম স্বকীয় মহিমাতেই অবস্থিতি করিভেছেন, আপনাতে আপনিই নিতা রহিয়াছেন; তাঁহার কেছ জনকও নাই এবং তাঁহার কেছ আন্মন্ত

333

সএবাধস্তাৎ সউপরিফীৎ সপশ্চাৎ সপুররাও সদক্ষিণতঃ সউত্তরতঃ। ঈশানোভূতভব্যস্য সএবাদ্য সউ শঃ॥ ৩॥

'সঃ এব' ভূমা 'অধস্তাৎ' বিদ্যুতে তথা 'সঃ উপরিষ্টাৎ সঃ পশ্চাৎ সঃ পুরস্তাৎ সঃ দক্ষিণতঃ সঃ উত্তরতঃ'। সভূমা 'ঈশানঃ' 'ভূতভব্যস্য' কালত্রস্যা 'সঃ এব' নিত্যঃ কৃটতঃ 'অদ্য' ইদানীং বর্জমানঃ 'সঃ' 'বঃ' 'উ' অপি বর্জিষ্যতে ॥ ০ ॥

তিনি অংগতে, তিনি উদ্ধেতে; তিনি পশ্চাতে, তিনি গলুখে; তিনি দক্ষিণে, তিনি উত্তরে। তিনি ভূত তবিষ্যতের নিয়ন্তা। তিনি অদ্যও আছেন, পরেও থাকিবেন।। ৩॥

কি উর্দ্ধে, কি অধোতে; কি পশ্চাতে, কি সমুথে; কি দক্ষিণে, কি উত্তরে; আমারদিগের চতুর্দ্ধিকে সকল কানেই তিনি দীপ্যমান রহিয়াছেন। আমরা যদি পর্বত-শিথরে আরোহণ করি, দেখানেও তিনি বিরাজমান; যদি গভীর সমুদ্-গর্ভে প্রবেশ করি, দেখানেও তিনি বর্ত্তমান। দিবাকরের মধ্যাহ্ন কালের কিরণে যেমন তিনি স্বপ্রকাশ রহিয়াছেন, তদ্ধপ তামনী বিভাবরীক্ত আন্ধতম তিমিরেও জাজন্যমানুরহিরাছেন। সকল স্থানই জাহার রাজ্য, সকল স্থানেই

তাঁহার দৃষ্টি। ধেমন তিনি সর্ব্ব-দেশ-ব্যাপী, ভেমনি তিনি দর্ব্ব-কাল-বিদ্যমান। তিনি ধেমন ইহ কালের নিয়ন্তা, তেমনি পর কালেরও নিয়ন্তা; তিনি অদ্যও আছেন, পরেও পাকিবেন॥৩॥

320

যএকোহবর্ণোবহুধা শক্তিযোগাৎ বর্ণাননেকালিহিতার্থোদধাতি। বিচৈতি চাত্তে বিশ্বমাদো সদেবঃ সনোবুদ্ধ্যা শুভয়া সংযুনক্তু॥ ৪॥

'यः' 'একং' অবিতীয়ঃ পরমাত্মা 'অবর্ণ:' নির্কিশেষঃ
'বহুধা' নানা 'শক্তিযোগাৎ' 'নিহিতার্থ:' গৃহীত প্রয়োজনঃ
প্রজানাং 'বর্গান্' প্রয়োজনপদার্থান্ 'অনেকান্' 'দধাতি'
বিদধাতি প্রজাভাঃ। 'আদৌ' 'অস্তে' 'চ' মধ্যে চ 'বিশ্বং'
যন্মিন্ 'বি এতি' ব্যাপ্নোতি 'সং' 'দেবং' দ্যোতনস্বভাবঃ
বিজ্ঞানৈকরসঃ পরমেশ্বঃ। 'সং' 'নং' অস্থান্ 'শুভয়া'
'বৃদ্ধ্যা' 'সংশুনক্তু' সংযোজয়তু॥ ৪॥

ষিনি এক এবং বর্ণহীন; এবং যিনি প্রজাদিগের 'প্রয়োজন জ্বানিয়া বহু-প্রকার শক্তি যোগে বিবিধ কাম্য বস্তু বিধান করিতেছেন, সমুদায় এক্সাণ্ড আদ্যন্ত মধ্যে যাঁহাতে ব্যাপ্ত হ≷য়া রহিয়াছে, তিনি দীপ্যমান প্রমে-শ্বর; তিনি আমারদিগকে শুভ বুদ্ধি প্রদান কৰুন॥ ৪ ॥

নানা বর্ণের স্থজন-কর্ত্তা সেই যে এক পরমেশ্বর, তিনি
শ্বয়ং বর্ণহীন হইয়াও বিশুদ্ধ-সন্ত্ব জ্ঞানিদিগের নিকটে জাজ্ঞল্যমান প্রকাশ রহিয়াছেন। তাঁহারা সেই সত্য পুক্ষকে,
ধর্মা, অর্থ, স্থথ-সোভাগ্যের প্রেরম্নিতারূপে অতি নিকটস্থ
করিয়া জানেন এবং নিদ্ধাম হইয়া মনের প্রীতিতে তাঁহার
উপাসনা করেন। তাঁহার বনিকটে তাঁহারদিগের কিছুই
প্রার্থনা নাই, কেবল তাঁহাকে লাভ করিবার নিমিত্তে ভূভ
বৃদ্ধির প্রার্থনা ॥ ৪॥

>23

সরক্ষকালাক্তিভিঃ পরোহন্যোযত্মাৎ প্রপঞ্চঃ পরিবর্ত্তেহ্যুম্।
ধর্মাবহং পাপকুদং ভগেশং
জ্ঞাত্মাত্মমূতং বিশ্বধাম।
বিশ্বস্যৈকং পরিবেষ্টিতারং
জ্ঞাত্মা শিবত্ শান্তিমত্যন্ত মতি॥ ৫॥
'সং' পরমেশ্বরঃ 'বৃক্ষকালাক্তিভিঃ' বৃক্ষকালাক্তিভাঃ
বৃক্ষাৎ সংসারাৎ কালাৎ আক্তেশ্চ 'পরঃ' 'অভঃ' প্রপঞ্চাসংস্পৃষ্টঃ 'যত্মাৎ' ঈশ্বরাৎ 'অয়ং' 'প্রপঞ্চঃ' সংসারঃ 'পরিব-

র্তি।' জাষা তং 'ধর্মাবহং' ধর্মফাকরত্তং 'পাণমুদং' পাপস্য করিতারং 'ভগেদং' ভগস্য ঐখর্য্য ঈশং স্থামিনম্ 'মায়ন্তং' দর্কোমান্ধনি স্থিতম্ 'মায়ন্তং' দর্কার্মান্ধার্ম্ভিত্য বিশ্বস্থা একং পরিবেশ্নিতারং' 'শিবম্' 'এডি' প্রাপ্রোতি 'শান্ধিম্ অভ্যন্তম্'॥ ৫॥

ভিনি সংসার, কাল ও সাকার বস্তু সমুদায় ছইছে শ্রেষ্ঠ, এবং স্কুডরাং ভিম্ন; বাঁছা কর্ভ্ক এই প্রাপক সংসার পরিবর্ত্তিত হইতেছে। জিনি ধর্ম্মের আবছ, পাপের মোচয়িতা, ঐশর্যের আমা। সেই সকলের আত্মন্থ, অমৃত, বিশ্বের আত্ময়কে, সেই মঙ্গল-স্বরূপ একমাত্র শারিবেন্টিতাকে জানিয়া জীব অত্যন্ত শান্তি প্রাপ্ত হয়। ৫।

এই লগৎ দংসারে বে কিছু স্ঠে বস্তু আছে, তাহার মত তিনি কিছুই নহেন; না তিনি বাহ্য বিষয়ের মত, না তিনি অন্তর্ম্থ মনেরই মত। তিনি বিষয় ও মন সকলেরই স্প্তিক্তা, স্মৃত্রাং তিনি সকল হইতে শ্রেষ্ঠ এবং সকল হইতে ভিন্ন। তিনি স্বতা-স্বরূপ, জ্ঞান-স্বরূপ, অনস্ত-স্বরূপ; তাহার সহিত কাহারও উপমা হয় না। তিনি বেমন এই আকাশে থাকিয়া নিরস্তা-ক্রেপে সমুদার জড় জগংকে ও প্তাপ্রকৃতিকে নিয়মে রাখিতেছেন, সেইরূপ তিনি মহুযোর

আত্মাতে ধর্মাবহ-রূপে অবস্থিতি করিয়া অহরহ ধর্ম-বৃদ্ধি প্রেরণ করিতেছেন। জড় জগৎও পশু পক্ষীরা নিয়ম না জানিয়া নিয়মের বলে বন্ধ হইয়াই কার্য্য করিতেছে, আত্ম কর্ত্তব্য-জ্ঞানের আলোকে ধর্মের নিয়ম অবগত হইয়া স্বাধীন-ভাবে ধর্ম কার্য্য সাধন করিতেছে। যথন আত্মা মানসিক কু প্রবৃত্তির বশীভূত হয় এবং ধর্ম নিয়মের কর্ত্তব্য-জ্ঞানের আদেশ অবহেলা করিয়া পাপ দারা আক্রান্ত হয়, তথন দে আগনার স্বাধীনতা হইতে জ্বষ্টু হইয়। মৃত্যু-পাশে বদ্ধ হয় ও আন্তরিক হুঃসহ মানি ভোগ করিতে থাকে। পাপ-মোচ-য়িতা ঈশ্বর ভিন্ন তথন তাহার আর গতি নাই। যথন দেই পাপাকাল আত্মা অকৃত্রিম অত্যতাপে দগ্ধ হইয়া এমন আর করিব না বলিয়া তাঁহার শরণাপন্ন হয়, তথনই ভিনি তারাকে পাপ হইতে মুক্ত করিয়া পুনর্কার আপনার দং-পথে সমুন্নত করেন। এই তাঁহার মহিমা, এই তাঁহার করুণা। এই পাপময় হঃখময় সংসারে সেই এক মাত্র শুদ্ধ অপাপবিদ্ধ অমৃত ঈশ্বকে স্বীয় আসাতেই প্রাপ্ত হইয়া এবং তাঁহাকে পাপের মোচন্নিতা ও অক্ষয় মুক্তিদাতা জানিয়া জীব অত্যন্ত শান্তি প্রাপ্ত হয়॥ ৫॥

255

मितश्क विश्वविनाञ्च र्यानिक्धः । कालकारना छगी मर्वविनाः ।

প্রধানক্ষেত্রজ্ঞপতিগুর্নেশঃ স্থারমাক্ষন্তিবন্ধহেতুঃ॥ ৬॥

'সং' প্রমেশ্বর: 'বিশক্তং' বিশ্বদ্য কর্তা বিশ্বং বেড়ীতি 'বিশ্ববিং' আত্মনাং বোনিরিতি 'আত্মবোনিং' জানাতীতি 'জ্ঞঃ' 'কালকালঃ' কালস্য কর্তা 'গুণী' বিচিত্রশক্তিমান্ 'সর্কবিং যঃ'। 'প্রধানক্ষেত্রজ্ঞপতিঃ' প্রধানং প্রপঞ্চঃ ক্ষেত্র-জ্ঞোবিজ্ঞানাত্মা তয়োশ্চ পালরিতা 'গ্রুণেশঃ' গুণানামীশঃ 'সংসারমোকস্থিতিবক্ষানাং হেডুঃ কারণম্॥ ৬॥

িনি বিশ্ব-কর্ত্তা, বিশ্ব-বেত্তা, সকল আত্মার স্রান্তী, প্রজ্ঞাবান্, কালের কর্ত্তা, গুণবান্ ও সর্ব্বিত্ত। তিনি জড় কি জীব ভাবভের প্রতিপালক, সর্ব্যুগ্রের মহেশ্বর এবং সংসারের স্থিতি, বন্ধ ও মোক্ষের হেতু ॥ ৬॥

তিনি সকলের আঠা, সকলের পাতা, সকলের স্কং, সকলের প্রভূ। কোন বস্ত তাঁহার শাসন অতিক্রম করিতে পারে না। তাঁহারই নিয়নে জীবাত্মা শরীরে বদ্ধ থাকিয়া জ্ঞান ও ধর্মে স্বাধীন হইয়া স্ক্তির অধিকারী হইয়াছে এবং পরিশেষে তাঁহারই প্রসাদে তাঁহাকে লাভ করিয়া সংসার বদ্ধন হইতে মুক্ত হইবে ॥ ৬॥

250

সতন্ময়োহ্যমৃতঈশস্থেছো
ভঃ দর্কগোভূবনস্থাস্থ গোপ্তা

ফ্রন্দেহ্স্য জগতোনিত্যমেক
নাস্থাহেতুর্কিদ্যতঈশনায়।

তত্ত্ব দেবমাত্মবৃদ্ধিপ্রকাশং

মুমুকুর্কি শরণমহং প্রপদ্যে ॥ ৭ ॥

'সং' পরমেশরঃ 'ওলারং' চৈতন্তজ্যোতির্দারঃ 'হি'
শ্রেম্তঃ' ক্ষরণধর্মা ঈশসাদো সংস্থানেতি 'ঈশসংস্থা' ঈশঃ
সামী সম্যক্ শ্রিতির্বস্যাদো সংস্থা। জানাতীতি 'জ্ঞাং' সর্ব্বরু গজাতীতি 'সর্ব্বাং' 'জ্বস্য' ভ্রন্স্য 'গোপ্তা' পালরিতা। 'যং'
'ঈশে' ঈটে 'অস্য জগতঃ' 'নিত্যম্ এব' নির্মেন 'ন জ্ব্যাঃ হেতুঃ বিদ্যতে' 'ঈশানার' শাসনার'। 'তং' 'হ' হশলোহ-বধারণে 'স্বেং' পরমেশ্বরং জ্বান্থানি বা বৃদ্ধিঃ তাং প্রকাশরু-তীতি 'জ্বান্থাবৃদ্ধিপ্রকাশং' 'মুকুকুং' 'ইব' 'জ্বং' 'শরণং' প্রপ্রেণ্য' প্রবামি ॥ १ ॥

তিনি চৈত্ত হার, মরণ-ধর্ম-রহিত এবং সর্ক্ষামী-রূপে সম্যক্ষিতি করিতেছেন। তিনি প্রজ্ঞাবান্,সর্ক্ত গ্রামী এবং এই জগতের প্রতিপালক। বিনি এই জাগংকে নিত্য নিয়মে রাখিতেছেন, তদ্বাতীত বিশ্ব-শাননের আর অন্ত হেছু নাই। আমি মুমুকু হইয়া সেই আআ-বৃদ্ধি-প্রকাশক প্রমেশ্বের শ্রণাপন্ন হই ॥৭॥

তিনি আমারদিগের আত্মাতে কর্ত্তব্য-জ্ঞান, ধর্ম-বুদ্ধি, প্রকাশ করিতেছেন। রাজা যেমন স্বাধীন প্রজাদিগের कारण ताक-निष्म नकन अठात कात्रन. धर्मावश भवरमध्य দেইরপ মনুষ্যের আলাকে স্বাধীন করিয়া দিয়া তাহাতে ধর্মের নিয়ম-দকল প্রকাশ করিয়াছেন। আমরা ওভ বৃদ্ধির আলোচনা ছারা কর্তব্য-জ্ঞানের আলোকে আলু-পটে চির-মুদ্রিত ধর্ম নিয়ম-সকল পাঠ করি এবং তদমুধারী ष्पंठितन के तित्रा उक्त रहे, मार्च रहे, विनन्नी रहे, ख्रणीन रहे, ঈশবের প্রির হই। ধর্মাত্রন্তান দারা পুণ্য-ক্যোতিতে আয়া পবিত্র হইলে আমরা স্থানির্মাল আত্ম-প্রদাদ লাভ করি এবং **পেই আত্ম-প্রদানে মনের দকল হঃথের হানি হয়। আ**মরা ধর্মের অমুরোধে মানসিক প্রবৃত্তির, ছাদিশ্রিত কামনার, প্রাতকুলে গিয়া আত্ম-প্রদাদে যত উল্লত হই, যত প্রিত **इहै; उडहे राहे পবিত-एक्टल आगांत्र**एक अञ्चलांग यात्र এবং তাঁহাকে লাভ করিবার জ্ঞা সংসারের মৃত্যু-পাশ হইতে মুক্তির ইচ্ছুক হইরা তাঁহার শরণাপর হই॥ १॥

338

তদ্য হ বা এতদ্য ব্রহ্মণোনাম স্ত্যম।

নিকলং নিজ্ঞিয়ত্ত শান্তং নিরবদ্যং নিরঞ্জনস্। অমৃতদ্য পর্ত দেতুং দক্ষেক্ষনমিবানলম্॥৮॥

'ওক্স হ বৈ এতক্স ব্রহ্মণঃ' 'নাম' অভিধানং 'সত্যম্'। ব্রহ্মণঃ ব্রহ্মণং দর্শয়তি। 'নিক্ষলং' কলা অবয়বা নির্গতা বর্মাৎ তৎ নিরবয়বং 'নিজিলয়ম্' অপি প্রয়ং নিয়মেন সর্বাং জগৎ প্রশান্তি 'শান্তম্' উপসংস্কৃতস্ক্রিকারং 'নিরবদ্যম্, অগর্হনীয়ং 'নিরঞ্জনং' নিজেপিম্। অমৃতস্য মোক্ষস্য প্রাপ্তয়ে 'পরং সেতৃং' সংসারমহোদধেক্সন্তরণোপায়ঘাৎ। 'দথেন্ধনম্' 'অনলম্' 'ইব' দেনীপ্রমানম্॥ ৮॥

সেই এই ওক্ষের নাম সত্য। তিনি নিরবয়ব নিচ্ছির ও শাস্ত। তিনি অনিন্দনীয়, নির্লিপ্ত ও মুক্তির প্রম সেতু এবং দগ্ধ-দারুদিঃস্তুত অগ্নির স্থায় দীপ্য-মান॥৮।।

সেই এই অতি দ্বস্থ এবং অতি নিকটস্থ সর্ধা-ব্যাপী, ত্রন্ধের নাম সভ্য; যেহেতু তিনি সভ্য-স্বন্ধপ। সেই সভ্য-স্বন্ধকে অবলম্বন করিয়া এই সমুদার জগৎ সভ্য হই-য়াছে। তিনি সভ্যের সভ্য, প্রাণের প্রাণ, চেতনের চেতন, থায়ার আ্মা।

তিনি একমাত্র, প্রজ্ঞানধন; তাঁহার অবন্ধব নাই, তাঁহার অংশ নাই, তাঁহার কোন পরিমাণ নাই। তিনি

অপরিবর্ত্তনীয় মললোদেশ্য নিয়ম সকল স্থাপন করিয়া विश्व-बाब्रा भागन क्रिएडएइन। (महे मर्ख-मक्तिमान मन्त्रक পুরুষ এই সংসার নির্বাহ নিমিতে যাহাকে যে কর্মের ভার मियारहन, म जाहा ज्यान-भर्ग वहनं कतिराज्ह ; जाभनि नकरनत्र अधिপতि इटेग्रा निव्रष्ठ, कर्प नर्का वर्षमान त्रश्या-ছেন। তাঁহার প্রাক্তিক নিয়মে বদ্ধ হইয়া ধ্থা-কালে সূর্য্য উদন্ত ছইতেছে, মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, বুক্ষ ফল-বান হইতেছে: এবং তাঁহার ধর্ম-নিয়মের শাসনে মহুয়া স্বাধীন হইয়া বিপ্ৰগামী হইলে ধৰ্মদণ্ড পাপ-গানি সহ করিতেছে, ভাহার শরণাপন্ন হইদা পাপ হইতে পরিতাণ ্পাইতেছে, পুণ্যাত্মভান করিয়া ধর্মের পুরস্কারে আত্ম-ध्यमार्ग পবিত इट्रैंटिष्ट्, পবিত इट्रेग्न। स्मर्टे পবিত-श्वत्रभाक लाख कवित्रा मःमात-वन्तन ब्हेर्ए पूक ब्हेश छन्न उ ছইডেছে। তাঁহার শবং কোন কর্ম করিতে হয় না. ष्ठीशांत अवश (कान आवाम नहेल्ड हव ना ; जिनि निक्किन -ও শাস্ত। তাঁহার ইচ্ছা মাত্র এই সমুদার জ্বগৎ উংপর श्रेमारक अवः जाशांत्र अक श्रेकात वनवर्ती श्रेमा प्रकरण मिनित्रा, त्कर वा वक्ष-ভाবে त्कर वा चाधीन-ভाবে, छाँश्व কর্ম সম্পাদন করিতেছে। তিনি সংসারের কর্তা, অথচ সংসার হইতে অতীত; তিনি স্বয়ং সাংসারিক কোন া কর্মে লিপ্ত নছেন; তিনি নিরঞ্জন, নিলিপ্ত। তিনি পূর্ণ-अक्र न, डांशांत अक्र प्रभाग नाहे. जिन नित्रवा, अनिक

নীয়। সেই জম্তের শরণাপর হইলে তাঁহাকে পাইয়া আর মৃত্যু-ভর থাকে না, তিনি জম্তের পরম সেতু। থাঁহার। তাঁহাকে জ্ঞান-চক্ষ্ দারা দেখিতে পান, তাঁহারা তাঁহাকে সর্ক্ত জ্লন্ত ক্ষনলের ভাষ প্রকাশবান্ দেখেন। ৮।

>2¢

দদেতুর্বিধৃতিরেষাং লোকানামসম্ভেদায়। নৈন্ত দেতুমহোরাত্রে তরতঃ ন জরা ন মৃত্যুর্ন শোকঃ॥ ৯॥

'সং' জ্লামা সেতৃরিব 'সেতৃং' 'বিশ্বতিং' বিধরণঃ অনেন হি সর্কং জগং বিশ্বতম্। অধিরমানং হীশবেণেদং বিশং বিন শাত বতস্তমাৎ সদেতৃর্বিশ্বতিঃ। 'এবাং' ভ্রাদীনাং 'লোকানাম্' 'অনভেদার' অবিদারণার অবিনাশারেত্যেতং। 'ন এনং দেতৃং' এলামানম্ 'অহোরাতো' সর্কান্য জনিমতঃ পরিচ্ছেরকে 'তরতঃ'। যথা অস্তে সংসারিণঃ কালেন অহোরায়াদিলক্ষণেন পরিচ্ছের্যাঃ ন তথা অন্তং কাল-পরিচ্ছের্যঃ। এনং 'ন' 'জ্রা' তরতি প্রাপ্রোতি তথা 'ন' 'মৃত্যুঃ' 'ন' তু 'শোকঃ'॥ ৯॥

তিনি এই লোক-ভঙ্গ-নিবারণার্থে সেতুস্বরূপ হইয়া সমুদার ধারণ করিতেছেন। এই সেতু-স্বরূপ পরত্রক আহোরাত্রের পরিচেইন্য নবেন এবং জরা মৃত্যু শোকও তাঁহাকে অধিকার করিতে পারে না।। ৯।।

সম্দর লোক না চুর্ণ হইরা যার, এই হেড়ু তিনি এই সকলকে থারণ করিরা রহিরাছেন। তিনি নিজ্য বস্তঃ; তিনি অমুক দিবসে জন্মিরাছিলেন, এত দিন বর্তমান আছেন, অমুক দিবস পর্যান্ত থাকিবেন, এ প্রকার অহোরাত হারা তাঁহাকে পরিমাণ করা যার না। তিনি নির্কিন্দার; স্মৃতরাং জরা-শোকও তাঁহাকে অধিকার করিতে পারে না। বিনি কালের অন্তা ও আশ্রম এবং নির্ম্তা, কাল তাঁহাকে কি প্রকারে অভিক্রম করিবেক। যাহার দরণাপর হইলে জরা মৃত্যু শোক হইতে পরিত্রাণ পাওয়া যার, সেই অমৃত-স্করপকে জরা মৃত্যু কি প্রকারে অধিকার করিবেক। ১ ।

230

যত্মাত্মাহপহতপাপা। বিজ্ঞাবিষ্ঠ্যুর্কিশো-কোবিজিঘৎসোহপিপাদঃ সত্যকামঃ সত্য-সক্ষয়:। সোহস্বেউব্যঃ স বিজিজ্ঞাসিতব্যঃ। স সর্ব্বাহণেচ লোকানাপ্রোতি সর্ব্বাহণেচ কামান্ যন্তমাত্মানমনুবিদ্য বিজ্ঞানাতি ॥ ১০ ॥

'ব' 'আড়া' ব্ৰহ্মান্থা 'লগহতপাপ্যা' 'বিলয়: বিষ্ঠাু:

বিশোক: 'বিজিবংদ:' জিবংদা অভুমিছা তদ্রহিতঃ
'অপিপাদ:' পিপাদাবিজ্ঞিতঃ 'সভ্যকামঃ সভ্যদংকরঃ'।
'দ: অম্বেটব্য: সং বিজিজ্ঞাদিতব্য:'। কিং তদ্যাবেষণাৎ
বিজিজ্ঞাদনাচ্চ দ্যাৎ ইভ্যুচ্যতে 'দ:' 'স্কান্ চ লোকান্
আপ্লোভি' 'দ্র্কান্ চ কামান্' 'য: তন্' 'আ্যানং' ব্রহ্মাঝানম্
'অম্বিদ্য' অধিষ্য 'বিজ্ঞানাভি' ॥ ১০॥

যে পরমাত্মা পাপশৃত্য এবং অজর, অমর, অশোক ও ক্ষুং-পিপাদা-বর্জ্জিড, এবং সভ্যকাম ও সভ্যসঙ্কলপ, উাহাকে অন্বেষণ করিবেক এবং তাঁহাকেই বিশেষ-রূপে জানিতে ইচ্ছা করিবেক। যিনি পরমাত্মাকে অন্বেষণ করিয়া জানিতে পারেন, তাঁহার সকল লোক প্রাপ্তি হয় এবং সকল কামনা সিদ্ধ হয় ॥ ১০ ।।

আমরা অপূর্ণ, ভ্রান্ত, পাপাক্রান্ত জীব হইরা যে সেই পাপশ্য, পরিশুদ্ধ, সত্য অকর পুরুষকে জানিতে পারি; ইহা আমারদের সামান্ত সৌভাগ্য নহে। কিন্তু তাঁহাকে জানিতে হইলে আমারদের একান্ত ইচ্ছা, ধর ও চেটা আবশ্যক করে। তুষিত মুগ বেমন জল অবেষণ করে, তদ্রণ সেই ধর সত্য অকৃত অমৃতের প্রার্থী হইরা তাঁহাকে অবেষণ করিবেক এবং করতলক্তম্ত ফল বেমন প্রত্যক্ষ হর, তদ্রণ তাঁহাকে বিশুদ্ধ জ্ঞান হারা নিঃসংশর-রূপে অতি নিকটন্ত করিরা জানিতে ইচ্ছা করিবেক। সংযতে দ্রিয় হইয়া বহু অবেষণ পরে তাঁহাকে আপনার নির্দ্যের জ্যাতির্ময় আন্মার অভ্যন্তরে আন্মার আত্যা, প্রাণের প্রাণ, সকলের কারণ ও আশ্রম-রূপে সাক্ষাৎ জানিতে পারিলে তৃষ্ণার্ত মৃপ বেমন জল পাইলে পরিতৃপ্ত হয়, তদ্রপ ভিনি পরিতৃপ্ত হয়েন; তাঁহার সকল কামনা সিদ্ধ হয় ও ভ্রাদি সকল লোকের মুখ প্রাপ্তি হয়; তিনি ত্রমান-নন্দ লাভ করিয়া সকল আনন্দ উপভোগ করেন ॥ > ॥

>29

জাকাশোবৈ নাম নামরপয়োর্নির্বহিতা। তে যদন্তরা তদ্বকা তদম্তম্॥ ১১॥

'আকাশঃ বৈ' একণঃ 'নাম' অভিধানষ্ আকাশইবাশ-রীরত্বাং ক্লতাচ্চ সঃ প্রমাত্মা আকাশাধ্যঃ। নামরূপয়োঃ নির্বিছিতা' নির্বোঢ়া 'তে' নামরূপে 'বদস্তরা' যস্য অন্তরা বিলক্ষণে 'তংব্রহ্ম' যদি তদ্বক্ষ নামরূপান্ড্যাং বিলক্ষণং অস্পৃষ্টিং তথাপি ওয়োনির্বোঢ়া। 'তং অমুভ্যু'॥১১॥

ত্রের নাম আকাশ। তিনি নাম রূপের নির্ব-হিতা; এবং সেই নাম রূপ যাঁছা হইতে ভিন্ন, তিনি ত্রেন্ন, তিনি অমৃত। ১১॥

মন ৰথন অক্ষেত্ৰ সেই অনস্ক ভাব অসুভব করে, বাক্য তথন তাহা ব্যক্ত করিতে গিয়া তাঁহার নাম আকাশ দেয়। বান্তবিক তাঁহাছ কোন নাম নাই এবং রূপও নোই; নাম-রূপ-বিশিষ্ট বাৰতীয় পদার্থ তাঁহা হইতে স্টে হইয়া তাঁহারই আপ্রয়ে পানিত হইতেছে ॥ > > ॥

254

নৈব বাচা ন মনসা প্রাপ্ত ভূপেনভাতে ॥১২॥ অস্তীতি ক্রবতোহন্যত্র কথং ততুপনভাতে ॥১২॥

'ন এব বাচা ন মনসা' 'ন চক্ষ্বা' নাইন্তরপি ইন্দ্রিইঃ 'প্রাপ্ত্র' শক্যঃ' শক্যতে কেনচিং। জন্মাৎ 'অন্তি ইতি ক্রবতঃ' অন্তিবাদিনঃ আগমার্থানুসারিণঃ শ্রন্ধানাৎ 'অন্যত্র' নাত্তিকবাদিনি নান্তি জগতোস্লং ত্রন্ধ নির্মন্ধনেবেদং কার্যামিতি মক্সমানে বিপরীভদশিনি 'কথং' 'তং' ত্রন্ধ 'উপশ্রভাতে' ন কথঞ্চন উপশ্রভাতে ॥ ১২॥

তিনি বাক্য দারা কি মনের দারা কি চকু দারা কাদার কর্তৃক কদাপি প্রাপ্ত হন না । যে ব্যক্তি বলে বে, তিনি আছেন, তডিম অহ্য ব্যক্তি দারা তিনি কি প্রকারে উপলব্ধ হইবেন ॥ ১২।।

পরমেশরের শ্বরূপ অদৃশ্য, অনির্বাচনীর, অচিন্তা। তাঁহাকে চকু ছারা, অথবা বাক্য ছারা, অথবা মন ছারা উপলব্ধি করা হার না; তাঁহাকে কেবল এক আন্ম-প্রত্যন্ন ছারা প্রাপ্ত হওয়া হার। আমরা আপনারদিগকে অপূর্ণ

ও পরতম্ব বলিয়া যে বিখাস করিতেছি, তাহার অন্তর্ভুত এই বিথাস আছে যে এক পূর্ণ ও স্বতম পদার্থ আছেন; যে হেতু যদি এক পূর্ণ ও শতম্ব পদার্থ না থাকেন, তবে আমারদিগকে অপূর্ণ ও প্রতন্ত্র বলিয়া বিশ্বাস করিবার কোন ভূমি নাই! পরতম্ভ অপুর্ণ পদার্থের অন্তিম্ব দারা এক স্বতন্ত্র প্রপূর্ণ পদার্থের অন্তিত্র বুঝার। এই বিধাদ স্বত: शिक्ष, থেছেতু ইহা প্রীক্ষা সাপেক্ষ নহে। সকলের আখাতে এই স্বাভাবিক আন্ধ-প্রত্যা আছে যে, প্রতন্ত্র ও সপুৰ্ব পদাৰ্থের স্ৰষ্টা ও সাশ্ৰন্ধ এক স্বতন্ত্ৰ ও পূৰ্ব পুৰুষ আছেন। পরে যথন এ বিষয়ে সংশয় হয়, তথনই যুক্ত 'ও বিচার উপস্থিত হয়: কিন্তু সেই বিচারের পরেও এই সিন্ধান্ত হয় যে, বাক্য মনের স্বতীত, জ্ঞান-পোচর এক স্বতন্ত্র পূর্ণ পুরুষ আছেন; যেহেতু যখন আমারদের নিয়ল জ্ঞানে পতা ফুন্র মঙ্গল পুক্ষ প্রকাশ পান, তথন আয়-প্রতার তাঁহার অন্তিম্বে বিশ্বাস স্থাপিত করে। এই আত্মপ্রত্যু-মের প্রতি সংশয় করিতে গেলে একেবারে বৃত্তির মূল **एइम्म क्या इम्र अवर महाल्या लाख ६३८७ ह्या** তাহা হইলে আপনার অন্তিত্বে, বাহ্য বস্তুর অভিত্রে, এবং কার্য্যকারণের অন্তিত্বে, সংশয় জনিয়া বৃদ্ধি একে-বারে বিনাশ প্রাপ্ত হয়। যিনি আ্যান্পত্যয়ের উপর [†]নি**র্ভর না** করেন, তিনি **কখনও জ্ঞান-**গোচর নিত্য সত্য मनन-সক্রপ দর্ববাণী দর্বাশ্র দর্বশক্তিমান পূর্ণ পুরুষকে

নিঃসংশর-রূপে বিশাস করিতে পারেন না, প্রতি তর্কের তরঙ্গে তিনি অন্থর হন এবং ঈশর-সহবাস-জনিত স্থানির্মনা শাস্তি তিনি কদাপি শাভ করিতে পারেন না। আত্ম-প্রতামের উপর নির্ভর করিয়া যে ব্যক্তি বলে যে তিনি আছেন, তদ্ভিন্ন অন্থ ব্যক্তি ধারা তিনি কথনই উপলব্ধ হরেন না॥ ১২॥

259

যদৈতমনুপশ্যত্যাত্মানং দেবমঞ্জদা। ঈশানং ভূতভব্যদ্য ন ততোবিজ্গুপ্সতে॥ ১০॥

থিদা' যদ্মিন্ কালে 'এতম্' 'আআনং' ত্রদায়ানং 'দেবং' দ্যোতনবস্তং 'ঈশানম্' ঈশিতারং 'ভূতভব্যস্য' কালত্রস্য 'অঞ্দা' সাক্ষাৎ 'অম্পশ্যতি' তদা 'ততঃ' তত্মানীশানাং দেবাৎ স্কীয়ান্মানং 'ন' 'বিজ্ঞপতে' বিশেষেণ জ্ঞপতে গোপায়িতুমিছতি॥ ১৩॥

যিনি যখন প্রকাশবাম্, ভূক ভবিষ্যতের নিয় হা, পর্মাত্মাকে সাক্ষাৎ দেখেন; তিনি তখন আর আপনাকে তাঁহা হইতে গোপন রাখিতে ইচ্ছা করেন না । ১৩ ॥

যে ব্যক্তি পাপ কর্মে লিপ্ত থাকে, সেই আপনাকে গোপন রাখিতে ইচ্ছা করে; কিন্তু যদিও আপনাকে অত্যের নিকটে অত্যন্ত গোপন করা যার, তথাপি সকলেব অন্তরায়া সর্বাদ্ধ প্রকাবের নিকটে কথনই গোপন করিতে পারা যার না। যিনি প্রকাশবান্, ভূত-ভবিষ্যতের নিরন্তা পরমায়াকে করতল-লাভ আমলক ফলের ন্যার সহজে সাক্ষাং দেখেন, তিনি আর কোন দোষে লিপ্ত হইতে ইছে। করেন না; স্থতরাং আপনাকেও তাঁহা হইতে গোপন রাখিতে ইছে। করেন না। মোহ-বশতঃ যদি তিনি কখনও কোন দোষে লিপ্ত হরেন, তবে তিনি তাঁহার নিকট হইতে তাহা গোপন রাখিতে ইছে। করেন না; কিন্ত সেই দোষ হইতে উদ্ধার হইবার জন্য সরল হদয়ে, সন্তাপিত চিত্রে, তাঁহার নিকটে প্রার্থনা করেন এবং তিনি তাঁহাকে তাহা হইতে মুক্ত করেন ॥ ১৩ ॥

পঞ্চনশো>ধ্যায়ঃ।

200

নাবিরতোত্শ্চরিত লাশাস্তোনাসমাহিতঃ। নাশান্তমানসোবাপি প্রজ্ঞানেনমমাপুয়াৎ॥১॥

'ন' 'গুশ্চরিতাং' পাপকর্মণঃ 'অবিরতঃ' অমুপরতঃ নে' অপি ইন্দ্রিরলোল্যাং 'অশান্তঃ' 'ন' অপি 'অসমা-হিতঃ' অনেকাগ্রমনাঃ বিক্ষিপ্তচিত্তঃ। 'ন বা অপি' 'অশান্তমানসঃ' কর্মফলার্থিবাং কেবলং 'প্রজ্ঞানেন' 'এনং' বন্ধান্তমানস্ 'আপুরাং'। বন্ধ হশ্চরিতাং বিরতঃ ইন্দ্রির-লৌল্যাচ্চ সমাহিত্তিতঃ কর্মফলাদপ্যপশান্তমানসশ্চাচার্য্য-বাস্সং প্রজ্ঞানেন পরং বন্ধ প্রাপ্রোতি॥ ১॥

যে ব্যক্তি ছুক্ষ হইতে বিরত হয় নাই, ইন্দ্রিন চাঞ্চল্য হইতে শাস্ত হয় নাই, যাহার চিত্ত সমাহিত হয় নাই এবং কর্মা-কল-কামনা প্রয়ুক্ত যাহার মন শাপ্ত হয় নাই; সে ব্যক্তি কেবল জ্ঞান মাত্র দ্বারা প্রমাত্মাকে প্রাপ্ত হয় না। ১ ॥

প্রিরতম প্রমায়াকে জানিলাম, কিন্ত তাঁহাতে মনঃসমাধানের এবং তাঁহার সহিত অধ্যাত্ম ধোগের বিমল জানন্দ
কথনও আযাদ করিলাম না; তাঁহাকে মহং ও বিশ্বর

জানিয়াও আপনার চরিত্রকে মহং ও বিশুক্ষ করিয়া তাঁহার সহবাসের উপযুক্ত হইলাম না; তাঁহাকে আমরা নিয়স্তা ও বিবাতা জানিয়াও তাঁহার প্রদর্শিত পুণ্যপথে কথনও বিচরণ করিলাম না; কেবল স্বার্থপিরতাকে চরিতার্থ করিবার নিমিত্রেই আজনা কাল নিযুক্ত রহিলাম; তবে তাঁহাকে প্রাপ্ত হুইবার আর কি সন্তাবনা রহিল ?॥ ১॥

>0>

শ্রেম্ন প্রেম্ন মনুষ্যমেতত্তে। সম্পরীত্য বিবিনক্তি ধীরঃ। তয়োঃ শ্রেম্ম্বাদদানস্য সাধু ভবতি হীয়তেহর্থাৎ যউ প্রেম্যের্ণীতে॥ ২॥

'শ্রেষ্য' নিংশ্রেষ্করং 'চ' 'শ্রেষ্য' প্রিয়তরং 'চ' 'মন্ত্র্য্য' 'এতঃ' প্রাপ্নুতঃ। 'তৌ শ্রেষ্যপেদার্থে । 'দংপরীত্য' সমাক্ পরিগম্য সমাঙ্মনদালোচ্য শুক্রলাঘবং 'বিবিনজি' পৃথক্ করোতি 'ধীরঃ' ধীমান্। বিবিচ্য চ 'তয়োঃ' 'শ্রেষ্যঃ' 'মাদদানস্য' উপাদানং কুর্ব্বতঃ 'সম্পু' শোভনং শিবং 'ভবতি'। 'বঃ উ' যন্ত 'প্রেষ্য়ঃ' 'বৃণীতে' উপাদত্তে সোহন্র-দ্শী বিমৃতঃ 'হীষ্তে' বিষ্ক্যতে 'অর্থাৎ' পুরুষার্থাৎ পার্মাধিকাৎ প্রেষ্যাক্রনাৎ নিত্যাৎ॥ ২॥

শ্রের ও প্রের মনুষ্যকে প্রাপ্ত হয়; তিনি সম্যক

বিবেচনা করিয়া এই ছুইকে পৃথক করেন। ইহার মধ্যে বিনি প্রেয়কে এহণ করেন, তাঁহার মঙ্গল হয়; আর বিনি প্রেয়কে এহণ করেন, তিনি পরমার্থ হইতে জ্রম্ট হন॥ ২॥

লিখনের পথ অবলম্বন করা শ্রের, আর সংসারের হুথে নিমগ্র হয়। প্রেয়। কথন ও ঈশ্বরের পথ অবলম্বন করিতে স্পৃহা হয়, কথনও সাংসারিক স্থুখ মনকে স্মাকর্ষণ করে। ইহার মধ্যে যিনি ঈশবের পথ অবলম্বন করেন, তাঁহার शतम मल्ल हम ; आत यिनि भारमात्रिक ऋष्य निमध पारकन, তিনি কণাপি দেই পরম পবিত্র জন্ধানন্দ লাভের উপযুক্ত হন না। যিনি ঈশরকে প্রীতি করেন, তিনি সেই পরুস প্রেমান্সাদের অভিপ্রেত কার্য্য বলিয়া সাংসারিক কার্য্য निक्तां ह करतन ; आत यिनि मः मारति । आपक थारकन. তিনি সাংসারিক হুথের উদ্দেশে পরম মঙ্গলালর ঈখরের উপাসনা করেন। সংসারাসক্ত স্বার্থপর ব্যক্তি মনের সহিত ক্লাপি এ বাক্য বলিতে পারেন না যে "ছে পর্মায়ন্! তোমার জাজ্ঞামুগারে লোকের হিতের নিমিত্তে এবং তোমার প্রীতির নিমিতে সংসার-ঘাতা নির্মাহ করিতে প্রবৃত্ত হই।" যথন উৎসাহ-পূর্ব্বক এই বাক্য বলিতে পারিবে এবং তোমার সমুদ্য কার্য্যের এই একমাত্র লক্ষ্য হইবে, তথন জানিবে যে ভোমার শ্রেরকে সম্যক্রপে অবলম্বন করা হইয়াছে। ২॥

১৩২

যথাকারী যথাচারী তথা ভবতি। সাধুকারী সাধুর্ভবতি পাপকারী পাপোভবতি। পুণ্যঃ পুণ্যেন কর্মণা ভবতি পাপঃ পাপেন॥ ৩॥

যথা কর্দ্রণা চরিতৃং শীলমদ্য দোহয়ং মহ্বাঃ 'যথা-কারী বগাচারী' সঃ 'তথা ভবতি'। 'দাধুকারী সাধুং ভবতি পাপকারী পাপঃ ভবতি'। 'পুশাঃ পুশ্যেন কর্মণা ভবতি পাপঃ পাপেন'॥ ৩॥

মনুষ্য থেমন কর্ম করেন আর থেমন আচরণ করেন, তাঁহার সেই রূপ গতি হয়; যিনি সাধু কর্ম করেন, তিনি সাধু হয়েন, আর যিনি পাপ কর্ম করেন, তিনি পাপী হরেন॥ পুণ্য-কর্ম্ম-ফলে আত্মা পবিত্র হয়, আর পাপাকর্ম-ফলে আত্মা পাপময় হয়॥ ৩॥

পাপ কর্ম পরিত্যাগ দারা এবং পুণ্য কর্মের অন্তর্চান দারা আত্মাকে পবিত্র করিয়া দিখারের সহবাদ লাভ করি-বেক ॥ ৩ ॥

300

যম্ববিজ্ঞানবান্ ভবত্যযুক্তেন মনদা দদা। তম্মেন্তিয়াণ্যবশ্যানি তুফী শাহিব সারথেঃ॥৪॥ 'য়: তু' 'অবিজ্ঞানবান্' অবিবেকী 'ভবতি' 'অষ্জেন' অপ্রগৃহীতেন 'মনসা সদা' যুক্তোভবতি। 'তস্য' অকুশলস্য 'ইব্রিয়ানি' 'অবশ্যানি' অশক্যনিবারণানি 'ত্ঠাখাঃ' অদা-স্তাখাঃ 'ইব' 'সার্থেঃ' ভবস্তি॥ ৪॥

ধে ব্যক্তি অবিবৈকী ও বাছার মন অবশীস্কৃত; ভাছার ইন্দ্রি-সকল সার্থির ছুফী অধের ন্যার বশে থাকে না॥৪॥

মন স্বীয় বশে না থাকিলে সেই হুর্জাগ্য পুরুষকে ধর্মন পথ হইতে বিপণগামী করে এবং কণ্টকমন্ত্র পাপারণ্য নিপাতিত করিয়া তাহাকে অপেষ-যন্ত্রপাগ্রন্ত করে। অতএব কোন প্রকারে মন ও ইন্তিয় যেন বুদ্ধি-বৃত্তির অবশীভূত ও নুর্মাাসনের বহিভূতি না হয়॥৪॥

>08

যস্ত বিজ্ঞানবান্ ভবতি যুক্তেন মনদা দদা। তদ্যে দ্রিয়াণি বশ্যানি দদখাইব দারণেঃ॥৫॥

'য়: 'ডু' পুন: পুর্ন্ধোক্তবিপরীত: 'ভবতি' 'বিজ্ঞানবান্' বিবেকবান্ 'যুক্তেন মনসা' প্রগৃহীতমনা: 'সনা' 'তস্য ইক্সি-য়ানি' 'বশ্যানি' প্রবর্ত্তবিত্ং নিবর্ত্তির্ত্ং বা শব্যানি 'সদখা: ইব সারথে:'॥ ৫॥ যিনি জ্ঞানবান্ এবং স্ববশ-চিত্ত; তাঁছার ইন্দ্রিয়-সকল সার্থির বশীভূত অধ্বের ন্যায় বশে থাকে। ৫॥

বাঁহার ইক্সিয়-সকল বৃদ্ধি-বৃত্তির অধীন, তাঁহাকে তাহারা ঈশ্ব-প্রতিষ্ঠিত ধর্ম-পথে লইন্না যান্ন এবং তাঁহার অতীৰ কল্যাণ সাধন করে॥ ৫॥

300

যস্ত্রিজানবান্ ভবত্যমনক্ষঃ সদাহ শুচিঃ।
ন স তৎ পদমাপোতি সংসারঞাধিগচ্ছতি ॥৬॥

'যঃ তু অবিজ্ঞানবান ভবতি' 'অমনস্ক:' অপ্রগৃহীত্মনস্ক:
সতত্ত্রব 'সদা অভটি:'। 'ন সঃ' 'তৎ' ব্রহ্ম যৎ পরং 'পদং
আপ্রোতি সংসারং চ অধিগছতি'॥ ৮॥

যিনি অজ্ঞ ও অবশচিত্ত এবং সর্মন। অভচি; তিনি সেই ত্রন্দা পদ প্রাপ্ত হন না, কিছু সংসার-গতিকেই প্রাপ্ত হন।। ৬।।

থিনি ঈশবরের বিশুদ্ধ শ্বরূপ জানেন না, থিনি আপনার মনকে শ্বীর বশে রাখিতে পারেন না, থিনি পাপ-চিতা, পাপালাপ, পাপান্ত্র্ঞান শ্বারা সর্ব্রেশ অপবিত্র থাকেন; তিনি সংগারের কুটিল পথেতেই ভ্রমণ করেন, সংগারের পার যে শভর ব্রহ্মপদ্ তাহা প্রাপ্ত হ্ন না॥ ৬॥

305

যস্ত বিজ্ঞানবান্ ভবতি দমনক্ষঃ দদা শুচিঃ। সতু তৎপদমাপ্রোতি যস্মাৎ ভূয়োন জায়তে॥৭॥

'যঃ ডু বিজ্ঞানবান্ ভবতি' 'সমনস্কঃ' বুক্তমনাঃ 'সদা ভচিঃ'। 'সঃ চু তৎপদং আপ্লোতি' 'যন্মাৎ' আপ্তাৎ পদাৎ প্রচ্যুতঃ সন্ 'ভূয়ঃ' পুনঃ 'ন জ†ঃতে' সংসাধে॥ ৭॥

যিনি জ্ঞানবান্, স্ববশ ও সর্বানা শুদ্ধচিত্ত; তিনি সেই ত্রহ্মপদ প্রাপ্ত হন, যাহা হইতে তাঁহার আর প্রচ্যুতি হয় না॥ ৭॥

যিনি ধর্মকে আশ্রয় করিয়া বিশুদ্ধ-চিত্ত হয়েন, ধর্ম তাঁহার পরম বন্ধ হইয়া তাঁহাকে অন্ধ-রূপ নিকেতনে লইয়া যান ; যেখান হইতে তাঁহার আর প্রচ্যুতি হইয়া অধোগতি হয় না, কিন্তু অনস্ত উন্নতিই তিনি লাভ করিতে থাকেন ॥৭॥

209

বিজ্ঞানদারথির্যন্ত মনঃপ্রগ্রহবাদরঃ। সোহধ্বনঃ পার্মাপ্রোতি ত্রিষ্ণোঃ প্রমং পদ্ম ॥ ৮ ॥

'ব: তৃ' 'বিজ্ঞানপারথি:' বিজ্ঞানং সারথির্যাতে 'মনঃপ্রগ্রহবান্' প্রগৃহীতমনাঃ 'নর:' বিদ্যান্। 'স:' 'অধ্বনঃ'
সংসারগতেঃ 'পারং' পরমেবাধিগন্তব্যম্ 'আপ্রোতি' 'ভং'

'বিষ্ণোঃ' ব্যাপনশীলস্য ত্রহ্মণঃ পরমাত্মনঃ 'পর্মং' প্রকৃষ্ঠং 'পদং' স্থানম্॥৮॥

বিজ্ঞান যাঁছার সারথি ও মনোরূপ রজ্জু যাঁছার বলীভূত, তিনি সংসার-পার সর্বব্যাপী পরত্রক্ষের পরম স্থান প্রাপ্ত হয়েন।। ৮।।

যিনি আপনার মনকে জ্ঞান ও ধর্মের বশীভূত করেন, তিনি সংগারের ছজার মোহ হইতে মুক্ত হইয়া সর্ব্যাপী পরব্রহ্মকে লাভ করেন॥৮॥

206

তবিফোঃ পরমং পদং সদা পশ্যন্তি সূরয়ঃ। দিবীব চক্ষুরাততং॥ ৯॥

'তং' 'বিষ্ণো:' ব্যাপনশীলস্য গ্রহ্মণ: 'পরমং' উৎকৃষ্ঠং 'পদং' স্থানং 'সদা' সর্ব্ধদা 'পশান্তি' 'স্থার্য়:' গ্রহ্মবিদ:। 'দিবি' আকাশে 'ইব'যথা 'আততং' বিস্তৃতং বস্তুজাতং 'চক্ম:'বিরোধাভাবেন বিশদং পশাতি॥ ১॥

চক্ষু যেমন আকাশে বিস্তৃত বস্তুকে দর্শন করে, ব্রহ্মবিদের; সেই রূপ সর্বব্যাপী পরব্রন্মের সেই পরম-স্থানকে সর্ববা দর্শন করেন॥ ১।

এই আকাশস্দীর্ঘ প্রস্তে বস্তুত বস্তু-সকল যেমন

আমরা চকু উন্মীনন করিলেই দেখিতে পাই, সেই রুপ পারবদ্ধেক দিশ্বর পরারণ ধীরেরা একাগ্র চিত্ত হইয়া বিশুদ্ধ জ্ঞান-নেত্র হারা আপন আপন আন্মার অভ্যন্তরে দর্শন করেন। যেহেতু আয় রূপ উজ্জ্ঞ্জন কোষ্ট সর্ব্ব্যাপী পর ব্রহ্মের পরম স্থান; প্রতি জনের আয়াই তাঁহার প্রকৃষ্ট আসন॥৯॥

202

অনন্দানাম তে লোকাঅন্ধেন তমদার্তাঃ। তাণ্ডে প্রেত্যাভিগছন্তি অবিদ্বাণ্গোহবুধো-জনাঃ॥ ১০॥

'অনলাং' অনানলাং অস্থাং 'নাম তে লোকাং' 'অক্নে' অদর্শনলক্ষণেন 'তমসা আবৃতাং' তমসা অজানেন আবৃতাং ব্যাপ্তাং। 'তান্' লোকান্ 'তে' 'প্রেত্য' মৃহা 'অভিগছেন্ডি' অভিষন্তি। কে বে 'অবিদাংসং' ক্রন্ধাবগম-বর্জিতাং 'অবৃধাং' অবৃধাং দুর্দ্বোহ্যুক্তমনসং 'জনাং' ॥১০॥

ছুর্ব্ছি অজ্ঞান ব্যক্তিরা মৃত্যুর পরে সেই সমুদর লোক প্রাপ্ত হয়, যে সকল লোক আনন্দ-শূন্য এবং নিবিড় অন্ধকারে আর্ত ॥ ১•॥

যাহারা এই ভূলোকে জ্ঞান ও ধর্ম উপার্জনের প্রতি অবহেলা করিয়া পবিত্র ব্লানন্দ উপভোগনা করিল, মৃত্যুর পরে ভাহারদের জ্ঞানময় আনন্দময় লোক হইডে বহু দ্রে থাকিতে হইবে। বে অন্সারে যে লোকে জ্ঞান-ধর্ম-সহকারে ব্রুমানন্দ উপভোগ হইবেক, সেই অনুসারে উংকৃষ্ট গতি হইবেক। অত্রব এখানে থাকিয়াই যুক্তমনা ও পবিত্র হইয়া সাধ্রের সহিত সম্ম নিব্দ্ধ করিবেক; উং-কৃষ্ট গতি প্রাপ্ত হইবার আর অন্ত উপায় নাই॥ ১০॥

ষোড়শোইধ্যায়ঃ।

\$80

শান্তোদান্তউপরতস্তিতিক্ষুঃ সমাহিতোভূত্বা আত্মন্যেবাত্মানং পশ্যতি॥ ১॥

'শান্তঃ' ইক্রিরলোল্যাৎ উপশান্তঃ 'দান্তঃ' যুক্তমনাঃ 'উপরতঃ' বিনির্দ্ধুকঃ 'তিতিক্ষুং' ছন্দ্দহিষ্ণুঃ একাগ্ররপেণ 'সমাহিতঃ ভূষা' আত্মনি জীবাত্মনি 'এব' 'আত্মানং' পর-মাত্মানং স্বয়স্ত্বং পশ্রতি' ব্রহ্মবিৎ॥ ১॥.

ব্রহ্মবিং ব্যক্তি শাস্ত, দাস্ত, উপরত, তিতিক্ষু ও সমাহিত হইয়া আপনাতেই প্রমাত্মাকে দৃটি করেন ॥১॥ এক দিকে সাংসারিক স্থাপর কামনা, আর দিকে ঈথর-লাভের স্পৃহা। যে পরিমাণে সাংসারিক স্থাপর কামনা बर्स इत्र, त्महे भित्रभारंग क्रेन्द्र-नारखंद म्पृहा अमीश इहेरड शारक। ऋषत-म्लुहा ध्यमीश हहेरक दुष्कि उथन डांहारक অত্নদ্ধান করে এবং অত্নদ্ধান করিয়া ধথন সেই পূর্ণ-স্বর্ত্ত-शरक आश हम, जधन जाहारक मर्का भित्रभून (मर्प । बन्न-বিৎ ব্যক্তি জ্ঞান-প্রসাদে বিশুদ্ধ হইয়া সেই সভ্যের সভা. প্রাণের প্রাণ, চেতনের চেতন, মঙ্গলম্বরূপকে আপনার অ্বত্তরে স্বীয় আত্মাতেই দৃষ্টি করেন এবং ক্রতার্থ হইয়া পর্ম প্ৰবিত্ৰ ব্ৰহ্মানন্দ উপভোগ করেন। সেই পূর্ণ পুরুষ আমার-निरंगत्र काहांत्रध निकृष्ठे क्ट्रेट पृत्त नरहन, रवशान आमात्र-দিগের জীবাত্মা, সেই থানেই তিনি স্থিতি করিতেছেন: नकन जुड, नकन लाक, नकन कीर, उंश्वित्र क्वांक् আবিত হইয়া রহিয়াছে। যত দিন জ্ঞান-নেত্র না প্রক্-টিত হয়, তত দিন লোকে তাঁহাকে অতি দুরস্থ করিয়া कारन: किन्न गांशत कान-रनव अकाशित हरेबाहर, जिनि শাস্ত দাস্ত উপরত তিতিকু ও সমাহিত হইয়া সীয় আয়া-তেই তাঁহাকে দেখিতে পান ॥ ১ ॥

283

নৈনং পাপা তর্জি দর্বাং পাপানং তরতি নৈনং পাপা তপতি দর্বাং পাপানং তপতি। বিপাপোবিরজোহবিচিকিৎসোত্রাহ্মণোভবিত ॥২ 'ন' 'এনং' সাধকং 'পাপা।' পাপঃ 'তর্জি' প্রাপ্নোতি অরঙ 'সর্বাং পাপানং' 'তর্জি' অভিক্রামতি। 'ন' চ 'এনং 'পাপা।' 'ওপতি' তাপরতি অরং সর্বাং 'পাপা।নং' 'ওপতি' তাপরতি অরং সর্বাং 'পাপা।নং' 'ওপতি' তাপরতি। সং 'বিপাপং' বিগতপাপঃ 'বিরজ্ঞঃ' বিগতিতিন্দ্র 'অবিচিকিৎসং' করত্যক্তভামনক্বৎ অভিত্রেশ্বেতি নিশ্চিত্মতি: 'প্রাশ্বণঃ' 'ভবতি' । ২ ॥

পাপ ইহাঁকে স্পর্ল করিতে পারে না, ইনি সমুদর
পাপকে অতিক্রম করেন; পাপ ইহাঁকে সস্তাপ দিতে
পারে না, ইনি সমুদর পাপের সস্তাপক হরেন। ইনি
নিষ্পাপ, নির্মাল-চিত্ত ও পরপ্রাক্ষের সতাতে নিঃসংশার
হইয়া ত্রেলাপোসক হরেন। ২।।

যিনি জ্ঞান-নেত্রকে সেই ব্রহ্ম-রূপ লক্ষ্যের প্রতি এক ভাবে রাখিয়া ধর্ম-পথে পদ-চারণা করিতেছেন, তাঁহাকে পাপ. আসিয়া আশ্রয় করিতে পারে না। তিনি পাপ তাপ হইতে মুক্ত হইয়া ব্রক্ষোপাসক ব্রাহ্মণ হরেন॥ ২॥

\$84

সমোদতে মোদনীয়ণ্ড হি লব্ধা। তরতি শোকং তরতি পাপাানং গুহাগ্রন্থিড্যাবিমুক্তো-২মুভোভবতি॥ ৩॥ শি:' বিধান্ 'মোনতে' 'মোননীয়ং' হর্ধনীয়ং এফ 'হি লব্ধনা'। 'তরতি শোকং' মানসং সম্ভাপং অতিক্রাম্ভোভবতি 'তরতি' 'পাপাানুম'। 'গুলাগ্রন্থিতা:' হুদয়াজানমোল্গুছিতাঃ 'বিমুক্তঃ' সন্ 'শুষ্তঃ ভবতি'॥ ০॥

তিনি আনন্দনীয় পরত্রশ্বকে লাভ করিয়া আনন্দিত হয়েন, তিনি শোক ছইতে উত্তীর্গ্রেন, তিনি পাপ হইতে উত্তীর্গ্রেন, এবং হাদয় এছি সমুদ্য হইতে বিযুক্ত হইয়া অমৃত হয়েন॥ ৩।।

সকলের শেষ্ঠ, মনের এক মাত্র তৃপ্তিকর পদার্থ পরবৃদ্ধকে লাভ করিয়া তদগতপ্রাণ বৃদ্ধজ্ঞ ব্যক্তি অনির্কাচনীয়
স্থুপ সপ্তোগ করেন। তিনি পরব্রহ্মকে লাভ করিয়াছেন,
তিনি তাঁহারি ইজ্বাপ্রদারে সাংসারিক কর্ম নির্বাহ করেন,
ফুল-কামনা-শ্রু হইরা তাঁহারি প্রভিটিত ধর্ম পথে কিরণ
করিতে থাকেন এবং স্বার্থ-পরতাকে বিদর্জন দিয়া তাঁহার
প্রের কার্য্য সাধন করিতেই ষ্তুশীল থাকেন। অভ্এব
তিনি শোক হইতে উত্তীর্গ হরেন, পাপ হইতে উত্তীর্গ হরেন
এবং সংসারের মোহ-পাশ হইতে বিমুক্ত হইরা চিরন্তন পরবিদ্ধানিত্য কাল অবস্থিতি করেন ॥ ৩॥

283

সত্যান প্রমণিতব্যং ধর্মান প্রমণিতব্যং কুশলান প্রমণিতব্যম্॥ ৪ ॥

পিতাং 'ন' 'প্ৰদণিতবাং' বিচ্ছেত্ৰবাং অনৃতং ন বক্তব্যং , ধৰ্মাং ন প্ৰদণিতবাং' 'কুশলাং' মজন্যুক্তাং কৰ্মাণঃ 'ন প্ৰদণিতবাম্॥ ৪॥

সত্য হইতে বিচ্ছিল্ল হইবেক না, ধর্ম হইতে বিচ্ছিল্ল হইবেক না, শুড কর্ম হইতে বিচ্ছিল্ল হইবেক না।। ৪।।
সত্য কথা, সভা বাবহার, আন্ধ-ধর্মের জীবন। মাহারা সত্যস্বরূপ অরক্ত লাভ করিবার ইচ্ছা করেন, তাঁহারা করাপি সত্য হইতে বিচ্ছিল্ল হইবেন না। অন্ধপরায়ণ অন্ধ-নিঠ সরাবে সার্ভাবে সর্বরা সেই ধর্মাবহ মঙ্গালামের প্রতিষ্ঠিত ধর্মার্ভানে তংপর থাকিবেন। ধর্মান্ত্রান ব্যতীত হর্ম পবিল্ল হ্লান, জিপ্রের প্রসাদ লাভ হল্প না, অরক্ত্রান প্রকাশ পাল্প না। অত্যব মুমুক্ ব্যক্তি কলাপি ধর্ম হইতে বিচ্ছিল্ল হইবেন না। জিপ্রের মঙ্গল ইচ্ছার সহিত আপনার সাধু ইচ্ছার যোগ দিল্লা তাঁহার আদিই সংসারের হিত-সাবন-কার্যো প্রবৃত্ত না থাকিলে তাঁহার মঙ্গল ভাব আমরা প্রহণ করিতে পারি না। অত্যব শুভ

>88

কৰ্ম হইতে বিচিহ্ন হইবেক না॥ ৪॥

সত্যং বদ। সম্লোবা এষপরিশুষ্তি যোহনৃতমভিবদতি ॥ ৫॥ 'সত্যং' সত্যবচনং 'বন'; 'সম্লং' সহ ম্লেন 'বৈ' 'এব পরিভ্যাতি' শোষম্পৈতি 'বং' 'অন্তম্' অষথাভূতার্থম্ 'অভিবদতি'॥ ৫॥

সত্য কথা কহ; যে ব্যক্তি মিধ্যা কহে, সে সমূলে শুক্ত হয়। ৫।।

সভাই ত্রন্ধ, সভাই ধর্মের মূল; স্বত্তাব ত্রন্ধ পরারণ সাধু ব্যক্তি সভা-ত্রত হইরা সভা কথা কহিবেন এবং সভা ব্যবহার করিবেন ॥ ৫॥

28¢

ধর্মং চর। ধর্মাৎ পরং নাস্তি। ধর্মঃ নক্রেষাং ভূতানাং মধু॥ ৬॥

'ধর্মং'' চর' আচর। 'ধর্মাৎ পরং নান্তি' ধর্মেণ হি সর্কো নির্ম্যকো। 'ধর্মাঃ' সর্কোষাং নির্ম্বা প্রাণিভির্ম্বীর-মানরূপশ্চ 'সর্কোষাং ভূতানাম্' উপকারকদ্বেন 'মধু'॥ ৬॥

ধর্মাচরণ কর, ধর্মের পর আর নাই, ধর্ম সকলেরই পক্ষে মধু-স্বরূপ।। ৬॥

কর্ত্তব্য-সাধনের নাম ধর্ম। আপনার প্রতি কর্ম্বর কর্ম, প্রি প্রতের প্রতি কর্ম্বর ক্রমি

কর্ম, প্রতিবাসী ও বন্ধনিগের প্রতি কর্ত্বর কর্ম, প্রভ্র প্রতি কর্ত্বর কর্ম, দীন দরিত্র নিরাশ্রমদিগের প্রতি কর্ত্বর কর্ম, মদেশের প্রতি কর্ত্বর কর্ম, ক্রমদেশের প্রতি কর্ত্বর কর্ম, এই সকল কর্ত্বর-সাধনের নাম ধর্ম। বে দেশে, বে কালে, যে অবস্থাতে, বে কর্ম করা আমারদের কর্ত্বর, ঠিক সেই দেশে, সেই কালে, সেই অবস্থাতে, সেই কর্ম করিবার আদেশ আমাদের প্রত্যেকের শুভ বৃদ্ধিতে তিনি অমুক্ষণ প্রেরণ করিতেছেন; আমরা তাঁহার সেই সকল আদেশের নিতান্ত বশবর্তী হইয়া সত্য-পথে, ধর্ম-পথে, কল্যাণ-পথে পদ নিক্ষেপ করিয়া চলিলে ছিম্নশিরা হইলেও তাঁহার অমৃত নিক্তেনে শ্লীবন লইয়া উপনীত হইতে পারি॥ ৩॥

186

अक्षरा (नर्म यक्षरा चरनर्म् ॥ १॥

यः किश्रिष्ट (तमः ७९ 'अक्षमा' এव '(तमः' नाज्याम्। 'क्षअक्षमा कातम्मा ।

প্রান্ধার সহিত দান করিবেক, অপ্রদার সহিত দান করিবেক না॥ १॥

শোকাবিষ্ট হইরা দান করিবেক না, কিন্তু শ্রন্ধার সহিত দান করিবেক ॥ १ ॥

389

মাতৃদেবোভৰ পিতৃদেবোভৰ আচাৰ্য্যদেবোভব॥৮

মাতা দেবোৰদ্য স: মাতৃদেব: पং 'মাতৃদেব:' 'ভব'। এবং 'পিতৃদেব: ভব' 'আচাৰ্য্যদেব: ভব'॥ ৮॥

মাভাকে দেবভূল্য, পিভাকে দেবভূল্য, আচার্য্যকে দেবভূল্য জান।। ৮॥

যে পিতা মাতা এ পৃথিবীতে ঈশবের মঙ্গলরপের প্রক্তিরপ হইরা আমারদিগকে রসহ-পূর্বক রক্ষণ ও পালন করিতেছেন এবং বে দল্ভকর উপলেশে আমরা অজ্ঞান-অন্ধকার হইতে মুক্ত হইরা অজ্ঞর অমর অভ্য নিরতিশন্ধ বন্ধকে লাভ করিয়াছি, তাঁহারদিগের প্রতি কৃত্ত ইয়া শ্রদা ও ভক্তি করিবেক । ৮॥

786

যাত্মনবভানি কর্মাণি তানি দেবিতব্যানি নো ইতরাণি । ১॥

'বানি' 'অনবদ্যানি' অনিন্দিতানি 'কর্মাণি তানি সেবিতব্যানি' দ্বা। 'নে।' 'ইত্যাণি' নিন্দিতানি কর্ত-ব্যানি ॥ ৯ ॥ কল্যাণকর যে সক্স কর্মা, ভাষার অনুষ্ঠান করিবেক,
- অকল্যাণকর কর্মোর অনুষ্ঠান করিবেক না।। ৯।।

সক্ল মঙ্গলালয় প্রমেখরের শুভাভি প্রায়কে লক্ষ্য ক্রিয়া শুভাকাজ্জী হইয়া শুভ কর্মের অনুষ্ঠান ক্রিবেক; অশুভ কর্মের অনুষ্ঠান ক্রিবেক না॥ ১॥

385

যান্তত্মাকত্ স্কুচরিতানি তানি স্বয়োপাস্তানি নো ইতরাণি॥ ১০॥

'বানি' 'অক্সাকম্' আচার্য্যাণাং 'স্কচরিতানি' শোভনানি আচরিতানি 'তানি' এব 'ত্বন্না উপাস্যানি' নিম্নমেন কর্ত্ত-ব্যানি 'নো ইতরাণি' বিপরীতানি ॥ ১০ ॥

আমরা যে সকল স্বাচার করিয়া থাকি, তুমি তং-স্মুবারের অনুষ্ঠান কর; ভস্তিন্ন অন্থান করিও না। ১০॥

ব্রহ্মবিং আচার্য্য উপদেশ করিতেছেন, আমরা যে সকল সত্পদেশ প্রধান করি এবং যে সকল স্বাচার অন্তর্গান করি, তাহার অন্বর্ত্তী হও; অসৎ কোক্দিণের কুদ্ঠান্তে অসং কর্মো প্রবৃত্ত হইও না॥ ১০॥

300

এতৈরুপায়ৈর্ঘততে যস্ত বিধান্ ততিশ্রমারা। বিশতে প্রসাধান ॥ ১১॥

'এতৈ: উপারি:' পুর্বোকৈংহরোপাদেরি: 'বততে' প্রবন্ধ: করোতি মুমুক্ষ: দন্ 'ব: তু' 'বিধান্' অন্ধবিং। 'ভত্ত' বিহুব: 'এব: আআ।' 'বিষতে' সংপ্রবিশতি 'অন্ধবাম' আশ্রমুম্ ১১॥

বে ত্রন্ধবিৎ এই সমস্ত উপায় দ্বারা ত্রন্ধপ্রতির যত্ন করেন তাঁহার আত্মা ত্রন্ধ-রূপ নিকেভনে প্রবিষ্ট হয়॥১১॥

থে অন্ধবিৎ সত্যকে জ্বৰণ্ডন করিয়া, ধর্মের অনুগত হইরা, শুভ কর্মের অনুষ্ঠান করিয়া, মাতা পিতা আচার্য্যকে ভক্তি করিয়া, অন্ধ্রাপ্তির যত্ন করেন; তাঁহার আত্মা অন্ধ্রপ নিকেতনে প্রবিষ্ট হয়। তিনি অন্ধ্রকে লাভ করিয়া তাঁহার সহিত নিজ্য-সহবাস-জনিত ভূমানন্দ উপভোগ করেন॥ ১১॥

202

শৃণুদ্ধ বিশেহমৃতদ্য পু্জাআ যে ধামানি দিব্যানি তস্থঃ॥ ১২॥ 'শৃষত্ব' বিধে' দৰ্কে 'অমৃ চ্চ্য' তারণঃ 'পুতাঃ' 'যে' ু'বামানি' 'দেব্যানি' বমণীয়ানি 'অতেছঃ' অধিতিষ্ঠতি॥ ১২॥

হে দিব্য ধাম বাসী অমৃতের পুত্র সকল ! ভোমরা শ্রেবণ কর ॥ ১২ ॥

প্রাতঃকালের স্থ্য-প্রকাশের স্থার অক্কত অমৃত ব্রহ্মক অক্তরে লাভ করিয়া নবোৎসাহে পূর্ণ হইরা ব্রহ্মবাদী কহি-তেছেন যে, হে অমৃত পূক্ষবের পুরুরো! হ্যালোক ও ভূলোকবাদী দেব ও মন্থ্যেরা! শ্রবণ কর; আমি তিমি-রাতীত ক্যোতির্মন্ন মহান্পুক্ষবকে কানিরাছি॥১২॥

३७२

বেদাহমেতং পুরুষং মহান্ত-মাদিত্যবর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ। তমেব বিদিছাতিমৃত্যুমেতি নাঅঃ পন্থা বিদ্যুতেহয়নায়॥ ১০॥

'বেদ' জানে 'অহম্' 'এতং' 'পুরুষং' পূর্ণ: 'মহাস্তম্' 'আদিতাবর্ণ:' প্রকাশরূপ: 'তমস:' অজ্ঞানাৎ 'পরতাং'। 'তম্ এব বিদিঘা' 'মৃত্যুম্' 'অতি-এতি' অত্যেতি অতিক্রামতি অসাৎ 'ন অন্তঃ পদ্নাঃ বিদ্যুতে' 'জয়নায়' পরমপদ-প্রাপ্তরে ॥ ১০॥

আমি এই তিমিরাতীত জ্যোতির্মায় মহান্ পুক্ষকে জানিরাছি; সাধক কেবল তাঁহাকেই জানিয়া মৃত্যুকে অতিক্রম করেন, তন্তির মুক্তি প্রাপ্তির আর অন্য পথ নাই ॥ ১৩ ॥

এই তিনিরাতীত জ্যোতির্শার মহান্ পুরুষকে জানিরা সাধক মৃত্যুকে অতিক্রম করেন, তিনি অনস্ত কাল দেই জ্ঞানময় প্রেমময় পুরুষের সহচর অফুচর থাকিয়া প্রমানন্দ উপভোগ করেন। তাঁহার শ্রণাপ্র হওয়া ব্যতীত মুক্তি প্রাপ্তির আর অভ উপায় নাই॥১৩॥

260

এতজ্জ্যেং নিত্যমেবাত্মসংস্থং নাতঃ পরং বেদিতব্যত্থ হি কিঞ্ছি ॥১৪॥

ৰশ্বাৎ প্ৰক্ষজানানম্বরং প্রমপুরুষার্থনিদ্ধিঃ তশ্বাৎ 'এতং' প্রশ্ন 'নিত্যম্ এব' জ্ঞেরম্। আত্মনি সংতিষ্ঠতীতি 'আত্ম-সংস্থং' 'ন অতঃ প্রথ বেদিতব্যং হি কিঞ্চিৎ' অস্তি ॥ ১৪ ॥

অপনাতেই নিত্য স্থিতি করিতেছেন যে পরমাত্মা, তিনিই জানিবার যোগ্য; তাঁহার পর জানিবার যোগ্য আর কোন পদার্থ নাই॥ ১৪॥

যিনি সকলের আশ্রর, তিনি চিরকাল আপনাতেই

আপনি স্থিতি করিভেছেন। তাঁহাকে অমুসন্ধান করিবেক এবং তাঁহাকেই জানিবেক; তাঁহাকে জানিলে সকল জানার সমাপ্তি হয়, তাঁহার উপরে জানিবার বস্ত আর किइहे नाहें । >8॥

\$ 208

সংপ্রা**প্যৈন**মূষয়োজ্ঞানতৃপ্তাঃ কুতাত্মানোবীতরাগাঃ প্রশাস্তাঃ। তে সর্ব্বগণ্ড সর্ব্বতঃ প্রাপ্য ধীরা-যুক্তাত্মানঃ সর্ব্বমেবাবিশন্তি॥ ১৫॥

'সংপ্রাপ্য' সমবগ্ম্য 'এনং' পরমেশ্বরম্ 'ঋষয়ঃ' দর্শনবস্তঃ 'জানতৃপ্তাঃ' জানেন তৃপ্তাঃ 'কৃতাখানঃ' সংস্কৃতাখানঃ 'বীতরাগাঃ' বিগতরাগাদিদোষাঃ 'প্রশাস্তাঃ' ইক্রিয়চাঞ্জা-রহিতাঃ 'তে' এব 'সর্ব্বগং' সর্ব্বব্যাপিনং 'সর্ব্বতঃ' সর্ব্বত 'প্রাপ্য' ধীরাঃ' বিবেকিনঃ 'যুক্তাত্মানঃ' সমাহিতস্বভাবাঃ 'সর্বম্ এব' 'আবিশন্তি' প্রবিশন্তি' জ্ঞানেন। ১৫।।

খবিরা ইহাঁকে সমাকু প্রাপ্ত হইয়া জ্ঞান দারা তৃপ্ত হয়েন, আত্মার উন্নতি লাভ করেন, এবং বিষয়ে অনা-সক্ত প্রশান্ত চিত্ত হয়েন। সেই যুক্তাত্মা ধীরের সর্বব্যাপী পরমাত্মাকে সর্বতে প্রাপ্ত হইয়া সকলেতে প্রবিষ্ট হয়েন॥ ১৫॥

যে ধীরেরা জ্ঞান দারা সেই সত্য পুরুষকে জ্ঞানিয়াছেন,
প্রীতি দারা তাঁহার মঙ্গল ভাবের অর্চনা করিয়াছেন এবং
তাঁহার মঙ্গল ইচ্ছার সহিত আপনার সাধু ইচ্ছাকে যুক্ত
করিয়া যুক্তাআ হইয়াছেন; তাঁহারা সেই সর্ব্বগত সকলমঙ্গলালয়ের সহবাস লাভ করিয়া জ্লকলেতে প্রবিষ্ট হয়েন
এবং সকলের মধ্যে সেই প্রেমময় অমৃতময়কে দেখিত
পোন ॥ ১৫॥

200

বিজ্ঞানাত্মা সহ দেবৈশ্চ সর্বৈঃ প্রাণাভূতানি সংপ্রতিষ্ঠন্তি যত্র। তদক্ষরং বেদয়তে যস্ত্র সৌম্য সমর্বজ্ঞঃ সর্বমেবাবিবেশ॥ ১৬॥

'বিজ্ঞানাম্মা' 'সহ দেবৈ: চ' ইক্তিরৈ: 'সর্বৈ:' 'প্রাণা:' 'ভূতানি' পৃথিব্যাদীনি 'সং প্রতিষ্ঠন্তি যত্র' যদ্মিন্ কক্ষরে বন্ধানি। 'তৎ অক্ষরং' ব্রহ্ম 'বেদয়তে' জানাতি 'বং তু সৌম্য' 'স: সর্বজ্ঞ: সর্বং এব' 'আবিবেশ' আবিশতি জ্ঞানেন ॥ ১৬ ॥

হে প্রিয় শিষ্য! জীব, সমুদ্য় ইন্দ্রিয়, সমস্ত প্রাণ, ও ভূত-সকল যাঁহাতে স্থিতি করে; সেই অবিনাশী

পরমাত্মাকে ধিনি জ্ঞানেন, তিনি সকল জ্ঞানেন এবং সকলেতে প্রবেশ করেন ॥ ১৬॥

জীব, ই জিয়, প্রাণ, সমুদার বস্ত যাঁহার ইচ্ছাতে উৎপন্ন হইয়াছে এবং যাঁহার ইচ্ছাতে স্থিতি করিতেছে, সেই প্রবি-নাশী পুক্ষকে যিনি জানেন; তাঁহার সকল সংশন্ন ছেদ হয় এবং তিনি সকলের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া সকলেতেই মঞ্চলমন্ন অমৃত পুক্ষকে দেখেন॥ ১৬॥

836

যশ্চায়মি সাকাশে তেজােময়েহি মৃতময়ঃ
পুরুষঃ দর্কানুভূঃ। যশ্চায়মি সামা সানি তেজােময়ােহ মৃতময়ঃ পুরুষঃ দর্কানুভূঃ। তমেব বিদিস্থাতিমৃত্যুমেতি নান্যঃ পস্থা বিদ্যুতেইয়নায়॥১৭

'বং চ অরম্ অস্মিন্ আকাশে' 'তেজোমরং' চিনাত্র-প্রকাশমরং 'অম্তমরং' অমরণধর্মা 'পুরুবং' সর্কমস্ভবতীতি 'সর্কান্ত্রং' 'বং চ অরং অস্মিন্ আত্মনি তেজোমরং অম্ত-মরং পুরুবং স্বান্ত্রং' 'তম্ এব বিদিত্বা' 'মৃত্যুম্' 'অতি এতি' অত্যেতি অতিকামতি। 'ন অন্তঃ পছা বিদ্যাতে অর-নার'॥ ১৭॥

এই অসীম আকাশে বে অমৃত্যয় জ্যোতিশ্বয় পুৰুষ,

বিনি সকলি জানিতেছেন, এই আংগ্রাতে যে অমৃ চমর তেজােমর পুরুর, যিনি সকলি জানিতেছেন; সাধক কেবল তাঁহাকেই জানিরা মৃত্যুকে অভিক্রেম করেন,— তড়ির মুক্তি-প্রাপ্তির আর অনা পথ নাই ॥ ১৭॥

केशदात इरे कार्या महान: এक, व्यामात्रातत नयाय অগণ্য-নক্ত্র-মপ্তিত অদীম আকাশ: দ্বিতীয়, আমারনের अख्रत উन्नि । वह हिन्दकी वी आया। आया ब्रन अ नरह অণু 3 नरह, किन्नु रम कि मान्नतान् वन्तु ! এक विन्नू आश्री অসীম আকাশ দর্শন করিতেছে, এক বিন্দু আত্মার উপর বেন সমুদর আংকাশ অবলম্বিত রহিয়াছে। আহানা থাকিলে আর কিছুই থাকে না—মান্নার অভাকে শত শত প্র্যা অন্ধকারময়; আয়ার উন্মেই দক্ল বস্তু জ্যোতিয়ান হয়। বাহিরে আকশি, অন্তরে আয়া: তুইই দেই "অণে'-রণীয়ান্মহতোমহীয়ান্" অনস্ত শুরুষের আদর্শ, এ গ্রে-তেই তাঁহার মাবির্ভাব। অদীন মাকাশে তিনি বর্ত্তমান, আবার হিরগর আত্মতেও তাঁর সিংহাসন। অন্তরে বাহিরে তিনি প্রাণরপে রহিয়াছেন। যখন নিভ্তাল্যে ঘাই, দেখানে সাক্ষী-রূপে তাঁহাকে দেখিতে পাই : যথন কর্ম-ক্ষেত্রে গ্রমন করি, তথন দেখি তিনি কর্মাধ্যক রূপে সকল भोनारक है निश्मित कतिर उद्यापन । जिनि विषय तार्जातः বেমন রাজা, তেফনি আয়ার ও অধীখর। তিনি ধর্ম-রাজ্যে

আর-দিংহাসনে থাকিরা, পাপকে দমন করিয়া ও পুণ্যের
পুরস্কার দিরা আপনার দিকে সকলকে আকর্ষণ করিতেছেন। তাঁর কঙ্গণা বিস্তৃত আকাশে, তাঁর কঙ্গণা নিত্ত
আয়াতে,—তিনি র্টিদিয়া পৃথিবীকে শীতল করিতেছেন,
তিনি অমৃত দিঞ্চন করিয়া আয়াকে তৃপ্ত করিতেছেন।
তাঁহার শরণাপর হইয়া আময়া মৃত্যুকে অতিক্রম করিতেছি
এবং অমৃত হইয়া তাঁহার সহবাদে পরিক্র আননদ উপভোগ
করিতেছি॥ ১৭॥

209

উক্তা তউপনিষৎ ব্ৰাহ্মীং বাব তউপনিষদ-মক্ৰমেত্যুপনিষৎ॥ ১৮॥

উপনিষদং শ্রুত্তবিত্তি শিষ্যে আন্ধ্যুত্রাই উক্তেতি। 'উক্তা' অভিহিতা 'তে' তব সম্বন্ধে 'উপনিষং'। কা পুনঃ সেত্যাহ 'বান্ধাং' বন্ধাং পরমান্ত্রনঃ ইয়ং 'বাব' এব 'তে' তব 'উপনিষদং' 'অজ্রম'। 'ইতি উপনিষ্ধ' অবধারণার্ধঃ ॥ ১৮॥

ে তোমার নিকটে উপনিষদ উক্ত হইল, ত্রন্ধ সম্বন্ধীয় উপনিষদই আমি[†] তোমাকে বলিয়াছি। ইহাই উপ-চুনিষ্ণ ।। ১৮।।

বে বিদ্যা আমারনিগকে ব্রহ্মতে লইয়া যায়, তাহাই এই উপনিবং। উপনিবংই এই ব্রহ্মধর্মের প্রথম থণ্ডে উক্ত হইল; ইহার উপদেশের অক্বর্তী হইরা প্রকাবান্ মুমুক্রা প্রম্পদ্লাক ক্রিবেন॥ ১৮॥

ওঁনাপ্যায়ন্ত মমাঙ্গানি বাক্প্রাণশ্চক্ষুঃপ্রোত্তমথো-বলমিজিয়াণি চ সর্বাণি সর্বাং ত্রক্ষোপনিষদং। মাহং ত্রক্ষ নিরাক্র্যাং না মা ত্রক্ষ নিরাকরোদ-নিরাকরণমন্ত্রনিরাকরণং মেহন্ত। তদাত্মনি নিরতে যউপনিষৎস্থ ধর্মান্তে ময়ি সন্ত তে ময়ি সন্ত॥

उँ माखिः माखिः माखिः दितः उँ।

খাবরবপাটবপূর্বকং শ্বন্মির্রোপনিষদ্ধর্মাবস্থিতিসিদ্ধার্থং
মন্ত্রমাহ। 'বাক্ প্রাণঃ চকুঃ প্রোত্রং অথোবলং ইন্দ্রিয়াণি
চ' এতানি সর্বাণি 'ক্ম' উপাসকস্য 'অঙ্গানি' 'ঔপনিষদং'
উপনিষৎ প্রতিপাদ্যং 'দর্বং' সর্বান্তর্যানি 'ক্রন্ম' 'আপ্যান্তর'।
'ক্রং' 'ক্রন্ম' 'মা' 'নিরাক্র্য্যাং' ন ত্যাদেরং। 'ক্রন্ম' 'মা'
মামুপাদকং 'মা' 'নিরাক্রোৎ নাত্যকং। ক্রন্মণঃ 'অনিরাকরণং' স্বরপতিরন্ধারাভাবঃ 'অন্ত' 'মে' নংকর্তৃকং 'অনিরাকরণং 'ক্রন্থ'। কিঞ্চ 'তদান্ত্রনি' পরমান্ত্রনিকতে' নিতরাং
রমমাণে 'মন্থি' উপাসকে 'বে উপনিষ্থন্থ ধর্মাঃ' 'তে' 'মন্ধি
সন্ত' 'তে মন্ধি সন্ত' ইতি প্রক্তিরাদ্রাণ্ডা দ্র

छेशनिष्टरमा मुक्तांखर्गामि शत्रवम चामात्र वाका, लान,

চক্ষ্ণ, শ্রোত্র, বল, ইক্সির, সমুদার অককে পরিতৃপ্ত করুন।
ব্রহ্ম আমাকে পরিত্যাগ করেন নাই, আমি ব্রহ্মকে পরিত্যাগ না করি। তিনি দর্মদা অপরিত্যক্ত থাকুন, তিনি
আমা কর্ত্বক প্রদা অপরিত্যক্ত থাকুন। আমি পরমায়াতে
নিয়ত রত; অতএব উপনিবদে যে স্কল ধর্ম তাহা আমাতে
হউক, তাহা আমাতে হউক।

ওঁ শাব্তিঃ শাস্তিঃ শাস্তিঃ হরিঃ ওঁ।

প্রথমখণ্ডং

, छे भनिवर ममा था।

দ্বিতীয়খণ্ডম্।

অরুশাসনম্।

দিতীয়খণ্ডম্।

প্রথমোইধ্যায়ঃ।



ত্র্মাচার্য্যোহন্তেবাসিনমনুশান্তি॥ ১॥

'আচার্য্যঃ' 'অন্তেবাসিনং' শিষ্যম্ 'অফুশান্তি' কর্ত্তব্যং ধর্মং গ্রাহ্যভি ॥ ১ ॥

আচার্য্য শিষ্যকে ধর্মোপদেশ করিতেছেন।। ১॥

জ্ঞান-নেত্রে ঈশরকে দর্শন করিয়া তাঁহাতে প্রীতিপূর্ব্বক তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করিতে হইবে। ধর্ম্ম তাঁহার প্রপ্রিয়, অধর্ম তাঁহার অপ্রিয়; অতএব ধর্মই মহুয়ের কর্ত্তব্য ও প্রিক্তাজ্য হইরাছে। ধর্মের অমুষ্ঠান না করিলে ব্রহ্মজ্ঞান নিক্ষণ হয় এবং অধর্মের আচরণে আত্মা মনিন হইয়া অধোগতি প্রাপ্ত হয়। তিনি মমুষ্যকে ধর্মাধর্ম বিবেচনা করিবার যে শক্তিদ নিয়াছেন, তাহাকে ধর্মাঞ্জান কহে; মমুষ্য তাহা বারা উভ-শ্যকে পৃথক্ করিয়া অধর্মাচরণ পরিহারপূর্ব্বক নিশাপ থাকিয়া ও ধর্ম-কর্ম্ম অমুষ্ঠানপূর্ব্বক পবিত্র হইয়া পবিত্রশ্বরূপ

পরমেশবের সন্ধিহিত হইতে থাকিবেন। আচার্য্য শিবের দেই ধর্ম-জ্ঞান প্রফুটিত ও পরিমার্জিত করিবার নিন্মিত কোন্কশা বিহিত ও কোন্কশা নিষিদ্ধ, তাহা প্রদর্শন করিতেছেন॥

२

ব্রন্ধনিষ্ঠোগৃহত্বঃ স্থাৎ তত্ত্বজ্ঞানপরায়ণঃ। যদ্যৎ কর্মা প্রকুরীত তদ্বন্ধণি সমর্পয়েৎ ॥ ২ ॥

'গৃহত্বং' এক্ষণ্যের নিষ্ঠা নিশ্চয়েন স্থিতির্যস্য সঃ 'এক্ষনিষ্ঠঃ' 'স্যাৎ' ভবেৎ। কিঞ্চ 'তব্জ্ঞানপরায়ণঃ' তব্জ্ঞানং
পরং প্রকৃষ্ঠিয় অয়নম্ আশ্রেয়াবসোতি। 'ঘৎ ঘৎ' লোকহিতং ধর্মাং 'কর্মা' 'প্রকুর্নীত' অনুতিষ্ঠেৎ তস্য তস্য ফলাভিসন্ধিং পরিহার 'তৎ' কর্মা 'এক্ষণি' সর্ব্যক্ষলাম্পদে পূর্ণে
পরমেশ্বরে 'সমর্পয়ের'॥ ২॥

গৃহী ব্যক্তি ত্রহ্মনিষ্ঠ ও ভত্তৃজ্ঞানপরায়ণ হইবেন; যে কোন কর্ম করুন, ভাষা পরত্রন্মেভে সমর্পণ করি-বেন।। ২।।

মাতা পিতা, ভ্রাতা ভগিনী ও স্ত্রীপুত্র প্রভৃতি পরিবার-গণের সহিত সম্বন্ধ পরিত্যাগ করিয়া সম্যাদী হইবেক না। সেই সম্বন্ধ মঙ্গলম্বন্ধপ ঈশ্বর হইতে সংঘটিত হইরাছে;

তাহার উচ্চেদ করা কর্তব্য নহে। গৃহস্ত হইরা সেই সম্বন্ধ ্রকা করিংবক।

কিন্তু যিনি সেই ভভাবহ সম্বন্ধের যোজায়িতা, তাঁচাকে বিশ্বত হইয়া মোহপাশে আবদ্ধ হইবেক না। তাঁছাতেই যোজিত-চিত্ত হইয়া সংসার-ধর্মের অফুটান করিবেক। সম্পংকালে তাঁহারই অনুগত হইরা চলিবেক : বিপংকালে তাঁহারই শরণাপদ হইবেক। শরীর পৃথিবীতে সঞ্চরণ ক্রিবে: কিন্তু আত্মা প্রমাত্মাতে অবস্থিত থাকিবে। কর্ম্মের শময় তাঁহাতে থাকিয়াই কর্মা করিবে। বিশ্রামের সময় তাঁহাতে থাকিয়াই বিশ্রাম করিবে। অন্তরিন্দ্রির আত্মার অধীন হইবে, এবং বহিরিন্তিয় আয়ার অধীন হইবে। আয়া প্ৰমান্তাৰ অধীন থাকিয়া তাহাদিগকৈ স্বাস্থা কৰ্ম্মে নিয়োল क्षिठ कत्रित्व। साहा उांहात्र चारमभ विषया क्षानित्व. তাহা প্রাণপণে প্রতিপালন করিবে; যাহা তাঁহার ইচ্ছার বিরুদ্ধ বলিয়া জানিবে, তাঁহা বিষবৎ পরিত্যাগ করিবে। এইরূপ ব্রহ্মনিষ্ঠ হইয়া সংসারে প্রবিষ্ট হইবে।

স্থাপত: বন্ধ সকলকৈ অবগত হওয়ার, নমি তবজান। शृष्टे वञ्चरक (यम खेंडा) विलग्ना जान्ति छे ९ भन्न ना इन्न ; मछा ও অস্ত্য, মঙ্গল ও অমঙ্গল এবং ধর্ম . ও অধর্ম যেন পৃথকু ুরিতে দামর্থ্য থাকে; এই ক্লম্য তত্ত্তানের আলোচনা ক্রিবে এবং সেই জ্ঞান অত্নসারে কর্মাত্রগ্রান করিবে।

ফলের প্রতি নিরপেক্ষ হইয়া কেবল প্রেমাম্পদ ঈর্ষ-

রের প্রীতি-কামনায় তাঁহার প্রিয় কার্য্যের অমুটান করিবে।
স্থাই হউক, ছংথাই হউক; সম্পদই হউক বিপদই হউক;
সম্মানই হউক, অপমানই হউক; তাঁহার আদেশ প্রতিপালনই সাধকের একমাত্র লক্ষ্য থাকিবে। আমি তাঁহার
কর্ম করিবার আদেশ পাইয়াছি, ইহাই আমার পরম লাভ;
যদি সেই আদেশ প্রতিপালনে রুতকার্য্য হইতে পারি,
তাহাই আমার পরম লাভ; আমি তাঁহার আজাকারী,
তাঁহার আজাপালনই আমার ধর্ম; হথ হয় হউক, ছঃথ
হয় হউক, তাহা গণনানা করিয়া তাহাতেই নিযুক্ত
থাকিব; এই কপে ফলাভিসন্ধি প্রিত্যাগ করিয়া ব্রমনির্দ্র
বাক্তি বে কোন কর্মা কর্মন, অভিমান-শূন্য হইয়া তাহা
পরব্রে সমর্পনি করিবেন ॥ ২॥

೨

মাতরং পিতরকৈব সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষদেবতাম্। মত্ব। গৃহী নিষেবেত সদা সর্বপ্রযত্নতঃ॥ ৩॥

. 'মাতরং পিতরং চ এব সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষরেবতাং' 'মন্ধু' বিচিন্তা 'গৃহী' 'নিষেবেত' শুক্রাযেন 'সদা' 'সর্ব্বপ্রয়ন্তঃ' সর্ব্বপ্রয়ন্ত্রন ॥ ৩ ॥

গৃহী ব্যক্তি পিভাষাভাকে সাক্ষাৎ প্রভাক্ত-দেবভা-

স্থারণ জানিয়া সর্স্ব-প্রায়ত্বে সর্স্বলা তাঁছাদের সেবা করিবেন॥৩॥

ব্রুফোপানক পিউমাতাকে স্নেইদানে ও প্রতিপালনে স্বিরের প্রতিনিধি বলিরা মানিবেন এবং সেই আন্তরিক সন্মান তাঁহাদের সেবাতে প্রশন্ন করিবেন। কদাপি তাহাতে যত্নের শৈপিল্য করিবেন না। পিতামাতার সেবাতে প্রণালাভ হয়; তাহা না করিলে প্রত্যবায় জন্মে। বিশ্বিতা অথিল্যাতা প্রমেশ্বর পিতামাতা দ্বারা আপনার পিত্তাব ও মাত্তাব প্রশন্ন করিতেছেন। তাঁহার দৃষ্টিতে পিত্নাত্রেরা অতি মহৎ ও অতি পবিত্র কর্ম্ম। শ্রীর নিয়া তাঁহাদের সেবা করিবে; মন দিয়া তাঁহাদের সেবা করিবে; বাক্য দ্বারা তাঁহাদের সেবা করিবে; বাক্য দ্বারা তাঁহাদের সেবা করিবে এবং উপা-

8

প্রাব্যেশ্ ছলাং বাণীং সর্বাদ। প্রিয়মাচরেৎ। পিত্রোরাক্তানুসারী স্যাৎ সংপুত্তঃ কুলপাবনঃ॥৪

'শ্রাবরেং' 'মৃহলাং' কোমলাং 'বাণীং' বাচং 'সর্ব্বলা' 'প্রিরং' হিতন্ 'আচরেং' কুর্য্যাং। 'পিজোঃ' মাতাপিজোঃ 'অজ্যান্থদারী' আজান্থবর্তী চ 'দ্যাং' ভবেং 'দংপুদ্রঃ' 'কুল্পাবনঃ' কুল্পাবিজ্যজননঃ ॥ ৪॥ কুলপাবন সংপুত্র পিতামাতাকে মৃত্র বাক্য কহি-বেক, সর্বান তাঁহাদের প্রির কার্য্য করিবেক এবং আজ্ঞা-বহু থাকিবেক॥ ৪॥

কদাপি পিতামাতার প্রতি কর্কশ ব্যবহার করিবেক না। কোমল বচনে তাঁহাদিগের সহিত সম্ভাষণ করিবেক: বিনীত বেশে তাঁহাদিগের সম্মুখে উপস্থিত হইবেক, ভক্তি-शूर्व मृष्टिएक कैं। हा दिश्वर कि मर्मन कति दिवक धवः जानम मह-কারে তাঁহাদিগের আদেশ-বাক্যের প্রতীকা করিবেক। অহরহ: তাঁহাদিগের ভভামুধাান ও হিতামুষ্ঠান করিবেক। তাঁহারা যে কার্য্য করিতে আদেশ করিবেন, ক্লেশ স্বীকার कतियां ७ जांश मन्भावन कतिरवक। यनि जैशानित दकान আজ্ঞা অতায় বোধ হয়, তাহা অস্বীকার করিবার সময় সমধিক নম্রতা বিনয় ও সম্মান প্রাদর্শন করিবেক। স্মাপ-মার স্থ্য-ভোগের কামনা থবা করিয়াও তাঁহাদিগকে স্থী ও সম্ভূত রাখিতে চেতা করিবেক। ইহাই সংপুত্রের লক্ষ্য। এইরূপ পুত্রই পর্ম পিতা ঈশবের সংপুত্র হন। ইহা খারা কুল পবিত হয়॥ ৪.॥

¢

গুরুণাক্তিব দর্কেবাং মাতা পরমহকাগুরুঃ। মাতা গুরুতরা ভূমেঃ খাৎ পিতোচ্চতরস্তথা॥৫॥ ধে বে গুকুরেন নির্দিষ্টাঃ জেবাং 'দর্কেবাং' 'চ' 'গুরুণাং' মধ্যে 'নাতা' 'এব' 'পর্মকঃ' প্রমঃ শ্রেষ্ঠঃ 'গুকুঃ' 'মাতা শিশুকুতরা ভূমোং' 'তথা' 'থাং' স্বাপ্তরিক্ষাং 'উচ্চত্রঃ' 'শিতা' ॥ ৫॥

সকল গুরুর মধ্যে মাতা পরম গুরু হয়েন। মাতা পৃথিবী অপেকাও গুরু, আর পিতা আকাশ অপেকাও উচ্চতর ।। ৫।।

সকল মহব্যের মধ্যে পিতামাতাকে সর্বশ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিবেক। পিতামাতা অপেকা বিঘান ও ক্ষমতাবান অনেক ধাকিতে পারেন, কিন্ধু এরপ গুক্তের ও মাননীয় সহদ্ধ আর কাহারও সহিত নাই। পুত্র যদি পিতামাতা অপেকা বিদ্যা, ধন ও ক্ষমতাতে শ্রেষ্ঠ হন, তথাপি সেই গ্রন্থতর সহন্ধ তাঁহাদিগকে চিরকাল গুক্তের ও পুল্যতর ক্রিয়া রাখি-বেক। বিদ্যা-মদে বা ধন-মদে মত্ত হইয়া ক্লাপি পিতা-মাতাকে অবহেলা ক্রিবেক না॥ ৫॥

4

যং মাতাপিতরো ক্লেশং সহেতে সম্ভবে নৃণাম্।
ন তদ্য নিক্ষতিঃ শক্যা কর্ত্ত্বর্গ বর্ষশতৈরপি ॥৬॥

'নৃণাম্' অপত্যানাং 'দস্কবে' সতি 'ষং' 'ক্লেশং' 'মাতা-শীপতিরৌ' 'দহেতে' 'তস্ত' ক্লেশস্ত 'নিশ্বতিঃ' আনৃণ্যং 'কর্তুুং বর্ষণতৈঃ অপি' 'ন' 'শক্যা' ন শক্যতে ॥ ৬ ॥ সস্তান হইলে পিভামাতা যে রূপ ক্লেশ সন্থ করেন, পুত্র শত বংসরেও তাহার পরিশোধ করিতে শক্ত হর নার ৬॥

পিতামাতা সন্তানের জন্ত যেরপ শারীরিক ক্লেশ ও
মানসি দ উদ্বা ভোগ করেন, পুত্র উপযুক্ত হইরা কারমনোবাক্যে আমৃত্যু তাঁহাদের সেবা করিলেও ভাহার পরিশোধ
করিতে দমর্থ হর না। জ্বত্রব দর্বপ্রয়ের তাঁহাদের পেবা
করিয়াও কথন এরপ জ্বভিমান করিবেক না বে, আমি
তাহাদের ধ্রেই উপকার করিতেছি। প্রত্যুত তাঁহাদিগের
অমায়িক সেহ ও জ্বতনা সহিষ্কৃতা স্বরণ করিয়া দর্বদা
কৃত্যুটির থাকিবেক। আমরণ তাঁহাদিগের প্রিয় কার্য্য ও
তাঁহাদিগকে প্রতিপালন করিবেক এবং তাঁহারা প্রলোকে
গমন করিলেও তাঁহাদিগের প্রিয় কামনা দকল পূর্ণ করিতে
যত্নশীল থাকিবেক॥ ৬॥

9

ভাতা জ্যেষ্ঠঃ সমঃ পিত্রা ভার্য্যা পুত্রঃ স্বকা তকুঃ। ছায়। স্বনাসবর্গক্ত তুহিত। কুপণং পরম্। তস্মাদেতৈরধিক্ষিপ্তঃ সহেতাসংজ্বরঃ সদা॥ ৭॥

'জে: চ' 'ভাতা' 'পিতা' 'সমং' পিতৃত্না:। 'ভার্যা প্র:' চ 'বক। তহাং' খণরীরমেব। 'খদাসবর্গঃ চ' নিত্যা- শুরতভাং আয়ন: 'ছারা' ইব। 'ছছিতা' 'পরং' 'কুপণং' কুপাপারম্। 'তত্মাং' কারণাৎ উল্লৈ: 'এতে:' 'সদা' 'অধি-ক্ষিপ্ত:' আফোশিতোহিশি 'অসংজ্ঞর:' অসক্তঃ: সন্ 'সহতে'॥ १॥

ক্ষোষ্ঠ ভাতা পিতৃ-তুল্য, ভার্ম্যা ও পুত্র স্থার শরী-রের ন্যায়, দাস-বর্গ জাপনার ছায়া-স্বরূপ, আর ছুহিতা অতিক্রপাণাত্রী; এই হেতু এ সকলের ছারা উভ্যক্ত হইলেও সম্ভত্ত না হইয়া সর্বাধা সহিষ্ণুতা অবলম্বন করি-বেক । ৭।।

পরম প্রেমাম্পদ পরমেশবের প্রীতি-কামনার পরিবারগণকে প্রতিপালন করিবেক; সমুদার পরিবারকে তাঁহারই পরিবার বিবেচনা করিবেক। অতএব ভ্রাতা, ভগিনী,
ভার্যা, পুত্র, কর্ন্যা ও দাসদাসীগণ হইতে যদি ক্রোধ ও
বিরক্তির কারণ উপস্থিত হয়, তাহা হইলে ক্রোধও বিরাগ
সম্বরণ করিয়া, যাহার সহিত যেরপ সম্বন্ধ, তদমুদারে সকলের প্রতি সম্বাবহার করিবেক। জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকে পিতার
ভূল্য দেখিবেক; কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে পুত্রের ন্যায় স্নেহ করিবেক, ভার্যা ও সন্তানগণকে আপনার অক্স-সদৃশ জানিবেক
এবং দাসদাসীর প্রতি দয়া প্রকাশ করিবেক। কাহারও
লিষ দেখিলে ক্রোধান্ধ হইয়া নিষ্ঠ্রতা প্রদর্শন করিবেক
না, প্রত্যুক্ত ক্রমাশীল হইয়া সকলকে সংশোধন করিবেক।

দ্বীর বে অটন সেহে সকলকে প্রতিপালন করিতেছেন, ভাহার অমুকরণ করিয়া পরিবারগণের ভরণ পোষণ এবং শারীরিক মানসিক ও আধ্যান্মিক কল্যাণ সাধন করি-বেক ॥ ৭ ॥

b

ষ্মতিবাদাংস্তিতিক্ষেত নাবমন্যেত কঞ্চন। ন চেমং দেহমাগ্রিত্য বৈরং কুর্বীত কেনচিৎ ॥৮॥

'অতিবাদান' অভিক্রমবাদান প্রোক্তান্ 'তিভিক্তেও' সংহত। 'কঞ্চন' কঞ্চিদপি 'ন' 'অবমন্যেত'। 'ন চ ইমং' 'দ্বেহং' ক্ষণভঙ্গুরং 'আখ্রিভা' অবলঘ্য ভদর্থাং 'কেনচিং' সহ 'বৈরং' বিরোধং 'কুবাঁড' কুর্যাাং ॥ ৮॥

পরের অত্যক্তি-সকল সহা করিবেক, কাছাকেও অপমান করিবেক না; এই মানবদেহ ধারণ করিয়া কাছারও সহিত শত্রুতা করিবেক না॥ ৮॥

সহিষ্ঠা বারা অন্যের অত্যক্তিকে পরাশ্বর করিবেক;
অত্যক্তির পরিবর্ধে অত্যক্তি করিবেক না; কেন না, ধর্মসাধন শীবনের উদ্দেশ্য, বৈরনির্য্যাতন উদ্দেশ্য নহে।
কাহাকেও অব্যাননা করিবেক না; ঈশ্বর কোন মন্ত্যাকেই
অবজ্ঞাত থাকিবার জন্য ক্ট করেন নাই; সকলেই তাঁহার
সেহের সাপের, অত্থব সকলের প্রতি স্যানর করিবে।

এই ক্ষণভন্দুর মানবদেহ ধারণ করিয়া গর্ঝিত হইরা কাহারও সহিত শত্রুতাচরণ করিবেক না; প্রত্যুত্ত বে ক্ষএক দিন এই পৃথিবীতে থাকিতে হইবে, সকলের হিতসাধনে নিযুক্ত হইরা থাকিবেক। ঈশ্বর সকলের পিতা, মহুষ্যগণ পরম্পর ভ্রাতা, পরস্পর শক্রতা দারা এই প্রিত্ত সম্বন্ধ উল্লেখন করিবেক না॥৮॥

দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ 1

৯

যাবন বিন্তে জায়াং তাবদর্দোভবেৎ পুমান্। যন বালৈঃ পরির্তং শাশান্মিব তদ্গৃহম্॥ ১॥

'বাবং' 'পুমান্' পুরুষ: 'জায়াং' 'ন বিলতে' ন লভতে 'তাবং' 'অর্জঃ' অসর্কঃ 'ভবেং' ভবতি। 'যং' গৃহং 'বালৈঃ' বালকৈঃ গৃহাভরণভূতৈঃ 'ন' 'পরিবৃতং' নৃ স্থসজ্জীকৃতং 'তং গৃহং' 'শ্লানম্ ইব'॥ ১॥

পুঞ্ৰ যাবং ক্ৰা গ্ৰহণ না করেন, ভাবং ভিনি অৰ্দ্ধেক , ধাকেন। যে গৃহ বালক দ্বারা পরিবৃত্ত না হয়, সে গৃহ শাশনি-স্থান । ১ ॥ প্রকাকাম পরনেধর স্ত্রী ও পুরুষ স্টেই করিয়াছেন; তাঁহার শুভ সংক্র লক্ষ্য করিয়া পবিত্র বিবাহ-বন্ধনে পরস্পর স্মিলিত হইবেক; তাহা তাঁহার অনভিপ্রেত বিবেচনা করিবেক না। বালক বালিকা পিতা মাতার হৃদয়ের আনন্দ ও গৃহের ভূষণ —বিবাহ-বন্ধনের এই পবিত্র পুরন্ধার॥ ১॥

30

প্রজনার্থং মহাভাগাঃ পূজার্হাগৃহনীপ্তয়ং। স্ত্রিয়ঃ প্রিয়শ্চ গেহেয়ু ন বিশেষোহস্তি কশ্চন॥২

'প্রজনার্থং' অপত্যোৎপাদনার্থং এতাঃ ব্রিয়ঃ 'মহাভাগাঃ' বছকল্যাণভাজনভ্তাঃ 'পুজার্হাঃ' সম্মানার্হাঃ 'গৃহদীপ্রয়ঃ' গৃহশোভাকারিণাঃ। 'ব্রিয়ঃ শ্রিয়ঃ চ গেহেষু' তুল্যক্রপাঃ 'ন' অনরোঃ 'বিশেষঃ অস্তি' 'কশ্চন' কশ্চিদপি। যথা নিঃশ্রীকং গৃহং ন শোভতে এবং নিস্ক্রীকম্ ইতি॥ ২॥

সস্তান উংপত্তির নিমিত্তে স্ত্রী-সকল বহুকল্যাণ-পাত্রী এবং আনরণীয়া; ইহাঁরা গৃহকে উজ্জ্বল করেন। স্ত্রীরা গৃহের শ্রী স্বরূপা, স্ত্রীতে আর শ্রীতে কিছুই বিশেষ নাই॥২॥

ত্রী ও পুরুষ উভয় জাতিই পরম পিতা পরমেশরের তুলারূপ লেহ ও আশীর্কাদের পাত্র। কিন্তু সংসারে আসিয়া যাহাকে ষেরপ কার্যাভার বহন করিতে হইবে, সর্বাদশী
মঙ্গল-স্বরূপ ঈশ্বর তাঁহাকে তদ্প্যায়ী শরীর মন, জ্ঞান ও
ভাব, ধর্ম ও ভূষণ প্রদান করিয়াছেন। স্ত্রীরা গর্ভধারণ,
শিশুদিগকে পোষণ ও প্রতিপালন করিবেন, এই জ্ঞানেই
অধিল্যাতা প্রনেশর আপনার স্থকোমল মাতৃভাবে তাঁহাদিগকে নির্মাণ করিয়া গৃহের শ্রী-স্বরূপা করিয়াছেন। অতএব তাঁহাদিগের প্রতি বত্ন, স্মানর ও সম্বোধ প্রদর্শন
করিবেক॥২॥

22

সক্রাব্যবসম্পূর্ণাং স্থর্তামুদ্ধহেররঃ। ক্রয়ক্রাতা চ যা কন্যা পত্নী সা ন বিধায়তে ॥৩॥

'সর্কাবয়বসম্পূর্ণাং' 'হৃত্বভাং' স্থশীকাং কন্যাং 'নরঃ' 'উদ্বংহং' পরিণয়েং। 'যা' 'চ' 'ক্লা' 'ক্রফীতা' ক্রেপ মূলোন জীতেতি 'দা' 'পত্নী ন বিধীয়তে'॥ ।।

পুরুষ সর্ব্যবয়ব সম্পূর্ণা এবং সুশীলা স্ত্রীকে বিবাছ করিবেক। যে কন্যা মূপ্য দারা ক্রীত হয়, সে বিধি-সম্মত পত্না নহে॥৩॥

দ সর্ব্বাবয়ব-সম্পন্ন। ও সাধুশীলা ত্রীকে বিবাহ করিবেক। কুলাবা অঙ্গুটীনা অধ্বা গুশ্চরিত্রার পাণি গ্রহণ করিবেক না। বে সকল জী ও পুরুষ চিররুয় অথবা বিকলাল, তাঁহারা সেই মঙ্গল-সংকর প্রজাপতির প্রজা বর্দ্ধনে আপনাদিগকে অনধিকারী বিবেচনা করিবেন এবং তাঁহার অক্যান্ত সহস্র প্রকার প্রিয় কার্য্য আছে, তাহার অফুটান পূর্বক ধর্ম-সাধনে নিযুক্ত থাকিবেন; অসংঘত হইয়া সংসারে রোগ ও শোক বিস্তার করিবেন না। জী ও পুরুষের মধ্যে কেহ চারিত্র্যহীন হইলে অশেষ অমঙ্গল উৎপন্ন হয়; অতএব ! পরস্পের পরস্পরের স্থানিতা অবগত হইয়া বিবাহবন্ধনে আবদ্ধ হইবেক। পুরুষ মূল্য হারা পত্নী ক্রম করিবেন না, ভাহা ধর্মের অক্নোদিত নহে॥ ৩॥

>2

শব্যোক্তফাব্যভিচারোভবেদামরণান্তিকঃ। এষধর্মঃ সমাসেন জেয়ঃ স্ত্রীপুংসয়োঃ পরঃ॥ ৪॥

ভার্যাপত্যো: 'অভোংশ্বস্য' পরস্পরস্য 'আমরণান্তিক:' মরণান্তং বাবং তাবং ধর্মার্থকামের 'অব্যভিচারঃ' 'ভবেং'। 'এব:' 'স্ত্রীপুংসরো:' 'পদ্ন:' প্রকৃত্তঃ 'ধর্মাঃ' 'স্মাসেন' সংক্ষে-পেণ 'ক্তেরঃ'॥ ৪॥

ন্ত্রী-পুৰুষে মরণান্ত পর্যান্ত পরন্ধার কাছারও প্রতি কেছ ব্যজিচার করিবেক না; সংক্রেপেতে তাঁছাদের এই পরম ধর্ম জানিবে। ৪।

পতি ও পত্নী কি ধর্মে, কি সংসারিক কার্য্যে, কি ভোগে পরস্পরকে অতিক্রম করিবেন না। পত্নী স্বামীর সহধর্মিরী হইবেন, সহকর্ষিণী হইবেন ও সহভোগিনী হইবেন। ধর্ম-কার্য্যে পরস্পর পুথক হওয়াকে ধর্ম-বিষয়ক ব্যভিচার কহে: हेश जीश्रकरमत्र व्याधानिक त्थारम विश्व डेप्शामन करत्। সাংগারিক কার্য্যে পরস্পর ভিন্ন হওয়াকে অর্থ বিষদ্ধক ব্যক্তি-চার কহে: তাহা দ্বারা সংসারের অনেক অনিষ্ঠ উৎপাদন হয়। যদি পতি অন্য স্ত্ৰীতে ও পত্নী অন্য পুৰুষে আদক্ত হন, তাহা হইলে তাঁহারা ভোগবিষয়ে বাভিচারী হইলেন: ভোগ-বিষয়ক ব্যভিচারই সর্বাপেকা অধিকতর মন: কেন না ইহা হইতে পাপ ও অপবিত্রতা উৎপন্ন হইনা ব্যভিচারীকে ধর্ম হইতে পত্তিত করিয়া রাধে। যদি পুরুষ অন্য স্ত্রীকে ও ञ्ची अना शूक्वरक आप्रक हिट्ड पर्मन वा धान करतन, जाश হইলে তাঁহারা মানসিক ব্যভিচার-দোঁবে দ্বিত হইলেন। অতএব ল্লী ও পুসরের প্রতি সংক্রিপ্ত উপদেশ এই যে,ধর্মার্থ-কামবিষয়ে তাঁহারা পরপারকে অতিক্রম করিবেন না; কার্মনোবাক্যে দাম্পত্য সম্বন্ধ প্রতিপালন করিবেন ॥ ৪ ॥

20

তথা নিজ্ঞং যতেষাতাং স্ত্রীপুংসো তু কৃতক্রিয়ো। যথা নাভিচরেতাং তৌ বিযুক্তাবিতরেতরম্ ॥৫॥

'স্ত্রীপুংসৌ' স্ত্রীচ পুমাংশ্চ তৌ 'তু' 'রতক্রিয়োঁ' ক্লন্ত-

বিবানো 'তথা' 'নিত্যং' সর্বাদা 'বতেবাতাং' ষদ্ধ: কুর্য্যাতাং
'বথা' ধর্মার্থকামবিষয়ে 'বিবুক্তো' বিচ্ছিল্লো সভৌ 'ভৌ' ইত-রেতরং' পরস্পরং 'ন অভিচরেতাং' ন ব্যভিচরেতাং॥ ৫॥

স্বামী ও ভার্য্যা পরস্পার বিযুক্ত হইয়া বাহাতে কেছ কাহার প্রতি ব্যভিচার না করেন; এমত বতু তাঁহারা সর্বাদা করিবেন॥ ৫॥

পতি ও পত্নী উভয়েই ব্যতিচার হইতে আপনাদিগকে ৰত্নপূৰ্বক রকা করিবেন। পরমেশর কি ভভ অভিপ্রায়ে প্রস্পরকে কিরূপ গুরুতর সম্বন্ধে স্মিলিত করিয়াছেন. তাহা সর্বাদা অন্তরে জাগত্তক রাখিবেন। জীপুরুষের বিভদ্ধ ন প্রেম ঈশরের প্রির ও সমুদার জগতের প্রির, এবং দম্পতীর क्नागिकत, वरम्त्र कन्तागिकत ও ममूनाम मःमाद्यत कन्तान-কর; পরস্পর ব্রবান ইইয়া তাহা পরিবর্দ্ধিত করিবেন; मत्न मत्न ভাरात्र विकक्षाहत्र कतिर्वे ना। উভয়ের श्वम विक हरेर्द, উভয়ের नका এक हरेर्द, উভয়ের সুধ फ्रःथ এक हरेरव, এवः উভয়ে আপনাদিগকে সর্বাণিপতি পর্মেখরের সন্মিশিত দাস-দাসী বিবেচনা করিয়া সর্ব্বান্তঃ-क्यर डॉशंब बाका भागत ित्रवं शे विद्या हिल्ला স্থুৰ কুজ বোধ করিবেন, সামান্য আলাপ পরিত্যাগ করি-र्वन; बाहाएक धेरिक ও পার্র कि मनन हत्, তাहार्त्र আলোচনা করিবেন। কার্য্যবশতঃ কথন পরপের বিযুক্ত

হইলে বদুপূৰ্বক এই পৰিজ দাম্পত্য ব্ৰত প্ৰতিপাদন ুক্রিবেন ॥ ৫ ॥

38

সম্ভটোভার্যায়া ভর্তা ভর্ত্তা ভার্য্যা তথৈব চ। যশ্মিনেব কুলে নিত্যং কল্যাণং তত্ত্ব বৈ ধ্রুবন্॥৬

'ৰন্দ্ৰিন্ এৰ কুলে' 'নিত্যং' 'ভৰ্ত্তা' 'ভাৰ্যারা' 'সম্ভটঃ' 'তথা এব' 'ভাৰ্য্যা' 'চ' 'ভৰ্জ্ব' সম্ভটা 'ভল্ল' 'ধ্ৰবং' নিশ্চিতং 'বৈ' অবধারণে 'কন্যাণং' শ্ৰেরঃ ভৰতি ॥ ७ ॥

, বে পরিবারে স্থামী ভার্ষ্যার প্রতি, এবং ভার্য্যা স্থামীর প্রতি নিত্য সমুষ্ট, সেই পরিবারের মিশ্চিত কল্যাণ॥ ৬।।

ভর্তা ও ভার্যা পরম্পরকে সম্প্রীত ও সরস্ট রাধিতে ও পরম্পরের উপর প্রীতি ও প্রসন্ন থাকিতে বদ্দশীল হইবেন। বাহাতে পরস্পরের জালাপ ও আচরণ পরস্পরের বিরক্তি-জনক না হর, তাহার নিমিত্ত চেষ্টাবান্ থাকিবেন। কেহ কাহারও প্রতি উগ্রতা প্রদর্শন করিবেন না, কেহ কাহাকে হীন বোধ করিবেন না, কেহ কাহাকেও জবিধাস করিবেন না, পরস্পর প্রিরাচরণ করিবেন, পরস্পর হিতাহ্র্চান করি-বেন, পরস্পর ক্ষাশীল হইবেন। উভরে মিলিত হইরা সংগারের হিত চিত্তা ও উন্নতি সাধন করিবেন। একের শাতা পিতাকে উভরেই মাতা পিতা বলিয়া বোধ করিবেন, একের প্রাতা ভগিনীকে উভরেই প্রাতা ভগিনী বলিয়া। বিবেচনা করিবেন, একের স্থুপ হ:প ও সম্পাদ বিপদ্ উভ-রেই বিভাগ করিয়া লইবেন; এবং উভরেই পবিত্রতা, শাস্তি, শুভ বৃদ্ধি ও ধর্ম-বলের জন্ত সেই মন্সলময় বিধাতা প্রুবের শরণাপর হইয়া থাকিবেন। যে পরিবারে এরপ দম্পতী থাকেন, তথার স্থুপ শাস্তি ও কল্যাণ প্রচুর রূপে বর্ষিত হয়॥ ৬॥

30

সা ভার্য্যা যা পতিপ্রাণা সা ভার্য্যা যা প্রজাবতী। মনোবাক্কর্মভিঃ শুদ্ধা পতিদেশামুবর্ভিনী ॥৭॥

'সা ভার্য্যা' 'ষা' 'পতিপ্রাণা' পতিরেব প্রাণোৰস্যা ইতি 'সা ভার্য্যা' 'যা' 'প্রকাবতী' সাপত্যা সা ভার্য্যা যা 'মনোবা-কর্ম্মভিঃ' 'ভদ্ধা' পবিত্রা সতী 'পতিদেশাস্থবর্ত্তিনী' পত্যুরাজ্ঞা-মুসারিণী ॥ १ ॥

সেই ভার্য্যা বৈ পাতিপ্রাণা, সেই ভার্য্যা যে সন্তান-বতী, এবং সেই ভার্য্যা যাহার মন এবং বাক্য ও ক্র্ম্ম শুদ্ধ, আর যিনি পতির আজ্ঞানুসারিণী । ৭॥

া ত্রী স্বামীকে প্রাণভূল্য দেখিবেন, বংশের প্রতিষ্ঠার্থ স্ত্রান কামনা করিবেন; চিম্বাতে পৰিজ থাকিবেন, খাক্যেতে ভদ্র হইবেন, বিভদ্ধ কর্মের অফুটান করিবেন; স্বামী যাহা বলিবেন, তাহা প্রীতি ও প্রফ্লভার সহিত প্রতিপালন করিবেন॥ १॥

20

ছায়েবাকুগতা স্বচ্ছা সধীব হিততকৰ্মস্থ। সদা প্ৰস্থাতীয়া ভাষ্যং গৃহকাৰ্য্যেষু দক্ষয়া॥৮॥

'ছায়া ইব অনুগতা' 'স্কো' বিশুদ্ধা 'দ্ধী ইব হিতকৰ্মস্থ'। 'সদা' 'প্ৰস্কুষ্যা' হৰ্ষযুক্তয়া 'গৃহকাৰ্যোষ্' 'দক্ষয়া' কুশলয়া প্ৰিয়া 'ভাৰাং' ভৰিতব্যম্॥ ৮॥

ছায়ার ন্যায় তিনি স্বামীর অনুগতা ও সধীর ন্যায় তাঁহার হিত-কর্ম-সাধিকা হইবেন এবং স্বচ্ছা থাকিবেন, এবং সর্ববা প্রস্তুত্ত থাকিয়া গৃহ-কার্য্যেতে স্থাক হই-বেন। ৮।।

ত্রী ধর্মার্থভাগ-বিষয়ে স্বামীকে আপনার নেতা করিয়া ছায়ার স্থার তাঁহার অহগত হইয়া চলিবেন, তাহাতে ত্রীর কোমল স্থাব বিপত্তি হইতে রক্ষা পাইবে; অতএব তিনি স্বামীকে আত্রর-তক্ষও আপনাকে আত্রিত লতা বিবেচনা ক্রিবেন; কিন্তু স্বামীর ত্রম প্রামানে অর হৈইয়া থাকিবেন না, কেন না ঈরর তাঁহাকেও যথেষ্ট বিবেচনা শক্তি দিয়া-ছেন। অতএব হিতকারিশী স্থীর স্থার স্বামীকে অহিত

বিষয় হইতে নিবৃত করিবেন ও সংকর্ম সাধনে স্থমরণা দিবেন; এবং ওাঁহার শরীর ও মনকে স্থা রাখিতে বন্ধবতী থাকিবেন। স্বরং শরীর পরিছেদ ও সন্তঃকরণে নির্মানা হইবেন। প্রকৃত্ত হৃদয়ে গৃহকর্মের অহ্ঠানে ব্যাপৃত থাকি-বেন এবং তাহাতে স্থানিপুণ হইবার জন্ত চেটা করিবেন ॥৮॥

29

ন কেনচিৎ বিবদেচ অ্প্রলাপবিলাপিনী। ন চাতিব্যয়শীলা স্যাৎ ন ধর্মার্থবিরোধিনী॥৯॥

'ন' 'চ' 'কেনচিং' সহ 'বিবদেং' বিবাদং কুর্ব্যাৎ 'অপ্র-লাপবিলাপিনী' ন অনর্থকখনশীলা। 'ন চ অভিব্যয়শীলা স্যাং' 'ন ধর্মার্থবিয়োধিনী' ভবেং ॥ ৯॥

কাৰারও সহিত ডিনি বিবাদ করিবেন না, জনর্থক বহু ডাষণ করিবেন না, জপরিমিত ব্যায় করিবেন না এবং বর্মা ও জর্থ-বিষয়ে বিরোধিনী হইবেন না।। ৯।।

বে পরিবারে ছেব ঈর্ব্যা ও বিবাদ -বিসংবাদ প্রবিষ্ট হর, সুথ ও স্কোব তথা হইতে প্রদারন করে এবং সে পরিবার শীজই শীল্রই হইরা পড়ে। অভএব গৃহিণী তদিকরে সভর্ক হইবেন, বাহাতে সমুদার পরিবারের মধ্যে শান্তি থাকে, ভাহার উপার বিধান করিবেন; সকলের সহিত ন্যারাম্প্রত ব্যবধার করিবেন এবং সকলের কল্যাণ কামনা করিব

বেন। অনার কথা পরিত্যাগ করিলা সিত্তাহিণী হইবেল; বে সকল বাক্যে লক্ষা বা হণা জন্মে, অথবা বাহ। বারা অন্তের প্রতি অভিনাপ দেওরা হর, এই ত্রিবিধ অস্নীল বাক্য পরিত্যাগ করিবেন; সারবৎ মধুর বাক্যে সকলের সহিত্ত সম্ভাবণ করিবেন। কোন বিবরে অনাবশ্যক ব্যর করিবেন না এবং আবশ্যক ব্যরে স্থংকুচিত হইবেন না। বাহাতে ধর্মের বা সংসারিক কার্য্যের ব্যবাত উৎপন্ন হর, তাদৃশ আচরবেণ ও তাদৃশ আমোদ-প্রামাদে আসক্ত হইবেন না ॥৯॥

36

পতিপ্রিয়**হ্হি**ত যুক্তা স্বাচারা সংযতেন্দ্রিয়া। ইহ কীর্ত্তিমবাপ্নোতি প্রেত্য চাকুপমং স্থম্ ॥১০

'পতি প্রিরহিতে যুক্তা!' পত্যুঃ প্রিয়ে ক্ষিতেচ কার্য্যে নি-যুক্তা 'বাচারা' শোভনাচারা 'সংবতে প্রিরা' নিরতে প্রিরা চ সভী 'ইহ' জীবস্তী 'কীর্ত্তিং' বশঃ 'জবাগোডি' প্রাগোডি 'প্রেত্য' পরলোকে 'জমুপদং' নিক্লাদং 'স্লখং' 'চ'॥ ১০॥

বে ভার্যা পতির প্রিয় ও হিত কার্য্যে নিযুক্ত থাকেন এবং সদাচারা ও সংবতেজ্রিয়া হয়েন, তিনি ইছ সোকে কীর্ত্তি ও পর সোকে অমুপম অধ প্রাপ্ত হয়েন ॥ ১০ ॥

স্বামীর থ্রিরক্ষারিণী ও হিডকারিণী স্বাচারা এবং জি-তেজিরা স্ত্রীর প্রতি বেশন সম্বােরা সভট হন, সেইরুণ সর্বাদশী ঈশার প্রসন্ধ থাকেন। ঐরপ স্ত্রী ঐতিক পারতিক মঙ্গল লাভ করিরা কতার্থ হরেন এবং তাঁচার কীর্ত্তিপৃথিবীতে অভাভ স্ত্রীলোকদিগকে সাধু কর্মে উৎসাহ দান করে॥ ১০॥

29

স্ত্রীভির্ভর্বচঃ কার্য্যম্ এষধর্মঃ পরঃ স্ত্রিয়াঃ। সদৃত্তচারিণীং পত্নীং ত্যক্ত্ব। পত্তি ধর্মতঃ॥ ১১॥

'স্ত্রীভিঃ' সাধ্বীভিঃ 'ভর্ত্বচঃ' পতিবাক্যং 'কার্য্যং' 'এষঃ' 'স্ত্রিয়াঃ' 'পরঃ' প্রকৃষ্টঃ 'ধর্ম্মঃ'। 'সন্বৃত্তচারিণীং' সদাচার-শীলাং 'পত্নীং ত্যক্ত্য' 'ধর্মতঃ' 'পততি' পতিতোভবতি ॥১১॥

ক্রীরা স্থামীর বাক্য প্রতিপালন করিবেন, ইছা তাঁছারদের পরম ধর্ম। স্থামী সদাচারশীলা পত্নীকে পরিত্যাগ করিশে ধর্ম হইতে পভিত হয়েন॥ ১১॥

ত্রী খামীর বাক্য প্রতিপালন করিবেন। খামী জীর খাভাবিক মৃত্তার প্রতি নিরপেক হইরা তাঁহাকে কঠোর অনুরোধ করিবেন না। তাঁহার শারীরিক মানসিক ও আধ্যাত্মিক কল্যাণ সাধনে বন্ধবান্ থাকিবেন। সন্ত্পদেশ প্রদান ও সাধু দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিবেন। প্রীতি ও সমাদরের সহিত পত্নীকে প্রতিপালন করিবেন এবং আপেনার ধর্ম, অর্থ ও ভোগ-বিষয়ে তাঁহাকে সহভাগিনী করিবেন। বিনি সাধ্বী ত্রী প্রার্থনা করেন, তিনি শবং সংপতি হইতে

চেষ্টা করুন। সাধনী স্ত্রীকে পরিত্যাপ করিলে ধর্মকে লজ্মন করা হয়; অতএব প্রথম সাধনী স্ত্রীকে পরিত্যাগ করিবেন্ না॥১১॥

२०

সূক্ষেভ্যোহপি প্রসঙ্গে দ্রিয়োরক্ষ্যা বিশেষতঃ ব্য়োহি কুলয়োঃ শোকমাবহেয়ুররক্ষিতাঃ॥ ১২॥

'ক্ষেন্ডা: অপি' স্বরেভ্যোহপি 'প্রস্ক্রেডা:' জ্গেরজভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'বিশেষভ্য: 'ক্রেরি: 'ক্রেরে:' 'ক্রেরে:' 'ক্রেরে:' প্রত্ত্তিকুল্রেয়: 'শোকং' সন্তাপ: 'আব্হেয়্:' দাপয়েয়্ঃ ॥২২॥

ন্ত্রীদিগকে অত্যাপে গ্রংসঙ্গ হাইতে বিশিষ্ট রূপে রক্ষা করিবেক, যে হেতু ন্ত্রী স্থ্রক্ষিতা না হইলে পিতৃ-কুল ও ভর্তৃকুল উভয় কুলেরই শোকের কারণ হয়েন ॥ ১২।।

বে স্থানে অভক্ত দর্শন ও অভদ্র শ্রবণে মন অভদ্র হইতে পারে, যে সকল আমোদে-প্রয়োদে ধর্ম-ভাব মলিন হইয়া বার, যেথানে পাপু-প্রলোভন মনকে বিচলিত করে, তথার অবস্থান কর্ত্তব্য নহে। বাহাদিগের অপবিত্রতা ভাল লাগে ও বাহারা অপবিত্রতাতে মগ্ন হইয়া আছে তাহাদের সংস্কিবিবর পরিত্যাল্য; পাতিব্রত্য ধর্মে বাহাদের অফুরাগ নাই

ভাষাদের স্বভাব অতি ভরানক; এই সকল ছঃস্থান ও ছঃসঙ্গ হইতে ষত্ন পূর্বক দ্বীলোকদিগকৈ রক্ষা করিবেন। পাপ সংসর্গে পাপের আসক্তি জন্মে॥ ১২॥

25

অরক্তিত। গৃহে রুদ্ধাঃ পুরুষৈরাপ্তকারিভিঃ। আত্মানমাত্মনা যাস্ত রক্ষেয়ুস্তাঃ স্থরক্ষিতাঃ॥ ১৩

বাঃ হংশীনতরা নাঝানং রক্ষত্তি তাঃ 'আগুকারিতিঃ' আগুঃ বিষ্ণাঃ কারিণঃ আজাকারিণঃ আগুান্চ তে কারিণ-শেতি আগুকারিণগৈঃ 'পুক্রৈঃ' 'গৃহে ক্ষাঃ' অণি 'অর-কিতাঃ' তঃন্তি। 'বাঃ তু' ধর্মজ্ঞতরা 'আঝানং আঝন।' 'রক্ষেয়্ং' রক্ষত্তি 'তাঃ' এব 'স্থাকিত্যি' ভবন্তি। অতঃ জীভ্যোধর্মমুপদিশেদিত্যভিপ্রারঃ॥ ১০॥

বিশ্বস্ত ও আজ্ঞাবহ ব্যক্তিগণ কর্ত্ত্ব গৃহমধ্যে কন্ধা থাকিলেও স্ত্রীরা অরক্ষিতা; যাঁহারা আপনাকে আপনি রক্ষা করেন, তাঁহারাই সুরক্ষিতা ॥ ১৩॥

আন্তঃকরণেই পাপের অছুর উৎপন্ন হর। তাহা হইতে ক্রমে ক্রমে কার্যাও পাপমর হইরা উঠে। অন্তঃকরণ পৰিত্র থাকিলেই কার্যা পবিত্র হর। অত এব স্ত্রীলোক-দিগকে ধর্মোপদেশ প্রদান করিরা ধর্মের প্রতি তাহাদিগের অনুরাগ বৃদ্ধি করিরা দিবেক; তাহা হইলে ভাহাদিগের মন ধর্মরপ ছর্গে অবস্থান করিরা পাপ হইতে আপনা-দিগকে রক্ষা করিতে সমর্থ হইবেক। থাঁহারা আপনাকে আপনি রক্ষা করিতে পারেন, তাঁহারাই রক্ষা পান॥ ১৩॥

२२

ভাতুর্জ্যেষ্ঠন্য ভার্য্যা যা গুরুপত্মসুক্তন্য না। যবীয়নস্ত যা ভার্য্যা সুষা জ্যেষ্ঠন্য না স্মৃতা ॥১৪॥

'জ্যেষ্ঠসা' 'লাজুং' 'য়া ভার্যা' 'সা' 'জ্মুক্সসা' লাজুঃ 'গুরূপরী' ভবতি। 'ববীয়সং' কনিষ্ঠস্য লাজুঃ 'জু যা ভার্যা' 'সা জ্যেষ্ঠস্য' 'সুষা' বধুরিৰ মুনিভিঃ 'স্বভা'॥ ১৪॥

জ্যেষ্ঠ জাঞার ভার্য্যা কনিষ্ঠ জাতার গ্রহ-পত্নী-স্বরূপ, আর কনিষ্ঠ জাতার ভার্য্যা জ্যেষ্ঠ জাতার পুত্র-বধুস্বরূপ; ইহা মুনিরা কহিয়াছেন ॥ ১৪॥

জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকে বেমন পিতৃ-তুল্য দেখিবেক, সেইরূপ তাঁহার ভার্যার প্রতি মাতৃ-সম্চিত সম্মান করিবেক; এবং কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে বেমন পুত্র-সদৃশ দেখিবেক, সেইরূপ তাঁহার পরীর প্রতি পুত্রবধ্-সম্চিত মেহ করিবেক। বাঁহার সহিত বেরূপ সম্মান ভার্যার প্রতি তদমূরূপ সম্ভাব প্রদর্শন ক্রিবেক॥ ১৪॥

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ।

२०

'গৃহস্থ: পালয়েৎ দারান্ বিন্যাম, অভ্যাসয়েৎ স্থতান্'। 'গোপয়েৎ' রক্ষেৎ 'স্থানাণ্ বন্ধুন' 'এষ: ধর্ম: সনাতন:'॥১॥

গৃহত্ব স্থীর জ্রীকে প্রতিপালন করিবেক, পুত্র-দিগকে বিদ্যাভ্যাস করাইবেক, এবং স্বজনও বন্ধু-বর্গকে রক্ষা করিবেক; এই সনাভন ধর্ম॥১॥

পত্নীকে প্রতিপালন, সন্তানগণকে শিক্ষা দান এবং স্থান ও বন্ধগণের সহায়তা করা গৃহস্তের নিত্য কর্ম জ্ঞানিবে। সন্তানগণকে কেবল অন্ধ বন্ধ প্রদান করিলেই পিতামাতার সম্দায় কর্তব্য পরিসমাপ্ত হয় না। যাহাতে পুত্রগণ দাধু—ভাব ও সন্তাব সহকারে ঈশবের প্রতি ও সম্দায় মহুয়ের প্রতি সন্থাবহার করিরা ইহলোকে জীবন্যাত্রা নির্কাহ করিতে ও পরলোকে সদগতি প্রাপ্ত হইতে সমর্থ হয়, পিতামাত। সন্থানগণকে সেইরূপ শিক্ষা দান করিবেন। গৃহস্থ সাধ্যাত্ম-সাবে অজন ও বন্ধগণের আন্তর্কা করিবেন; অন্যের হিতসাধ্যন কর্দাপি পরামুথ হইবেন না॥ ১॥

₹8

কন্যাপ্যেবং পালনীয়া শিক্ষণীয়াতিযক্তঃ। দেয়া বরায় বিভূষে ধনরক্ষসমন্বিতা॥ ২॥

'কন্তা অপি' 'এবস্' ঈদ্দেন প্রকারেণ 'পালনীয়া' 'শিক্ষ-দীয়া' চ 'অতিবল্লভঃ'। 'বিহুটো পঞ্জিতার 'বরার' 'ধনর্জ-দম্মিতা' সা 'দেরা'॥ ২ ॥

কন্যাকেও এইরূপ পালন করিবেক ও অতি যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক এবং ধন রত্নের সহিত স্থ্যণ্ডিড পাত্রে সম্প্রদান করিবেক ॥ ২॥

কন্তাকেও পুত্রের ন্যায় প্রতিপালন ও জ্ঞান-ধর্মে শিক্ষা দান করিবেক। কন্তা পতিকুলে অবস্থান করিয়া যে সকল গুরুতর ভার গ্রহণ করিবে, তাহা জনকের উপদেশ ও জননীর দৃষ্টাস্ত দেখিয়াই অধিক শিক্ষা করে। অতএব জনক জননী যক্ত পূর্বক কন্যাদিগের সেই শিক্ষা সম্পাদন করিবেন। বে সকল বিদ্যা শিক্ষা করিলে ঈর্মর-জ্ঞান ও ঈর্মর-ভক্তি উজ্জ্ল হয় এবং মহার্মভাবতা উৎপন্ন হয়, তদ্বি-ধ্যে পুত্র ও কন্যাকে নির্বিশেবে স্থাশিক্ষত করিবেন। পরে উপবৃক্ত বয়সে উপবৃক্ত পাত্রে কন্যা দান করিবেদ॥২॥ २0

যাদৃগ্গুণেন ভত্র জী সংযুজ্যেত যথাবিধি। তাদৃগ্গুণা সা ভবতি সমুদ্রেণেব নিম্নগা॥ ০॥

'থাদৃগ্ভাবেন' 'ভত্ত ।' সাধুনাংসাধুনা বা 'ঘথাবিধি' 'ক্ত্রী সংব্জ্যেত'। 'সা তাদৃগ্ভাণা' 'ভবতি' 'সমুদ্রেণ ইব' ঘণা সমুদ্রেণ সহ যুক্তা 'নিম্নগা' নদী স্বাহদকাশি ক্ষারজলা জামতে তথা ॥ ৩ ॥

ষে স্থ্রী যাদৃগ্ গুণ-বিশিষ্ট তর্ত্তার সহিত বিধি পূর্ব্বক সংযুক্ত হয়, সে স্ত্রী ভাদৃক্ গুণই প্রাপ্ত হয়; যেমন নদীর জন স্বান্থ হইয়াও সমুদ্রের সহিত সংযুক্ত হইলে লবণাক্ত হয়॥ ৩॥

স্থামীর গুণে পদ্ধীও গুণবতী হয়, এবং স্থামীর দোষে পদ্ধীরও দোষ জ্বনিতে পারে; অতএব কন্যাব জন্য গুণবান পাত্র অধ্যেপ করিবেক। যিনি জ্ঞানবান, ঈ্থরপরায়ণ, আচার ব্যবহারে সাধুও ভত্ত, যাহার কুল ও শীল কন্যা অপেক্ষা হীনতর নহে এবং যাহার প্রতি কন্যার বিরাগ ও বিদ্বেধ না থাকিবে, তাদৃশ সংপাত্রে কন্যা দান করি-বেক ॥ ৩॥

20

অজ্ঞাতপতিমধ্যাদামজ্ঞাতপতিদেবনাম্। নোদাহয়েৎ পিত। বালামজ্ঞাতধর্মশাসনাম্॥৪॥

'অজাতপতিমধ্যানাম্' অজাতা পতিম্থ্যানা যয়। তাং তথা 'অজাতপতিদেবনাম্'। তথা 'অজাতধর্মশাসনাং', 'বালাং' 'পিতা' 'ন উঘাহয়েং' ন বিবাহয়েং ॥ ৪॥

কন্যা যত দিন পতি-মর্য্যাদা ও পতি-দেবা না জানে এবং ধর্ম শাসন অজ্ঞাত থাকে; তত দিন পিতা ভাছার বিবাহ দিবেন না॥ ৪॥

দাম্পতাত্রত কিরপ গুরুতর, খামীর সহিত সম্বন্ধ কিরপ অফুলজ্বনীয় এবং ধর্ম কেমন ব্যাহর ধন, এই সমস্ত বিষয় কন্যা যে ব্যাসে হাদয়ক্ম করিতে সমর্থ না হয়, তাদৃশ ব্যাস কন্যার বিবাহ দিবেক না ॥ ৪ ॥

29

ন কন্যায়াঃ পিতা বিদ্বান্ গৃহ্নীয়াৎ শুল্কমণুপি।
গৃহ্নন্ শুল্কং হি লোভেন স্যান্ধরোহপত্যবিক্রয়ী॥৫
'কন্যায়াঃ পিতা' 'বিদ্বান্' শুদ্ধগ্রহণদোষতাঃ ক্রুদান
নিমিত্তক্ম 'দ্পু দ্বিশি দ্বন্ধাণ 'শুদ্ধং' মূল্যং 'ন' গৃহীয়াং'।

'হি' যন্ত্ৰাং 'নরঃ' 'লোভেন' শুকং 'গৃহুন্' 'অপভাবিক্রয়ী' সম্ভানবিক্রেভা 'হুদং'॥ ৫॥

জ্ঞানবান্ পিতা কন্যাদান নিমিত্ত কিঞ্চিশ্বাত্তও পৰ আহণ করিবেন না; লোভাসক্ত হইয়া পথ আহণ করিলে সপ্তান বিক্রেয় করা হয় ॥ ৫ ॥

ক্সাকে প্রতিপালন, শিক্ষাদান ও সংপাতে সমর্প্র পিতামাতার অবশ্য কর্ত্ব্য কর্ম, ইহা স্থানর রূপে নির্বাহ করিতে পারিলেই তাঁহারা আপনাকে ক্বতার্থ বোধ করি-বেন। কন্যা দান করিয়া তাহার পণ গ্রহণ করিবেন না; পণ গ্রহণ করিলে দান করা হয় না, বিক্রম্ম করা হয়। বে পিতামাতা লোভাসক হইয়া কন্যাকে বিক্রম্ম করে, তাহারা নবাধম বলিয়া পরিগণিত হয়; কেন্না মহ্য্য, বিক্রম্ম ধর্মের বিক্রম্ম ব্যরহার॥ ৫॥

চকুৰ্থো২ধ্যায়ঃ।

२৮

ন তেন বৃদ্ধোভবতি যেনাম্য পলিতং শিরঃ। যোবৈ যুবাপ্যধায়ানস্তং দেবাঃ স্থবিরং বিছঃ॥১॥

'ন' 'তেন' হেতুনা 'বৃদ্ধ: ভবতি যেন' 'অস্য' মহ্যাস্থ 'পলিতং' ভক্লকেশং 'শিরং' মন্তকম্। কিন্তু 'বৃবা অপি' সন্ 'যং' 'অধীয়ানং' বিধান্ 'তং' এৰ 'দেবাং' 'হবিরং' বৃদ্ধং 'বিহুং' জানন্তি ॥ ১॥

সে কখন বৃদ্ধ হয় না, যাহার কেবল শুক্রকেশ; কিন্তু যুবা হইরাও যিনি বিদ্ধান, তাঁহাকে দেবভারা বৃদ্ধ বিলিয়া জানেন ॥ ১ ॥

যত্ন পূর্বাক বিদ্যা শিক্ষা করিবেক; তাহার প্রতি অব-হেলা করিবেক না। বিদ্যা ধারা জ্ঞান চকু নির্মাল হয়। বে অম ঐহিক ও পারত্রিক মঙ্গল লাভের বিম্নকারী, বে অম সত্যকে অসত্যরূপে ও অসত্যকে সত্যরূপে প্রকাশ করে, যে অম কার্য্যকে অকার্য্য ও অকার্য্যকে কার্য্য বলিয়া প্রতিপন্ন করে, জ্ঞান ব্যতিরেকে তাহা হইতে মুক্তি লাভের অন্য উপার নাই। অতএব বিদ্যা ধারা জ্ঞানকে উচ্ছল করিবেক। ভৌতিক বিদ্যা অভ্যাস করিবেক; কেন না ভৌত্তিক জগতে ভ্তাধিপতি পরমেশ্বের জ্ঞান শক্তি মঙ্গল ভাব ও আশ্চর্য্য মহিমা দীপ্যমান দেশিরা তাঁহার প্রতি, শ্রহা ও ভক্তি পরিবর্দ্ধিত হইবে এবং সক্লের কল্যাণকর কার্য্য অন্থর্চানে সামর্থ্য জায়িবে। আত্মহিদ্যা শিক্ষা করিবকে; আত্মা সেই সত্য স্থলর মঙ্গল প্রক্রের সাদৃশ্য ধারণ করিতেছে। আত্মস্তর্কপ অবগত হইতে পারিলে সেই অদৃশ্য অনির্কাচনীয় ও অচিস্ত্য অনন্ত শ্বরূপের আভাঙ্গ প্রবিধ্যা বিশ্বা জীবনের উদ্দেশ্য সাধনের প্রচুর উপায় অবগত হইতে পারিবে। এই ক্রপে উভর বিদ্যা দারা সর্ক্-বিদ্যা-শ্রতিষ্ঠা ব্রন্ধ-বিদ্যা লাভ করিয়া ব্রন্ধনন হইবেক এবং তাঁহার প্রিয় কার্য্য অন্থ্রা পূর্ব্বক ঐহিক ও পার্বিক মঙ্গল লাভ করিয়া ক্রত্বত্য হইবেক ৪২॥

२३

মৌনাম সমুনির্ভবতি নারণ্যবসনামুনি:। স্বলক্ষণস্ত যোবেদ সমুনি: শ্রেষ্ঠ উচ্যতে ॥ ২ ॥

'মৌনাং' বাক্যাভাবাং 'ন স: মুনি: ভবতি' 'ন' 'অরণ্য-বসনাং' বনবাসাং 'মুনি:'। 'বলক্ষণং তু" আয়ব্রপং তু 'যাং' 'বেদ' জানাতি 'সং' 'শ্রেষ্ঠ: 'মুনি:' মননশীলঃ 'উচাতে' কথ্যতে ॥ ২॥

মেনি থাকা প্রযুক্ত কেছ মুনি হয় না, অরণ্য-বাস

প্রযুক্তও কেছ মুনি হয় না; কিন্তু যিনি আপনার সকণ জানেন তিনিই শ্রেষ্ঠ মুনি 🖟 ২ ॥

বনে বাস বা বাক্যত্যাগ মুনির ককণ নহে। নিভ্ত इटेब्रा व्यापनात विषय बार्लाहमा कविरवक। बामि क. এই শরীরের সহিত আমার কি সম্বন্ধ, এই জগতের সহিত व्यामात कि नवन्न, क्लाश हरेट आरेगाम, क व्यामात्क জানয়ন কবিলেন, কি জন্য এখানে অবস্থান করিতেছি. পরিশেষে কোথার বাইব: কখন মুখ, কখন ছ:খ, কখন मण्लेम, कथन विश्रम, कथन हर्य, कथन विश्राम आभारि छेश-विত स्टेटिंग्स, अटे नकरनद फेल्म्मा कि: अटे मंदीद, अटे हे किय, এই প্রবৃতি, এই বাসনা कि खना आमाकে প্রদৃত হইয়াছে; চতুর্দিকে ফুথের সামগ্রী স্থসজ্জিত আছে, কেন তাহা চিরকাল তৃপ্তিকর হর না: সকল কামনা ভেদ করিয়া যে অমৃতব্বের কামনা উভিত হইতেছে, কোথায় তাহা পরিপূর্ণ হইবে; প্রকৃত মুনি স্থাপনাতে প্রবেশ করিয়া **এই मक्न विषय मनन कतिएक थारकन अवः क्रेन्द्र- अमारक** যে আলোক লাভ করেন, তাহাতে আপনার গন্তব্য পর্ দর্শন করিয়া আপ্যায়িত হন ॥ ২॥

€.

নাত্মানমবমন্যেত পূর্ব্বাভিরদমৃদ্ধিভিঃ। স্থামৃত্যোঃ শ্রিয়মবিচ্ছেদৈনাং মন্যেত তুর্লভান্। 'পূর্বাভিঃ' পূর্বকাশবর্ত্তিভঃ 'অসমৃদ্ধিভিঃ' ধনানাম-সম্পত্তিভিঃ মৃদ্দভাগ্যোহহমিতি 'আআনং' নে' 'অবমন্যেত' নাবজানীরাও। কিন্তু 'আমৃত্যোঃ' মরণপর্যান্তং 'প্রিরং' সম্পত্তিং 'অবিচ্ছেৎ' তৎসিদ্ধিনিমিত্তম্ উদ্যানং কুর্য্যাৎ নি এনাং' 'ছর্ল্লভাং' 'মন্যেত' বুধ্যেত ॥ ৩ ॥

পূর্বধনসম্পত্তি নাই বলিয়া আপনাকে অবজ্ঞা করিবেক না। আমরণ ধনসম্পত্তির চেফী করিবেক, ভাগা ফুর্ল ভ মনে করিবেক না।। ৩।।

ত্রিভ্বন-পাশক পরমেশর মহুদ্যকে আশ্রুণ্ট শক্তি প্রদান করিয়া জীবিকা-সংস্থানের বথেষ্ট উপায় করিয়া দিয়াছেন। অতএব পূর্বতন ধন সম্পত্তি নাই বলিয়া আপনাকে ছুর্জাগ্য বোধ করিবেক না এবং তাহা ছর্লপ্ত ভাবিয়া নিয়দ্যম হইবেক না। দারিদ্য ছংখে নিপতিত হইয়াও আপনাকে অবজ্ঞা করিবেক না। স্থায় পথে থাকিয়া পরিশ্রম করিবেক এবং চিরজীবন আপনাকে ধনোপার্জ্জনের অধিকারী জানিবেক। পৃথিবী হইতে দারিদ্রা ছংখ দ্র করা আনন্দ-সক্ষণ পরমেশ্রের প্রিয় কার্য্য জানিবেক॥ ৩॥

.03

সর্বং পরবশং ছঃখং সর্বমাত্রবশং স্থথম্। এত্রিভাৎ সমাদেন লক্ষণং স্থপতঃখয়োঃ॥ ৪ ॥ 'সর্কং' 'পরবশং' 'ছ: খং' ছ: খংহতু: 'সর্কম্ আয়বশং' 'স্থং' স্থাকারণম্। 'এজং' 'সমাসেন' সংক্ষেপেণ 'স্থ-ছ: খরো:' 'লক্ষণং' 'বিদ্যাৎ' জানীয়াৎ ॥ ৪ ॥

যাহা কিছু পরাধীন ভাহা হুংখের কারণ, আত্মবশ সকলই সুধের কারণ; সংক্ষেপেত্রে সুধ হুংখের এই লক্ষণ জানিবে॥ ৪॥

ঈশর করণা করিরা মন্থাকে যে সকল শক্তি দিয়াছেন, তাহা অবলম্বন পূর্মক স্বাধীন ভাবে অবস্থান করিবেক। অভ্যান করিবেক। যতন্র সাধ্য আপনার কর্ম আপনি করিবেক। বন্ধুগণের পরামর্শ, মত্ন পূর্মক গ্রহণ করিবেক, কিন্তু স্থাং হিতাহিত বিবেচনা করিতে ক্ষান্ত পাকিবেক না। ক্লক্তে চিত্তে অন্যের সাহায্য গ্রহণ করিবেক; কিন্তু স্থাং নিশ্চেষ্ট হইবেক না। সাধ্য পাকিতে অল্পের গলগ্রহ হইবেক না ও ভিকাবৃত্তি অবলম্বন. করিবেক না ॥ ৪ ॥

97

নোচ্ছিন্দ্যাদাত্মনোমূলং পরেষাং চাতিত্যায়। উচ্ছিন্দন্ ছাত্মনোমূলমাত্মানং তাংশ্চ পীড়াের ॥৫ 'ষায়ন: মৃবাং' ধনানিকং বং কিঞ্চিং তং 'ন উচ্ছি- नगार' न উৎসাদয়ে 'পরেবাং চ' ধনাদিকম্ 'অতি চ্ঞারা নোচ্ছিল্যাং'। 'হি' ফ্রাং 'আয়ন:' পরেষাঞ্চ 'নৃলম্' 'উচ্ছিন্দন্' 'আয়ানং' 'তান্ চ' মহ্ধ্যান্ 'পীড়য়েং' পীড়-য়তি॥ ৫॥

আপনার এবং লোভাতিশয় প্রযুক্ত পরের অর্থ নাশ করিবেক না; বে ছেতু আপনার ও পরের ধন নাশ করিলে আপনাকে ও পরকে পীড়া দেওয়া হয়।। ৫॥

অতিলোভে কেবল বে পরের অর্থ বিনাশ করা হর এমত নংহ, আপনার ও তাহাতে সর্ক্ষান্ত হইতে পারে। অতএব মিতব্যর অভ্যাস করিয়া অতি লোভ পরিত্যাগ করিবেক। মিতব্যর ছারা আপনার ও পরিবারের ও সমাজের কুশল রক্ষা করিবেক। ক্লাপি রূপণতা দোবে লিপ্ত হইবেক না ॥৫॥

99

যুবৈব ধর্মশীলঃ স্থাৎ অনিত্যং খলু জীবিতম্। কোহি জানাতি ক্সাদ্য মৃত্যুকালোভবিষ্যতি॥৬

'যুবা এব ধর্মশীল: স্যাৎ' যতঃ 'জীবিতং' জীবনং 'ধৃদু' নিশ্চিত্তম্ 'অনিতাম্'। 'কঃ হি জানাতি' বৎ 'অদ্য' 'ক্স্য' 'মৃত্যুকাল: তবিহাতি' ॥ ৬॥

र्घीतन कारलई वर्षणील इंदर्वक, खोवन कथन निडा

নহে; কে জানে অন্য কাহার মৃহ্যু-কাল উপস্থিত। হইবে॥৬॥

যৌবন কাল স্থাভোগের জনা ও বার্দ্ধ ধর্মাস্থঠানের জনা ইহা অবিবেকীর বাক্য। অধর্ম বৃদ্ধকেও কলন্ধিত করে, যুবাকেও কলন্ধিত করে। যৌবন কালে যাহা জ্বভাল্ড ফল ভোগ করিতে হয়। যৌবন কালেই পাপ-প্রলোভন তীব্র বেগে মসুষ্যকে আক্রেন্দ করে। ইবা বিশ্বত হইবেক না যে, মৃত্যু যুবাকেও পৃথিবী হইতে বিদায় করিয়া দেয়। অতএব যৌবন কাল অবধিই ঈর্মরের শরণাপয় হইয়া থাকিবেক; সদাচর্মণ অভ্যাস করিবেক; পাপ হইতে নিবৃত্ত থাকিতে যত্নশীল হইবেক, কুসংসর্গ পরিত্যাগ করিয়া সাধুসক করিবেক এবং কঠোরতা সহকারে অহরহ: আপনাকে পরীক্ষা করিতে থাকিবেক॥ ৬॥

98

স্বৃতঃ শীলসম্পন্নঃ প্রসন্ধাত্মবিদ্ বুধঃ। প্রাপ্যেহ লোকে সম্মানং স্থাতিং প্রেত্যগচ্ছতি ॥৭

· 'স্বৃত্তঃ' শোভনচরিত্রঃ 'শীলসম্পরঃ' সদ্গুণসম্পত্তিযুক্তঃ 'প্রসরায়া' প্রসরচিত্তঃ 'আম্মবিং' ত্রন্ধবিং 'বৃধঃ' পশুডঃ। 'ইহ' 'নোকে' 'সন্মানং' পূজাং 'প্রাপ্য' 'প্রেভ্য' ব্যাইভ্যার্মাৎ নোকাৎ 'স্থাভিং' সাধুগভিং 'গচ্ছভি' প্রাপ্নোভি॥ १॥

শিনি বুদ্ধিমান, সচ্চরিত্র, স্থানীল প্রসন্ধাত্মা ও ত্রন্ধানী; তিনি ইংলোকে সমাদর লাভ পূর্ব্বক পর-লোকে সমাতি প্রাপ্ত হয়েন। ৭।

দদদ্-বিবেচনার নিমিত্ত বুদ্ধিকে পরিমার্জিত করিবেক ও স্থার্জিত শুভ বুদ্ধির আদেশায়ুযায়ী কর্ম করিয়া সচ্চরিত্র ও স্থালি হইবেক; সচ্চরিত্র ও পবিত্র হইয়া মদকে প্রসন্ন রাধিবেক এবং ব্রহ্মজাদ লাভ করিয়া ব্রহ্ম-পরায়ণ হইবেক। ইহলোকে সম্মান ও পরলোকে স্কাতি ইহার পুরস্কার॥ ৭॥

96

যক্ত বাজ্মনদী স্থাতাং সম্যক্ প্রণিহিতে সদা। তপস্ত্যাগশ্চ সত্যঞ্চ সবৈ পরম্বাপ্রয়াৎ ॥ ৮ ॥

'যদ্য' জনস্য 'বাজনদী' বাক্ চ সনশ্চ 'দদা' 'সমাক' 'প্রেণিহিতে' প্রকৃত্তাবধানমুক্তে 'দ্যাতাং' ভবেতাং 'তপঃ' 'ত্যাগং চ' দানঞ্ 'সত্যং চ' 'দবৈ' সত্তব 'পরং' পূদম্ 'অবং- পুরাং' প্রাজে॥ ৮॥

যাঁছার বাক্য ও মন সর্বাদা সম্যক্রণে সংযত থাকে.

এবং বাঁহার তপ্রাা, দার ও সভ্য-কথনের অনুষ্ঠান খাকে, তিদি পরম পদ প্রাপ্ত হরেন। ৮ ।

বাক্য ও মন পরম্পর সংবঁত দা হইলে মিথা। কণা ও প্রাণাপ বাক্য এই হই মহৎ দোবে পতিত হইতে হয়। মন ঘাহা জানিতেছে, বাক্য ভাহার সঙ্গে মিল না মাথিয়া অভ্যথা ঘণিলেই তাহা থিগা হইল এবং বাক্য যাহা বলিতেছে, ভাহার অন্থানী মনের চিগ্রা না হইলেই ভাহা অসম্বন্ধ প্রাণাপ হইল। অভএব বাক্য ও মনকে সংঘত করিয়া কর্মরের ধ্যানধারণাত্রপ তপস্যা, সং পাত্রে দান ও সভ্যা ব্যবহার করিবেক ॥৮॥

20

ধর্মনিত্যঃ প্রশান্তাত্ম। কার্য্যযোগবছঃ দদা। মাধর্মে কুরুতে বুদ্ধিং ন চ পাপে প্রবর্ততে ॥৯॥

'বর্মনিত্য:' ধর্মে নিতরাং রত: 'প্রশান্তাত্ম' সমাহিত-চিত্তঃ 'কার্য্যবোগবহ:' কার্য্যোপার্ত্থপর: 'সদা'। 'ন অধর্মে কুক্তে বৃদ্ধিং ন চ পালে প্রবর্জতে'॥ >॥

বে প্রশাস্তাত্মা ধর্মকৈ নিভ্য আশ্রয় করিয়া কার্য্যোর্র পায়ে সদা তৎপর থাকেন, তিনি অধর্মের আলোচনা ক্রেন না এবং পাপেতেও প্রবৃত্ত হয়েন না॥ ৯॥ শান্ত চিত্ত ও ধর্মের অন্থাত হইরা কর্ম অনুষ্ঠানে ও তাহার উপায় চিস্তনে ব্যাপৃত থাকিবেক। অনস ও নিদ্ধা হইয়া থাকিলে মন পাপের আলোচনাতে প্রারুত্ত হইবে ও তাহা হইতে কর্মাও পাপনয় হইয়া উঠিবে। আল্ম্য সকল লোধের আক্র ॥ ৯ ॥

99

ধর্মার্থে যিঃ পরিত্যজ্ঞা স্যাদিন্দ্রিয়বশানুগঃ। শ্রীপ্রাণধনদারেভ্যঃ ক্ষিপ্রং স পরিহায়তে॥১০॥

'ষঃ' ধ্যুণ্ড অর্থাড় 'ধ্যাথি' তৌ 'পবিতাজ্য' 'ইক্সির-<শাহ্নগঃ' ইক্সিরাণাং বশাহ্নগামী 'দ্যাৎ' 'দঃ' 'ক্সিপ্রং' শীঘু' 'হ্যুগ্রণাধনদারেভ্যঃ' 'পরিহীয়তে' প্রহীনোভবতি ॥ ১ ॥

যে ব্যক্তি ধর্ম ও অর্থ পরিত্যাগ করিয়া ইন্দ্রিবের অধীন হয়, সে উ, প্রাণ, ধন, দারা হইতে অবিশল্পে পরিচ্যুত হয় ॥ ১০।।

ঈশ্বরের আরাধনাঁ ও দাংদারিক কার্য্য পবিত্যাগ করিয়। ইন্দ্রিয়গণের তৃপ্তিকর আমোদ প্রমোদে আসক্ত হইবেক না। বিষয়স্থ মন্ত্রের জন্ত স্ট হইয়াছে, মন্ত্র্য বিষয়-স্থেব জন্য স্ট হয় নাই। মন্ত্র্যজীবনের উদ্দেশ্য অতি মহান্। তাহার প্রতি স্ববহেলা করিয়া যে ব্যক্তি মৃঢ্তা- বশতঃ ইন্দ্রিগণের দাস ও বিষয়স্থপে আসক্ত হইরা থাকে,
মঙ্গলমন্ন ঈশার তাহাকে চেতনা দিবার নিমিত্ত উপবৃক্ত দণ্ড
দান করেন, সে মী, প্রাণ, ধন দারা হইতে অবিলম্পে পরিচ্যুত
হয় ॥ ১ • ॥

9

বন্ধুরাত্মাত্মনস্তদ্য যেনৈবাত্মাত্মনা জিতঃ। সএব নিয়তো বন্ধুঃ সএব নিয়তোরিপুঃ॥ ১১॥

'বেন' 'আগুনা' স্থেন 'আগুন' 'জিতঃ' বশীকৃতঃ 'তদ্য' 'আগুনঃ' 'আগুা' 'এব' স্থএব 'বফুঃ'। 'সঃ' 'এব' আইগুব 'নিয়তঃ বন্ধু: সঃ এব নিয়তঃ বিপুঃ'॥ ১১॥

আত্মা দ্বারা বে আত্মা বলী চুক হইয়াছে, দেই আত্মাই আত্মার বন্ধু। আত্মাই নিয়ত বন্ধু এবং আত্মাই নিয়ত রিপু ॥ ১১॥

আয়াতে নানাপ্রকার প্রবৃত্তি আছে; সকল প্রবৃত্তিই আপনার আপনার বিষরে লইয়া যাইবায় নিমিত্ত আয়াকে আকর্ষণ করিতেছে। আয়া বদি কেবল এই সকল প্রবৃত্তি-প্রোতে অবগাহন করিয়া থাকে, তাহা হইলে তাহার হর্দ-শার পরিসীমা থাকে না। এই জন্ত ঈবর তাহাকে কর্তৃত্ব-শক্তি দিরাছেন; তাহা ছারা আয়া আপনার প্রবৃত্তি সক- লকে ৰশীভূত করিয়া কল্যাণমর পথে অঞ্সর হইতে পারে। মসুষ্য এইরপে আপনাকে দমন করিতে না পারিলে আপ-নিই আপনার বেরূপ অনিষ্ঠ করে, অন্ত লোকে সেরূপ করিতে সমর্থ নহে এবং আপনি আপনার প্রভু হইয়া বেরূপ আপনার হিত সাধন করিতে পারে, অঞ্চলোকে সেরপ কিছুই করিতে পারে না। অতএব আপনাকে শাসনে রাথিয়া আপনার মক্ষল করিয়া আপনার সহিত বছুতা করি-৫বক; আপনি আপনার শত্রু হইবেক না। কর্ত্তু সহকারে আপনি আপনার প্রভু হইয়া থাকিবেক; মঙ্গলের পথে বণপুর্ব্বক আপনাকে চালন। করিবেক। বদি কোন আন্ত-রিক রিপু প্রবণ হইয়া ভাহাত্তে বিম্ন দের, বলপুর্বাক ভাহার বাধা অভিক্রম করিবেক। কথনই আয়ুশাসনে আলস্য ও পদাস্য করিয়া আপনাকে স্বেচ্ছাচারী হইতে দিবেক ना। সর্কান্ত:করণে ঈশবের অমুগত হুইরা চলিলেই আপ-নার সহিত বন্ধুতা করা হইবেক ১১১ ১

৩৯

প্রাপ্যচাপ্যত্তমং জন্ম লব্ধন। চেল্রিয়সোর্চকম্।
ন বেত্যাত্মহিতং যস্ত সভবেদাত্মদাতকঃ ॥ ১২ ॥

'रः जू' 'छेडमः' मानवः 'क्या' 'खाना' 'ठ जिने' 'रेक्षियरमोईवम्' रेजियारेवक्ष गाः 'नव्स्ता ह' 'जास्थिसः' 'ন বেত্তি' ন জানাতি 'দঃ' 'আর্ঘাতকঃ' আর্ঘাতী 'ভবেং' ভবতি॥ ১২॥

উত্তম মানব-জন্ম প্রাপ্ত হইয়া এবং ইন্দ্রিয়-সেচিব লাভ করিয়া যে ব্যক্তি আত্ম-হিত না জ্ঞানে, সে আত্ম-ঘাতী হয়।। ১২॥

দর্মনা আয়ার হিত চিন্তা করিবেক। কি প্রকারে আয়া জ্ঞান ও ধর্মে উন্নত হয়, কি প্রকারে ঈশ্বর-প্রেম ও পবিত্রতা পরিন্দ্রিত হয়, এবং কি প্রকারে ঈশ্বরের সহিত মিলিত হইয়া য়ায়া মুক্তি লাভ করিতে সমর্থ হয়, তাহার উপার সকল অন্সন্ধান করিবেক; আয়ার অনন্ত জীবনের অপরিমেয় দীর্মতা শ্রমণ করিয়া তাহার সম্প্রতাগ করিবেক। ফ্রতা ও মলিনতাতে আসক্তি পরিত্যাগ করিবেক। যাহা অনন্ত কালের জন্ত আয়ার হিতকর হইবে, তাহাই গ্রহণ করিবে। পাপাচরণ করিলেই আপনার অনিষ্ঠ করা হয়। অত্রব আপনি আপনার অনিষ্ঠ করা লামাকে কিনাশ করিবেক না, এমন উৎকৃত্র মানব-জন্ম পাপাচার ছারা মলিন করিরা রাবিবেক না ॥ ১২॥

8 .

পূৰ্বং বয়দি তৎকুৰ্য্যাৎ যেন বৃদ্ধঃ স্থধং বদেৎ। যাৰজ্জীবেন তৎ কুৰ্য্যাৎ যেনামূত্ৰ স্থধং বদেৎ॥১০॥ '(यन' कर्मण 'तृषः' मन् 'प्र्यः' यथा मार उथा 'वरमः' 'उद' कर्म 'भूक्र वम्रमि' भूक्षवम्रमि 'कूर्याद'। '(दन' 'अमूब' भत्रब लाटक 'स्र्यः' 'वरमद उद' 'यावच्छोरवन' यावच्छोरटनन 'कूर्याद'॥ ১৩॥

প্রথম বরসে সেই কর্মা করিবেক, যদ্ধারা র্দ্ধকালে স্থাধ থাকিতে পারে; আর যাবজ্জাবন সেই কর্মা করি-বেক, যদ্ধারা পরকোকে স্থাধী হইতে পারে ॥ ১৩ ॥

কেবৰ বৰ্জমান স্থাপের লোভে মুগ্ধ ও মত হইয়া ভবিষ্যং চিম্বা পরিত্যাগ করিবেক না। যাহা কেবল অদ্যকার জন্ম মুখকর, তাহার অঞ্রোধে চিরস্থারী মললে অবছেলঃ করি-(तक ना। दक्ष की इन दक्षेत्र नहेश वाना ७ शोवन অভিবাহিত করিবেক না; ধর্মশিকা জ্ঞানশিকা ও পরি-শ্রম অভ্যাস প্রভৃতি বাল্য ও ধৌবনের কার্য্য সকল বন্ধ পূর্বক অফুষ্ঠান করিবেক, নতুবা বৃদ্ধকাল কেবল হু:খ ও বিরক্তি ভোগের আধার হইরা থাকিবেক। এবং চির্জীবন ঈশর-পরায়ণ হইয়া তাঁহাতে প্রীতি বৃদ্ধি ও তাঁহার প্রিয়-কার্য্য অমুষ্ঠান করিবেক তাহাতে পরলোকে সদ্পতি লাভ इटेटका। यनि ऋगञ्जाती श्रायत सना वास इटेबारे अथम रम्म अञिवाहिक क्य, मत्न क्त्रिया (मथ, यथन वृक्षकान छेन-ष्टि बहेटन, यथन भन्नीत नगरीन बहेता পড़िटन, यथन हे जिल्ल-গণ জার্ণ হইলা যাইবে, তথন শাস্তি ও আরামের কোন ভরদা থাকিবে না। আলোচনা করিয়া দেখ, যদি পৃথিবীয় স্থাই সর্বাই ভাবিয়া নির্মিচারচিত্তে চিরন্ধীবন তাহারই সেবাতে আসক্ত হইরা থাক, যদি জ্ঞান, ধর্ম, পবিত্রতা সঞ্চয় করিতে না পার, তাহা হইলে যধন পৃথিবী পরিভ্যাস করিয়া এমন স্থানে বাইবে বে, দেখানে পৃথিবীয় কোন বন্ধ সংস্কুলইতে পারিবে না, তথন কি বন্ধণা উপস্থিত হইবে; কোন না, সেথানে বাহা আবশ্যক, তাহা ভোমার নিকটে কিছুই নাই॥ ১৩॥

83

নাভিনন্দেত মরণং নাভিনন্দেত জীবিতম্। কালমেব প্রতীক্ষেত নির্দ্দেশং ভূতকে। যথা ॥১৪॥

'মরণং' 'ন অভিনন্দেত' ন কামরেৎ 'জীবিতং' চ 'ন অভিনন্দেত'। কিন্ধ 'কালম্ এব' 'প্রভীক্ষেত' অপেক্ষেত 'ঘণা' 'ভূতকঃ' 'নির্দেশং' নির্দিশ্যতে অসৌ নির্দেশো ভৃতিঃ তৎপরিশোধনকালং তথা ॥ ১৪॥

মরণকেও ইচ্ছা করিবেক না এবং জীবনকেও ইচ্ছা করিবেক না; কালকেই প্রতীক্ষা করিয়া থাকিবেক, বেমন কর্মচারী ভৃতিলাভের কালকে প্রতীক্ষা করে ॥১৪॥

আপনার অনিত্য জীবন বিস্তৃত হইরা পার্থিব বিষয়ে মুগ্র হইরা থাকিবেক না এবং প্রলোকের প্রতি দৃষ্টিপাত, করিয়া ঐহিক জীবনে উপেকা ও অবহেলা করিবেক না।
ঈশর আমাদের সমস্ত জীবনের প্রভু; তিনি যত দিন পৃথিবীতে রাথেন, সম্ভই চিত্তে তাঁহার আজ্ঞা বহন কর; তিনি
যথন লোকান্তরে লইয়া যাইতে মৃত্যুকে প্রেরণ করিবেন,
শ্রোকশ্ন্য হইয়া তাঁহার আজ্ঞার সম্ভই হইবে। আপনার
আশা ভূলোকেও বদ্ধ করিও না, ছালোকেও বদ্ধ করিও না;
সেই পরম লোক পরমেশ্বরে তাহা সংস্থাপিত করিয়া
রাথ॥১৪॥

পঞ্চমোইধ্যায়ঃ।

83

সভোষং পরমাস্থায় স্থার্থী সংঘতে। ভবেৎ। সভোষমূলং হি স্থাং ছঃথমূলং বিপর্যায়ঃ॥ ১॥

'স্ধার্থী' স্থপ্রার্থক: 'পরং' 'সজোষম্' 'আছার' অব-লয়া 'সংষত:' 'ভবেং'। 'হি' বসাং 'স্থং' 'সজোষমূলং' সজোষত্ত্কং 'বিপর্যার:' অসজোব: 'ছংথমূলং' ছংখ-কারণম্॥ ১ ।

ন্থাৰ্থী ব্যক্তি সংস্থাৰ অবলঘন করিরা সংবঙ থাকিবে; বে হেতু সস্তোৰই স্থাধির মূল এবং ভদ্বিপরীঙ অসম্ভোষই ছুংধের মূল্যা_১। বে ব্যক্তি বেমন যোগা, ঈশর ভাছাকে তদমূরণ অধ প্রদান করেন। অভএব আপনার বোগ্যভার অম্বরণ অধ লাভ করিয়া পরিভৃপ্ত হইবেক। যে ব্যক্তি বোগ্যভার অভীত অথ প্রার্থনা করে, ভাছাকে ছরাকাজ্য কহে। ছয়াকাজ্যার বশীভৃত হইয়া অনর্থক অসব্তই হইবেক না; ভাছাতে বাহা আকাজ্যা করিবে, ভাছার নিমিত্ত অকারণ কট্ট ভোগ হইবে, এবং উপস্থিত অথেরও আস্বাদন পাইবেনা। অভএব অথবাতা ঈশর ভোমার সাধ্য ও চেটাম্বারী বে অথ প্রদান করিবেন, কৃতজ্ঞ চিত্তে ভাছা গ্রহণ করিয়া সম্বন্ধ হইবে। ধন মান পদম্যাাদ। প্রভৃতি কোন বিবরের নিমিত্ত ছরাকাজ্য হইবে না॥ ১॥

89

অনভোষপর। মৃঢ়াঃ সম্ভোষং যান্তি পণ্ডিতাঃ। অভে। নান্তি পিপাসায়াঃ সম্ভোষঃ পরমং স্থম ॥২

'মৃঢ়াঃ' মৃথাঃ 'অসজোবপরাঃ' 'পগুডাঃ' 'দজোবং বাকি' মঙ্কী ছবজি। যতঃ 'পিপাদারাঃ' বিবরত্কারাঃ 'অসঃ ন অভি' অপি তু 'দজোবঃ প্রমং স্থেম্'॥ ২॥

মূর্বেরাই অসন্তোষ-প্রায়ণ হয়, আর পণ্ডিতেরা সন্তোষ অবলখন করেন! বিষয়ত্ফার জন্ত নাই, সন্তোষ পরম সুধা ১ ৪

যতই বিষয় ভোগ করিবে, বিষয়-তৃঞা ভতই বৃদ্ধি পাইবে। এক বিষয় হন্তগত কর, আবার বিষয়ান্তরে মন अधाविक हरेत्व धवः जाहा नाच कतित्न भूनर्यात अना বিষয়ের জনা লালায়িত হইবে। পণ্ডিতেরা বিষয় ভ্ষার এইরূপ প্রকৃতি দর্শন করিয়া সম্ভোষ অবলম্বন পূর্ব্বক স্থুখী হন এবং প্রকৃত তপ্তির স্থান সংসারের অতীত জানিয়া সংসারে আদক্তি পরিত্যাগ করেন। স্থলদর্শীরা ভাষা না জানিয়া বাহ্ন আড়ম্বরই স্থাবের কারণ বলিয়া স্থির করে, এবং **বেধানে যত অধিক বাহ্য বিষয় দুর্শন করে. সেধানে তত** অধিক স্থপ আছে বলিয়া বোধ করিয়া থাকে, কিন্তু ভাহারা हेश कारन ना रव राहा विषय्त्रत्र नानाधिकुर शिक्टन । स्वयं अ তঃখ ভোগের পরিমাণ সর্বতেই সমান। এই জন্য তাহার। মুখবছের স্পর্নমণি-স্বরূপ সন্তোষ অবলম্বন করিতেনা পারিয়া সর্বান্ট অন্ধবিত থাকে। অতএব বিষর তঞা खग्न कतिका मरस्राय अस्ताम कवित्वक ॥ २ ॥

88

স্থক্ঃখং হি পুরুষঃ পর্যায়েণোপদেবতে।
স্থমাপতিতং দেবেৎ ছঃখমাপতিতং বহেৎ॥॥
'হি' যুখাং 'পুরুষঃ' 'পুরুষঃখং' সুধ্য ছঃখ্য তং 'প্রাা-

েনে' ক্রমেণ 'উপদেবতে'। তন্মাং 'আপতিতম্' আগতং ু 'স্ল্যং' 'সেবেৎ' সেবেত 'গু:খং আপতিতং বহেং'॥ ৩॥

মনুষ্য পর্যাযক্রমে সুধ হুংখ ভোগ করেন। সুধ উপস্থিত হইলে ভাষা সম্ভোগ করিবেক এবং হুংখ উপ-স্থিত হইলে ভাষা বহন করিবেক॥ ৩॥

মঙ্গল-স্বৰূপ ঈশ্বৰ নির্ম্ভর আমাদিগের ত্রাব্ধান করি-তেছেন, যে উপাধে আমানিগের মঙ্গল হইবে, ভিনি তাহাই বিধান করেন যখন আমবা তাঁহার অভাই কলাগ্ময় পণে গ্রম করি, তথ্ন তিনি স্থপ্ত, আগ্রপ্রদাদ ও ব্রহ্মানন্দ ্প্রদান কবিয়া সামাদ্রিগ্রুকে পুরস্কুত বরেন এবং যথন তাঁহার মঙ্গলময় আংদেশ না ভূনিয়া অপথে পদার্পন করি, তথন তিনি পুনর্বার সংপথে আনম্বন কবিবার নিমিত্ত স্থা ও সম্পত্তি হইতে আমাদিগকে বিচ্যুত করেন, তখন আমরা ত্রংখ ও মানি ভোগ করিয়া চেতনা লাভ করি। স্থাধ ছঃথ উভবই ঠাহার মঙ্গল অভিপ্রায় সংসাধনের জন্য পর্য্যায়-ক্রমে পর্যাটন করিতেছে; চ্বর্বণ মহুবাকে উভয়ই ভোগ ক্রিতে হয়। অতএব স্থুপ উপস্থিত হুইলে কুতজ্জচিতে তাঁহার প্রদান বলিয়া ভোগ করিবেক এবং ছঃখ উপস্থিত হইলে তাহাও মঙ্গলের জন্য আসিয়াছে জানিয়া শান্তচিত্তে শ্ভাহা বহন করিবেক ও সর্ম্মদা তাঁহার কল্যাণ্ময় আদেশের অমুদ্রণ করিবেক 🛭 🤊 🛭

84

ন নিত্যং লভতে ছঃখং ন নিত্যং লভতে স্থেম্। শরীরমেবায়তনং ছঃখদ্য চ স্থেদ্য চ ॥ ৪ ॥

'ন নিত্যং লভতে হ:খং ন নিত্যং লভতে স্থধ্'। 'শরী-শ্বম এব' 'আয়তনম্' আগ্রয়: 'হ:খস্য চ স্থাস্য চ' ॥ ৪॥

চির কাল ছুংখ থাকে না এবং চির কালও সুখ লাভ হয় না। শরীর, সুখ ও ছুংখ উভয়েরই আয়-ভন্য ৫।।

ম্পও চিরস্থারী নহে, গ্রংখও চিরস্থারী নহে; একমাত্র
মলনই চিরস্থারী। বধন স্থ্-সম্পদে আমাদের মলন
ছইবে তথন তিনি তাহাই প্রদান করেন; বধন গ্রংখ বিপদে
আমাদের মলন হইবে, তখন তিনি তাহাই প্রেরণ করেন।
ম্বপ্ত গ্রংপ উভরই অপূর্ণ-প্রস্কৃতি মন্ত্রাকে মলন রাজ্যের
সন্নিহিত করিতেছে। অতএব মুখ্ ও গ্রংখর প্রতি নির্বশক্ষ হইরা একমাত্র মলনকে লক্ষ্য করিরা চলিবেক।
ক্ষান বা তাহার মলন অভিনার সম্পাদনের জন্ত ইছোপুর্বাক
ম্থ-সম্পত্তি বিস্ক্রন করিতে হইবে ও গ্রংখ বিপদ্ আনিজ্ন এ
করিতে হইবে। তথনকার সেই গ্রংখ বিপদ্ আমাদের
পরম সম্পদ্ ॥ ৪ ॥

86

হ্রথং বা যদি বা ছঃখং প্রিয়ং বা যদি বাপ্রিয়ম্। প্রাপ্তং প্রাপ্তমুপাদীত হৃদয়েনাপরাজিতা ॥ ৫॥

'স্থং বা যদি বা ছ:খং প্রিয়ং বা যদি বা অপ্রিয়ন্। 'প্রাপ্ত' প্রাপ্তং' তং সকান্ 'অপবাজিত।' অপবাভূতেন 'গদ-যেন' মননা 'উবাসাত' কীক্রাদিত থং॥ ৫॥

স্থাই হউক কিংবা হুঃধই হউক, প্রিয়ই হউক বা অপ্রিয়ই হউক, যাহা ঘটিবেক, অপরাজিত চিত্তে তাহার সেবা কবিবেক॥ ৫

স্থাই হউক, আব জংগই হউক; প্রিয় ঘটনাই হউক,
আব অপ্রিয় ঘটনাই হউক, সর্কানা এই লক্ষ্য বাণিবে,
যেন তাহাতে কান্য অভিভূত না হয়। কান্য অভিভূত
হইলেই কিংকর্ত্তব্য বিমৃত ও অবস্থাস্রোতে নিমগ্ন হইয়া
নানা অনিষ্ঠ ভোগা কবিতে হইবে। অভএব ঈংবের
মঙ্গলম্বরূপে প্রানায়িত চিত্তে একান্ত নির্ভিব কবিয়া স্থা জংখ
ও সম্পদ্ বিপদের বলকে পরাজ্য করিবে। নিন্চয় জানিবে,
সর্বাদনী সর্বাশক্তিমান্ পূর্ণমঙ্গল পরমেশ্বর জীবিত, তাগরিত
শিক্ষামাদের স্থিহিত আছেন; প্রভূত স্থা সম্পত্রি সমশ্বর তাঁহাকে বিশ্বত হইবেনা। ঘোরতব ছংগ বিপত্রির

সময়েও তাঁহাকে বিশ্বত হইবেনা। সুথ ছ:থ ও সম্পদ্ বিপদ্ সকলেরই পশ্চাদ্ভাগে তাঁহাকে বর্ত্তমান জানিবে, এবং সম্দায় ভেদ করিয়া তাঁহাকে দর্শন করিতে অভ্যাস করিবে; তাহা হইলে হাদয়কে কেহ পরাজ্য করিতে পারিবেনা । ৫॥

89

প্রিয়েনাতিভূশং হৃষ্যেদপ্রিয়ে ন চ সংজ্রেৎ। ন মুহ্যেদর্থকৃচেছ্যু নচ ধর্মং পরিত্যজেৎ॥৬॥

'প্রিয়ে' প্রাপ্তে 'অভিভূশন্' অত্যর্থং 'ন' 'হ্রোং'ন মোদেত 'দ্প্রিয়ে' 'চ' 'ন' 'দংজ্রেরং — ন গ্লেষ্ট্র। 'অর্থ-ক্ষেত্রু' অর্থাভাবতেত্কেরু বহুদ্পি ক্টেরু সংস্থ 'ন মুফ্রং' ন মুফ্রোভবেং। 'ন চধ্যং প্রিত্যজ্বেং'॥ ৮॥

প্রিয় লাভ হইলে অতিমাত্র হুস্ট হইবেক না এবং অপ্রিয় ঘটনা হইলেও ডিয়েমাণ হইবেক না। ধনকৃষ্ট হইলে মুগ্ধ হইবেক না এবং ধর্মকে পারভ্যাগ করি-বেক না। ৬।

প্রির ঘটনার আফলাদে মন্ত ইইবেক না এবং অপ্রির ঘটনার বিষাদে নিমগ্ন ইইবেক না। অতিমাত্র হর্ষ ও অভি-মাত্র বিষাদ উভয়ই বিবেক শক্তিদকে অপহরণ করে; অবি-বেকী মহুধ্য কার্য্যাকার্য্য-বিমৃত ইইয়া নানা অনর্থে নিপ্তিত

হয়। ঈর্বকে সকলের মূলাধার জানিরা সম্পংকালে নম হইরা পাকিবেক এবং বিপংকালে ধর্মের অভুগত হইয়া তাহার প্রতিকার-চেষ্টা করিবেক। যে সকল অপ্রিয় ঘটনা व्य প্রতিবিধের তাহ। देशगावनधन পূর্বক বহন করিবেক। ইহাও বিচার করিয়া দেখিবেক, আমরা যাহা প্রিয় ভাবিয়া উন্নিত হইতেছি, তাহা বাস্তবিক হিতকর না হইতে পারে এবং বাহা অপ্রিল্প ভাবিরা ভীত হইতেছি, তাহা বাল্ডবিক হিতকর হইতে পারে। দারিদ্র-ছ: খে নিপতিত হইলে হর্ববন্ধন মহুষ্য ন্যায়পথ অতিক্রম করিয়া জীবিকালাভের ষ্ঠলৈ পায়: কিন্তু ইহা বিশ্বত হইয়া বার বে, একণে মাহা ছ: ধ হইতে পরিত্রানের উপায় বলিয়া মনে হইতেছে, পরিণামে তাহাই ঘোরতর ছঃখ উপস্থিত করিয়া দিবে। অতএব ষদি ছ:বের ভরে এই ক্ষণভঙ্গুর শরীর ভগ হটগা যায় তথাপি ধর্মকে পরিত্যাগ করিয়া আয়োকে অপবিত্র কবি-বেক না 1 ৬ 1

81

সম্ভাপাৎ ভ্রশ্যতে রূপং সম্ভাপাৎ ভ্রশ্যতে বলম্। সম্ভাপাদ্ভুশ্যতে জ্ঞানং সম্ভাপাদ্যাধিমৃচ্ছতি ॥৭॥

'দকাপাং' দকাপেন হেতুনা 'ল্লগতে' নল্যতি 'রূপং' ভবা 'দক্ষাপাং ল্লগতে বৃদ্ধ'। 'দক্ষাপাং ল্লগতে জ্ঞানং' 'দক্ষাপাং ব্যাধিম্' 'ঋছিতি' প্রাপ্রোতি ॥ ৭ ॥ তাহাতে বিশ্বিত হইবেক না ও চঞ্চল হইয়া আপনার যশোপান করিতে উন্তত হইবেক না; সকল কার্য্যে আপনার
ধন্মজ্ঞান পরিতৃপ্ত হইলেই স্বন্ধং পরিতৃপ্ত থাকিবেক।
শেখানে আপনার কথা আপনাকে ব্যক্ত করা আবশ্যক
হইবেক, দেখানে যে পরিমাণে আবশ্যক, তাহার অতিরিক্ত
কহিবেক না।

পন্মেশ্বব বাঁহাকে যে প্রকার শক্তি দিয়াছেন, তাঁহাকে সেই প্রিমাণে তাঁহাব প্রিয়কার্য্য অনুষ্ঠান করিতে হইবে; কিন্তু সেই শক্তি লইরা আত্মাঘা করিবেক না। মুড়েরা পৌক্ষের কার্য্য অপেকা আত্মাঘা করিতেই অধিক ভাল বাসে; ধীনেরা মৌনী পাকিয়া আপনার সমন্ত প্রভাব ইশ্ববেব বার্য্যে উৎসর্গ কবেন।

শোপন রাথিবার নিমিত্ত যাহা কথিত হইবে, তাহা অত্যেব নিকট ব্যক্ত করিবেক না; করিলে বিশাস-ঘাতক হইবেক। কেহ যদি বক্তা কালে গোপনে রাথিবার অভি-প্রাণে কোন কথা কহিয়া থাকে, পশ্চাং তাহার সহিত বক্তাব বিচ্ছেদ হয়, তথাপি সেই গুপ্ত কথা যত্তপূর্বক গোপন করিয়া রাথিবেক।

আত্মকৃত পরোপকার ক্রিয়া আপনার মুখে ব্যক্ত করি-বেক না; তাহা হইলে তাহার গৌরব ও মহত্ব বিশুপ্ত হয় প্রতাহা ধর্মের রূপ পরিত্যাগ করে॥ ১ ॥ (0

সত্যং মৃদ্র প্রিয়ং বাক্যং ধীরো হিতকরং বদেৎ। আত্মোৎকর্ষং তথা নিন্দাং পরেষাং পরিবর্জ্জয়েৎ॥২

'मजार' बर्शानृहेक्षकः 'मृष्' क्लामनः 'खिषः' खीजिनः 'हिंककदः' 'वाकाः' 'बीदः' धीमान् 'वरन्द' मर्द्काणः । 'खारबारकर्मम्' का प्रच्चितः 'ज्ञा' 'शरद्वनाः' 'निन्नाः' 'शद्वि-वर्करप्रदे॥ २॥

ধীর ব্যক্তি সভা, মৃহ্, প্রিয় ও হিতকর বাকা বিল-বেন, এবং আত্ম-প্রশংসা ও পরনিন্দা পরিভ্যাগ করি-বেন॥ ২॥

মন যাহা জানিতেছে, বাক্যে তাহার অন্তথা করি-বেক না; যাহাতে লোকে ওাঁহার মনোগত অর্থ গ্রহণ করিতে না পারিয়া সংশ্যযুক্ত হয়, এরূপ কঠিন বাক্য কহি-বেক না; এবং আমার মনোগত অর্থ না বুঝিয়া লোকে অন্ত প্রকার অর্থ গ্রহণ করুক, এরূপ অভিপ্রায়ে কোন বাক্য উচ্চারণ করিবেক না; যাহা সভ্য বলিয়া জানিবে, বলিবার মমরে তাহা অবিকল ব্যক্ত করিয়া বলিবেক। লোকের কল্যে বেদনা প্রদান করিয়া কঠোর বাক্যেও সম্ভাব্দ করা ঘাইতে পারে, হলয়গ্রাহী কোমল ভাবেও তাহা সম্পন্ন হইতে শারে; যাহানের হলয় ক্ষুদ্র, তাহারা কঠোর বাক্য ব্যবহার করে; তাহা কর্ত্তব্য নহে। ক্ষুদ্রতা ও কঠোর বাক্য পরিত্যাগ করিরা সন্ধার হইরা কোমল বাক্যে সকলের সির্বিত্ত
সন্থাবণ করিবে। কাহারও হৃদরে আঘাত দিবার নিমিত্ত
অপ্রের বাক্য কহিবেক না এবং সকলের হিত লক্ষ্য করিয়া
হিত বাক্য কহিবেক। আন্তর্লাঘা করিবেক না এবং আন্তর্লাঘা লক্ষ্য করিয়া আপনার কথা অধিক করিয়া কহিবেক
না। পরনিন্দা করিবেক না; জন্যার করিয়া পরের ধনসম্পত্তি গ্রহণ ও অন্যার করিয়া পরের খ্যাতি সম্পত্তি হরণ
উভরই সমান। কাহাকেও সংশোধনের জন্য অথবা জগতের হিত সাধনের জন্য বদি কাহারও দোষ উল্লেখ করা
নিতান্ত আবশ্যক হয়, তাহা সদর হৃদরে উচ্চারণ করিবেক। ২ এ

63

সত্যমেব ব্ৰতং যশ্ত দয়। দীনেয়ু সর্বদা।
কামকোধে বশে যদ্য তেন লোকত্রয়ং জিওম্॥৩
'গভ্যন্ এব ব্ৰতং বদ্য' তথা 'দীনেয়ু দর্বদা' 'দলা'
'কামকোধে' কামক কোষক তৌ 'বদা' 'বশে' অধীনভালাং বর্ততে 'ভেন' বশিনা 'লোকত্রন্নং' 'জিভং' বশীকৃতম্॥৩॥

সভাই বাঁছার এভ, এবং সর্বাদা দীনেতে বাঁছার

দরা এবং কাম ক্রেণে ধাঁছার বশীভূত; তাঁছার দ্বারা তিন লোক জ্বিত হইয়াছে। ৩॥

দর্জনা সত্যপ্রত থাকিবেক, মনকে সত্যের অনুগত করিবেক, বাক্যকে সত্যের অনুগত করিবেক এবং আচরণকে
সভ্যের অনুগত করিবেক। দীনের প্রতি সর্কাদা দরাবান্
থাকিবেক; যে ব্যক্তি ধর্মেতে দীন, ভাহাকে ধর্মোপদেশ
প্রদান করিবেক; যে ব্যক্তি জানেতে দীন, ভাহাকে ধন দান
দান করিবেক: যে ব্যক্তি ধনেতে দীন, ভাহাকে ধন দান
করিবেক। কাম ও ক্রোধকে বশীভূত করিবেক; এই হই
রিপুপ্রবল হইলে মনুষ্য অনেক্রিধ পাপাচারে প্রবৃত্ত হয়।
কামকে জয় করিবার নিমিত্ত ভাহার বিষয় হইতে চিন্তাকে
পূথক্ করিবেক এবং ক্রোধকে জয় করিবার নিমিত্ত ক্ষমা
অভ্যাদ করিবেক ॥ ৩॥

C2

বিরক্তঃ পরদারেয়ু নিস্পৃহঃ পরবস্তায়ু।
দন্তমাৎদর্যাহীনো যতেন লোকতায়ং জিতম্॥ ৪ ॥

'ধঃ' 'পর্দারেষ্' পরপত্নীবিবরেষ্ 'বিরক্র:' বিগভাস্রাগঃ
তথা 'পরবস্তম্' 'নিস্পৃহ:' স্পৃহারহিতঃ 'দন্তমাৎস্ব্যূহীনঃ'
দিন্তঃ কৈতবেন ধর্মচর্বং মাৎস্ব্যুমন্য ভাতব্যঃ ভাজাং
রহিতঃ 'তেন' তাদুশেন প্রাজ্ঞেন 'বোক্তবং দিত্ম্' ॥ ৪ ॥

যিনি পরস্ত্রীতে বিরত, যিনি পরক্রব্যে নিম্পৃহ, যিনি দন্ত মাংসর্য্য বিহান, ওঁছোর দ্বারা তিন লোক জিত হইয়াছে॥ ৪॥

আনক্রচিত্তে প্রস্থীকে দর্শন করিবেক না, চিন্তা করি বেক না, স্পর্শ করিবেক না। সম্পার পরকীর বস্ততে স্পৃহাশূন্য হইরা আপনার ন্যায়োপার্জিত বিষয়ে পরিতৃপ্ত থাকিবেক। দন্ত ও মাৎসর্য্য পরিত্যাগ করিবেক। ছলনা পূর্বক ধর্মাচরপের নাম দন্ত ও অন্যের মঙ্গলে বেষ করা মাৎস্থা। লোককে ভূলাইবার কামনা পরিত্যাগ করিরা সর্বাদ্শী ঈশবের দৃষ্টিতে ধার্মিক হইবেক। ঈশবের ন্যায় সকলকে শ্রীতি করিতে অভ্যাস করিবেক, তাহাতে মানসিক ফীণতা হইতে উৎপন্ন মাৎস্থ্য অন্তর্হিত হইবেক॥ ৪ ৪

40

ন বিভেতি রণাদ্যোটেব সংগ্রামেছপ্যপরাগ্ন্ধঃ। ধর্মাযুদ্ধে মৃতোবাপি তেন লোকত্রয়ং জিতম্॥৫॥

'যঃ বৈ' 'রণাং' যুদ্ধাং 'ন বিভেতি' ন জীতেভাতবতি
'সংগ্রামে অপি' যুদ্ধে চ 'অপরামুখঃ' ন প্লায়নপরায়ণঃ। '
'ধ্র্বুদ্ধে মৃতঃ বা অশি' 'তেন লোক বলং জিতম্'॥ ৫॥

যুদ্ধে যিনি ভীত হয়েন না, সংগ্রামে যিনি পরাঙ মুখ

হয়েন না, ধর্ম-যুদ্ধে যিনি মৃতই বা হয়েন; ওঁহার স্থারা
ভিন লোক জিত হইয়াছে ॥ ৫॥

यक वहे अकात। याहार पर नाहे, जाहा अनाम-পুর্বাক গ্রহণ করিবার নিমিত্ত হুরাত্মারা যুদ্ধ করিয়া থাকে; हेहार्ड गाम्यक्रम केषरवत्र महिल विस्त्राधाहवन हम ; हेहा ধ্যাবৃদ্ধ নহে। অভায়াচরণ নিবারণ করিয়া ন্যায়ের দিংহা-সন প্রতিষ্ঠিত করিবার নিমিত্ত যে যুদ্ধ অমুষ্টিত হয়, তাহাকে প্রতিকারযুদ্ধ ও ধর্মযুদ্ধ কহে; ইহা দারা অন্যামের প্রতিকার ঁও ন্যায়কে রক্ষা করা হয়। কিন্তু ইহাও প্রেমস্বরূপ ঈশ্বরের রাজ্যে সামাত্ত শোচনীয় নহে। যে মহুষ্য পরস্পর প্রেমের সহিত আলিক্সন করিবেন, যাঁহারা সকলেই এক মক্সলম্বরূপ পিতার সমান সেহে প্রতিপাণিত হইতেছেন, তাঁহারা আপনাদের হস্ত পরম্পরের রক্তে দৃষিত করিনেন-এক ভ্রাতা আর এক ভ্রাতার শরীরে সাংঘাতিক আঘাত প্রদান করিবেন, ইহা মনে করিলেও বৃদ্ধ শোক হংথে আছের হয়: অতএব শাস্তিও ক্ষমা দারা স্তান্ন রকা হইলে ক্লাপি যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইবেক না এবং ধর্মযুদ্ধের ভাণ করিয়া আছ্র-স্তরিতাকে তৃপ্ত করিতে যাইবেক না। কিন্ত অকলাণ নিবারণের জন্য ধর্মমুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়া তীত ও পরামুধ हहेरवक ना॥ ८ ॥

&8

সত্যং ক্রয়াৎ প্রিয়ং ক্রয়াৎ ন ক্রয়াৎ সত্যমপ্রিয়ম্। প্রিয়ঞ্চ নানৃতং ক্রয়াদেষ ধর্মঃ সনাতনঃ॥ ৬॥

'সতাং জ্বাং প্রিয়ং জ্রাং' 'সতাম্ অপ্রিয়ং' 'ন জ্রাং'। 'প্রিয়ংচন' 'অনৃতং' নিথ্যা 'জ্রাং' 'এষঃ' 'সনা-তনঃ' নিতাঃ 'ধর্মঃ'॥ ৬ ?

সত্য কহিবেক ও প্রিয় কহিবেক; কিন্তু অপ্রিয় সত্য কহিবেক না, এবং প্রিয় মিখ্যাও কহিবেক না ইহা সন,তন ধর্ম।। ৬॥

যাহাতে সত্যের অপলাপ হয় না, অথচ লোকের প্রীতি উৎপন্ন হয়, তাদৃশ বাকাই কহিবেক এবং যত্ন পূর্বক তাদৃশ বাকা কহিবেক। যাহা সত্য, কিন্তু কহিলে কাহারও হাদ্যে আঘাত দেওয়া হয়, তাহা সংযত করিয়া রাখিবেক; ধর্মের অহ্রেক্সধে আবশুক না হইলে কহিবেক না; যদি একান্ত আবশুক হয়, দয়ার সহিত তাহা উচ্চারণ করিবেক; তাহা লইয়া কদাপি আমোদ আহলাদ করিবেক না এবং মনকেও আনন্দিত হইতে দিবেক না। প্রিয়্ন অথচ মিথ্যা একবারে পরিত্যাগ করিবেক। এইয়প বাক্সংযম নিত্যকর্ম জানিবেক॥ ৬॥

00

ৃঅন্তির্গাত্তাণি শুধ্যন্তি মনঃ সত্যেন শুধ্যতি। বিদ্যাতপোভ্যাং ভূতাত্মা বৃদ্ধিজ্ঞানেন শুধ্যতি॥৭

'গাজাণি' অঙ্গানি স্বেদাছাপ্ততানি 'অডিঃ' জনেন কালিতানি 'ভ্যান্তি'। 'মনঃ' ুনিষিদ্ধচিত্তনাদিনা দ্যিতং 'সভ্যোন' সভায়ভিষানেন 'ভ্যান্তি'। 'ভূতান্মা' জীবারা 'বিদ্যাতপোভ্যাং' অন্ধবিদ্যাতপোভ্যাং ভ্যান্তি। 'বৃদ্ধিঃ' বিপ্র্যার্জ্ঞানোপ্ততা 'জ্ঞানেন' যাথার্থোন 'ভ্যাতি'॥ ৭॥

জল দারা গাত্র-শুদ্ধি হয়, সত্য দারা মনঃ-শুদ্ধি হয়, ক্রিদ্যা ও তপ্স্যা দারা আত্ম-শুদ্ধি হয়, এবং জ্ঞান দারা বুদ্ধি-শুদ্ধি হয়॥ ৭॥

বাক্যে সভাবাদী ও বাবহারে সভাপরারণ হইবেক, তাহাতে অন্তরিপ্রিয় প্রসাদ লাভ করিরা পরিশুদ্ধ হইবেক। ব্রন্ধবিদ্যা বারা ব্রন্ধজ্ঞান সম্জ্রল করিবেক ও ঈশরের আদিট ধর্মাপ্র্ঠানরূপ তপশ্র্ব্যাতে নিযুক্ত থাকিবেক, তাহাতে আত্মা মোহ ও পাপতাই হইতে মুক্ত থাকিরা পরিশুদ্ধ হইবেক এবং জ্ঞানের অনুশীলন পূর্বাক বৃদ্ধিকে ভ্রম প্রমাদ হইতে মুক্ত করিরা পরিশুদ্ধ রাধিবেক। আপনাকে সর্বপ্রকারে শুদ্ধবন্ধ করিরা শুদ্ধ অপাপবিদ্ধ পর্বেশ্ব স্থিতিত হইতে থাকিবেক। গ্র

43

যোহন্যথা সন্তমাত্মানমন্যথা প্রতিপদ্যতে। কিং তেন ন কুতং পাপং চৌরেণাত্মাপহারিণা॥৮

'যং' কশ্চিৎ 'অক্তথা' অক্তপ্রকারেণ 'সক্তং' বিদ্যমানম্ 'আমানং' স্বম্ 'অক্তথা' প্রকারভেদেন 'প্রতিপদ্যতে' প্রতি-পাদয়তি। 'তেন' 'আয়াপহারিনা' 'চৌরেণ' 'কিং পাপং ন কৃত্য' অপি তু সর্কমেব কৃত্যমিত্যর্থঃ ॥ ৮॥

যে ব্যক্তি একপ্রকার হইয়া আপনাকে অন্য প্রকারে জানায়, সেই আত্মাপহারী চৌর কর্তৃক কি পাপ না হত হয়।। ৮॥

দর্মনা অকপট আচরণ করিবেক। এক প্রকার হইয়া লোকের নিকট আপনাকে অক্সপ্রকার প্রদর্শন করিবেক না। যাহা অসাধু বলিয়া জানিবে, লজ্জিত হইয়া ভাহা সর্কোতোভাবে পরিত্যাগ করিবেক; যাহা সাধু বলিয়া জানিবে, তাহা বাক্য ও কার্যো প্রদর্শন করিবেক॥৮॥

69

নাস্তি সত্যদমো ধর্মো ন সত্যান্বিদ্যতে পরম্।
ন হি তাত্রতরং কিঞ্চিদ্যতাদিহ বিদ্যতে । ৯॥
'সভ্যসমঃ' সভ্যেন ভুশ্যঃ 'ধর্মঃ' 'নাস্তি' 'ন' অপি 'সভ্যাঙ্

সতামপেকা 'পরং' প্রকৃষ্টিং 'ৰিফাতে' কিঞা 'অন্তাং' অস-তাাং 'তীব্রতবং' তীক্ষ্তরং 'কিঞাং' কিঞানাতাং 'ন হি' 'ইহ বিহাতে' ॥ ১॥

সত্যের সমান আব ধর্ম নাই, এবং সত্য হইতে প্রকৃষ্ট বস্তুও আর কিছু নাই, ইহলোকে মিধ্যার পর ভীত্র পদার্থও আর নাই।। ১॥

সভাই ঈশ্ববের ভাব, তাহাতেই ধর্ম প্রতিষ্ঠিত আছে।
আভএব জ্ঞান্য বা সত্য উপার্জন কবিবেক, সভ্যেব প্রতি
আদ্ধাবান্ হইবেক এবং আচরণে সত্যপ্রায়ণ ছইবেক।
মিথ্যা সর্বতোভাবে পরিত্যাগ করিবেক। মিথ্যা অপেশ।
আসহ্য, কঠোব ও অ্থাকর বস্তু আর কিছুই নাই। মিথ্যা
দ্বারা জ্ঞান মোহাচ্ছ্র হর এবং বাক্য ও আচবন অপ্রিএ
হয়। ১।

43

প্রিয়ো ভবতি দানেন প্রিয়বাদেন চাপরঃ। অপ্রিয়দ্য চ পথ্যদ্য বক্তা শ্রোতা চ চুল্লভিঃ॥১০

'প্রিয়: ভবতি দানেন' 'অপর:' কশ্চিং 'প্রিয়বাদেন চ' প্রিয়োভবতি। কিং 'চ' 'অপ্রিয়ন্ত' 'পথ্যন্ত' হিত্ত 'বকা শ্রোতা চ' 'হর্শতঃ' কুচ্ছেনুণ লভ্যতেইসৌ ॥ ১০॥

কেছ দানের স্বারা প্রিয় হয়, কেছ প্রিয় বাক্যেব

ছারা প্রিয় হয়। কিন্তু অপ্রিয় হিত বচনের বক্তা এবং শ্রোতাও চুর্লত ॥ ১০ ॥

হিতকর বাক্য সর্বানা প্রীতিকর হর না এবং প্রিয় বাক্যও অনেক সময়ে অহিতকর হইরা পাকে; কিন্তু বিনি শ্রোতার অসন্তোধ-ভয়ে হিত বাক্য না বলেন, তিনি ধথার্থ হিতৈবী নহেন এবং বিনি অপ্রেয় বলিয়া হিত বাক্য না শুনেন, তাঁহাকে ছঃখ পাইতে হয়। অতএব সকলের হিতৈবী হইয়া হিত বাক্য কহিবেক এবং কেহ হিতোপদেশ প্রাদান করিলে অপ্রিয় হইলেও শাস্ত হইয়া এহণ করিবিক ॥ ১০ ॥

मखरगांश्यागाः ।

ۈ

সমক্ষদর্শনাৎ সাক্ষ্যং আবণাচৈচ্ব সিধ্যতি। তত্র সত্যং ব্রুবন্ সাক্ষী ধর্মার্থাভ্যাং ন হীয়তে ১১

'সমক্ষদর্শনাং' সাক্ষাদর্শনাং 'প্রবণাং চ এব' 'সাক্ষ্যং' সাক্ষিত্বং 'দিধ্যত্তি'। 'ভত্ত' সাক্ষ্যে 'সাক্ষ্যি' 'সভ্যং' বথাদৃষ্ট-শ্রুতার্থং 'ক্রবন্' 'ধর্মার্থা ভ্যাং' 'ন হীরতে' ন বিশ্বসতে ৪ ১ ৪ সাকাং দর্শন ও শ্রেবণে সাক্ষিত্ব হয় । সাকী হইয়া সভাবলিলে ধর্মার্থ হইতে পরিজাই হয় না॥ ১॥

ঈশবের এই অভিপ্রায়, স্থার ও সত্য অয়ষ্ক হউক;
সাধুগণেরও এই কামনা, স্থার ও সত্যের অয় হউক। কিন্তু
অস্থার্য স্থার স্থারের অভিপ্রার শৃত্যন করিরা অস্থার প্রতি
অস্থারাচরণ করে। তাহার নিবারণ না করিলে লোকছিতিব অত্যন্ত ব্যাঘাত হয়। এই অস্থা বিচারপতি স্থার
অস্থার বিচার করিয়া স্থারের অন্ধ দান করেন, ইহাতে ধন্ম
স্থারকিত হয়। সাকী যথাদৃত, যথাক্রত বিবাদান্পদ বিষয়
বিচারপতিকে অবগত করিয়া ধর্মরক্ষার সহকারিতা করেন।
অত এব ধর্মাধিকরণে সাক্ষ্যদান ধর্মার্থের বিরোধী বলিয়া
বিবেচনা করিবেক না॥ ১ ৪

60

যথাঞ্চং যথাদৃষ্টং সর্বনেবাঞ্জদা বদ। সত্যেন পুয়তে সাক্ষা ধর্মঃ সত্যেন্ রক্ষ্যতে ॥২॥

বিধাশ্রতং বধাদৃষ্টং' দৃষ্টশ্রভানতিক্রমেণ 'সর্কাম্' 'অঞ্জন।' তব্তঃ 'এব' 'বদ' ক্রহি। বশ্বাং 'সত্যেন' কথনেন 'সাফী' পুরতে' পাপাং প্রামৃচ্যতে 'ধর্ম্মঃ' চ কান্ত 'সত্যেন' 'বর্দ্ধতে' বৃদ্ধিতে ॥ ২ ॥ यथा मृक्षे, यथा त्क्रांक मधूनाग्रहे यथार्थ विनाद । मजा-कथन खाता माकी छाठि हम धावश धर्मा तक्रिक हम ॥ २॥

সাক্ষী যথাদৃত্ত ষথাশ্রত সম্পার ষথার্থ কহিবেক অর্থাৎ
যথাজ্ঞাত অবিক্ল প্রকাশ করিবেক। বিনি অচক্ষে
দর্শন করিয়াছেন, তিনিই বথার্থ সাক্ষী, যাহা অজ্ঞের নিকট
শ্রবণ করা হইরাছে, তাহা সত্য না হইতেও পারে; অতএব
সাক্ষ্য-দান-স্থল শ্রতবিষয় হইতে দৃত্ত বিষয় পৃথক্ করিয়া
বলিবেক। সত্য সাক্ষ্য ধারা পুণ্য লাভ হয়, কেন না
তাহাতে ধর্ম কক্ষা পার। মিথাা সাক্ষ্য প্রদান করিলে
পাপ উৎপত্ন হয়॥২॥

43

য ্য বিদ্বান্ হি বদতঃ ক্ষেত্ৰজ্ঞো নাভিশস্কতে। তত্মান্ন দেবাঃ জোয়াংসং লোকেহতাংপুরুষংবিদ্ন:॥৩

'বস্যা' 'হি' 'বদতং' কথয়তঃ সাক্ষিণঃ 'বিখান্' চেতনবান্ 'ক্ষেজ্ঞঃ' জীবাস্থা কিমবং সত্যং বদত্যতানৃত্যিতি 'ন জভি-শহতে' নাশহতে কিন্তু স্ত্যুদেবারং বদতীতি নির্কিশছঃ সম্পদ্যতে। 'তত্মাং' পুরুষাং 'জনাং' 'লোকে' 'শ্রেষাংসং' প্রশন্তত্তরং 'পুরুষং' দেবাঃ' 'ন' 'বিহুং' ন জানন্তি॥ ৩॥

যে সাকীর সচেডন আত্মা মিথ্যা কহিয়াছি এইড

সন্দেহও করেন মা; দেবভারা এই লোকে ডাঁহা হইতে মার কাহাকেও শ্রেষ্ঠ বলিয়া জানেন না ॥ ৩॥

মনের অগোচর পাপ নাই; অতএব বে সাকী সাক্ষ্যদান-কালে মনে মনে এরপ বিশাস করিতে পারেন বে,
আমি যাহা কহিতেছি, তাহা মিথা৷ নহে; তিনিই সত্যবাদী সাকী, সর্বন্দী ঈশ্বর উাহার প্রতি প্রসর হয়েন ॥ ৩ ॥

७२

একোহহমস্মীত্যাত্মানং যত্ত্তং কল্যাণ মন্যদে। নিত্যং স্থিতত্তে হুছেষ পুণ্যপাপেক্ষিতা মুনি: ॥৪॥

কিঞ্চ হে 'কল্যাণ' হে ভদ্র 'এক:' এব 'অহম্ অস্মি' জীবাস্থক: 'ইভি' 'যং দম্' 'আস্মানং' 'মন্যমে' জানীদে দৈবং মংস্থা:। দক্ষাং 'এম:' 'পুণ্যপাপেক্ষিতা' পুণ্যানাং পাশানাঞ্চ জন্তী 'মুনি:' সর্ক্জ: পরমাত্মা 'তে' তব 'ক্ষি' ক্ষায়ে নিত্যং 'স্থিতঃ'॥ ৪॥

হে তন্ত্ৰ ! আমি একাকী আছি, এই যে তুমি মনে করিতেছ, ইহা মনে করিবে না ; এই পুণ্য-পাপ-দর্শী সর্ব্বজ্ঞ পুক্ব ভোষার ছাদরে নিত্য স্থিতি করিতেছেন ॥৪ হে সাকী, তুমি বাহিরেও বেমন একাকী নও, অন্তরেও সেইরাপ একাকী নও, পুণ্য পাপদর্শী সর্ব্বজ্ঞ পুরুষ ভোষার হৃদরে নিরস্কর অবস্থান করিতেছেন; তিনি প্ণ্যের প্র-স্বারক ও পাপের দণ্ডদাতা। হে ভল্র, ইহা ব্রিয়া সাক্ষ্য-দান কর। মিথ্যা সাক্ষ্য দিয়া আপনার মন্তক্ষের উপরে পরমেধরের বন্ধ আকর্ষণ করিও না॥ ৪॥

অফীমোইধ্যায়ঃ।

60

যং কল্যাণমভিধ্যায়েং তত্তাত্মানং নিয়োজয়েং। ন পাপে প্রতিপাপঃ দ্যাৎ সাধুরেব দদা ভবেৎ॥১॥

থিং' ষত্র 'কল্যাণং' মঙ্গলন্ 'অভিধ্যান্তের' অত্তবেৎ 'তত্র স্বাস্থানং নিযোক্ষরেং'। 'ন' 'পাপে' পাপিনি জনে 'প্রতিপাপঃ' পাপপ্রতিকারবান 'ফাং'। কিন্তু 'সদা' 'সাধু; এব' 'ভবেৎ'॥ ১ ॥

যাহা আপনার কল্যাণ জ্ঞানিবে তাহাতে আপনাকে নিযুক্ত করিবেক। পাপাচারী ব্যক্তির প্রতি পাপাচার করিবেক না, কিছু সর্বাধ সাধুই থাকিবেক ॥ ১ ॥

ষাহাতে মকল হইবে ভাহারই অনুষ্ঠান করিবেক। দীমর মললখরণ, মললই তাঁহার উদ্দেশ্য। যাত্রা এক স্থানের পক্ষে মঞ্চল ও আর এক জনের পক্ষে অমন্ত্রল, তাহা বাত্তবিক মঙ্গল নহে; খাহা কেবল অন্য মঙ্গল, পরদিনে অমঙ্গল,
তাহাও বাস্তবিক মঙ্গল নহে; সম্পায় মন্থ্যের পক্ষে যাহা
মঙ্গল ও অনস্ত কালের জন্য যাহা মঙ্গল, তাহাতেই আপনাকে নিয়োজিত করিবে। পাপকারীর প্রতি পাপাচার
করিবেক না; কেহ অন্যায় করিলে অন্যায় করিয়া তাহার
প্রতিকার করিবেক না। সর্জনা সাধু থাকিবেক, সাধু
উপায় অবলম্বন করিয়া অসাধু গার প্রতিবিধান করি বক;
ন্যায়পথে থাকিয়া অন্যায়াচারের প্রতিবিধান করিবেক;
কেবল নিজ ক্রোধের শান্তি করা অসাধুগণের কার্য্য, কিন্তু
আসাধুকে সাধুতা ঘারা শিক্ষা দান করিয়া জগতে শান্তি
বিস্তার করা সাধুগণের লক্ষ্য॥১॥

89

অক্রোধেন জয়েৎ ক্রোধম্ অসাধুং সাধুনা জয়েৎ। জয়েৎ কদর্য্যং দানেন জয়েৎ সত্যেন চানৃতম্ ॥২॥

'অকোধেন' কোধসংবরণেন 'ক্ষেৎ'কোধন্' 'অসাধুং' ভাবং ব্যবছারং বা 'সাধুনা' ভাবেন ব্যবহারেণ বা 'ক্ষেথ'। 'ক্র্যাং' ক্ষুত্রং অপকারিণমিত্তি বাবৎ 'লানেন' দানাদি-নোপকারেণেতি বাবৎ 'ক্ষেথ' 'সত্যেন চ' 'অন্তং' মিথ্য। ॥২

ক্ষমা ছারা ক্রোধকে জয় করিবেক; সাধুতা ছারা

অসাধুতাকে জয় করিবেক, উপকার দ্বারা অপকারীকে জয় করিবেক, এবং সভা দ্বারা মিধ্যাকে জয় করি-বেক॥২॥

শ্বয়ং অক্রোধ হইয়া কুদ্ধকে জ্বয় করিবেক; ক্রোধের বশীভূত হইবেক না, কিন্তু বিবিধ উপায়ে ক্রোধান্ধ ব্যক্তিকে প্রকৃতিস্থ করিবেক এবং যে সকল কারণে অনর্থক অন্তের ক্রোধ উদীপন করা হয়, তাহা দ্বীকৃত করিবেক। অসাধুকে সাধুতা হাবা জ্বয় করিবেক; কেহ অসহাবহার করিলেও তাহার প্রতি সন্তাব প্রদর্শন করিবেক। যে অহিতাদরণ করিবে, তাহারও হিতচিন্তাও হিতামুগ্রান করিবেক। অসত্যকে সত্য হারা প্রাজ্বয় করিবেক; এনাপণে সত্যকে অবলম্বন করিয়া থাকিবেক; সত্যই জ্বয়॥২॥

৬৫

কুশলঃ হথতুঃথেষু সাধৃংশ্চাপুগেদেবতে।
সত্যসাধুসমারভাৎ বুদ্ধির্ধান্মেষু রাজতে ॥ ৩॥
'হথত্থেষ্' হথেষু চ হংথেষু চ 'কুশলং' কুশলবভাবং
'সাধ্ন চ অপি উপনেবতে'। 'সত্যসাধুসমারভাৎ' সত্যসাধ্লক্ষণকর্মণঃ সমারভাৎ তদ্য 'বৃদ্ধিঃ ধর্মেষ্' 'রাজতে',
বিশ্বতি॥ ৩॥

স্থ হুংখেতে বিনি অবিচলিত থাকেন, এবং সাধু-দেবা করেন, সভা ও সাধু কর্ম্মের অনুষ্ঠান দ্বারা তাঁহার বুদ্ধি ধর্মপথে দীপ্তি পায়॥ ৩॥

স্থা ও ছাথ উভয়ই চিত্ত-চাঞ্চল্য উৎপন্ন করিতে পারে। তঃবের সময়ে যেমন এক প্রকার চঞ্চলতা হয়, স্থবের সময়েও দেইরূপ আর এক প্রকার চঞ্চলতা উৎপন্ন হইনা থাকে। ক্ষম ক্ষম হঃধভোগের উংক্ঠা অপেকা স্কুথভোগের মত্রতা ধর্মাধনের অধিকতর বিশ্ব উৎপাদন করে। অত-এব চলচিত্ত ন। হইয়া সুখ ছঃখ উভয় অবস্থাতেই কুশ্ল লাভ করিতে যত্রশীল থাকিবেক। যত্রপুর্ব্বক সাধ্যক করি-বেক। সংসারে নানাবিধ অবস্থায় পতিত হইতে হয়, তাহাতে অন্তঃকরণ নানাবিধ ভাবে আক্রান্ত ও বিশ্বিপ্ত হইতে পারে, ধর্মভাব মান হইতে পারে, পবিত্র উংসাহ নির্মাণ হইতে পারে, সাধু আশা নৈরাখে পরিণত হইতে পারে, মোহ উৎপন্ন হইয়া জীবনকে মলিন করিতে পারে: এরপ অবস্থার সাধুগণের সংসর্গ আত্মাকে পুনর্কার প্রকৃতিস্থ করে। সাধ্সকপ্রভাবে মুমুর্ আত্মা জীবন প্রাপ্ত হর, হতাশ মহুদ্য মাশা লাভ করে, নিরুংদাহ চিত্ত উংদাহিত হয়। বেমন সুর্য্যের আলোক রূপহীন বস্তু সকলকে রূপ--বান্ করে, দেইরূপ সাধুগণের সাধুতা অসাধু জীংনকেও পৰিত্ৰ ও পুণাশীৰ করে। সাধুসক্ষের এই মহৎ গুণ যে, তাহাতে অসাধু ক্লাবের দমন হয় ও সাধু ভাবের উদীপন হয়। অতএব ধর্মার্থীগণ সাধ্দদ সেবনে অবহেলা করি-বেন না।

বাহার অমুষ্ঠানে জ্ঞান ও হাদর পরিতৃপ্ত হর, তাহাই সংকর্ম ও সাধু কর্ম জানিবে; তাদৃশ কম্মের অমুষ্ঠানেই ধর্মবৃদ্ধি দীপ্তি লাভ করে। যাহারা জ্ঞানবিকৃদ্ধ ও হৃদয়-বিকৃদ্ধ কর্ম সকল অমুষ্ঠান করে, তাহাদের ধর্ম-জ্ঞান ক্রমে ক্রমে অসাড় হইরা মায়; পরিলেধে তাহারা আর ধর্মাধর্ম বিবেচনা করিতে পারে না, স্ত্রাং ধর্মপ্থ হইতে পরিভ্রষ্ট হইরা অধাগতি প্রাপ্ত হয়॥৩॥

৬৬

থোহজালতা যোনির্হি মৃট্টেরের সমাগমঃ। অহতাহনি ধর্মতা যোনিঃ সাধুসমাগমঃ॥ ৪॥

'মোহজালস্য' অবিবেকসমূহস্য 'যোনি:' কারণং 'হি' প্রসিদ্ধৌ 'মৃট্য: এব' সেহ 'সমাগমঃ' সংযোগঃ 'অহনি অহনি' প্রতিদিনং 'সাধুসমাগমঃ' 'ধর্মস্য বোনিঃ'। তন্মাহজ্ঞিতা-হু সাধুসঙ্গতিং ধর্মেন্স ভিনিত্যং সম্ভিরেব সমাগমঃ কর্ত্তব্য ইতি ৰাক্যার্থ:॥৪॥

মুঢ় ব্যক্তিদিপের সহবাসে সমূহ মোহের উৎপত্তি

ছয়, এবং প্রতিদিন সাধু-সংসর্গে ট্রিন্ডিড ধর্মের উৎপত্তি হয়। ৪॥

দাধুদকে ধর্মণাত হয়, অদাধুদক কেবল মোহ উৎপদ करत ; नाधुनक डेज्रडित टर्ड, अनाधुनक अधः भारत कातन ; সাধুদকে জীবন শাভ হয়, অসাধুদক মৃত্যুমুধে নিপাডিড করে; সাধুদক্ষে ঈশবের প্রতি শ্রদ্ধা ভক্তি বৃদ্ধি পায়, অসাধু-भः मार्ग मः भव अ अविधाम छे : भव **इहेब्रा** मञ्चादक स्नेधव ছইতে দুরে নিক্তিপ্ত করে। অসাধুগণের আলাপ ও আচরণ मनीविष्णत्र धर्मवस्त निथिन कतिया त्नत्र। ज्यमाधुमध्य পাপের প্রতি দ্বনা ও ধর্মের প্রতি শ্রদ্ধা মন্দীভূত হয়। অত এव धर्यार्थी वाक्ति व्यनाधूनक भित्रहात भूर्सक व्यहतहः नाधू-সঙ্গ করিবেক। যাহার সঙ্গে অবস্থান করিলে নীচ কামনা ও নীচ ভাব উংপদ্ধ হয়, তাহা হইতে আপনাকে রক্ষা क्रियक। किंद्ध क्रांत्रि क्लान मश्र्वारक घुण क्रियक দা। সাধুতারূপ নির্মাণ নদীর প্রহ্মবণস্বরূপ সেই মঙ্গণময় পুক্ষের সঙ্গে অবস্থান করিবা তাঁহার গুভ অভিপ্রায় সিজ क्रिवांत्र निमिक्त गर्साव ग्रक्तन क्रियेक ॥ ४॥

৬٦

্ঘস্ত নিংশ্রেসং বাক্যং মোহান্ন প্রতিপদ্যতে। স দীর্ঘসূত্রে। হীনার্থঃ পশ্চান্তাপেন যুক্ষ্যতে ॥৫॥ ধঃ তু' নরু 'নিঃশ্রেষদং' শ্রেষাবিধান্তকং 'বাক্যং' 'মোহাং' অবিবেকবশাং 'ন প্রতিপদ্যতে' ন গৃহ্ণতি। 'দঃ' 'দীর্ঘস্ত্রঃ' কর্মজড়ঃ 'হীনার্থঃ' ত্যক্তপুরুষার্থঃ সন্ 'পশ্চাং' ত্রিপেন' 'যুজ্যতে' যুক্তো ভবতি॥ ৫॥

যে ব্যক্তি মোহ হেতু হিত বাক্য গ্রহণ না করে সে
দীর্ঘস্থাী হইয়া পুৰুষার্থ হইতে জ্রন্ট হয় এবং পশ্চাৎ
সন্তাপে পতিত হয় ॥ ৫ ॥

ষাহার নিকটে ইউক, কল্যাণকর বাক্য শ্রবণ করিলেই গ্রহণ করিবে, অভিমান-বশতঃ তাহা অগ্রাহ্য করিবে না। যাহা কর্ত্রিয় সম্বর হইয়া তাহা সম্পাদন করিবে, দার্থন্ত্র ইইয়া কাণবিল্য করিবে না। হিত্রাক্যে অবহেলা ও কর্ত্রিয় ক্রেমি দীর্যস্ত্রতা কেবল অনুভাপের ক্রিন।। ৫॥

6

সতাং মতমতিক্রম্য যোহ্যতাং বর্ততে মতে। শোচন্তে ব্যসনে তথ্য স্থহদো ন চিরাদিব॥৬॥

'বঃ' 'সতাং' 'মতং' অভিপ্রেতং 'অভিক্রমা' 'অসতাং'
'মতে' 'বর্ত্তিত', 'ভত্ত' 'ব্যসনে' বিপদি 'হুদ্ধনঃ' তন্মি-তানি 'ন চিরাদিব' অচিরেশের কালেন 'শোচন্তে' ॥ ৬॥

যে ব্যক্তি সাধুদিগের অভিপ্রায় অভিক্রম করিয়া

অসাধুনিগের মত অবলম্বন করে, তাহার ∡ীমত্তেরা তাহাকে অচিরাৎ বিপদ্প্রস্ত দেখিয়া শোক করেন।। ৬।।

দার্গণের বাক্য গ্রহণ করিবে ও অসাধ্গণের বাক্য পরিতাগ করিবে। যাঁহাদিগের বাক্যে ও কার্য্যে অকণট ধর্মনিষ্ঠা প্রচাশ পার, তাঁলারাই দার্। দার্গণের উপনেশে অবহেলা করিয়া বিশদ্গ্রস্ত হইয়া অন্তদগণকে শোকাকুল করিবে না। যাঁহাবা কেবল ভোমার হংখ দেধিয়া হংমী হন না কিন্তু তোমাকে স্থী দেখিলে স্থী হন, তাঁহারাই তোমার স্থাৎ, তাঁহাদিগের শোককে তৃচ্ছ জ্ঞান করিবে না॥ ৮॥

৬৯

যন্ত্র 'অবিসংবাদকঃ' অবিবাদী 'দক্ষঃ' কুশনঃ 'কৃতজ্যঃ' কুতোপকারঅরগধর্মবান্ 'মতিমান্' জ্ঞানবান্ 'ঋজুঃ' শাঠ্য-রহিতঃ। সঃ 'লোকে' 'কীর্তিং চল্ভতে' 'ন চ' 'অন্থেন' অকার্যোগ 'বুল্লাতে'॥ ১॥

ষিনি শ্বিবাদী, কর্মান্ম, ক্তুজ্ঞ, বুদ্ধিমান্ ও ঋত্ম, ভিনি ভূনওলে কীর্ত্তি লাভ করেন, এবং কোন অনর্থ-সাধন কর্মে মুক্ত হরেন না ॥ ৭ ॥

কারারও সভিত বিবাদ করিবে না। স্থারের মঞ্জ ভাবকে আদর্শ করিয়া ক্রোধ সম্বরণ করিবে এবং ক্ষমা ও গ্রীতির সহিত সকলের প্রতি সম্বাবহার করিয়া কর্ত্ব্য সকল সম্পাদন করিবে, মৈত্রীই বেন অভ্যের সহিত ব্যবহারের निम्नामक इम्र। यथन एव कार्या अवुष्ठ इहेरव, रेनशुगा मह-कारत जाश मन्धानन कतिरव अवः मकन काद्य इटेर्डि ইনপুণ্য শিক্ষা করিতে থাকিবে: তাহাত্তে কার্য্যের উৎকর্ষ ও আপনার উন্নতি উপার্জিত হটবে। উপকারীর প্রতি ক্লতজ্ঞ হইবে: কেহ সামান্ত উপকার করিলেও তাহা বিশ্বত হইবে না; ঈশ্বর কার্ব্যের পরিহাণ করেন না; সাধু ইচ্ছাক পরিমাণ অমুসারে পুরস্কার দেন; অতএব তোমার হিতসাধ-নের নিমিত্ত কাহারও ইচ্ছা দেখিলেই ক্লভক্ত হইবে। ধুদিকে মার্জিড করিবে এবং বাকা ও ব্যবহারে সর্ব ₹ € C ₹ 11 9 11

90

কৃতঃ কৃতস্বস্য যশঃ কৃতঃ স্থানং কৃতঃ স্থাম্।

অপ্রাজেয়ঃ কৃতস্থাহি কৃতস্থে নাস্তি নিজ্কতিঃ ॥৮॥

কৃতসং কৃৎসন্নাহ 'কৃতস্বস্য' 'কৃতঃ' কৃত্র 'বলং' তথা
'কৃতঃ হানং কৃতঃ স্থাং'। 'কৃতস্থ' 'অপ্রজেয়ঃ' প্রজানহঃ
'হি' প্রসিজো 'কৃত্রে নাস্তি নিম্নতিঃ'॥৮॥

ক্লতত্বের যশই বা কোধায়, স্থানই বা কোধায়, স্থ্ৰই

বা কোথার। ক্ষুত্র ব্যক্তি আক্ষার পাত্র নহে, ক্তন্নের নিক্তি নাই॥৮॥

ক্তজ্ঞতার বিপরীত ভাব ক্তমতা। বে ব্যক্তি অক্সত ত উপকার গ্রহণ করিয়াও তাহার নিনিত্ত নিজ হৃদ্দে ক্তজ্ঞতা অক্সত কবে না, উপক্ত হইয়াও সেই উপকার মনের সহিত মাক্ত করে না, অক্সক্ত মহৎ উপকারও লগু বলিয়া ভাবে, অথবা উপকারীর সমুদায় উপকার বিশ্বত হইয়া তাহার অপকারের কামনা করে, সাধুগণ তাহাকে নবাধম ও পামর বলিয়া পরিগণিত করেন ॥ ৮॥

नवदमां ३ था तः ।

93

সংবিভক্তা চ দাতা চ ভোগবান্ স্থবামরঃ। ভবত্যহিংসক শৈচৰ প্রমারোগ্যমশ্বতে ॥ ১॥

সর্কাণি সংবিভক্তা ভক্ষাপেরানি জবণণি যো ভ্ংকে সং
সং,বিভক্তা 'চ' 'দাতা চ' দেয়ানাং বস্ত্নাং 'ভোগবান্'
ভোগী তথা 'র্থবান্ নর:' 'অহিংসক: চ এব' য: 'ভবঙি'
স: 'পরং' 'আবোগ্যন্' অন্ময়ং 'অল্ডে' ভূ'কে এ ১ ৪

যিনি ভক্য পের দ্বব্য বিভাগ করিয়া অন্তের সহিত্ত পান ভোজন কক্ষেন, এবং দানশীল, ভোগবান্, সুখ-বান্ ও অহিংসক হয়েন, ভিনি পরম আরোগ্য সভোগ করেন॥ ১॥

সকলের প্রতিপালক পরমেশ্বর ভক্ষ্য পেয় প্রভৃতি বে
সকল ভোগ্য বস্তু প্রদান করিবেন, পিতা মাতা প্রতা
ভগিনী পুত্র কলত্র বন্ধ্বান্ধব ও দানদাদী প্রভৃতি কাহাকেও
বঞ্চিত না করিয়া ভাহা যথাযোগ্যরূপে সকলের সহিত
বিভাগ করিয়া ভোগ করিবেক; অশন বসন প্রভৃতি কোন
বিষয়ে আয়ভরি হইবেক না। সমুদায়ই যে কেবল নিজের
ভোগের জন্ম প্রাপ্ত হইয়াছি, এরূপ বিবেচনা করিবেক
না; প্রত্যুত অবশু-পোষ্য ও আপ্রিতগণের অভাব সকল
ভায়ামূদারে পরিপূর্ণ করিয়া হ:ধভারে আক্রান্ত দীন হ:খীদিগকে দান করিবেক। আপনাকেও ভোগস্থা বঞ্চিত
করিবেক না; রূপণতা ও বিলাসিতা পরিত্যার করিয়া ধর্ম
সাধনের উদ্দেশে আপনার শরীর ও মনকে ধর্মামূমাদিত
ভোগ ও স্থা হারা পোষণ করিতে থাকিবেক। কাহাকেও
হিণ্দা করিবেক না॥ ১॥

92

পাত্রস্থ হি বিশেষেণ প্রদ্ধানতব্যৈব চ। অলং বা বহু বা প্রেত্য দানস্যাবাপ্যতে ফলম্ ॥২॥ পোত্রস্য হি' 'বিশেষেণ' ভারতম্যমপেক্ষ্য তথা দাতুঃ
'শ্রদ্ধানভয়া' শ্রদ্ধাবত্তরা 'এব চ'। 'দানস্য' 'ক্ষরং বা বছ
বা' 'ফলং' 'প্রেশ্রন্য' লোকাস্বরে 'অবাপ্যতে' প্রাপ্যতে ॥ ২ ॥

দাতা আপনার শ্রেছা অনুসারে এবং পারের যোগ্যতা অনুসারে দান-ক্রিয়ার অপপ বা বহু কল লোকাস্তরে প্রাপ্ত হয় । ২ ॥

অরই হউক, আর অনরই হউক, বাহা দান করিতে
সাধ্য হইবেক, তাহা শ্রদ্ধাপুর্কক সংপাত্রে দান করিবে।
দাতার শ্রদ্ধা ও পাত্রের উপযুক্তা অমুসারে দানজনিত
পুণ্যের তারতম্য হয়। যাচকগণ উত্যক্ত করিতেছে বলিয়া
বিরক্তচিত্তে যে দান করা হয়, কেবল যাচকের উত্যক্তি
হইতে মুক্তিলাভ মাত্রই তাহার ফল, তাহা ধর্ম বলিয়া
পরিগণিত হয় না। যাহাকে দান করিলে আলস্ত বা অসহ
কর্ম্মে উৎসাহ দেওয়া হইবে, তাদৃশ অসং পাত্রে দানও
ধর্মের অমুমোদিত নহে। যে ব্যক্তি বাস্তবিক অভাবে
নিপীড়িত হইতেছে, দাতাগণের অমুগ্রহই যাহার একমাত্র
ভরসা, সেই ব্যক্তিই দানের উপযুক্ত পাত্র। তাদৃশ সং
পাত্রে শ্রদ্ধা সহকারে যথাসাধ্য দান করিবেক য় ২ ১

90

- দানাম ভূকরং তাত পৃথিব্যামন্তি কিঞ্চন। অর্থেচ মহতী ভূঞা স চ হুংখেন লভ্যতে ॥ ৩ ॥ ় তাত ইতি স্নেহসন্থোধনং হে 'তাত' 'দানাং' দানমপেক্ষা 'কুদ্বং' কর্ম 'পৃথিব্যাং ন অন্তি' 'কিঞ্চন' কিঞ্চিনপি। 'চ' শব্দ হেতৌ যত্মাং 'অর্থে' লোকানাং 'মহতী' অতীব 'তৃষ্ণা' 'দঃ চ' অর্থ-চ 'হুংখেন লভ্যতে'॥ ৩॥

হে তাত! ভূমগুলে দান অপেকা ছকর কর্ম আর কিছুই নাই; যে হেডু অর্থেডে লোকের মহতী ভৃষ্ণা, এবং দেই অর্থ অভি ছঃখেতে লাভ হয়॥ ৩॥

এই পৃথিবীতে লোকে ধনতৃষ্ণায় অত্যন্ত আকুল হইয়া আছে; ধনসপ্পদ্ধ অনায়াদ-লভ্য নহে। বহু আয়াদে ও ক্লেশে ধন উপার্জন হয়; স্থতরাং যে হলে কোন প্রকার বাধ্যতা নাই ও স্বার্থ নাই, সে হলে অর্থনান কেবল ধর্মার্থী ব্যতিরেকে আর কাহার সাধ্য হয় না; এই অন্য দান হকর কর্ম বলিয়া উলিখিত হইয়াছে। যিনি পরম বন্ধ পর্মেশ্বরের প্রিয় কার্যাসাধনের উদ্দেশে অর্থ উণার্জন করেন, যিনি কেবল অর্থের জন্যই অর্থেতে প্রণয়বন্ধন করেন না, তিনি নি: স্বার্থ ভাবে দান-ধর্ম অনুষ্ঠান পূর্নেক ক্তপুণ্য হন॥ ১॥

98

অন্যাহ্যাৎ সমুপাত্তেন দানধর্মো ধনেন যঃ। ক্রিয়তে ন স কর্তারং ত্রায়তে মহতো ভয়াৎ ॥৪॥ কিন্ত 'ৰাজারাৎ' অস্তারেন 'সম্পাত্তেন' সংগৃহীতেন 'ধনেন' 'বঃ' 'দানধর্মঃ' দানলকণো ধর্মঃ 'ক্রিরতে' 'ন' 'সঃ' দানধর্মঃ 'ক্রিরং' দাতারং 'মহতঃ ভ্রাং' পাপলকণাৎ 'ত্রারতে' রক্ষতি ॥ ৪ ঃ

অক্তারোপার্জ্জির ধন দ্বারা বে দান-ধর্ম অমুক্তিত হয়, তাহা সেই দাতাকে পাপ-জ্ঞানিত মহৎ ভয় হইতে পরিত্রাণ করিতে পারে না ॥ ৪ ॥

দানের জন্ত অস্থার পূর্বক ধনোপার্জন করিবেক না, তাদৃশ দানে পুণ্য লাভ হর না; প্রত্যুত তাহাতে অন্তার-জনিত মহৎপাপে পতিত হইরা নরক্ষরণা ভোগ করিছে হইবে। অতএব যদি ধনদানে সামর্থ্য না থাকে, জার আর নানা উপারে হংশীদিগের হংশমোচন করিবেক; ক্লাপি অন্যার করিরাধন আহরণ করিবেক না॥৪॥

90

म्राट्याभार्क्कि ठिटिन कर्छवाः জ्ञानतक्रगम्। ष्मग्राट्यन তু यो জीবেৎ সর্ববধর্মবহিছ্তঃ॥ ৫॥

ষত এবমতঃ 'ন্যান্ধোপার্চ্জি তবিজ্ঞেন' ন্যার প্রাপ্তধনেন 'জ্ঞানরকণং' 'কর্ত্তব্যং' জ্ঞানবতা। 'জন্যান্ধেন তু যং জীবেং' বর্ত্তে সং 'সর্কাশ্রবিহিছ্কঃ'॥ ৫॥ কর্ত্তব্য-জ্ঞানকে স্থায়-উপার্জ্জিত ধন দ্বারা রক্ষা করিবেক। অস্থায় আচরণ করিয়া যে জীবিকা লাভ করে, সে সর্ব্ব ধর্ম হইতে বহিষ্কৃত হয়॥ ৫॥

আপনার জাবিকা ও অবশ্য পোষ্য পরিবারগণের প্রতিপালনের জন্যও অন্যায়পূর্ব্বক ধনোপার্জন করিবেক না।
ন্যায়ান্যায় বিবেচনা করিবার নিমিত্ত ঈশ্বর যে ধর্মজ্ঞান
প্রেনান করিয়াছেন, তাথার আদেশ প্রেতিপালন করা এ ক্ষণভঙ্গুর জীবনকে রক্ষা করা অপেক্ষাও গরীয়ান্। যদি
অন্যায়পথে থাকিয়া জীবন ধারণ করিতে হয়, তাহা ইইলে
সে জীবন বাস্তবিক মৃত্যু, এবং বদি ন্যায়রক্ষার অন্থরোধে
যথার্থই মৃত্যু উপস্থিত হয়, তবে সেই মৃত্যুই আমাদিগের
জীবন ॥ ৫॥

95

শক্তাগ্রদানং সততং তিতিক্ষা ধর্মনিত্যতা। যথাহং প্রতিপূজা চ সর্বাভূতেয়ু বৈ সদা॥ ৬॥

'শক্তা' আয়নো যথাশক্তা। 'অয়নানং সততং' 'ভিতিকা' ছন্দ্ৰহনং 'ধর্মনিতাতা' ধর্মে নিত্যাস্থানভাব: । 'ঘণাহং' ঘণাঘোগ্যং 'দৈ' এব 'সর্কভৃতেমু' 'সনা' 'প্রতিপ্রা চ'। এতংসর্কং কার্যামিতার্থ:॥৬॥

ধ্বাশক্তি সভত অল্ল দান করিবেক, ভিভিকা

করিবেক, ও নিত্য ধর্মানুষ্ঠান করিবেক, এবং সর্মনা সকলের প্রতি ধথোচিত সমাদর করিবেক॥ ৬॥

কুধার ক্লেশে মহুষ্য আংশু অসহিষ্ণু হইয়া পড়ে। সং-সারের নানাবিধ জালা সহা করিয়াও মনুষ্য জীবন ধারণ করিয়া থাকে, কিন্তু মরাভাবে অবিলম্বেই মৃত্যমুখে নিপ-তিত হয়: অত এব অগ্রে কুধার্তগণকে অমদান করিবেক। ঈথর যে উদ্দেশে পরপের-বিঞ্চ্ন শীত ও এীল্ল স্বান্তি করিয়া-एकत. तमरे डेटनरभरे स्थ ७ इ:थ, मन्नम 3 विश्रम त्थात्रग করিতেছেন, অভএব ভিডিকা অভ্যাস করিবেক ; স্হিফুডা অভ্যাস করিলে যাহা সেব্য ও যাহা ত্যজ্য, তাহা পুথক ক্রিতে পারিবে; যাহা প্রতিবিধেয়, তাহার প্রতিবিধানে সামর্থ্য জ্বিবে; যাহা অপ্রতিবিধেয়, তাহাতে অভিক্লেশ উৎপन्न हटेरव ना। व्यहतहः क्षेत्रप्रतत्र व्यक्तिमा कतिरव छ ক্যাণ্কর ধর্ম নিতা সঞ্চর ক্রিবে। গুরুজন্দিগকে স্লেহের বিনিময়ে ভক্তি করিবে, বন্ধজনদিগকে প্রীতির বিনিময়ে জীতি প্রদর্শন করিবে, স্নেহাম্পদদিগকে ভক্তির বিনিময়ে (सहकान कब्रिट्र । कि आधीष कि डेनामीन, मक्लरकरे ভদতা সহকারে ষপাযোগ্য প্রতিপুঞ্চা করিবে ॥ ७ ॥

99

দেয়মার্ত্রস্থ শয়নং পরিশ্রান্তস্থ চাদনম্। ভূষিত্স্য চ পানীয়ং ক্ষুধিতস্থ চ ভোজনম্॥ ৭॥ দানবিশেষমাহ। 'আর্ত্তিগ্র' পীজ্তিস্য 'শরনং' শ্বা 'দেয়ং' তথা 'পরিশ্রাস্তস্য চ আসনং' 'ত্বিভস্য চ' 'পানীয়ং' জলং 'কুধিতস্য চ ভোজনম্'॥ ॥

় রোগীকে শধ্যা, শ্রান্তকে আসন, তৃষ্ণার্ত্তকে পানীর এবং ক্ষুধিতকে ভোজ্য বস্ত প্রদান করিবেক॥ ৭॥

যাহার পক্ষে বাহা আবশ্যক, তাহাকে তাহাই দান করিবেক। এইরপ সময়োচিত দানেই গৃহীতা যথার্থ উপক্ষত হয় এবং দাতা বিশুণ কল লাভ করেন। অতএব বাহার বেরূপ অভাব ভাহাকে সেইরূপ দান করিবেক। ঈশ্বর আমাদিগকে এইরূপ দান করিতেছেন॥ ৭॥

95

আন্নদঃ স্থথমাপ্নোতি স্নতৃপ্তঃ দর্ববস্তুরু। স্থানদানাৎ পরং নাস্তি বিদ্যাদানং ততোহধিকম্॥৮

'সর্কবিত্তার্' মধ্যে 'অরদঃ' অরদ্য দাতা 'স্তৃথঃ' সন্ 'স্থম্ আগ্নোতি'। 'ভূমিদানাৎ পরং ন অন্তি' 'বিদ্যা-দানং' ভূ 'ততঃ অধিকম্'॥৮॥

বিনি অমদান করেন, তিনি অন্য বস্তু সকলের দাত।
অপেকা স্তৃপ্ত হইরা স্থ লাভ করেন। ভূমিদানের
পর আর নাই; বিদ্যাদান তাহা হইতেও উৎক্ষয় ॥ ৮॥

কেবল অর্থ হৈ যে দানের বস্তু এরপ মনে করিবেক না।

আন্ধান দাতাকে তৎক্ষণাৎ স্মৃত্ত করে; ভূমিদান অভি
ন্মহৎ, কেন না চিরকাল নেই দান অকর হইরা থাকে;
বিফাদান সর্বাপেকা প্রেষ্ঠ, তাহাতে গৃহীভার ঐহিক ও
পারত্রিক মন্ত্র র র ৮ ॥

95

ঔষধং পশ্যমাহারং স্নেহাভ্যঙ্গং প্রতিশ্রম্।
দানাক্তেতানি দেয়ানি হস্তানি চ বিশেষতঃ।
দীনান্ধকূপণাদিভ্যঃ শ্রেয়স্কামেন ধীমতা॥ ৯॥

'ঔষধং প্রথাং আহারং' 'স্নেহাভ্যক্রং' তৈলাভ্যক্রং 'প্রতি-শ্রন্ধ্য আশ্ররং 'দানানি এ ভানি' 'হি অন্যানি চ বিশেষতঃ' 'শ্রেরস্বামেন' শ্রেরোভিকাজ্ফিণা 'ধীমতা' 'দীনান্ধরূপণা-দিভ্যাং' 'দেয়ানি' ॥ ৯ ॥

শ্রেরোভিলামী ধীমান্ দীন অন্ধ্র প্রভৃতি ক্লগা-পাত্র-দিগকে ঔষধ, পধ্য, আছার জ্রুলীয় স্বেছ জ্ব্য ও স্থান, এই সকল দান এবং অন্য অন্য দানও দিবেন ॥ ৯ ॥

অসং পাত্রে দান করিবেক না। যাহারা দান সইয়া অসং কর্মের ব্যয় করে, ভাহাদিগকে দান করিবেক না। যাহারা পরিশ্রমে অসমর্থ, দানগ্রহণ ব্যতীত যাহাদিগের অন্য উপায় নাই, যাহারা আপনার শক্তিতে বিপদ্ হইতে উদ্ধার পাইতে পারে না; তাহাদিগকে যথাযোগ্য দান করিয়া দানের সার্থকতা করিবেক । ৯॥

60

শক্তঃ প্রজনে দাতা স্বজনে ছুঃখজীবিনি। মধ্বাপাতো বিযাসাদঃ স ধর্মএডিরূপকঃ॥১০॥

'বজনে' অবশ্যপোষ্যপিত্যাতাদিজনে 'হৃঃধজীবিনি' ছঃথেন জীবনধারিণি সভ্যপি হঃ 'শক্তঃ' দীনক্ষমঃ 'পরজনে' ইতর্মিন্ অসম্বন্ধে জনে 'দাতা' দদাতি। তস্য 'সং' দান-বিশেন, 'ধর্মপ্রতিরূপকঃ' ন তু ধর্ম এব যতঃ 'মধ্বাপাতঃ' মধ্রোপক্তনঃ প্রথমং যশক্রছাং 'বিষাস্বাদঃ' বিষোত্তরফলঃ ভ্যানেত্র কার্য্যম্॥ ১০॥

বে দান-ক্ষম ব্যক্তি হুঃখ-জীবী প্রী পুত্র স্বজনকে অবহেলা করিয়া পর জনকে দান করে, ভাষার দে দান-ক্রিয়া ধর্মের প্রতিরূপ মাত্র, বাস্তব দে ধর্ম নছে; ভাষা আপাতত মধু-স্থান স্থসাদ হয় বটে, কিন্তু পরিণামে ভাষার গরল-স্থান আস্থাদ হয়॥ ১০॥

বৃদ্ধ পিতা মাতা ত্রী পুত্র প্রভৃতি অবশ্য-পোষ্য ব্যক্তি সক্ষেত্র অভাব ও হুঃধ অপ্রে দুর করিবেক। বে ব্যক্তি जाहानिशतक कटे निवा व्यथता कटे हरेट अक्क ना कित्रा इक्सना वाक्तिक नान करिट अव्य हव, तम बाक्तिव यथार्थ धर्मा रहीन रहना॥ ১०॥

मगढमार्थाग्रः।

67

প্রজন্ন মানসং ছঃধং হন্যাৎ শারীরমৌষধৈঃ। ন শোচন্তি কৃতপ্রজাঃ পশ্যস্তঃ পরমাং গতিন্॥১॥

'প্রজন্ধ' বুদ্ধা 'দানদং' মনোভবং 'হুপং হন্যাৎ' তপা 'শারীরম্ উট্ধাং'। 'ক্তপ্রজাং' কুতবৃদ্ধঃ 'পরমাং গতিং' 'পশাস্তঃ' অহ্ভবস্তঃ সন্তঃ 'ন শোচ্স্তি'॥ ১॥

জ্ঞান দারা মানসিক ছুঃখ এবং ঔষণ দার। শারীরিক ছুঃখ ছনন করিবেক। ক্লুডবুদ্ধি ব্যক্তিরা প্রম গতিকে প্রেডীতি করিয়া আর শোক করেন না॥ ১॥

যেমন শারীরিক রোগ উৎপন্ন হইলে ঔষধ ঘারা তাহার প্রতিকার করিতে হয়, সেইয়প মানসিক ছঃও উপদ্বিত ছইলে পরম গতি অরণ করিয়া তাহার প্রতিবিধান করি-বেক। সর্বাদা বিবেক সহকারে বস্তবিচারে প্রায়ুৱ থাকি- বেক। এই পরিবর্তনশীল বর্তমান অবস্থার মধ্যে অথ ও শান্তির আশা বছ করিরা রাধিবেক না। পৃথিবী আমা-দিগের শিক্ষাস্থান, নিত্য স্থুখ ভোগ করিবার আত্তন নহে। একমাত্র পরমেশ্বর নিত্য ত্মুথ ও নিত্য শাস্তির আলয়; তিনি আমাদিগের পর্ম লোক, তিনিই আমা-দিগের পরম গতি। তিনি আমাদিগের নিকটে থাকিয়া আমানিগের সমুনায় অবস্থা দেখিতেছেন: আমানিগের মঙ্গল হউক, ইহাই তাঁহার একমাত্র ইচ্ছা: কি উপারে আমা-দিগের স্পাতি হইবে, তিনি তাহা জানিতেছেন: আমা-দিগের মন্দ্রের অন্য তিনি বাহা বিধান করিবেন, তাহার অন্যথা করিতে কেই নাই: পুত্রগণকে ছ:খভারে আক্রান্ত দেখিয়া পিতা कि উদাদীন আছেন ? এই বর্ত্তমান অবস্থা াক তাঁহার অজ্ঞাত্যারে আমাদিগের উপরে নিপ্তিভ হই-মাছে ? তাঁহার অপরিবর্তনীর মঙ্গলকামনা কি শুরু হট্রা आहि ? जोहां कथनरे नरह। (कवन माहाका स इहेबाई আমরা শোক ছঃথে অভিভূত হই। অতএব বর্ত্তমান অবস্থা-তেই সমুদার দৃষ্টি বন্ধ করিয়া রাখিবেক না, সেই পরমগতি পর্য্যালোচনা করিয়া মানসিক ছঃথ বিনাশ করিবেক 🛭 ১ 🖟

4

মানং হিন্বা প্রিয়ো ভবতি ক্রোধং হিন্বা ন শোচ্তিশ কামংহিন্নাহর্থবান্ভবতি লে'ভং হিন্বা স্থীভবেৎ॥২ 'মানম্' অভিমানং 'হিছা' তাজনা 'প্রিয়ং' সর্কোবং
'ভবভি'। 'কোধং হিছা ন শোচভি'। 'কামং' বাসনাং
'হিয়া অর্থবান্ ভবভি'। 'লোডং হিয়া সুখী ভবেং'॥ ২॥

অভিমান পরিভাগে করিয়া প্রিয় ছইবেক, কোধ পরিভাগে করিয়া শোচনাশূন্য ছইবেক, কামনা পরি-ভাগে করিয়া অর্থবান্ ছইবেক, এবং লোভ পরিভাগে করিয়া সুধী ছইবেক।। ২॥

অহনার পরিত্যাগ করিবেক; ঈশবের অনুগ্রহই নমুবারে সর্কার, তথাতীত মন্থারের আর কিছুই নাই। কি
ধন মান সৌল্পা, কি জ্ঞান ও ধর্ম কিছুর নিমিত্তই লোকের
নিকট গর্ম প্রকাশ করিবেক না, মনকেও গর্মিত হইতে
দিবেক না। গর্মের উপক্রম দেখিলেই নিজের পতন
সন্ত্রিকট জানিয়া ঈশবেরর শরণাপল্ল হইবেক। নঙ্গলমল্ল স্থার গর্মিত প্রকে বিনীত করিবার নিমিত্ত অংকার চূর্ণ
করিয়া দেন এবং মন্থারোও তাহার প্রতি ঘুণা করিতে
থাকে।

কোধে অধীর হইরা অন্তের প্রতিহিংসাতে প্রবৃত্ত হইলে, পরে অফ্শোচনাতে দগ্ধ হইতে হয়, অতএব কোধ পরিত্যাগ করিয়া শোচনাশুক্ত হইবেক।

বাদনা বত বৃদ্ধি পাব, তত্ত আনাদিগের অভাব বোধ হয়। যিনি অর্থোপার্জনের উদ্দেশ্য বিশ্বত হইয়। কেবল ধনম্পৃহা পরিতৃপ্ত করিবার নিমিত্তই ধনোপার্জনে প্রবৃত্ত হন, তিনি চিরকালই হঃখী, চিরকালই দরিজ। অতএব ধিনি বাসনাকে দমন করিতে পারেন, তিনিই ঐশ্ব্যাবান্ এবং ধিনি লোভকে পরিত্যাগ করিতে পারেন, তিনিই বথার্থ স্থী॥২॥

20

কোধঃ স্তর্জ্বয়: শক্রেলোভো ব্যাধিরনন্তকঃ। সক্রভূতহিতঃ সাধুরসাধুর্নির্দয়ঃ স্মৃতঃ॥ ৩॥

'কে'ধঃ' অতিকচ্ছেণ জীয়তেংসাবিতি 'স্ত্ৰজন্ন:'
'শতঃ'! 'লোভঃ' 'অনস্তকঃ' 'ব্যাধিঃ'। 'সৰ্বভ্তহিতঃ
বাধ্ঃ অবাধুঃ নিৰ্দয়ঃ স্বৃতঃ'॥ ৩ ॥

ক্রোধ অতি হুর্জ্জন্ম শক্র, লোভ অনস্ত ব্যাধি। যিনি সর্ব্ব জীবের হিতৈষী তিনি সাধু, আর যে নির্দ্দিন সেই জসাধু বলিয়া উক্ত হইয়াছে॥ ৩॥

কোধের তুল্য ন্দান্তকারী শক্র সার কেছই নাই; এবং লোভের তুল্য যন্ত্রণাদারক ব্যাধিও সার কিছুই নাই। কোধ ও লোভ হইতেই নিষ্ঠুরতা উৎপদ্ম হয়; নিষ্ঠুরতা মন্ত্র্যকে শাধুতা হইতে পরিভ্রন্ত করে। কোধ কেবল স্থন্যকে যন্ত্রণা দানে উৎসাহিত করে; লোভ আয়ম্ভরিতার নিক্ট সমুদায় সাধু ওণকে বলিদান দিতে বলে। ন্রহত্যা ও চৌর্য্য প্রস্তৃতি পাপকর্ম সক্ষ ক্রোধ ও লোভ হইতে অসুষ্ঠিত হয়। অত-এব ক্রোধ ও লোভ পরিত্যাপ করিবেক এবং সকলের প্রতি দ্যাবান্ থাকিবেক॥ ৩॥

P8

দান্ত: শমপরঃ শশ্বৎ পরিক্লেশং ন বিন্দতি। নচ তপ্যতি দান্তাত্মা দৃষ্ট্বা পরগতাং শ্রিয়ম্॥৪॥

যোহি 'দাস্কঃ' নিয়তেক্সিয়ঃ 'শমপরঃ' সংষ্ঠাস্তঃক্রনঃ
সঃ 'শখং' বারংবারং 'পরিক্লেশং' 'ন বিন্দৃতি' ন লভতে।
'ন চ দান্তাত্ম।' বশীক্তাত্ম। 'পরগতাং' 'শ্রিয়ং' সম্পত্তিং
'দৃঠ্য' 'তপ্যতি' পরিতপ্রোভবতি ॥ ৪ ॥

থিনি ইন্দ্রির ও মন সংখ্য করিয়াছেন, তিনি আর বারংবার ক্লেশ প্রাপ্ত হন না। শাস্ত্রচিত্ত ব্যক্তি পর-জীদেখিয়া কথন কাত্র হন না॥ ৪॥

অহরহ আপনাকে শিকা দান করিবে, আপনাকে শাসন করিবে ও আপনাকে ধর্মপরায়ণ করিবে। যিনি আপনার ইক্রিয়গণ ও অন্তঃকরণ বশীভূত করিতে পারেন, তাহার ক্রেশ ভোগ করিবার কোন কারণ থাকে না। যিনি আপনাকে দমন করিতে না পারেন, তাঁহার চতুর্দি- কেই যন্ত্রণা। ডিনি যে কেবল নিজের বিপদেই যন্ত্রণা ভোগ করেন এমন নহে, অভ্যের সৌভাগ্যও তাঁহার হৃদ-রকে ব্যপিত করিয়া তুলে॥৪॥

40

য ঈর্গ্র পরবিতের্ রূপে বীর্য্যে কুলাষয়ে। স্থাসোভাগ্যসৎকারে তম্ম ব্যাধিরনন্তকঃ॥ ৫॥

'যঃ' 'ঈর্ব্' মংসরী 'পরবিত্তের্' পরধনের তথা 'রূপে বীর্য্যে' 'কুলায়ায়ে' কুলসন্ততো 'স্থেসোভাগ্যসংকারে' স্থাথ সৌভাগ্যে সংকারে চ 'তস্য ব্যাধিঃ' 'অনস্তকঃ' অনস্তঃ॥ । ।

অভ্যের ধনে, রূপে, বীর্ষ্যে, কুলে, সম্ভানে, সুথে, সোভাগ্যে, সংক্রিয়াতে যে ব্যক্তি ঈর্ষা করে, ভাষার ব্যাধির আর অন্ত নাই ।। ৫॥

পর শীকাতরতার তুলা কুংদিত ব্যাধি আর কিছুই নাই।
অন্যের মঙ্গলের প্রতি ধাহার বিদ্বে হর, তাহার সার
মনের আরাম থাকে না—তাহার আর শান্তি থাকে না।
এই সংসারে যে যত উরত হইরা শুভ ফল তোগ করিতে
থাকে, সে অজ্ঞাতদারে ঈর্ধাকারীর মনে তত আঘাত দিতে
থাকে। সকল প্রকার উরত লোককে তাহার শক্ততুল্য
বোধ হয়। অতথাব বিশুদ্ধ প্রেম ধারা মহামুভাবতা বৃদ্ধি

করিয়। ঈর্বাকে জর করিবেক। সকলের মঙ্গলের মধ্য আপনার মঙ্গল সরিবিষ্ট জানিয়া ক্ষুদ্রতা পরিত্যাগ করি-বেক ॥ ৫॥

49

মিত্রগ্রুক্ তুইভাবশ্চ নান্তিকোহথানৃজু: শঠঃ। গুণবস্তুক্ষ যো ছেষ্টি তুমান্তঃ পুরুষাধ্মম্॥ ৬॥

'মিঅঞ্ক' মিঅং ক্রহতীতি 'ছইভাবং চ' 'নাজিকং' নাজি লগতোম্বমায়া নাজি পরবোকইত্যেবখাদী 'অথ' 'অন্জ্ং' অসরলং 'শঠং' 'গুণবল্কং চ যং বেষ্টি' 'তং' পণ্ডিতাঃ 'পুক্ষা-ধ্,ম্' 'লাহং' কথয়জি॥ ৬॥

মিত্রজোহী, ছুইম্মভাব, নান্তিক, কুটিল, শঠ, এবং গুণবানের যে দ্বেষী, ভাহাকে জ্ঞানীরা নরাখ্য করিয়া বলিয়াছেন । ৬ ।

মিত্রের বিখাস্থাতী হওয়া, তাঁহার মূক হনরে প্রবেশ করিয়া আপনার ছরভিসন্ধি সাধন করা সাকাং সহকে বা পরস্পরাষ্ তাহার অনিষ্ট চেষ্টা করা মিত্রভোহ বলিয়া পরি-গণিত হয়; মিত্রভোহরূপ মহাপাডক হইতে সর্কাণা দুরে অবস্থান করিবেক।

মনের মধ্যে ধৰি অসং অভিসন্ধি থাকে, তবে তাহাই

ছঠভাব। ছঠভাব ও অসং ইচ্ছ। হইতে ক**ধ**নও সংকৰ্ম অফুটিত হয়না।

ঈশবের প্রতি কদাপি শ্রদ্ধাশ্য হইবেক না; তাঁহার প্রতি অনিশাদ ও সংশ্র পাপ অপেক। অধিকতর ভরানক। যিনি পাপ পুণ্যের দও পুরস্কার বিধান করিয়া মুক্তির পথে আয়ার নেতা হইরাছেন; তাঁহার প্রতি অশ্রমাও সংশ্রদ সাংঘাতিক রোগ বলিয়া বিবেচনা করিবেক এবং বিনীত হইয়া গুরু ও সাধুগণের সাহায্যে এই রোগ হইতে নিজ্তি লাভ করিবেক।

সর্মণা সরল ভাবে অবস্থান করিবেক। সরলতা নিজেই একটি অসামান্ত সাধুতা। অধিকাংশ সাধু-গুণ সরলতার নিত্য সহচর, সরলতা স্থাকিত হইলেই তৎসমুদার স্থাকিত হয় এবং সরলতা শ্বিনষ্ট হইলেই তৎসমুদার বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

বে ব্যক্তি সমুথে প্রিয় ব্যবহার করে, কিন্তু গুঢ় রূপে আনিষ্টাচরণে প্রবৃত্ত থাকে, তাহাকে শঠ করে। শঠতা সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করিয়া সর্বাদা সকলের হিতামুষ্ঠান ও শুভামুধ্যান করিবেক।

ঈশবের পরিপূর্ণ মঙ্গলভাব হইতে সমুদায় সদ্পুণ উৎ-পর হইরাছে; সদ্পুনের প্রতি বিষেষ করিলে ঈশবের প্রতি বিবেষ করা হয়। বাহারা সদ্পুণসম্পন্ন হইরা জগতের উপ-কার করিতেছেন, তাঁহাদিগের প্রতি সমাদর করিবে এবং মনুষা নিশুণ হইলেও তাহার প্রতি বিদ্বেষ করি-বেক নাগ্রা

4

অনর্থমর্থতঃ পশ্যন্নর্থ কৈবাপ্যনর্থতঃ।

ইন্দ্রিরজিতৈর্বালঃ স্তুধং মহাতে স্থন্॥ ৭ ॥

'অনথ্ন্' অকণ্টাম্ 'অথ্তি: পশ্ন্' 'অথ্: চ এব অপি অনথ্ডি:'। 'ই স্থিয়িং অথিতিয়ে' 'বালাং' অলপ্তাঃ 'সূত্ংখং মহতে স্থাম্'॥৭॥

যে ব্যক্তি ইন্দ্রিং-সংখ্য-শৃহ্য বালকের হ্যায় অকা-র্যাকে কার্য্য এবং কার্যাকে অকার্য্য রূপে জ্ঞান করে, সে অভ্যস্ত তুঃধকে স্থধ বোধ করে।। ৭।।

যেমন বালকেরা তীক্ষ বিধ কাল সর্পকেও ধরিবার নিমিত্ত উদ্যত হয়, দেইরপ অজিতেন্দ্রিয় অলপ্রক্রী লোকে বিপদ্কে সম্পদ্ বলিয়া বোধ করে। তাহারা পরিণাম দর্শন করে না; যাহা আপাততঃ তাহাদের প্রবৃত্তি সকলের তৃপ্তিকর, তাহাতেই সর্বাত্তঃকরণে আসক হয়। অতএব সর্বাদা জিতেন্দ্রিয় ও ফুতপ্রজ্ঞ হইয়া পরিণাম দর্শন করিবেক। আমাদিগের জীবনের শেষ নাই; অনক্ত কাল আমাদিগের ঈববের সহিত গোগ। এই চিরস্থায়ী জীবনের প্রতি সর্বাদ্ধি রাধিয়া চলিবেক॥ १॥

একাদশোইধ্যায়ঃ।

6-6

ধৃতি: ক্ষমা দমোহতে য়ং শোচমিন্দ্রিয়নি গ্রহঃ।
ধীর্বিদ্যা সত্যমকোধো দশকং ধর্মলক্ষণম্॥ ১॥
'ধৃতি:' ধৈর্যম্। পরেণাপকারে ক্রতেংশি তস্য প্রত্যাপকারানাচরণং 'ক্ষম'। বিকারহেত্বিষরসন্নিধানেংপ্যবিক্রেষ্তং মনসং 'দমং'। অন্তান্তেন প্রধনাদেরগ্রহণম্ 'অতেরম্' 'শৌচং' বিবিধং মুজ্জলাভ্যাং দেহশোধনং জ্ঞানতপোভ্যাম্ অন্তঃশোধনঞ্চ। 'ইন্দ্রিরনিগ্রহং' ইন্দ্রিরসংযমঃ। শাল্তাদিতত্বজ্ঞানং 'ধীং'। প্রমান্মজ্ঞানং 'বিদ্যা'। বথার্থাভিধানং 'স্ত্যম্'। ক্রোধহেতে) স্ত্যপি ক্রোধান্থপত্তিঃ
'অক্রোধং'। এতং দেশকং' দশবিধং ধর্মলক্ষণম'॥ ১॥

বৈর্ষ্যা, কমা, মনঃ-সংবম, অচের্ম্যা, দেহ ও অঙ্কর-শুদ্ধি, ইন্দ্রিয়ন-নির্মাহ, শাক্ত-জ্ঞান, ত্রহ্ম-বিদ্যা, সভ্য-কর্থন ও অক্টোহ, হর্মের এই দশ প্রকার লক্ষণ ॥ ১॥

সম্পাদে বিপদে ধৈর্য্যাবদম্ম করিবে। যে ব্যক্তি মনের সহিত ক্ষমা প্রার্থনা করে, সহত্র দোবে দোবী হইলেও ভাহাকে ক্ষমা করিবে। বিকারজনক প্রলোভনে পরি-বেটিত থাকিলেও অন্তঃকরণ বাহাতে বিকার প্রাপ্ত না হয়, এইকপে তাহাকে বণী তৃত করিবে। স্থানীর অজ্ঞাত-সারে বা প্রতারণা পূর্বকৈ অপবা বলপূর্বকৈ অন্যের এব্য গ্রহণ করিবে না। কায়িক বাচনিক ও মানসিক দোষ সকল প্রকাণন করিয়া সর্বা প্রকারে শুচি হইয়া থাকিবে। ইক্রিয়গণকে শাসন করিবে। বৃদ্ধিকে মার্জিত করিবে। জ্ঞান অভ্যাস করিবে। সভ্য কথা কহিবে। এবং ক্রোধ সংবরণ করিবে॥১॥

45

ক্রামান্ হি পাপং প্রদেষ্টি তদ্য জ্রীরভিবর্দ্ধতে। ক্রীর্হতা বাধতে ধর্মাং ধর্মো হন্তি হতঃ প্রিয়ম্॥২॥

'জীমান' লজাবান 'হি পাপণ প্রসেষ্ট,' 'ভদ্য' হীমভ: 'শ্রী: অভিবন্ধতে'। 'জী: হতা' 'ধর্মাং' 'বাধতে' পীড়য়ভি 'ধর্মাং' 'হতং' দন্ 'শ্রিয়ং' 'হক্তি'॥ ২॥

ৰু নিশিষ্ট ব্যক্তি পাপের দ্বেষ করেন, তাঁছার প্রীর্বন্ধি হয়; হু নিষ্ট হইলে ধর্মে বাধা জেমে এবং ধর্ম-হানি হইলে প্রীত্রংশ হয়॥২॥

অন্যের মুধ হইতেও একটা অস্ত্রীণ বাক্য ভনিবে য়াহার লজ্জা বোধ হয় সেই খ্রীমান্। খ্রীমান্ ব্যক্তি পাপকে অভিমাত্র দ্বা করে এবং ভাহার সম্পর্ক ইইডে দ্বে থাকিতে স্বভাবতই ইচ্ছা করে—তাহার শ্রী বর্দ্ধিত হয়। যাহার ব্রী
নিষ্ট হয় তাহার পক্ষে ত্বণিত পাপ-পথ সহজ্ঞ হয়—কল্যাণকর
ধর্মপথে তাহার বাধা জন্মে এবং অধর্ম্মে পতিত হইয়া
শ্রীহীন ও মলিন হয়। অতএব কথাতে ভাবেতে, বেশ
বিন্যানে যত্নপূর্ব্বক ব্রীকে রক্ষা করিবেক ॥২॥

20

অনসূয়ুঃ কৃতজ্ঞ*চ কল্যাণানি চ সেবতে। স্থানি ধর্মমর্থঞ স্বর্গঞ্জ লভতে নরঃ ॥ ১॥

প্রণেষ্পি দোষাবিদ্ধার্বাণ্ অস্যু: ন অস্যু: 'অনস্যু:' 'কৃতজ্ঞঃ' কুতোপকাবল্পবাধর্মা 'চ' 'কল্যাণানি চ' শ্রেরস্করানি চিক্মাণি য: 'সেবতে' করোতি। স: 'নরঃ' 'স্থানি ধর্ম মৃত্যু: চ স্থগং চ লভতে'॥ ৩॥

যিনি অস্থা-শূন্য ও ক্তত্ত হয়েন এবং শুভ কর্মোর অনুষ্ঠান করেন, তিনি সুখ, ধর্মা, অর্থ ও স্থাগি লাভ করেন॥ ৩॥

কাহারও গুণের উপর দোষারোপ করিবে না এবং উপ-কারীর প্রতি হাদয়ের সহিত ক্বতজ্ঞ হইবে। শুভ কর্মের অফ্টানে তৎপর থাকিবে। তাহা ব্যতিরেকে ধর্মভাব বৃদ্ধি পার না, হৃদর পবিত্র হয় না এবং ঈশ্বরকে লাভ করা বারু-না। মনের বিষয় স্থা, সংসারের উন্নতি, আ্যার ধর্ম & আনক কালের স্পতি এই চতুর্বর্গ মছ্ব্যের প্রার্থনীয় পুক্রার্থ ।

22

সর্বো দণ্ডজিতো লোকো তুর্লভোহি শুচির্নর:।
দণ্ডস্য হি ভয়াৎ সর্বাং জগডোগায় কল্পতে॥॥॥

'সর্কা:' 'লোক:' 'দণ্ডজিত:' দণ্ডেন নিয়মিত: সন্ সমস্থানি বর্ততে 'ওচি:' স্বভাববিশুদ্ধ: 'হি' 'নর:' 'হল্ভি:'।
'হি' অবধারণে 'দণ্ডস্য' এব 'ভয়াৎ সর্কাং জগ্থ' 'ভোগায়'
"ভোগার্ঝা 'ক্রতে' সমর্থো ভব্তি॥ ৪॥

সকল লোকই দও দারা শাসিত হয়; শুদ্ধ-চরিত্র মনুষ্য শতি হুর্লভ। দণ্ডের ভয়েই সকল ভূবন প্রতি-পালিত হইতেছে॥৪॥

বশন সকলে দণ্ডভরে নয়, কিন্তু সমবেত হইয়া হৃদয়ের প্রেমে, সাধুভাবে, ধর্মের আনেশে, ঈশরের উদ্দেশে সংসা-রের তাবং কার্য্য করিতে থাকিবে, তথন এই পৃথিবীতে মহয়ের উন্নতি পরাকাষ্ঠা ধারণ করিবে। সে দিন আসিতে এখনো অনেক বিলম্ব, এখনো সাধু লোক অপেকা অসাধু লোকই অধিক; সাধু ব্যবহার অপেকা অভায় দণ্ড করি-বেক না। অসাধু ব্যবহারই বিতর, অতথব প্রারার রাদ- দণ্ডেরই শাসনে অন্যাপি এই পৃথিবীতে কথঞিং ধর্ম অর্থ ত্বথ ভোগ করিতে পাইতেছে॥৪॥

৯২

অধর্মদণ্ডনং লোকে যশোল্পং কীর্ত্তিনাশনং। অন্বর্গ্যঞ্চ পরত্রাপি তত্মাত্তৎ পরিবর্জ্জয়েৎ॥৫॥

যন্ত্রাৎ 'লোকে' 'অধর্মদ গুনং' 'যশোল্প' যশোহস্তু 'কীর্ত্তি-নাশনং' চ জীবতঃ খ্যাতির্যশঃ মৃত্রস্ত খ্যাতিঃ কীর্ত্তিরিভ্যে-তয়েগঃ পৃথ ্ নির্দ্বেশঃ। 'পুরত্র অপি' প্রলোকেহপি 'অম্বর্গতে চ' স্বর্গতিবন্ধকঞ্চ 'তশাৎ তৎ পরিবর্জয়েৎ॥ ৫॥

অন্যায় দণ্ড করিলে ইহলোকে যশ ও কীর্ত্তি নাশ হয় এবং পরলোকে স্বর্গ হানি হয়; অতএব ডাহা পরিত্যাগ করিবেক।। ৫॥

অন্যায় দও করিবেক না। মঙ্গলম্বরপ ঈশ্বরের ন্যায়-বাজ্য বিস্তাব করা দওধারণের উদ্দেশ্য। ক্রোধের বশীভূত ইইয়া তাহার অন্যথাচরণ করিবেক না॥ ৫॥

ನಿ೨

ক্ষমা বশীকৃতির্লোকে ক্ষমা হি পরমং ধনং। ক্ষমা গুণোহ্যশক্তানাং শক্তানাং ভূষণং ক্ষমা ॥৬॥ 'লোকে' ভ্ৰনে 'কমা' 'বশীকৃতিঃ' বশীক্রণম্ অবশং বশং করোত্যনরা। 'কমা হি পরমং ধনম্'। 'কমা' 'হি' 'কশকানাং' 'গুণঃ' 'শকানাং ভূষণং কমা'॥ ७॥

ক্ষমা শ্বারা লোক বলীভূত হর, ক্ষমা প্রম ধন; ক্ষমা অশক্তদিশের গুণ, শক্তদিশের ভূষণ ॥ ৬ ॥

সর্কাণা ক্ষমাবান্ থাকিবে; বৈরনির্যাতনের সংক্র একবারে পরিত্যাগ করিবে। প্রভূপকার করিবার সামর্থ্য
সবেও অন্যক্ত অপকারে সহিষ্ণুতা অবলম্বন করাই যথার্থ
ক্ষমার কার্য্য। আমার অপকার হর হউক, কিন্তু যেন আমাদারা অন্যের অপকার না হর, এইরূপ কামনা ম্বর্গীর ক্ষমা
তাণ হইতে উৎপর হর ॥ ৬ ॥

8 6

যথৈবাত্ম। পরস্তদ্ধ দ্রু ক্রিব্যঃ শুভ্তমিছতা। স্থপ্তঃখানি তুল্যানি যথাত্মনি তথা পরে॥ ৭॥

'গুড়ং ইচ্ছতা' জনেন 'ৰথা এব আত্মা' 'পরঃ' 'তছং' তথা 'ডুইব্যঃ'। তত্মাৎ আত্মনঃ পরস্য চ 'স্থক্ঃগানি' 'ত্রখানি হংখানি চ 'ভূল্যানি' 'যথাত্মনি তথা পরে'॥ ৭॥

ভঙাকাজ্ফী ব্যক্তি বেমন আপনাকে ভদ্ৰেপ প্ৰকে

पिथिटवन ; कांत्रन चाषानात मकत्मदाउँ सूच हूःच ममान ॥ १॥

আপনার পক্ষে স্থ হংশ যেরপ, অন্যের পক্ষেপ্ত স্থ হংশ সেইরপ; অতএব আপনি বাহা প্রার্থনা কর, তাহা অন্যের নিকট হইতে অপহরণ করিও না এবং বাহা আপ-নার নিকট হইতে দ্র করিবার জন্য ইচ্ছা করিতেছ, তাহা অন্যের উপর নিক্ষেপ করিও না। বেমন আপনাকে অন্যের প্রীতিভাজন দেখিলে স্থী হও, সেইরপ অন্যের প্রতি প্রীতি করিয়া তাহাকে স্থী কর। তুমি যেমন অন্যের বিষেষে স্থি বোধ কর, সেইরপ অন্যকেও বিষেষ করিয়া কন্ঠ প্রদান করিও না। এইরপ সকল বিষয়ে আপনার সাহত তুলনা করিয়া অন্যের সহিত ব্যবহার করিবে; কেন না স্থ ছংখ আপনাতেও ষেরপ অন্যেতেও সেইরপ। এইরপ আচরণই কল্যাণ্লাভের উপার॥ ৭॥

26

মাতৃবৎ পরদারাংশ্চ পরদ্রব্যাণি লোফবৎ। আত্মবং সর্বব্রুতানি যঃ পশ্যতি দ পশ্যতি॥৮॥

'পরদারান্' পরকলতানি 'মাতৃবং' মাতেব 'পরজ্ব্যাণি' 'চ' 'লোইবং' মুংপিওদমানি। 'আয়বং' আেপমানি 'বৰ্ক ভূতানি' সৰ্ব্ধ প্ৰাণিনঃ 'বঃ প্ৰভৃতি' 'সঃ' এৰ 'পশ্যতি' যাপাতপ্যেনতি যাৰং ॥ ৮॥

যিনি পরস্ত্রীকে মাতৃবং, পরন্তব্যকে লোফবং ও সর্বপ্রাণীকে আত্মবং দেখেন, তিনিই বধার্থ দেখেন।।৮।।

পরব্রীকে মাতার ন্যার দেখিবে এবং মৃল্যহীন মৃৎপি-ণ্ডের প্রতি চিত্ত ধেমন নির্দোভ থাকে, সেইরূপ পরদ্রব্যে নর্লোভ হইয়া থাকিবে এবং আপনাকে বেমন প্রীতির সহিত দেখ, সেইরূপ আর সকলকে প্রীতির সহিত দেখিবে ॥ ৮॥

দ্বাদশোইধ্যায়ঃ।

৯৬

অন্যান্ পরিবদন্ সাধুর্যথা হি পরিতপ্যতে। তথা পরিবদমন্যাংস্তাম্টো ভবতি ছর্ল্ডনঃ॥১॥

'বথা হি' 'অন্যান্' 'পরিবদন্' পরীবাদেন অধিকিপন্
'সাধু:' 'পরিভপ্ততে' পরিভাপ।বিভো ভবতি। 'তথা পরি-বদন্ অন্যান্ ডুই: ভবতি হর্জন:'॥ >॥ আন্যের পরিবাদ দিয়া সাধু ব্যক্তি ধেমন সন্তপ্ত হয়েন, চ্র্জুন ব্যক্তি ডক্রেপ অন্যের পরিবাদ দিয়া তুইট হয়। ১॥

विनि श्रेश्वरक जिल्ल करवन ও मञ्चाक छीठि करवन. ভিনিই সাধু। তিনি কথন মহুব্যকে অপবাদ প্রদান করিয়া স্থানন্দিত হন না, কেন না মনুষ্য তাঁহার প্রিয়। তিনি কাহারও দোষ দেখিলে হঃখিত হন এবং প্রীতির সহিত তাহা দংশোধন করিতে চেষ্টা করেন। তিনি মহুবাকে মহুষ্য বলিয়াই প্রীতি করেন: এই জন্য তিনি কাহারও मन्खन प्रिंग जानिन्छ इन এवः काहात्र प्राप्त प्रिंग ছ:বিত হন; তাঁহার স্থব ও ছাব উভয়ই প্রীতি হইতে উং-পদ ২য়। স্বতরাং তিনি আফলাদের সহিত কাহারও দোব ঘোৰণা করিতে পারেন না। পিতা মাতা বেমন পুত্রকে পুত্র বলিয়াই প্রীতি করেন, এই জন্য পুত্রের গুণ দেখিলে অধীহন ও দোব দেখিলে ছদয়ে আঘাত পান। সেইরূপ মুম্বাকে কেবল সমুষা বলিয়াই প্রীতি করিতে শিক্ষা क्रिंदि ; তাহা হইলে অন্যের অপবাদে হৃদ্য আরু আনন্দিত হইবেনা। যে ব্যক্তি অন্যের দোষ দেখিয়া ও অন্যের দোষ খোষণা করিয়া হাদয়ে সুথ অনুভব করে, তাহার ছদয় অত্যন্ত কুদ্র। তাদৃশ কুদ্রতার সংশোধন করিতে मर्सना यक्रवान् शाकित्व॥ >॥

29

বিপত্তিস্বব্যথো দক্ষো নিত্যমুখানবান্নর:। অপ্রমত্তো বিনীতায়া নিত্যং ভব্রাণি পশ্যতি ॥২॥

য় 'বিপত্তিমু' 'অব্যথা' ব্যথারহিতঃ 'দক্ষ:' কুশলঃ 'নিত্য'' সদা 'উথানবান্' উদ্যোগী 'নরঃ'। 'অপ্রমন্তঃ' প্রমাদবহিতঃ 'বিনীতাত্মা' বিনীতস্বভাবঃ সঃ 'নিত্য'' 'ভ্রালি' কুশ-ানি 'পশ্যতি'॥ ২॥

যিনি বিপৎকালে ব্যথিত হয়েন না, যিনি কর্মাদক, সদা উদ্যোগী, প্রমাদ-রহিত ও বিনীত-স্বভাব, তিনি সর্বাবা কুশল দর্শন করেন॥ ১॥

ষাহার বৈর্যা ও সহিক্তা নাই, সেই ব্যক্তি বিপংকালে অত্যন্ত ব্যথিত হইয়া পডে। অতএব যোদ্ধারা বেমন সংকট-সংক্র মৃদ্ধাকেরে অব্যাকুল চিত্তে দণ্ডায়মান থাকিবাব নিমিত্ত প্রাবিধি শিক্ষা করে, সেইক্রপ ধৈর্যা ও সহিক্তা অভ্যাস করিতে থাকিবে। তাহা হইলে মতই বিপদ উপস্থিত হইক, একবারে হতবৃদ্ধি করিতে পারিবে না। ঈর্মার যে ক্ষমতা দিয়াছেন, দিন দিন তাহার বৃদ্ধি করিয়া অধিকাধিক দক্ষতা উপার্জন করিতে থাকিবে। আলস্য পরিত্যাগ করিয়া প্রতিনির্ভ উন্যন্ধীল থাকিবে। মঞ্জা ও অন্যমন্ত্রতা পরি-

ত্যাগ করিয়া অভিনিধিই চিত্তে লক্ষ্য সাধনে প্রবৃত্ত পাকিবে। ইহা সর্প্রনা অবণ করিয়া রাখিবে যে, ঈপারের অনুগ্রহ ব্যক্তি-রেকে তুমি একটা পদও নিক্ষেপ করিতে পার না; শরীর মন আয়া বল বৃদ্ধি সম্বায়ই তাঁহার অনুগ্রহের উপর নির্ভর করিতেছে; অভএব তাঁহাকে সকলের মূল জানিয়া মহকার ও প্রদ্বা প্রিত্যাগ করিয়া বিনীত হইবে॥ ২॥

ಶಿಕ

বহবোহবিনয়ান্নন্তা রাজান: দপরিচ্ছদাঃ। বনস্থা অপি রাজ্যানি বিনয়াৎ প্রতিপেদিরে॥৩॥

'বহবঃ' 'রাজানঃ' 'অবিনয়াং' অবিনয়বশাং 'দপরিচ্ছদাঃ' হস্তঃখব্ধপাদাতকোষাদিপরিচ্ছদ্যুক্তা অপি 'নষ্টাঃ' প্রাণেড্যো বিষ্কোঃ। কিন্ত 'বনস্থাঃ অপি' দহায়মাত্রহীনা অপি বহবঃ 'বিনয়াং' 'রাজ্যানি' দাঙ্গানি 'প্রতিপেদিরে' প্রাপ্ত-বস্তঃ। তত্মাং দর্মেণ বিনয়িনা ভাব্যমিত্যুপদেশরহদ্যম্॥ ৩॥

অবিনয়-দোষে অশ্ব রথাদি বহু-পরিস্কৃন-বিশিষ্ট অনেক রাজাও নফট হইয়াছেন। অনেকে বনবাসী হই-য়াও বিনয়গুণে রাজ্য লাভ করিয়াছেন ॥ ৩॥

বিনশ্বী ব্যক্তিই ধর্মলাভ করিতে সমর্থ হন এবং বিনশ্বী ব্যক্তিই সংসারে উন্নতি লাভ করিতে পারেন। বিনশ্বহীন বাক্তি সকলেরই বিশ্বিষ্ট হয়। যদি সম্পত্তি থাকে, বিনয়ী হইলে ভাহার শোভা বৃদ্ধি হইবে; যদি বিপত্তি হয়, বিনর-গুণে ভাহা হইতে মুক্তি লাভ হইবে। অতএব ঈশ্বর অন্তরে যে সকল সদ্গুণ প্রদান করিবেন, এবং বাহিরে যে সকল সৌভাগ্য প্রদান করিবেন, তাহার নিমিত্ত এক দিনও অহকার করিবে না॥ ৩॥

৯৯

যৎ কর্ম্ম কুর্ন্মতোহস্য স্যাৎ পরিতোমোহস্তরাত্মনঃ তৎ প্রযন্ত্রেন কুর্নীত বিপরীতস্ত বর্জ্জয়েৎ ॥ ৪॥

থং কর্ম কুর্মতঃ' 'অস্য' কর্মাছঠাতুঃ 'অস্বরায়নঃ' ক্ষেত্রজন্য 'পরিভোষঃ' 'ন্যাং'। 'তং' কর্ম 'প্রথড়েন' মহা-ভিশবেন 'কুর্মীত' কুর্যাং। 'বিপরীতং তু' এতস্য 'বর্জদ্বেং' শ্রেষােইথাঁ চেং । ৪ ॥

বে কর্ম করিলে আত্ম-প্রসাদ হয়, অতি যত্ন পূর্ব্বক ভাহা করিবেক; ভদ্বিশরীত কর্ম পরিত্যাগ করি-বেক 🏿 ৪ 🖫

অস্তরায়ার পরিতোষ—আয়প্রসাদ ধর্মাফ্রানের অবার্থ কল; আয়-প্রসাদেই ঈর্বরের প্রসাদ অস্তৃত হর; আয়া প্রসার পাকিলে আর সকল ছঃথ বিনষ্ট হয়। ধর্মের অসুঠান ব্যতীত আত্মা পরিতৃষ্ট হর না। বিষয়-স্থে মন স্থী হইতে পারে; কিন্তু আত্মাতে বলি মানি থাকে, তাহা হইলে রাশীকৃত বিষয়স্থও ব্যর্থ হইয়া যায়। অতএব ধর্মান্ত্রান ছারা আত্মাকে পরিতৃষ্ট রাখিবে এবং যাহাতে আত্মপ্রসাদের হানি হয়, তাহা পরিত্যাগ করিবে॥ ৪॥

300

ধর্মকার্য্যং যতন্ শক্ত্যা নো চেৎ প্রাপ্নোতি মানবঃ প্রাপ্তো ভবতি তৎ পুণ্যমত্র মে নাস্তি সংশয়ঃ॥৫॥

অপি চ 'ধর্মকার্যাং' সম্পাদয়িত্ং 'শক্ত্যা' 'যতন্' প্রথত্ব' কুর্বন্ 'চেৎ' যদি 'মানবং' 'নো' ন 'প্রাপ্রোতি'। তদা 'তৎ পুণ্যং' তস্য ধর্মস্য ফলং 'প্রাপ্তঃ ভবতি'। 'অব্ব' 'মে' মম 'সংশয়ং' 'ন অতি'॥ ৫॥

মনুষ্য অসাধ্যমত কোন ধর্ম-কার্য্য সাধনে যতু করি-য়াও যদি কৃতকার্য্য না হন, তথাপি তিনি তজ্জ্বন্য পুণ্য লাভ করেন; ইহাতে আমার সংশয় নাই টি ৫ ॥

ধর্মকার্য্যের অন্তর্গানের নিমিত্ত সাধ্যামুসারে যত্ন করিবে।
সমুদার শক্তি নিরোগ করিয়া ক্রতকার্য্য হইতে না পারিলেও
পুণ্যলাভ হইবে। ঈশবের অশেষ কার্য্য কে কতদ্র সম্পন্ন স্করিল, ঈশব তাহা গণনা করেন না; তিনি বাহাকে বে

শক্তি প্রদান করিরাছেন, সে তাহা অকপটে নিরোগ কলক, ইহাই তাহার অভিপ্রার। তাহা হইলেই ডিনি ভাহাকে স্বতক্তা করেন॥ ৫॥

खदत्रामदभाशात्रः।

3.3

ই ক্রিয়াণাং বিচরতাং বিষয়েরপহারিয়। সংযমে যত্নসাতিতে বিদান্ যত্তেব বাজিনাং॥১॥

'ইব্রিরাণাং' 'বিবরের্' 'শপ্রারির্' অপ্তরণ্নীলের্ 'বিচরতাং' বর্জমানানাং 'সংব্দে' 'বিখান্' 'ব্দুম্' 'আতি-ঠেং' কুর্য্যাৎ 'বতা ইব' সার্থিরিব 'বাজিনাং' র্থনিব্তা-নাম্থানাম্ ৪ ১॥

সার্থি বেমন জ্ব সকলের সংব্য করেন, ওজ্রপ মোহমর বিষয়ে প্রায়ুত ইন্দ্রিয়-সকলের সংব্যে জ্বানী ব্যক্তিবভূ করিবেন। ১॥

বে সকল বিষয় ইন্সিয়গোচরে উপস্থিত হইলৈ ক্ষাংকরণে ক্ষুসভাবের উদয় হয়, ইন্সিয়গুণকে তাদৃণ ক্ষুপবিজ বিবরে বিনিয়োগ ক্ষাবেক না। পবিজ বিষয় উপভোগ খায়া ইক্সিরগণকে পরিভৃপ্ত করিরা অহবহঃ জীবনের উদ্দেশ্য সাধনে প্রবৃত্ত থাকিবেক॥১॥

३०२

ইন্দ্রিয়াণাং হি চরতাং যন্মনোহসুবিধীয়তে। তদস্য হরতি প্রজ্ঞাং বায়ুর্নাবমিবাস্তদি॥২॥

যশ্মং 'ই ক্রিয়াণান্' অবশীক তানাং 'হি' 'চরতাং' হচ্ছন্দং বিষয়ের গচ্ছতাং 'ঘং' যদি 'মনঃ' 'অমুবিধীয়তে' অমুকুলং ভবতি তদা 'তং' মনঃ 'অস্য' পুরুষস্য 'প্রজ্ঞাং' জ্ঞানং 'হরতি'। কপমিব 'অস্তুসি' সমুদ্রাদিজ্ঞাল প্রমন্তস্য কর্ণনির ধারস্য 'নাবং' নৌকাং 'বাযুঃ ইব'॥ ২॥

মন যদি স্থেচ্ছাচারী ইন্সিয়-সকলের অনুগামী হয়, ভবে বায়ু যেমন নৌকাকে জ্বলেতে মগ্ন করে, ঐ মনও ভজেণ পুৰুষের বুদ্ধিকে নষ্ট করে॥২॥

যথন যে প্রবৃত্তি উঠে, তাহাতেই ইপ্রিম্ন দিগকে বিচরণ করিতে দিবে না ; কিন্তু আধ্যায়িক ধর্মের আদেশে মনকে স্থানিকত ও বশীভূত করিরা ইক্রিমদিগকে দমন করিবেক। যদি মন বশীভূত থাকে, তাহা হইলে অপবিত্র বিষয় সকল ইক্রিম-পথে উপস্থিত হইলেও মুকুষ্যকে প্রিত্তা হইতে, তাই করিতে পারে না। বর্ষন প্রলোভন-সংস্থা সংসারে অবস্থান করিরাই ধর্ম সাধন করিতে হইবে, তথন মনকে দমন করিতে না পারিলে পদে পদেই বিপদ ঘটিয়া উঠিবে।
মন ইক্রিয়গণের অমুক্ল হইলে মুম্যু হতচেতান হইয়া
পাপমোহে নিম্যু হয়॥२॥

200

ন জাতু কাম: কামানামূপভোগেন শাম্যতি। হবিষা কৃষ্ণবত্মেৰ ভূয় এবাভিবৰ্দ্ধতে॥ ৩॥

কিনিজিয়সংবদেন বিবয়োপভোগাদেব কর্মকামো নির্বংস্যাতি ইত্যাশক্যাহ। 'কাড়ু' কদাচিদপি 'কামানাং' বিবয়াগাম্ 'উপভোগেন' 'কামঃ' অভিলামঃ 'ন' 'শাম্যতি' শমং
নোগৈতি। কিছু 'ভূম এব' অধিকাধিক্ষেব 'অভিবর্দ্ধতে'
বৃদ্ধিমেতি। 'হবিষা' ঘুতেন 'কৃষ্ণবর্মা' অবিঃ 'ইব'। প্রাপ্ত ভোগস্যাপি প্রতিদিনং তদ্ধিক্ভোগবাহাদর্শনাং ॥ ৩॥

কাম্য বস্তুর উপভোগ ছারা কামনার কধন নিবৃত্তি হয় না ; প্রত্যুত স্থত-প্রাপ্ত অগ্নির ন্যায় আরও বৃদ্ধিই হইতে থাকে ॥ এ ॥

বিষরভোগ পরিভৃপ্ত ছইলেই ইক্রিরগণ আপনা ছইতে সংবত হইরা আসিবে অভএব বন্ধপূর্বক ইক্রিরসংবদে প্ররো-অন নাই এক্লপ মনে করিবেক না; বতই বিষয়তোগ করিবে, বিষয়ভোগের কামনা ও চই বৃদ্ধি পাইতে পাকিবে, অবঃকরণ ততই কুর্ঘান্ত হইরা উঠিবে। অভএব কণাপি ইব্রির-দম্যনে ও মনঃসংখ্যে শৈথিক্য করিবেক দা । ৩ ॥

308

ইব্রিয়াণাস্ত সর্কেষাং যদ্যেকং করতীব্রিয়ম্। তেনাদ্য করতি প্রজাদৃতেঃ পাত্রাদিবোদকম্ ॥৪॥

একে জিয়াসংব্যোহণি সহান্ ব্যতিকর ইত্যাহ। 'সর্বেষান্' 'ইজিয়াণাং তু' মধ্যে 'বদি একম্' 'ইজিয়ং' 'কয়তি' বিবরপ্রবাং ভবতি। 'তেন' বারভূতেন 'অস্যা' বিবরপরস্যানবস্য 'প্রজা' বৃদ্ধিঃ 'কয়তি' ইজিয়াভরৈন্নিবভিচ্চতে। অল দৃষ্টাস্তঃ 'দৃতেঃ পালাং' চর্মনির্মিতোদকভাজনাং 'উদ্দক্ষ্' 'ইব'। যথৈকদেশস্থিতেন ছিল্লেণ সর্বাহ্থের ক্রম্ভি এবনেকে জিয়াসংঘ্যবিবরেণ সমন্ত্রমের হ্রাওস্থং জানামৃতং ক্রমন্তি সাম্যম্॥ ৪॥

সকল ইন্দ্রিরের মধ্যে বদি এক ইন্দ্রিরের স্থানন হর, ভবে ভাহাতেই লোকের বুদ্ধিঅংশ হর; কেন চর্ম্মর শাত্রের একমাত্র হিচে ঘারা সমুদার জল নিঃস্কৃত হইরা বার॥ ৪॥

चनविव विवन, चारनक देखिनबाताई रखेक, चाद अक

ইক্রিরবারাই হউক, অব্যক্তরণে প্রবেশ করির। অপবিত্র কামনা উৎপন্ন করিলেই মন্থবার পতন হয়; অতএব কোন ইক্রিরকেই বব্দেহ রূপে বিবর ভোগ করিতে অবসর প্রধান করিবেক না॥৪॥

300

ন তবৈতানি শক্যতে সংনিয়ন্তমেশেশ্য। বিষয়ের প্রজুটানি যথা জ্ঞানেন নিত্যশ: ॥ ৫ ॥

ইবানীমিপ্রিয়সংব্যোপার্যাহ। 'এতানি' ইবিরাণি 'বিষরের্' 'প্রস্কানি' প্রস্কানি 'অসেবরা' নিতাক্তবিষয়া-দেবনেন 'নিভাশঃ' সর্বাধা 'সংনির্ভঃ' 'তথা' 'ন' 'শক্যত্তে' 'বথা' 'আনেন'। তথাছকোপারেন বিবেকিভিরিজির-মনসাং সংব্যা কর্ত্তব্য ইতি বাক্যার্থঃ॥ ৫॥

বেষন জ্ঞানের জালেজে বর্ণাযোগ্য ব্যবহার ছারা বিষয়াসক্ত ইন্দ্রিয়-সকলকে নিত্য বলে রাখা বায়, নিতাস্ত জোগ পরিত্যাগ স্বায়া সেরপ পারা বায় না।। ৫ ।।

বিধর-মূবের আখাদন একেবারে পরিত্যাগ করিলেই ইজিরপণ পণীভূত হর না। বিবেকসহকারে হেরোপাদের পৃথক্ করিরা হের বিবর পরিত্যাগ ও উপাদের বিবর গ্রহণ পূর্কাক ক্রারে ক্রারে সিদ্ধি লাভ করিবেক ৪ ৫ ৪

300

অবিদ্বাংসমলং লোকে বিদ্বাংসমপি বা পুনঃ। প্রমদা হ্যুৎপথং নেতুং কামক্রোধবশাকুগম্॥৬॥

প্রমদয়ন্তি পুরুষান্ ইতি 'প্রমদা:' ব্রিয়ন্তা: 'লোকে'
'অবিধাংদং' 'পুন:' 'বিধাংদম্ জ্বপি বা' 'কামক্রোধবশামুগং'
কামক্রোধবশামুষায়িনং পুক্ষং 'উংপথম্' উচ্ছৃত্যগতাং
'নেতুং' প্রাপয়িতুম্ 'অলং' সমর্থা: ॥ ৬ ॥

এ সংসারে কাম জোধের বলীভূত ব্যক্তি অবিদ্বান্ ভউক বা বিদ্বানই ছউক, কামিনীগণ ভাষাকে বিপথ-গামী করিভে সমর্থ হয়॥৬॥

কেবল বিদ্যা থাকিলেই জিতেক্সিয় হওরা বায় না। বিশিন কাম ক্রোধ প্রভৃতি রিপু সকলের অধীন হইয়া চলেন, তিনি বিদ্যানই হউন, বা মৃথ ই হউন, তাঁহাকে ধর্মপথ হইতে পরিজ্ঞ ইইতে হয়। অতএব সর্ধ্যেশ্বরে আন্তরিক রিপু-গণকে স্ববশে আন্যান করিবেক॥ ৬॥

209

वर्ष कृष्डिखिय्यामः मःयम् ह मनळ्था। मर्कान् मःमाधरयम्थानिकृतन् यागठळकूम् ॥ १॥

ষ্পতএব 'ইব্রিরগ্রামং' বহিরিক্রিরগণং 'বলে ক্তর্য' 'তথা'-'মনঃ' 'চ' 'সংযম্য' 'স্পান্' 'অর্থান্' পুক্রার্থান্ 'সংসাধ্যেৎ' 'বোগতঃ' উপারেন 'ভরং' অংশহক 'অকিণুন্' অণীড়য়ন্ সন্দৰ্॥

যাহাতে শরীর কীণ না হয়, এমত উপায় ছারা মন ও ইন্দ্রিয় সকলকে বনী হুত করিয়া সর্বার্থ সাধন করিবেক । ৭॥

উপবাদাদি ছারা শরীরকে ক্ষীণ করা পুরুষার্থ দাধনের প্রকৃত উপার নহে, তাহাতে মহুব্য নিজেজ হইরা ফেমন পাপাচরণে নিবৃত্ত হয় সেইকাপ পুণাাচরণেও অসমর্থ হইরা পড়ে। অত্তৰ মন ও ইক্সিল্ল স্কল বাহাতে অপ্ৰিক্ত বিষয়ভোগে উন্মুখ না হয় এইরূপে বশীভূত করিয়া উপযুক্ত উপার দারা পুরুষার্থসাধনে প্রবৃত্ত থাকিবেক। চকু কর্ণ প্রভৃতি জানে জির বারা জ্ঞানোপাজ্জন ও হত পদ প্রভৃতি কর্মেঞ্জির বারা কর্মাত্রহান করিয়া লোকলোকান্তরগামী आशा छान अधार्य डेइड इरेटड शांकिटन, এर यन भन्नाम-খর মহুবাকে ছই প্রকার ইক্সির প্রদান করিয়াছেন; কিন্ত তাঁহার এমনি করুণা বে, তাহার সঙ্গে বিষয়-সুধ আবাদন ক্রিয়াও তৃপ্তিলাত ক্রিতে অনুমতি 'নিয়া রাখিয়াছেন। কিন্ত বে ব্যক্তি ইপ্রির লাভের প্রধান উদ্দেশ্র বিস্তৃত হুইয়া কেবল তাহার আতুস্বিক ফল্বরূপ বিষয়-সুখের উপ্-ভোগেই নিবুতি হইরা পাকে, সেই ব্যক্তিই অবনতি প্রাপ্ত हम्॥१॥

Бर्क्ः शार्थाग्रः।

306

ঘদা ন কুরুতে পাপং সর্বভূতেরু কহি চিং। কর্মণা মদসা বাচা ব্রহ্ম সম্পদ্যতে তদা॥ ১॥

'বদা' ৰিমন্ কালে মহুৰ্য: 'কৰ্মণা মনসা বাচা' 'স্ব্ ভূতেমু' 'ক্হিচিং' কদাপি 'পাপং' 'ন কুক্তে' 'তদা' 'ব্ৰহ্ম' 'সম্পদ্যতে' প্ৰাপোতি ॥ ১ ॥

যখন মনুষ্য কোন প্রাণীর প্রতি কর্মা, কি মন, কি
ব ক্যামার কদাপি পাপাচরণ না করেন; তখন জিনি
জক্ষাত করেন । ১ ॥

কাহারও অনিষ্টাছরণ করিবেক না, কাহারও অনিষ্ঠ চিত্তা করিবেক না, অন্তের অনিষ্ঠাচরণের বাক্যও পরিত্যাগ করিবেক। অস্তের প্রতি পাপাচরণ করিলে আপনাকেই পাপপত্থে নিমগ্ন করা হয়। অত এব কার্যনাবাক্যে পরিশুদ্ধ থাকিরা সকলের প্রতি সন্তাব প্রকাশ করিবেক। তাহাতে পুণ্যবান্ হইরা পবিত্রস্বরূপ ঈশ্বরকে লাভ করিত্তে স্মর্থ স্ইবৈক ॥ ১॥

300

পুণ্যং ক্ৰিন্ পুণ্যকীঠিঃ পুণ্যস্থানং স্ম পচছতি। পুণ্যং প্ৰাণান্ ধারয়তি পুণ্যং প্ৰাণদম্চাতে ॥ ২॥

'পুণাং কুর্বন্' পুণাকীর্ত্তি' সন্ সঃ 'পুণাস্থানং' 'পুছতি'
'স্থ'। ৰতঃ 'পুণাং প্রাণান্ ধারমতি' লোকানাম্ অতঃ 'পুণাং'
'প্রাণদং' প্রাণান্ দাত 'উচাতে' ॥ ২ ॥

মনুষ্য পুণ্য কর্ম করিলে পবিত্র কীর্স্তি লাভ করেন এবং পুণ্য লোকে গমন করেন; পুণ্য জীবের প্রাণ ধারণ করেন, পুণ্য প্রাণ-দাতা বলিয়া উক্ত হইয়াছেন ॥২॥

অয়ণান বেমন দৈহিক জীবনকে পোৰণ করে, সেই-রূপ পূণ্য দারা আ্যার জীবন রক্ষিত হয়। অতএব ষে সকল কর্মে পূণ্য লাভ হইবে, তাহার অফুঠানে সর্কাণ বছণীল থাকিবেক। যেমন নিবিদ্ধ কর্ম পরিত্যাগ করিয়া নিশাপ হইবেক, সেইরূপ বিহিত্ত কর্ম অফুঠান করিয়া পূণ্য উপার্জ্ঞন করিবেক। পূণ্যবান মন্ত্র্য ইহকালে পবিত্র কীর্ত্তি লাভ করেন ও পরকালে উন্নত্ত লোকে গ্রন্থন মহার

220

পাপং চিন্তয়তে চৈৰ ত্ৰবীতি চ কৰোতি চ। তত্মাধৰ্মে প্ৰবিক্ষ গুণা নশ্যন্তি সাধবঃ॥ ৩॥ যো হি 'পাপং চ এব' 'চিস্তরতে' সঙ্কলনতি 'ব্রবীতি চ' করোতি চ' 'তদ্য অব্ধর্মে প্রবিষ্টদ্য' 'দাধবঃ' 'গুণাঃ' 'নশ্বতি'॥ ৩॥

যে ব্যক্তি অধর্মে প্রবৃত ছইরা পাপ চিন্তা করে, পাপ আলাপ করে, পাপ অনুষ্ঠান করে; ভাছার সদ্-গুণ সকল নষ্ট হয়॥ ৩॥

চিন্তাবোত কোন না কোন বিষয়ে প্রবাহিত না হইরা
নিরবলয় থাকে না। মহুষ্য যথন সন্বিষয়ের চিন্তাতে প্রবৃত্ত
হন, ভথন তাঁহার সন্ধাব সকল ক্তৃত্তিযুক্ত হইরা সংক্রম
সাধনে তাঁহার প্রবৃত্তি উৎপাদন করে। কিন্তু যথন তিনি
অসন্বিষয়ের চিন্তা করিতে থাকেন, তথন তাঁহার অসম্ভাব
সকল উদীপ্ত হইরা তাঁহাকে পাপালাপ ও পাপ কর্ম্মে উৎসাহিত করে। অতএব পাপচিন্তা উদিত হইবামাত তাহার
উন্মূলন করিবেক। পাপচিন্তা প্রবন্ধ হইরা মাত্র তাহার
উন্মূলন করিবেক। পাপচিন্তা প্রবন্ধ হইরা এইরূপে
ক্রমে ক্রমে পাপেতে নিম্মা হইরা পড়ে। যে ব্যক্তি ক্রমান
গত পাপাচরণ করিরা পাপেতে প্রবিষ্ট হইরা পড়ে, তাহার
আর সম্বার সাধু গুণ তিরোহিত হইরা যার। চিন্তাকে
সর্কারা সাধু বিষয়ে নিরোগ করিরা রাধিবেক এবং পাপালাপ
গুণাকর্ম্ম সম্পূর্ণ রূপে পরিত্যাগ করিবেক॥ ৩॥

222

যে পাপানি ন কুর্বস্তি মনোবাক্কর্মকৃদ্ধিভি:। তে তপন্তি মহাত্মানো ন শরীর্দ্য শোষণম্॥ ৪॥

'(ছ' মিহাগ্রান:' অক্তব্দ্ধ: 'মনোবাক্র্ব্দ্নিভি:' করণভূতৈ: 'পাপানি ন ক্রিছি'। '(ত' এব 'তপছি' তপ: ক্রিছি। অপি ভূবে 'শরীরস্য শোষণ্য' সাধ্যন্তি তে 'ন' তপ্তি॥ ৪॥

ষীছারা মন ও বাকা ও কর্মা ও বৃদ্ধি ছারা পাপাচরণ না করেন, সেই মহাজ্মারাই তপস্যা করেন,যাঁহারা শরার শোষণ করেন, তাঁহারা তপস্যা করেন না॥ ৪॥

পাণকামনা, পাণবৃদ্ধি, এবং পাপজনক বাক্য ও কর্ম পরিত্যাগ করিবে। সর্বাপ্রকারে নিশাপ থাকিবার জ্ঞা যত্ত্ব ও চেঠা করাই তপদ্যা। উপবাদাদি দ্বারা শরীরকে পরি-শুক করিলে তপশ্চর্যা হয় না॥ ৪॥

225

প্রাজ্যে ধর্মেণ রমতে ধর্মকৈবোপজীবতি।
ধর্মাত্মা ভবতি ছেবং চিত্তঞাস্য প্রদীদতি॥ ৫॥
'প্রাক্তঃ' বিবেকী 'ধর্মেণ' সহ 'রমতে' বিহরতি 'ধর্মাং চ

এব উপজীবতি' ধর্ম্বেটনৰ ক্লতেন জীবনোপাররূপেণ প্রাণান্ ধাররতি নত্বধর্মেণ 'এবং' 'হি' ঈদুদেনৈব প্রকারেণ 'ধর্মাত্মা' ধর্মস্বভাবঃ 'ভবতি'। 'চিন্তং চ' 'অস্য' ধর্মপরস্য 'প্রসী-দতি' প্রস্রো ভবতি ॥ ৫॥

প্রাক্ত ব্যক্তি ধর্মেতে রমণ করেন, এবং ধর্মপথে জীবিকা লাভ করেন। এই প্রকারেই মনুষ্য ধর্মাত্মা হন এবং ইহাঁর চিত্ত প্রসাদ লাভ করে॥ ৫॥

প্রজ্ঞাবান মহুষ্য বিবেক সহকারে পাপের মলিনত।
ও ধণ্মের সৌলর্য্য দর্শন করিয়া পাপ পরিত্যাগ পূর্বাক
ধর্মাচরণে প্রবৃত্ত থাকেন এবং ধর্মপথে থাকিয়া আপনার
জীবিকা নির্মাহ করেন। তিনি পাপাচারজ্ঞনিত পরিণামে
ক্লেশজনক কণভঙ্গুর হুখ পরিত্যাগ করিয়া অমূল্য আয়প্রশাদ ভোগ করিতে থাকেন। অতএব ধর্মাহুষ্ঠানে বিদ্
আপাতত: কোন প্রকার কঠ উপস্থিত হয়, তথাপি ভীত
হইয়া তাহা হইতে পরাঅ্থ হইবেক না ও পাপ কর্ম্মে
আপাতত: হুখ লাভের সন্তাবনা দেখিলেও সূক্ষ হইয়া
ভাহাতে প্রবৃত্ত হইবেক না। প্রভূতে প্রজ্ঞা সহকারে পাপ
ও প্রণ্যের ভবিষ্যৎ ফলাকল সর্ম্বান পর্যালোচনা করিবেক্ষ বিধ্যা

220

যদ্যাস্থা বিরহ: পাপাৎ কল্যাণে চ নিবেশিত:। তেন দর্বনিদং বুদ্ধং প্রকৃতির্বিকৃতিশ্চ যা॥ ৬ ম

ভধাহি 'বস্য আয়।' 'পাপাং' 'বিরতঃ' নির্ভঃ 'কল্যানে' শুভে 'চ' 'নিবেশিতঃ' প্রবেশিতঃ 'তেন' বিবে-কিনা 'সর্বাং' বিশ্ব 'ইদং' 'বৃদ্ধং' জ্ঞাতম্। তথ বোধনমাহ বাং' প্রাকৃতিঃ যাধান্মান্ধপা যা 'চ' 'বিকৃতিঃ' বিপরীতা॥ ৬ র

যাঁহার আত্মা পাপ হইতে বিরত হইয়াছে এবং শুভ কার্য্যেরত হইয়াছে, ভিনি জ্ঞানেন যে কি অভাব-সিদ্ধু আর কি অভাব-বিৰুদ্ধ ॥ ৬ ॥

আয়া যাবং পাপেতে প্রবৃত্ত থাকে, ভাবং তাহার বৃদ্ধি
বিপরীত দর্শন করে। তথন পাপাচরপকেই হব লাভের
হেতৃ বলিয়া বোধ হইতে থাকে; ধর্মের হ্মধ্র আখাদন
ভিক্ত বোধ হয়; পাপাচারের প্রতিপোষক অসাধ্গণই
প্রপন্নভাজন হয়; সাধ্গপের সংসর্গ বিরক্তি উৎপাদন করে;
ঈরম ছায়ার ফায় ও ধর্ম প্রবং প্রতীয়মান হইতে থাকে;
বর্তনান হবই সর্ক্ষ বোধ হয়; অনন্ত জীবনের প্রতি দৃষ্টি
অল কইয়া উঠে। আয়া এইরপ বিকারগ্রান্ত হইলে কি
স্বভাবদিছ আয় কি প্রভাববিক্ষ তাহা হদরদ্য করিটে

সমর্থ না হইয়া শোচনীয় অবস্থা প্রাপ্ত হয়। অত এব পাপ হইতে নিবৃত্ত হইয়া কল্যাণেতে আপনাকে নিয়োজিত করিবে, ভাষা হইলে প্রজ্ঞা ক্ষুর্তি লাভ করিয়া সংপথ ও অসংপথ সহজ্যে প্রকর্শন করিতে থাকিবে ॥ ৬ ॥

>>8

প্রজ্ঞাচক্ষ্মর ইহ দোষাদ্মৈবাকুরুধ্যতে। বিরজ্যতে যথাকামং ন চ ধর্মং বিমুঞ্জি॥ ৭॥

'প্রজাচক্ষ্:' জ্ঞাননেত্র: 'নর:' 'ইহ' লোকে 'দোষান্ন এব অন্কধ্যতে' দোষাপুক্ষো ন ভবতীতার্থ:। 'ঘণাকাদং', তিগা 'বিরক্ষাতে' বীতরাগো ভবতি 'ন চ ধর্মং' 'বিম্কৃতি' তাজতি ॥ ৭ ॥

বে মনুষ্য জ্ঞান-নেত্র লাভ করিয়াছেন; তিনি আর ইং লোকে দোষেতে আবদ্ধ হয়েন ন।। তিনি স্বেচ্ছ:-নুসারে রাগ পরিভাগে করেন, কিন্তু ধর্ম পরিভ্যাগ করেন না॥ ৭।।

অধর্মের প্রতি বৈরাণ্য ও ধর্মের প্রতি অহরাপ কল্যাণ লাভের উপায়। বিনি জ্ঞানচকু লাভ করিরাছেন, তিনি ধত্ম ও অধর্মের প্রকৃতি ও পরিণাম যথার্থরূপে উপলব্ধ করিরা ধর্মের প্রতি জ্ঞাতরাগ ও অধর্মের প্রতি বীত্রাগ হন;

336

বার্য্য মাণোহলি পাপেভ্যঃ পাপাক্সা পাপমিচ্ছতি।
- চোদ্য মানোহলি পাপেন শুভাক্সা শুভমিচ্ছতি॥৮॥

বো বৈ 'পাপাল্লা' পাপাচরণনীন: স: 'পাপেভ্য:' 'ধার্য-মাণ:' নিধিধ্যমান: 'অপি' বক্ভি: 'পাপম্' এব 'ইচ্ছেডি' কর্জুমিতি শেবং। বৃশ্চ 'শুভাল্লা' ধর্মাযুষ্ঠানশীল: স: 'পাপেন' 'চোদ্যমান:' প্রেধ্যমাণ: 'অপি' নোকৈ: 'শুভদ্ ইচ্ছেডি' ॥ ৮ ॥

পাপাত্মা ব্যক্তি পাপ ছইতে নিবারিত ছইলেও পাপ ইফ্ করে। ধর্মণীল শুভাত্মাকে পাপ কর্মে প্রারুত্তি দিলেও তিনি কল্যাণ ইচ্ছা করেন।। ৮ ।।

পাণাচরণ অভ্যাস হইরা গেলে তাহা হইতে নিবৃত্ত
হএরা অনারাস-সাধ্য নহে এবং পুণ্য কর্ম করা যাহার

অভ্যাদ হইরা যায়, পাপ-কর্ম্মে দহদা তারার প্রবৃত্তি উংপক্ষ হয় না; অত এব দিন দিন ধর্মান্দুটান অভ্যাদ করাই ধর্ম-পথে মুগ্রাম ইইবার উংকৃষ্ট উপায়। প্রথমে বৃদ্ধি কট হর, ভাহা সহু করিয়াও ধর্মাচরণ অভ্যাদ করিবেক, পরিশেষে ভাহা অভি দহল ইইয়া উঠিবে ॥৮৪

220

ধর্মএব হতো হস্তি ধর্মো; রক্ষতি রক্ষিতঃ। তত্মান্ধর্মোন হস্তব্যোমানোধর্মো হতো বধীং॥৯

ধিৰ্ম: 'হতঃ' অজিকাতঃ সন্'হন্তি' 'এব' অভিকাতা-রম। 'ধৰ্মঃ' 'রক্তিঃ' সন্ 'রক্তি'। 'ভবাং ধৰ্মঃ' 'ন হত্তব্যঃ' নাতিক্ষণীরঃ সংকা:। 'ধৰ্মঃ' 'হতঃ' সন্ 'নঃ' অবান্'মা বধীং' নহন্তী হাৰ্থঃ ॥ ১॥

বে ব্যক্তি ধর্মকে নম্ভ করে, ধর্ম ভাষাকে নফ করেন; আর বিনি ধর্মকে রক্ষা করেন, ধর্ম উর্বাকে রক্ষা করেন। অভএব ধর্মকে নাশ করিবেক না। ধর্ম হত হইরা আমাদিগকে নফ্ট না ককন ॥ ৯॥

যে বাক্তি ধর্মকে উরজ্মন করে, দে ছুর্গতি প্রাপ্ত হর, এবং যে বাক্তি ধর্ম পালন করে, দেই উন্নতি লাভ করে; ঈবর আমাদিগের কন্যানের নিষিত্ত এইরূপ নির্ম প্রতিষ্ঠিত করিরাছেন। অভ্নের উচ্চার শুভ অভিপ্রায় ও অপরিহার্থ্য নির্মের প্রতি অভাবান্ হইর। প্রাণপণে ধর্মকে প্রতিপাদন পূর্বাক উচ্চার অভিপ্রেত কল্যাণমর পর্ণে মগ্রাসর হইবেক। অগঃপথে নিশ্তিত হইবার অভ ধর্মকে উল্লেখন করিবেক না॥ ১ ঃ

1:9

এক এব স্থল্ড কেন্দ্র। নিধনেহপ্যস্থাতি যঃ। শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্যমন্তব্দি গচ্ছতি॥ ১০॥

'এক:' কেবল: 'ধর্ম:' 'এব' 'সুহুর' মিত্র: 'ব:' 'নিধনে
অপি' মরণে চ সতি 'অপুবাতি' অতীইফলনানার্থনস্পত্তি।
'হি' প্রনিছো 'অসুব' 'সর্ব্বং' ভার্যাপুত্রধনাদি 'পরীরেণ সমং'
দ্মীরেশ সহ 'নাশং' 'পৃত্তি' অতঃ পুত্রাদিসেহাপেক্য।
ধর্মোন হস্তব্যঃ ১০॥

ধর্ম কেবল একই মিত্র, বিনি মুরণকালেও অনুগার্মী হয়েন; আর সমুদারই শরীরের সহিত বিনাশ পার ৪১০॥

মৃত্যে প্র বে সকল বিবরের সহিত মন্ত্রের স্থান বিনাশ প্রাপ্ত হয়, তাহার প্রতি অত্যক্ত আসক্ত হইবেক না এবং ধর্মের অন্তরেধে তৎসমুদার পরিত্যাগ করিতেও কৃষ্টিত হইবেক না। এবানকার আর কিছুই সঙ্গে বাইবে না,

কেবল মানাদের পুণ্য ও পাপ সহগানী হইবে। পুণ্য বন্ধুর স্থার সহার হইরা উরভিতে লইরা বার, পাপ শক্রর জার ভর্তর হইরা হংখানলে দগ্ধ করে। অতথ্য তির্দ্ধীবন ধর্মকে আশ্রর করিরা থাকিবেক এবং আর সম্বার অপেকা ধর্মের প্রতি অধিকতর অহ্বরক হইবেক॥১০॥

>>>

ন ধর্মোহস্তাতি ময়ানাঃ শুচানবহসন্তি বে। অশ্রদ্ধানা ধর্মস্য তে নশ্যন্তি ন সংশয়ঃ॥ ১১ ॥

নি ধর্মা অভি ইতি' 'মথানাং' মন্তমানাং 'ওচীন্' ওদ্ধান্ ধন্মিগান্ 'যে' 'অবহদন্তি উপংদন্তি বেহপি 'ধর্মদ্য' 'অ এক ধানাং' অগ্রদাবতঃ 'তে নশুভি ন সংশরং'॥ ১১॥

ধর্ম নাই মনে করিয়া বাছারা সাধু ব্যক্তিদিগকে উপহাস করে এবং ধর্মেতে অপ্রাক্তা করে, ভাছারা নিঃসন্দেহ বিনাশ পায়॥ ১১॥

ক্ষনও 'ধর্ম নাই' এরপ মনে করিবেক না এবং ধার্মিকদিগের প্রতি উপহাস করিবেক না। যদি কখন ধর্মের
প্রতি অবিখাস উৎপর হয়, তাহা হইলে আসনাকে প্রকৃতিভ্রত্ত ও বিপদের সমিহিত কানিয়া সাবধান হইবেক। বেমনঃ
কড়রাকো প্রাকৃতিক নিরম প্রভিষ্টিত আছে, সেইরূপ ধর্ম-

রাজ্যে ধর্মনিরম প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে; ইহাতে কিছুমাঞ্চ সংশন্ম নাই। ঈবর ধেমন প্রকৃতির নিরন্ধা, সেইরূপ আয়া। সকলের নিরস্তা; ইহার কুত্রাপি অরাজকতা নাই। পাপী অবশ্যই দণ্ড পাইবে, পুণ্যবাদ্ অবশ্যই পুরস্কৃত হইবেন॥১১॥

279

স্থং হ্যবমতঃ শেতে স্থপ্ত প্ৰতিবৃধ্যতে। স্থং চরতি লোকেহন্মিন্ ব্ৰমন্তা বিনশ্যতি॥১২

শ্বিং হি' হথ। ভবতি তথা 'অবসত:' অবজ্ঞাত: 'শেতে' নিদ্রাতি। 'হ্বং চ' 'প্রতিবৃধ্যতে' জাগার্ড। 'হ্বং চবতি লোকে অন্নিন্'। 'অবসভা' অবজ্ঞাতা তু 'বন শাতি'। তত্মাং তর কার্যামিত্যভিত্রার: ৪ ১২ গ

অপমানিত ব্যক্তি স্থাধ নিজা বায়, স্থাধেতে জাঞাং হয় এবং স্থাধেতে পোক-বাতা নির্বাহ করে; কিছু বে অপমান করে, সেই বিনাশ পার ॥ ১২॥

কাহাকেও অবমাননা করিবেক না, যে ব্যক্তি অবজ্ঞাত •হর, ডাহার বান্তবিক কোন অনিট হর না; কিন্ধ বে ব্যক্তি অবমাননা করে সেই অপরাধী হয় ॥ ১২ ॥

320

পাপং কুর্বন্ পাপকীর্ত্তিঃ পাপমেবাশ্বতে ফলম্। পুণ্যং কুর্বন্ পুণ্যকীর্ত্তিঃ পুণ্যমত্যন্তমশ্বতে ॥১০॥

'লাগং কুর্বন্' 'পাপকীর্ত্তি:' সন্ 'পাপম্ এব ফলম্' 'অলুতে' ভূঙ্জে। 'পুণ্যং কুর্বন্' 'পুণ্যকীর্ত্তি:' সন্
'অভ্যত্তং' 'পুণ্যন্' 'অলুতে'॥ ১৩॥

মনুষ্য পাপাচরণ করিলে অপকীর্ত্তি প্রাপ্ত হয় এবং অশুত কল ভোগ করে, পুণাামুষ্ঠান করিলে সংকীর্ত্তি প্রাপ্ত হয় এবং অভ্যস্ত শুভ ফল ভোগ করে॥ ১৩॥

পাপ কর্ম করিলে মহুবোরাও অসন্ত ই ইরা পাশকারীর অপকীর্স্তি ঘোষণা করে, সর্ব্বাক্ষী ঈশ্বরও তাহাকে
দণ্ড দান করেন এবং পুণ্য কর্ম করিলে মহুবোরা পরিভৃত্তি
ইইরা পবিত্ত কীর্ত্তি প্রচার করে ও ঈশ্বর তাহাকে প্রস্থার
করেন। অভএব মনে করিও না বে, পাপ কর্ম করির।
পৃথিবীতে ক্থ-সভ্জ্ল ভোগ করিতে পারিবে এবং ইহাও
মনে করিও না বে, ধর্মপথে থাকিলে পৃথিবীতে কেবল
ফ্র ভোগই করিতে হর। ঈশ্বর অধর্মের প্রতিকূল
ও ধর্মের প্রতি অহুক্ন, এবং তিনি মহুবাজাতিকেও স্থতাবতঃ পাপের বিপক্ষ ও পুণোর স্থাক্ষ করিয়া ক্রিটি করিয়াহেন। কেহ পাপাচরণ করিলে ঈশ্বর অস্তরে তাহাকে

দশু দান করেন ও মহ্যা বাহির হইতে তাহাকে দণ্ডিত করিতে থাকে। এবং কেন্ প্লাচরণ করিলে ঈশর অন্তরে তাহাকে প্রস্তুত করেন, মহ্যোরা বাহির হইতে প্রস্তার প্রদান করিতে থাকে। মহ্যাকাতির বিচারদোবে সময়ে সমরে ইহার বাতিক্রম দৃত্ত হর বটে, কিন্তু ভারম্মরেণ ঈশর-প্রাদে কণকাল পরেই প্লা কর্মা বিগুণ তেজে দীপ্তি পাইতে থাকে, পাপকর্ম বিগুণ ভ্লার সহিত পদতলে দলিভ হইরা বার; কুমাটকা কতক্ষণ দিবাক্রকে প্রাত্তি রাখিতে পারে দ্ অতএব পাপক্র পরিত্যাগ ও পূণ্য কর্মের ক্ষ্মন্ত্রন পূর্বকে উভর লোকে দীপ্তি লাভ করিবেক ॥ ১০॥

253

তস্মাৎ পাপং ন ক্কীত পুরুষং শংদিতত্ত। পাপং প্রজ্ঞাং নাশয়তি ক্রিয়মাণং পুনঃ পুনঃ ॥১৪

'তকাং' 'পুরুষঃ' 'লংদিতত্ততঃ' কৃতগ্রতিজ্ঞঃ সন্ 'পাশং ন কুবীত'। কিঞ্চ 'পাশং' 'পুনঃ পুনঃ' 'ক্রিয়াশং' সং 'প্রজ্ঞাং' বৃদ্ধিং 'নালয়তি'। বৃদ্ধিনাশাং স চৈব প্রশাতি পাপবান্। অভ এবোজঝিত। পাপ-সহদ্ধং ধর্মাচরণমেব প্রেয়াহর্পিটিঃ কার্যমিত্যর্প: ॥ ১৪ ॥

দৃত্পতি র হইয়া পাশ কর্ম পশিতাশে করিবেক।
প্রতিজ্ঞার দৃত্তা না পাকিলে পাশের উপর জয় লাভ করা
হংপার্য হইবে। পাপের মোহিনী শক্তি মুর্রাকে সহল।
বিমোহিত করে, পাপত্যা গা কঠো ৯ প্রতিজ্ঞাও শিবিল
করিয়া দের, এবং বলপুর্বাক মহব্যের হাবরকে আকর্ষণ
করে। পাপানল হাল্যে প্রজ্ঞানিত হইলে, তাহাতে বৃদ্ধি
বিবেক সকলই দ্যু হইরা বার। অতএব ঈশ্রকে হাল্যে
রাধিয়া দৃত্বত হইবেক, ত্রাতীত পাপত্যাগের প্রতিজ্ঞা
কিত্তিই পরিপূর্ণ হইবে না॥১৪॥

পঞ্চদশো>ধ্যায়ঃ।

223

নিষেবতে প্রশস্তানি নিন্দি তানি ন দেবতে। অনাস্তিকঃ প্রদ্রধান এতং পণ্ডিতলক্ষণম্ ॥ ১॥

বা হি 'প্রশন্তানি' ছাইবোগ্যানি শুভানি কর্মাণি 'নিবে-বতে' করোতি 'নিন্দিতানি' পুন: ন 'সেবতে' বোহণি 'অনাত্তিক:' নাত্তিক্যরহিত: 'প্রদ্ধান:' প্রছাবান্ তগ্য 'এতং' 'পশুভ্লক্ষম্'॥ ১॥

यिनि अभक्ष कर्त्यात अनुष्ठीन करतन, এवर गर्हिड

কর্ম পরিত্যাগ করেন, এবং শ্রদ্ধাবান্ও অনান্তিক হয়েন, তিনি জ্ঞান লাভ করিয়াছেন ॥ ১ ॥

যেকপ জ্ঞান শিক্ষা করিলে সদয় প্রশন্ত হর এবং সংক্রেপ্রা ও অবংক্ষেত্র, ধর্মের প্রতি আছা ও ঈশ্রের প্রতি শ্রহা ও ভক্তি উংপর হর, সেই জ্ঞান উপার্জন করিয়া জ্ঞানবান্হইবেক। ১॥

:20

একো পদ্ধ প্রং শ্রেষ্ট ক্ষানৈক। শান্তিক্তনা। বিদ্যৈকা প্রমা তৃপ্তিরহিংলৈকা छ্থ¦বহা॥ ২॥

'একঃ' 'বর্দ্ধঃ' এব 'পরং' 'শ্রেরঃ' কল্যাণসাধনং তথা 'একঃ' ক্ষমা' 'উত্তমা' 'শাস্থিঃ' 'একঃ' 'বিদান' 'পরমা' 'ভৃপ্তিঃ' উত্তমভৃপ্তিহেতুঃ। 'একঃ' 'অহিংসন' 'স্থাবহা' স্থ্যাবহৃত্যি । ।

ধর্মাই এক মঙ্গল-সাধন, ক্ষমাই এক উত্তম শাস্তি, বিদ্যাই এক পারম তৃপ্তি, এবং আহিংসাই এক স্থাধের কারণ। ২।।

ধর্ম বাতীত কল্যাণ লাভের বিতীম উপায় নাই; অত-এব ধ্যাপরায়ণ হইবেক। ক্ষমা ও সহিকৃতা অভাস করিয়া শান্তি লাভ করিবেদ। বিদ্যাতে অমুরক হইবা ভৃত্তির ধ্ উপভোগ क्तिरवक। काशांक्छ हिश्माना क्तिया छ्यी इटेटक्स। २ ॥

>28

শুভাশুভফলং কর্ম মনোবাগেদহসম্ভবম্। কর্মজা গতথো নুগামুত্তমাধ্যমধ্যমাঃ॥ ৩॥

'ভভাভভফলং' স্থধঃপফলকং 'মনোবাগ্দেহসম্ভবং'
মনোবাগ্দেহসভ্তং 'কর্ম'। তথাহি 'নুগাং' মহব্যাগাম্
'উত্তমাধ্যমধ্যমাঃ' 'গ্রুলঃ' 'কর্মজাঃ' কর্মজাএব ভব্সি॥ গ্র

মানসিক, বাচনিক, এবং শারীরিক এই ডিন প্রকার কর্ম্মেই শুক্ত এবং অশুক্ত ফল ক্রম্মে। মনুষ্যদিগের উত্তম, মধ্যম, অধ্য, ডিন প্রকার কর্ম্ম-জনিত গতি হর ৪ ৩ ।

চিন্তা প্রভৃতি মানসিক ব্যাপার, বাক্যোচ্চারণ ও শরীর

ষারা অফুটিত কর্ম সকল, এই তিন হইতেই শুভ বা অশুভ
ফল উৎপর হর। মন নারাই হউক, বাক্য ঘারাই হউক,
আর শরীর ঘারাই হউক, মহুব্য যাহা কিছু করিবে, তাহার
এক বিন্দুও বিফল হইবে না; একটি চিন্তাও বিফল হর
না, একটি বাক্যোচ্চারণও বিফল হর না, একটি কর্মপ্র
বিফল হর না; দকল হইতেই কিছু না কিছু শুভ বা অশুভ
উৎপর হইবা আ্যাভে প্রবেশ করে, আ্যা তদকুদারে উত্তন
বা ব্যাস বা অধ্য গতি প্রাপ্ত হয়। চিন্তাতে, বাক্যেতে

বা কর্মেতে বে পরিমাণে পুনাচরণ করিবে, সেই পরিমাণে আত্মাতে পবিত্রতা সঞ্চিত হইবে এবং যে পরিমাণে পাপ করিবে, সেই পরিমাণে মলিনতা উৎপদ্ধ হইবে। অতএব ক্রেমনোবাক্যে শুভ কর্মে প্রবৃত্ত থাকিবেক॥ ৩॥

32¢

পরদ্ব্যেষ্ ভিধ্যানং মন্দানিইচিন্তন্ম। বিত্রণাভিনিবেশশ্চ ত্রিবিধং কর্ম মান্দম্॥ ৪॥

পিরলবোদ্ অভিধ্যানং' কথং প্রধন্মভায়েন গ্রামী ভোবং স্কলম্। 'মন্সা অনিষ্টচিস্তনং' লোকানাং 'বিভগা-ভিনিবেশং 'চ' নাতি প্রলোকো নাতি অগতো মৃদ্যাথা অব্যসন্মননং 'চ' সম্ভেষার্থা। এতত্তকং 'জিবিধং' ডিপ্রকারং অঞ্জ্জনং মিনসং' মনোছবং 'ক্র্ম'॥ ৪॥

পর দ্রবালাভের আলোচনা, লোকের অনিষ্ট-চিন্তন, এবং ঈশ্বরেতে ও পরকালেভে অবিশাস; এই তিন প্রকার মানসিক কুকর্ম । ৪ ট

বে ব্যক্তি পরস্তব্য অপহরণের কলনা করে, লোকের অনিষ্ট চিন্তা করে এবং 'ঈশর নাই' 'পরলোক নাই' 'ধর্ম নাই' এইরূপ মনন করিতে থাকে, সে ব্যক্তিমনে মনে পাপকর্ম করে। মনে মনে পাপের সংকল্পু আালোচনা করিলে তাহা মানসিক কুকর্ম বলিরা পরিগণিত হয়; কেন না তাহা কার্য্যেতে প্রকাশিত না হইলেও আত্মাকে কল্মিত করিয়া থাকে। যিনি পাপের দণ্ডদাতা, তিনি বাহিরের কার্য্যও দেখেন, অস্তরের ভাবও দেখেন॥৪॥

230

পারুষ্যমন্তকৈব পৈশুন্যঞাপি সর্বশং। অস্থদ্ধএলাপশ্চ বাধায়ং স্যাচ্চতুর্বিধম্॥ ৫॥

'পাক্ষ্ম' অপ্রিয়ভিধানন্ 'অন্তম্' অসভাভাবণং 'চ এব' 'পৈণ্ডভং চ অপি' পরোক্ষে পরদূষণকথনঞাপি। 'অসম্বন্ধপ্রশাপঃ চ' নিজ্ঞাজনবাথিভাসশ্চ। 'স্ক্শঃ' এতদেতৎ স্কং 'চ্ছ্রিধং 'বাল্মং' বাচিক্ম্ অভ্ভদশং ক্র্ম'গাং'। ৫ ৪

নিষ্ঠুর বাক্য, মিধ্যা কথা, পরোক্ষে পর-নিম্পা এবং অসমন্ধ-প্রলাপ-রাক্য, এই চারি প্রকার বাচনিক কুকর্ম্ম । ৫।।

মানসিক লোবের ভার বাক্যের দোর হইতেও নানা-বিধ অনিষ্ঠ উৎপন্ন হর এবং সেই জানিষ্ঠ মনুব্যের আন্মাতেওু সংক্রামিত হইরা থাকে॥ ৫॥

>29

অদতানামুপাদানং হিংদা চৈবাবিধানত:। পরদারোপদেবা চ শারীরং ত্রিবিধং স্মৃতম্॥ ৬॥

শেষ বানাম্উপাদানম্ অক্তারেন পরস্থাহণং 'হিংসা চ এব' 'অবিধানত:' অবিধিনা। 'পরনাবোপদেবা চ' পর-পত্নীগমনঞ্ ইত্যেবং 'অবিধং' 'শারীরং' শ্রীরভবন্ অভভ-ক্লং কর্ম 'স্মৃত্ত' ভূতম্ ॥ ৬॥

অদত ধন গ্রাহণ, অবিধিত হিংসা, পর দার সেবা, শ্রেই তিন প্রকার শারীরিক কুকর্মা। ৬।।

শারীরিক কৃকর্ম-দক্দ দর্মাপেক। অধিক অনিট উংপন করে। মানদিক কৃকর্ম কেবল কৃক্মীর সম্থাব কাবণ হয়, শারীরিক কৃক্ম অক্তান্ত ব্যক্তিরও ঘোরতর অপকাব করিষা থাকে॥৬॥

326

ত্রির ওমেতলি কিপ্য সর্বভ্তের মানব: । কামকোর্ণো তু সংযাম্য তত: সিদ্ধিং নিয়চ্ছতি॥৭ 'এডং' 'ত্রির ওং' পুর্বোকানামেতেয়াং শরীরবামনসাং

ख कर पाजन खर पूर्वमा का नारमण्डनार प्रशासन पासन । स्वनुज्य स्थान वासन स्थान का स्वासन । 'কামক্রোধৌ তু সংযম্য'। 'ততঃ' তদনস্তরং 'সিদ্ধিং' মোকপ্রাপ্তিলক্ষণাং 'নিয়ক্তি' লভতে ॥ ৭ ॥

সকল প্রাণীর হিতার্থে আপনার মন ও বাক্য ও শরীব এই ভিনকে দমন কবিষা এবং কাম ক্রোধকে সংযম করিয়া মনুষ্য মিদ্ধি প্রাপ্ত হয়েন। ৭ h

মন হইতে দোষ উৎপন্ন না হয়, এই জন্ত সনকে দমন কবিবেক। যে সকল চিন্তা, কল্পনা ও কামনা দারা মন কল্পিত হয়, তাহা উদিত হইবামাত্রই ঈশ্ব-চিন্তা ও সাধু-সঙ্গ প্রভৃতি উপান্ন সকল অবলম্বন করিলা যত্ন পূর্বক উন্মৃত্নিত করিবেক। বাক্যদোষ উৎপন্ন না হয়, এই জন্তু বাক্সংযম অভ্যাস করিবেক এবং হত্তপদাদি অঙ্গ সকলকে মান্সিক অসম্ভাবের অফুসরণ ক্রিতে দিবেক না ॥ १॥

:39

কৃত্ব। পাপং হি সন্তপ্য তন্মাৎ পাপাৎ প্রমৃচ্যতে। নৈবং কুর্য্যাং পুনরিতি নির্ত্ত্যা পূয়তে তু সং ॥ ৮

পাপদ্য প্রাথকিত্তমাহ। 'পাপ' হি' 'কুজা' অজ্ঞানবশাং মোহারা পশ্চাং 'শস্তপ্য' তংকরণেন হেতুনা সন্তাপং কৃষা 'তত্মাং পাপাং প্রমৃচ্যতে'। 'ন এবং' 'পুনঃ' ভাহং 'কুর্যাং' করিব্যামি 'ইতি নিবৃত্ত্যা' 'তু' 'দঃ' 'পুরতে' পুত্যে ভবতি ॥। পাপ করিয়া ভরিমিত্ত সন্তাপ করিলে সেই পাপ হইতে সে মুক্ত হর। এমত কর্ম আর করিব না, এই শ্রেভিজ্ঞা করিরা ভাষা হইতে নিবৃত্ত হইলে সে প্রিক্র ইয় । ৮।

मञ्चा পাर्ट्यक कार्य करमे निमय हहेग्रा विनाम आश्र না হর, এই জন্ত করুণামর পর্মেশ্বর পাপের সহিত বল্ধ-शांक मःबुक कतिया भियारक्रम । त्यमम भनीत्व द्वारा উৎপর হইলেই শারীরিক ব্রুণা উপস্থিত হয়, দেইকপ আল্লাতে পাপ উংপন্ন হইলেই আল্লার আনন্দ ও শান্তি তিরোহিছ হর এবং মানি ও অশান্তি আত্মাকে কতবিকত करता हेहाहे भाभावकारनत मणा महमा धहेकभ जाय-রিক দণ্ড ভোগ করিয়া অপ্রশোচনা করে এবং পাপ হইছে নিরত হইখা পুরাপথে গ্রন করিতে উংস্ক হয়। পাপ কারী মহুবা বাহাতে আপনার বিক্লত অবহা জানিতে পারে. ঈবর সেইরূপ চৈত্র উদয় করিয়া দিবার নিমিত্র मध मान करवन: मधाचार्ड दिक्टलानव इहेरनहे अय-শোচনা উপস্থিত হয়; অনুতপ্ত হইলেই দও নানের উদ্দেশ্য निक हरेन पिथिया नियंत डाहात श्रीतार्था क्या करनन। তখন মনুষ্য যদি আরু পাপাচরণ না করিয়া সংপ্র অব-শ্লখন করে, তাহা ছইলে পুনর্কার তাহার আয়াতে প্রিত্রতা प्र माखि वर्षि इ इहेटल शांदक । अन्यत्माहना, धवर भाभ इहेटल

নিবৃত্ত হইরা পুণ্যপথে গমন, প্রায়শ্চিত্তের এই ছই অঙ্গ।
অফ্শোচনা ঈখরের নির্মাহ্সারে উপস্থিত হয়; অপর
অক্ষ মহ্যাকে যত্রপূর্বক সম্পাদন করিতে হইকে। সর্বাদা
আপনাকে পরীকা করিবেক এবং পাপ হইতে নিবৃত্ত হইকেক ও পাপদারা তাহার পরিহার করিবেক ॥ ॥ ॥

ষোড়শোইধ্যায়ঃ।

300

অধার্মিকে। নরো থো হি যদ্য চাপ্যনৃতং ধনম্। হিংদারতশ্চ যো নিত্যং নেহাদো স্থমেধতে ॥১॥

ধি: হি' নির:' 'অধার্মিক:' অধর্মেণ ব্যবহরতীতি 'বস্য দ্রু অপি' 'অন্তং' মিথ্যাভিধানং 'ধনং' ধনোপার:। 'বং' 'চ' 'নিত্যং" 'হিংসারতাঃ' পরেবাম্। 'ন' 'অসৌ' 'ইহ' সোকে স্থম্ 'এধতৈ' স্থং যথা ভক্তি তথা বর্ম্মতে। জ্যানেত্র কর্ত্রামিতি নিলর। নিবেধঃ ক্রাতে॥ ১ দ্

যে মনুষ্য অধার্মিক ও মিথ্যাকথন যাছার ধন লাতের উপায় এবং যে ব্যক্তি সর্বাদা পর্যক্ষিণায় রত, সে ব্যক্তি। ব্যক্তিবাদিক সুখে বর্মিত হয় না ৪১ দ অধর্ম হারা ঐহিক হথ সছলভাও লাভ করিবার কাননা করিবেক না। অধর্ম করিরা কেই ইই লোকেও হ্রথে থাকিতে পারে না। ইই লোকও ঈশরের রাজ্য। ভাহার ন্যায় দও ইহ লোকেও সঞ্চরণ করিতেছে॥১৪

202

ন সীদম্পি ধর্মেণ মনোহধর্মে নিবেশয়ে । অধার্মিকাণাং পাপানামাশু পশ্যন্ বিপর্যয়ম্॥২॥

ধিয়েণ' গৌদন্ অপি' অবসংলাহপি সন্মনং' ক্লাপি 'অধংগ্ন' নি নিকেশবেৎ' ন সংযোজরেৎ। 'অধার্মিকাণাং' পাপানাং' পাশিনাম্ 'মাশু' শীজং 'বিপ্রারং" 'পশান্'॥ ২॥

ধর্ম-পথে থাকিয়া নিডান্ত অবসম হইলেও অধার্মিক প্যাণীদিনের আশু বিপর্যায় দৃষ্টে অধর্মে মনোনিবেশ ক্রিবেক না ।। ২।।

ধর্মপথে থাকিরা কঠ ভোগ হইছেছে, শরীর ও মন অবদা হইভেছে; এবং পাপকারী ব্যক্তি সহসা অ্থসম্পদে ফ্লীত হইরা উঠিতেছে; ইহা দেখিরা কদাপি ধর্মকে নিজ্ল বিশ্বা বিবেচনা করিবেক না ও অধর্মাচকণে প্রবৃত্ত ক্ষাইবেক না। ধার্মিকের দীনহীন অবস্থার মধ্যে অমৃত ক্ষাও পাপকারীর ফ্লীত ভাবের মধ্যে সাংখাতিক ক্ষা

প্রছের হইরা থাকে; ষথাযোগ্য কালে গ্রম্পার্যারণ আনন্দনীরে অভিষিক্ত হইবেন ও পাপী হাহাকার করিবে। অভএব প্রাণ পর্যায় পণ করিরা ধর্মপথে দণ্ডারমান থাকিবেক;
এক পদত্ত অধ্বর্মপথে নিম্নামী হইবেক না॥ ২॥

२०२

অধ্যেত্ম বৈধ্যতে তাবং ততো ভদ্যাণি পশ্যতি। ততঃ সপদ্মান্ জয়তি সমূলস্ত বিনশ্যতি॥ ০॥

তদেব ৰাক্যান্ধবেশ দৃত্য়তি। 'অধর্মেণ' পরজোহাদিনা 'তাবং' আপাততো প্রামধনাদিনা 'এধতে' বদ্ধতে 'ততঃ' তদনস্তরং 'দপদান্' 'জয়তি'। পশ্চাং কিয়তা কালে-নাধর্মপরিপাকবশাং 'দম্লঃ তু' ম্লেন সহ ধনাদিসহিতঃ 'বিনশাতি'॥ ৩॥

অধর্ম দারা আপাততঃ বর্দ্ধিত হয় ও কুশল লাভ করে, এবং শক্রুদিগকে জয় করে , পরে সমূলে বিনাশ পায়॥ ৩॥

পাপীকে পাপের ফল এক দিন অবশাই ভোগ করিতে ছইবে। পাপ দারা মন্থ্য বে পবিদাণে উন্নতি লাভ করে, সেই পরিমাণে দুর্গতি ভোগ করিবে। বে যত উচ্চ স্থানেশ, উথিত ছইতেছে, পতনের সময়ে ভাহাকে ডভ জাণাত সহ করিতে হইবে। যেমন স্থানবিশেষের বায়ু স্থাবিশেপে উত্তপ্ত হইবা উর্দ্ধে উথিত হইলে চতুর্দিকের বায়ুবাশি আন্দোলিত হইবা সেই স্থান পূর্ব করিতে আইলে, সেইরুপ স্থানাবদ্ধ হইবা আছে যে, কেই তাহাব কোন স্থানে কিছুমাত্র বাতিক্রম করিতে প্রবৃত্ত হয়। এই জন্ত পালী পাপাচার করিয়া চিরদিন জন্ম লাভ করিতে পাবে না; স্থাপাত তঃ তাহার যতই তীর্দ্ধি হউক, এক সময়ে তাহা সমূলে বিনাশ প্রাপ্ত হয় ও তাহার ঐশ্বর্যাই কালফণী হইবা তাহাকে দংশন করিতে পাকে। অতএব ক্লাপি সাংসারিক স্থপ লোভে পাপ-পথ আশ্রের করিবেক না; পরিপূর্ণ ন্যারম্বরূপ ঈশ্বেরে প্রতিত নির্ভর করিবা তাহাত্র প্রতিষ্ঠিত ধর্মকে প্রতিপালন করিবেক দ্ব

300

ধর্মঃ শনৈ: সঞ্জিমুয়াৎ বল্মীক্ষিব পুত্তিকাঃ। প্রলোকসহায়ার্থং সর্বভূতান্যপীড়য়ন্॥ ৪॥

'ধর্মং' 'লনৈং' অরেনারেন 'গঞ্জিরাং' সঞ্চিতং কুর্যাং। তত্র দৃঠান্তঃ; 'প্তিকঃ' পিপীলিকাপ্রভেনাঃ 'বলীকম্ ইব' মহান্তং মৃংক্টমির। কিমর্থং পেরলোকসহারার্থং' পর-। বাকে সাহার্যানিনিত্রন্। কীদ্বেনোপারেন 'সর্কাভ্তানি অপীভ্রন্'॥ ৪ ॥ কোন প্রাণীকে পীড়া না দিয়া পরলোকে সাহায্য-লাভার্থে, পুত্তিকেরা ষেরূপ বল্মীক প্রস্তুত্ত করে, তদ্রূপ ক্রেমে ক্রমে ধর্ম্ম-সঞ্চয় করিবেক ॥ ৪ ॥

পুতিকাদিগের দৃষ্ঠান্ত অনুসারে ধর্ম সঞ্চয় করিবেক।
তাহারা কুদ্র জীব হইরা কেমন অরে অরে আক্রয়া বলীক
নির্মাণ করিরা থাকে। সেইরূপ অরে অরে ধর্মকর্মের
অনুষ্ঠানপূর্বক পূণ্য উপার্জন করিরা পরলোকের সম্বন
আহরণ করিবেক॥৪॥

208

নামুত্র হি দহায়ার্থং পিতা মাতা চ তিষ্ঠতঃ। ন পুত্রদারং ন জ্ঞাতির্ধর্মস্তিষ্ঠতি কেবলঃ॥৫॥

'হি' যক্ষাৎ 'অমূত্র' পবলোকে 'সহায়ার্থং' সাহায্যকার্য্য-সিদ্ধার্থং 'পিডা মাতা চ' তৌ 'ন' 'ভিছডঃ'। তথা 'পুত্রদারং' পুত্রাশ্চ দারাশ্চ তৎ 'ন' ভিছডি 'ন জ্ঞাতিঃ'। 'ধর্মঃ' তু 'কেৰলঃ' একঃ 'ভিছডি'। অতত্তৎসঞ্চয়নে মহান্ যয়ঃ কর্ত্তবাঃ॥ ৫॥

পরলোকে সহায়ের নিমিতে পিতা মাতা, দ্রী পুত্র,
জ্ঞাতি বন্ধু, কেহই থাকেন না; কেবল ধর্মই থাকেন ॥৫

যথন মৃত্যু সাধিয়া আত্মাকে দেহ হইতে পূথক করিবে,

তথন পৃথিবীর কোন বন্ধু আর কিছুমাত্র সহায়তা করিতে সমর্থ হইবেন না। তথন কেবল ধর্মই সাখনা ও আরা-মের পথ প্রদশন করিবে। অতএব পিতা মাতা প্রভৃতি সম্দায় বন্ধু বাদ্ধব অপেকা ধ্যাকে অধিক বলিয়া জানি-বেক॥ ৫॥

300

একঃ প্ৰজায়তে জন্তৱেক এব প্ৰলীয়তে। একো২নুশৃঙ্কে স্কৃতমেক এব তু হুদ্ধুতম্॥৬॥

অপি চ 'জ ৪:' আণী 'এক:' এব 'প্রজায়তে' উৎপদ্যতে,
ন বান বৈ: সহ। 'এক: এব' চ 'প্রশীয়তে' ভিয়তে। তথা
'এক:' 'থক ভং' প্রাফলম্ 'অহুত্তে'। 'ছেইডং' ছ্রিডফলফ 'এক এব ১' ভূহ্তে। ন কেনাপি সহ। তথা
ধর্ম্মিন্তন ভূ কেনাপি হেণুনা ধর্মোন হাতবাঃ॥ ৮॥

একাকী মনুষ্য জন্ম এছন করে, একাকীই মৃত হয়; অকাকীই স্থীয় পুশ্যদল ভোগ করে এবং একাকীই স্থীয় হুষ্কৃতির ফল ভোগ করে॥ ৬॥

কাহারও অমুরোধে ধর্মকে পরিত্যাপ করিবেক না। কোন কারণেই পাপাচরণ করিবেক না। বদি সমুদার
মরিত্যাগ করিয়া ধর্মকে রক্ষা করিতে হয়, তাহা হইকে সমুদারই পরিত্যাগ করিবেক। কেন না ধর্মহীন হইকে

বে নরক-যমণা ভোগ করিতে হইবে, তাহা হইতে উদ্ধাৰ করিতে আব কেহই থাকিবে না এবং তাহাব সহভাগীও আর কেহই হইবে না। পাপপুণ্যেব ফল মন্থ্য একাকীই ভোগ করিতে থাকিবেন॥৬॥

>06

মূতং শরীরমুংস্জ্য কার্চলোইটনমং ক্ষিতো। বিমুখা বান্ধবা যাত্তি ধন্মস্তমনুগচ্ছতি॥ ৭ ৪

যত চ 'মৃত' মনঃপ্রাণাদিরহিতং 'শরীর ' 'কাচলোই-স্নং' কাজলোইবং 'কিচে)' ভূমো 'উংস্কা তাজ্ব বিম্বাঃ প্রায়্বাঃ সন্তঃ 'বান্বাঃ' 'বান্তিঃ' প্রান্ প্রতি-গছন্তি। 'ধ্যঃ' 'তু' 'তং' 'মন্তু' সহ 'গছতে'॥ ৭॥

বান্ধবেবা ভূমি-তলে মৃত শবীৰকে কান্ঠলে ফীবং, প্ৰিত্যাগ ক্রিয়া বিমুখ হইয়া গমন কবেন; ধর্ম তাহার অনুগামী হয়েন। ৭ ॥

ধর্মের তুলা বন্ধু আব কেহই নাই। মৃত্যু হইলে পৃথিনীর সমুবার বন্ধুগণ মৃত শবীর শাশানে পরিত্যাগ করিয়
নির্ত্ত হইবেন, আয়া একাকী লোকাস্তরে উপনীত হইরা
কেবল সঞ্চিত ধর্ম বলে স্বাতি লাভ করিবে। এমন বন্ধুশ্রে
পরিত্যাগ করিবেক না ॥ ৭ ॥

209

তত্মাদ্ধর্মং সহায়ার্থং নিত্যং সঞ্চিত্রশাৎ শানৈঃ। ধার্মেন হি সহায়েন তনত্তরতি হুস্তরম্॥ ৮॥

তিখাং' আয়ন: 'সহায়াথং' 'ধক্কং' 'নিত্যং শেনৈঃ' 'সংচিত্যাং'। 'হি' অবধাননে। 'ধণোন' এব 'সহায়েন' হিত্তবং' 'তনং' অজানং 'তরতি' অতিকামতি। অতিকাম চ তবভরন্যতমশোক্ষনাশ্যনস্থ নি গ্রন্থমুক্তস্কুপং পর-মানলং এক প্রাপ্রোতীত্যথং ॥ ৮॥

অত্তরে আপনার সাহায্যার্থে ক্রমে ক্রমে ধর্ম নিত্য সঞ্চর করিবেক। জীব ধর্মের সহায়তায় চুক্ষর সংসার-অন্ধকার হইতে উঠার্ব হয়॥ ৮॥

ইং লোকে ধর্ম ব্যতিরেকে কে স্থী হইতে পারে ? পর-লোকে ধর্ম ব্যতিরেকে আর কিসের বারা জীব সাস্থনা লাভ করিবে ? ধর্ম ব্যতিরেকে মহুষ্যদিগের মহুষ্যক আর কি প্রকারে উপাজ্জিত হইবে এবং দেবগণের দেবত্বই বা আর কি প্রকারে রক্ষা পাইতে পারে ? ধর্মই ধার্মিকের বল। ধর্মই পুরুষদিগের পৌরুষ, ধর্মই নারীগণের অন্-ভার। ধর্মই স্থ লাভের উপার, ধর্মই আয়প্রসাদের আকর, ধর্মই ব্রহানন্দ লাভের হেতু। মহুষ্য কেবল ধর্মের সহায়তার ছত্তর তিমিররাশি উত্তীপ হইরা ৩৯-বৃদ্ধ-স্কু অভাব প্রমানক অরপ প্রত্তক্ষের সহিত স্মাপ্ত হ্রেন ॥ ৮ ৪

396

এষ আদেশ এষ উপদেশ এতদকুশাসনম্। এষমুপাসিতব্যমেবমুপাসিতব্যম্॥ ৯॥

'এব:' 'আদেশ:' ব ওবাবিধি: 'এব: উপদেশ:' শিক্ষা-দান: 'এতং' 'অসুশাসন:' প্রমাণবচনম্। 'এবং' যথোক্তম্ 'উপাসিতব ম্ 'এবম্' 'উপাসিতব্যং' পুনর্কচন: সমাপ্ত্যর্ম্ ॥৯॥

এই আদেশ, এই উপদেশ, এই শাস্ত্র; এই প্রকারে তাঁহার উপাসনা করিবেক, এই প্রকারে তাঁহার উপা-সনা করিবেক । ১॥

মনের সহিত পরমেশরকে প্রীতি করিবেক এবং সংসারে থাকিয়া তাঁহার প্রিন্ন কার্য্য সাধন করিবেক। ইহাই তাঁহার পূজা। ইহাই মহুবোর কড়ার্থ হইবার উপার। ইহা ছারাই পার্ত্রিক ও ঐহিক মলল লাভ হইবেক। ইহাই আক্ষধর্শের অফুজা, ইহাই আক্ষধর্শের প্রমাণ। তাঁহাতে প্রীতি ও তাঁহার প্রিন্ন কার্য্য লাধন ব্যতিরেকে জীবের গত্যস্তর নাই । ১॥